ीवृन्दावन माहात्म्य

—श्रीहरिभक्त दास

सचित्र

श्रीवृन्दाबनमाहात्म्य

नव्यं दिव्यं मधुर मधुरं नन्दपुत्रस्य धाम्नः
प्रेमानन्दं प्रतिपदमहो संविधातुं मनोज्ञम् ।
माहात्म्यं तत्रुचिररसदं सर्व तीर्थाधिमूर्धनः
नित्यं पाठयञ्च रसिकजनैः श्रीलवृन्दावनस्य ।।

Shri KESHABJI GOUDIYA MATH (U.P.) Mathura

संकलन कर्त्ता
हरिभक्त दास शास्त्री

अनुवादक (बंगला से हिन्दी)
श्रीराधाकृष्ण घोष

प्रकाशक
श्रीमिश्रिधारी लाल गोस्वामी
व्याकरणतीर्थ

प्रकाशक :
श्री गिरिधारी लाल गोस्वामी
श्रीगुरुदास ग्रन्थागार
किनु बाबू कुञ्ज, बागबुन्देला, वृन्दावन

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन तिथि : श्रीनित्यानन्द जयन्ती
श्री गौराङ्गाब्द—५०६
श्रीवृन्दावन (मथुरा)

मिक्षा : २०) रु० बीस रुपये

मुद्रक : गिरीश अग्रवाल
शिवहरि प्रिंटिंग, प्रेस
434, राधानिवास, बृन्दावन (मथुरा)
फोन—82475

सम्पादकीय निवेदन

कालेन वृन्दावन केलिवार्त्ता लुप्तेति तां ख्याप यितुं विशिष्य।
कृपामृतेनाभिषिषेच देवस्तत्रैव रूपञ्च सनातनञ्च॥

श्रीवृन्दावन एक सर्वोत्तम महामहिमामयतीर्थ है। इस लोक के अन्दर सर्वतीर्थमय इस तीर्थ की महिमा महर्षि श्री वेदव्यास भी वर्णन करने में समर्थ नहीं हुये। केवल वहीं नहीं सर्व समर्थ स्वयं भगवान भी जिसकी महिमाका वर्णन करने में असमर्थ हैं। पूर्णतम स्वरूप श्रीनन्द नन्दन परिकर गण समभिव्याहर युत जिस स्थान पर नित्य विलसित हैं, उस स्थान के वन उपवन सतत शिखि रव में मुखरित हैं, जिसके नानाविध उद्यान पुष्प संभार में समृद्धशाली हैं, मुनि तुल्य वृक्षराजि जिस स्थान पर सर्वदा फल फूलों से अवनत हैं, युगल किशोर की क्रीड़ोपकरण कुञ्ज, कुंड व सरोवर जिसमें नित्य सुशोभित हैं, जिसके चारों दिशा में स्वच्छ सलिला पूतपावनी श्रीयमुना सर्वदा कलकल नाद से प्रवाहित होकर सुशोभित हैं। काल के प्रभाव से महामहिमान्वित यह महोत्तम तीर्थ लुप्त प्राय होने पर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अपने अन्तरंग परिकर श्रीपाद रूप गोस्वामी व श्रीसनातन गोस्वामी द्वारा उस लुप्त तीर्थ के उद्धार के निमित्त आदेश देने पर, तदानुसार उन्होंने लुप्त तीर्थ को पुनः प्रकट किया है। रागानुगा भक्ति में श्रीवृन्दावन लीला के स्मरण व मनन जिस प्रकार एकान्त रूप से विधेय है, तद्रुप रागानुगीय

साधक श्रीवृन्दावन विहारी की नित्यलीला सहित नित्य लीला के स्थलों को भी अपरिहार्य रूप से स्मरण, मनन व दर्शन करते हैं। गोस्वामी गणों के प्रकटित या प्रदर्शित पन्थानुसार उन लीला स्थलियों का यत्किंचित् परिचय यहाँ पर सन्निवेशित हुआ है। गोस्वामी गणों के पदाङ्कानुसरण द्वारा लीलास्थल दर्शनार्थी श्रीवृन्दावन से बाहर होकर मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन. कामवन, खदिर, भद्रवन, बेलवन, लौहवन व महावन दर्शनान्त में श्रीवृन्दावन आगमन पर यात्रा समाप्त करते हैं। मुख्य इन द्वादशवनों के अन्तर्गत दर्शनीय और भी द्वादश उपवन व वनादि हैं लोग उनका भी दर्शन करते हैं यथा—राल या विहार वन, श्रीराधा कुंड, श्रीबद्री नारायण, श्रीबरसाना, संकेत, नन्दीश्वर, जावट, कोकिला वन, कोट वन, खेलन वन, माटवन, शेरगढ़ व बिद्रुम वन या दाऊजी। चार धाम यथा—श्रीबद्रीनाथ में श्रीबद्री नारायण, कामवन में श्रीरामेश्वर, कोसी में श्रीद्वारिकानाथ एवं दाउजी में श्रीजगन्नाथ देव। अन्य दर्शनीय स्थल हैं श्री गोवर्धन, बरसाना, श्रीनन्दीश्वर ये तीन पर्वत, बहुलावनस्थ मान सरोवर, कुसुम सरोवर, चन्द्र सरोवर, नारायण सरोवर, प्रेम सरोवर, पावन सरोवर एवं श्रीवृन्दावन में यमुना के उस पार मानसरोवर एवं बंशीवट, शृंगार वन, संकेत वट, नन्द घाट, जावट या किशोर वट, अक्षय वट, भांडीर वट, श्रीश्याम कुण्ड के पूपब की ओर श्याम वट तथा श्रीमथुरा में श्रीकृष्ण गंगा, जावट में पाड़ल गंगा, श्रीश्याम कुंड में पाताल गंगा, गोवर्धन में मानसी गंगा, आदिबद्री में अलकानन्द गंगा एवं कोसी में गोमती गंगा। अन्य स्थान हैं श्रीमथुरा में श्रीभूतेश्वर

गोवर्धन में श्रीचकलेश्वर, कामवन में श्रीकामेश्वर,नन्द गाँव में श्रीनन्दीश्वर, एवं श्रीवृन्दावन में श्रीगोपेश्वर यद्यपि प्रति गाँव की वन शोभा सच में मन को हर लेती है तथापि राल में विहार वन, श्रीराधा कुण्ड में कदम खण्डी, पेटो गाँव में कदम खण्डी, पूछरी में कदम खण्डो, सनेरा में नागा जी की कदम खण्डो, बरसाने में गहबर वन, नन्द गाँव में उद्धव क्यारी आदि विशेष आकर्षणीय हैं।

श्रीगौड़ीय सम्प्रदाय के अतिरिक्त और भी कई सम्प्रदाय हैं, यथा श्रीराधाबल्लभ सम्प्रदाय, गोकुलिया गोस्वामी गण, श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय आदि प्रति वर्ष दीर्घ काल तक महा समारोह के साथ श्रीब्रज मंडल की परिक्रमा व दर्शन करते हैं। श्रीगौड़ीय सम्प्रदाय वैष्णवगण श्री-जन्माष्टमो के बाद द्वादशी की शाम को श्रीवृन्दावन से बाहर निकलकर मथुरा में श्रीभूतेश्वर में रात्रि व्यतीत करते हैं तथा त्रयोदशी के दिन मधुवन, तालवन कुमुद वन होकर फिर मधुवन में रात्रि वास करते हैं। दूसरे दिन मधुवन से यात्रा आरम्भ करके शान्तनु कुण्ड होकर बहुलावन में फिर रात्रि वास करते हैं। दूसरे दिन बहुलावन से राल होकर राधाकुण्ड में रात्रिवास करते हैं। उसके अगले दिन श्रीकुण्ड से श्री गिरिराज परिक्रमा करके गोवर्धन में रात्रिवास करते हैं। आगे श्रीगोवर्द्धन से यात्रा करके बेहेज होकर रात्रि को लाठावन या डीग गाँव में विश्राम करते हैं। अगले दिन लाठा वन से परमादरा गाँब व आदि बद्री होकर श्रीकामवन पहुँचते हैं। अगले दिन श्रीकामवन दर्शन व परिक्रमा करके रात्रि में कामवन में विश्राम करते हैं। अगले दिन कामवन से सनेरा

होकर रात्रि में बरसाने विश्राम करते हैं। आगे बरसाने से सकेत होकर श्रीनन्द गाँव पहुँचते हैं। अगले दिन श्रीनन्द गाँव से कोकिला वन दर्शन करके चरण पहाड़ी होकर शेषशायी में रात्रि विश्राम करते हैं। अगले दिन शेषशायी होकर फाराण गाँव में निवास करते हैं। आगे शेरगढ़ या खेलन वन में रुकना पड़ता है। अगले दिन खेलन वन से रामघाट व चीर घाट होकर रात्रि में श्रीनन्द घाट में विश्राम करते हैं। बाद में नन्दघाट से भद्रवन, भांडीर वन, मांट वन, बेलनवन मान-सरोवर होते हुये पानी गाँव में रात्रि वास करते हैं। अगले दिन पानी गाँव से लौहवन, आनन्दी-वन्दी होकर दाऊजी में रात्रिवास करते हैं। अगले दिन दाऊजी से ब्रह्मांण्ड घाट होकर गोकुल में विश्राम करते हैं। अगले दिन गोकुल से मथुरा आकर भूतेश्वर में विश्राम करते हैं।

अनन्तर श्रीमथुरा के दर्शनारम्भ में श्रीवृन्दावन प्रत्या-गमन पर यात्रा समाप्त होती है। श्री ब्रजमण्डल के विशेष विशेष जानने योग्य विषयों केवल मात्र दिग्दर्शन किया गया है। किन्तु असीम वस्तु का ससीम में लाना भी नितान्त वातु-लता है। जो भी हो लीलास्थल दर्शनार्थी के आहारादि की अनियमितता से दीर्घ परिभ्रमण में पथ का श्रमादि होने पर भी लीला स्थलों के दर्शन से जो आनन्द मिलता है उससे वह कष्ट कोई महत्व नहीं रखता यह ही लीला भूमि सन्दर्शन की नैसर्गिक शक्ति है। श्रीमथुरा माहात्म्य, श्रीब्रजरीति चिन्ता-मणि, श्रीभक्ति रत्नाकर, श्रीवृन्दावन लीलामृत आदि ग्रन्थों से इस पुस्तिका के उपादान संग्रह किये गये हैं, एव श्रीमद ब्रजमोहन दास बाबा जी महाराज कृत ब्रज दर्शन ग्रन्थ ही इस

विषय में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। तात्पर्य यह है कि—यह परिक्रमा का क्रम पुरातन है। किन्तु नये परिक्रमा में वह क्रम कुछ परिवर्तित है, परन्तु इस क्रम के अतिरिक्त ब्रज के सीमान्त परिक्रमा का एक और भी क्रम है। सर्व साधारण के अवगति के निमित्त वह क्रम यहाँ सन्निवेषित किया गया है। यथा क्षेत्रपाल श्रीभूतेश्वर बाबा को प्रणामदि करके सीमान्त परिक्रमार्थीगण यहाँ से मधुवन, तालवन व कुमुदवन दर्शनान्त में भेरकिनागरा, सुख, बच गाँ, कोथरा व खेरा स्वामी या स्वामी खेरा होकर पूछरी आते हैं, तदनन्तर श्याम ढाक, बरौली, धाँधुकि, नागरा एवं सीधे बेहेज होकर डीग जाते हैं। अनन्तर महिमनपुर, खो, कर मुखा, आलीपुर, आदिबद्री, पशव बड़ौली होकर केदारनाथ जाते हैं। केदारनाथ होकर चरण पहाड़ी फिर कलाबाटी पहुँचते हैं। तदनन्तर पाइ ग्राम, तिलोयार होकर सिंगार, अन्धोप व सोन्द दर्शनीय हैं। अनन्तर वनचारी, डाकोरा होकर मेरोली, खामि, लिखइ, होसनपुर पहुँचते हैं। होसनपुर से यमुनापार होकर मारव व दुर्वासा टीला दर्शन करके जेदपुरा, मानागड़ि, भमरोला, बाजनो, पार्शलि, बरोट, पितोरो, सुरीर, टेंटी गाँव होकर हिंडोल, नसिटि, बोरिक, नागरा, फिर यहाँ से बम्बे के किनारे किनारे होते हुये दरबा तक पहुँचना होगा। अनन्तर सरदार गढ़, राया, कारब व आनन्दी बन्दी होकर दाऊजी पहुँचते हैं। अनन्तर हाथोरी, नुरपुत्र, उसके बाद चिन्ता हरण घाट, यहाँ से यमुना पार करके २।३ ग्राँवोंके पश्चात बादमें पहुंचेंगे। यहाँ से धनगाँव होकर भूतेश्वर पहुंचते हैं, और इस प्रकार भूतेश्वर पहुंचने पर सीमान्त परिक्रमा समाप्त होती है।

ज्ञातव्य विषय यह है कि—श्रीब्रजमोहन दास जी ने १३१८ बग संवत स्वसंकलित ब्रजदर्शन नामक ग्रन्थमें लिखा है। कालापहाड़ जब देवमन्दिरों के विध्वंश में प्रवृत्त हुआ उस समय उसके अत्याचारों के पूर्व ही श्रीवृन्दावनस्थ विशेष विशेष श्रीविग्रह जयपुर व करौली नामक स्थानों में स्थानांतरित हुये। किन्तु इस विषय में और भी एक किंवदन्ती प्रचारित है कि यवन औरंगजेब के अत्याचार से देवमन्दिर ध्वंस हुये, किंतु इस प्रकार के दूसरे तथ्य साधु गणों द्वारा अन्वेषणीय है।

श्रीश्रीवृन्दावन माहात्म्य

पुस्तक विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
श्रीवृन्दावन धाम	१	श्र तुलसी राम दर्शन स्थल श्रीब्रह्मचारी का गोपाल जी मन्दिर	३८
श्रीवृन्दावन के प्रमुख मन्दिर			
श्रीराधागोविन्द जी	८	श्रीशाहजी मन्दिर	३९
श्रीगोपीनाथ जी	१३	जमाई विनोद	४०
श्रीराधामदनमोहन जी	१५	श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ	४१
श्रीसाक्षी गोपाल	२३	श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर (इस्कान)	
श्रीराधारमण	२४		
श्रीगोकुलानन्द			
श्रीराधामाधव	२६	कात्यायनी मन्दिर	४२
श्रीराधादामोदर	२७	पागलबाबा मन्दिर	४३
श्रीश्यामसुन्दर	२८	परिक्रमा विधि	४४
श्रीराधाबल्लभ	२९	द्वादश वन	४५
श्रीबाँकेविहारी जी	३१	श्रीमधुवन	४८
श्रीगोपेश्वर महादेव	३२	श्रीतालवन	५०
श्रीबनखण्डी महादेव		श्रीकुमुद वन	५१
पौसिमा के श्रीनिताईगौर	३३	शान्तनु कुण्ड	५२
श्रीगौरांग महाप्रभु	३५	श्रीबहुला वन	५३
श्रीरंगनाथ जी	३६	मधेरा, जैत ग्राम	
श्रीकृष्णचन्द्रजी लालाबाबू	३७	छटीकरा	५४

विषय	पृष्ठ
श्रीगरुड़ गोविन्द	५६
मयूर ग्राम, दतिहा	५७
आयरे, अड़िग, माधुरी कुण्ड	
जखीन गाँव	५८
तोष बसती, मुखरा	५९
श्रीराधाकुण्ड	६०
श्रीकुण्ड के प्रमुख घाट	
गोविन्द घाट	
मानस पावन घाट	६७
पंच पाण्डव घाट	
राधाबल्लभ घाट	६८
श्रीराधाविनोद घाट	
मन्दिनी घाट	
श्रीजीव घाट	
धनमाधव घाट, गया घाट	
अष्टसखी घाट	६९
महाप्रभु बैठक	७०
श्रोद्युत घाट	
श्रीमदनमोहन घाट	
युगल घाट	७१
श्रीरास बाड़ी	
श्रीझूलन घाट	
श्रीजान्हवा घाट	७२
श्रीवज्रनाभ कुण्ड, भानुखोर	
श्रीबलराम कुण्ड	७३

	पृष्ठ
श्रीललिता कुण्ड	
लगमोहन कुण्ड	७३
शिवा खोर	७४
मालीहारी कुण्ड	७५
कुसुम सरोवर	७७
श्रीनारद कुण्ड	८३
श्रीरत्न सिंहासन	८४
गोआल तालाब	८५
युगल कुण्ड	८७
किल्लल कुण्ड	
श्रीमानसी गंगा	८८
श्रीगोवर्धन	९२
इन्द्रध्वज वेदी	९७
पापनाशन कुण्ड	
दानघाटी	१०१
पराशैली	१०२
बाजनी शिला	
पेटो	१०३
वत्स बन, गौरी तीर्थ	१०४
आनोर	१०५
श्रीगोविन्द कुण्ड	१०६
शक्र कुण्ड	
श्रीपुछरी, लोटा	१०७
श्याम ढाक, राधव गुफा	१०८
श्रीदाऊजी मन्दिर	१०९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
सुरभो कुण्ड, ऐरावत कुण्ड	१०६	कामवन दर्शनीय	१३०
रुद्र कुण्ड		घिसलिनि स्थान	
जतीपुरा, गोशाला		व्योमासुर गुफा	१३१
बिलछू कुण्ड	११०	भोजन थाली	२३३
ज न अजान वृक्ष		कामवन दर्शनीय	१३४
श्रीलक्ष्मीनारायण वेदी		बजेरा	१३६
सखोथरा	१११	सनेरा	१३७
नोम गाँव, पाड़ल,कुञ्जेरा	११२	ऊँचा गाँव	
पालो, डेरावली, साहार		श्रीबरसाना, भानुखोर	१३८
श्रीसूर्यकुण्ड	११३	श्रीदानगढ़	१३६
भादार, कोनाई, बसतो		श्रीमानगढ़	१४३
यावक कुण्ड, गाँठुली	११४	पियल कुण्ड, डाभोरा	
गोलाल कुण्ड, वेहेज	११६	प्रम सरोवर	१४६
देवशीर्ष कुण्ड		श्रीसंकेत	१५१
मुनिशीष कुण्ड		विह्वल कुण्ड	१५६
श्रीप्रमोदना		श्रीरिठोर, भड़ खोड़क	
श्रीबदरीनारायण	११७	मेहे रान, श्रीसाँतोया	१५८
सिकन्दरा, गोहना		पाई गाँव, तिलोयार	
श्रीआदि बद्रीनाथ	११८	शिगार वट, बिछोर	१५६
पशप, श्रीकेदारनाथ	१२१	आन्धोप, सोंद ग्राम	
श्रीकामवन	१२२	बनछारी	१६०
श्रीवृन्दादेवी	१२७	होडल, दइ गाँव, लालपुर	
विष्णु सिंहासन		हारोयान गाँव	१६१
विमला कुण्ड तीर्थ	१२८	साँचली ग्राम, श्रीगेड़ो	१६४
कामवन तीर्थादि	१२६	श्रीनन्दीश्वर	१६५

विषय	पृष्ठ		पृष्ठ
श्रीयावट	१७०	बाजना, जेउलाइ	१६३
धनशिंगा	१७१	शक रोय, आटास, सुनराक	
कोसी, पयगाँव, छत्रवन		देवी आठास, परखम	१६४
श्यामरी	१७२	चौमुहा, आझई	
नरी, शाँखि,		सिहाना, पसौली	१६५
आरवाड़ी, रणवाड़ी	१७३	बरली, तरली, एइ, सेइ	१६६
भादावली, खाँपुर		माईबसाइ	१६७
उमराव	१७४	श्रीभद्रवन	
कामाइ, करेला		श्रीभाण्डीरवन	१६८
पेशाइ, लुघौली	१७६	छाहेयी, माटवन	
आंजनक	१७७	श्रीबेलवन	२००
श्रीखदिरबन	१७८	श्रीमानसरोवर	२०१
बिजुयारी, कोकिलावन	१७९	पानिगाँव, श्रीलोह वन	२०२
बड़ बैठान, चरण पाहाड़ी	१८१	श्रीराभेल, गडुइ, आयरे	
श्रीरासौली, कोटवन		कृष्णपुर	२०५
होडल, खामौ	१८२	वान्दी, श्रीबलदेव, हातोरा	
पेंगथु, वासौली	१८३	श्रीब्रह्माण्ड घाट	
शेषशायी	१८५	चिन्ताहरण घाट	२०६
खेरट, बाछौली	१८८	श्रीगोकुल महावन	२०७
उजानी, खेलनवन		श्रीगोकुल	२१०
श्रीराम घाट	१८९	बादाइ, श्रीमथुरा	२११
अक्षय वट	१९०	अविमुक्त	२१३
गोपीघाट, चीरघाट	१९१	विश्रान्ति, गुह्म, प्रयाग	
नन्दघाट, भय गाँव	१९२	कंखल, तिन्दुक	
जैतपुर, हाजरा, वरारा	१९३	सूर्य, वट स्वामी	२१४

विषय	पृष्ठ
ध्रुव तीर्थ	२१५
ऋषि, मोक्ष	२१६
कोटि, बोध	
नर संयम तीर्थ धारा पतन	
नाग तीर्थ	२१७
घण्टा भरण तीर्थ	
ब्रह्मलोक तीर्थ	
सोमलोक तीर्थ	
सरस्वती, चक्रतीर्थ	
दशाश्व मेघघाट	
विघ्नराज	२१८
कृष्णगंगा, श्रीअक्रूर तीर्थ	२१९
भोजन स्थली	२२०
श्रीवृन्दावन	१२१
अटलवन, केवारिवन	२२२
विहार, गोचारण वन	
श्रीकालीय दमन वन	१२३

विषय	पृष्ठ
श्रीगोपाल वन	२२३
निकुञ्जवन, निधुवन	२२४
राधाबाग, झूलन	
गहवर वन	२२५
पपर, वराह, कालीय	
दमन घाट	२२५
श्रीगोपाल घाट	२२६
श्रीसूर्य घाट, युगल घाट	२२९
विहार घाट,	२३०
आन्धेर इमलीतला घाट	२३१
श्रृंगार घाट, गोविन्द घाट	
श्रीचीर घाट	२३३
भ्रमर घाट, केशीघाट	२३४
धीरसमीर घाट	२३५
श्रीराधाबाग, पाणिघाट	
आदि घाट, श्रीराजघाट	२३६
कीर्तन	२४०

आराध्यो भगवान् ब्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावन
रम्या काचिदुपासना ब्रजवधूवर्गेण या कल्पिता ।
श्रीमद्भागवतं प्रमाणममलं प्रमा पूमर्थो महान्
श्रीचैतन्य महाप्रभोर्मतमिदं तत्रादरो नः परः ।।

स्वयं भगवान अखिल रसामृत मूर्ति व्रजराज नन्दन श्रीराधा विभूषित वामांग श्रीगोविन्ददेव ही परम आराध्य है, आपका परम रमणीय दिव्य श्रीवृन्दावन धाम अर्थात् विलास स्थली है, उस चिन्मय वृन्दावनाधिष्ठात्रीदेवी ब्रजवेधुगणों के द्वारा प्रकाशित अति रमणीय रसमयी भक्ति ही आपका उपासना या भजन है, इस विषय में सब शास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भागवत महापुराण ही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है, इस उपासना से चतुर्वर्ग तुच्छकारी परम पुरुषार्थ शिरोमणि ब्रज जातीय प्रेम लाभ होता है, यही प्रेमावतार भगवान श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुजी का मत या सिद्धान्त है और इसी मत में ही अपना सर्वश्रेष्ठ आदर या विश्वास है।

श्रीश्री वृन्दावन माहात्म्य

श्रीवृन्दावन धाम

वृन्दावनानां विलसद्वनानां वैकुण्ठकुण्ठिकर वैभवानाम्।
वृन्दावनं नाम वनं गुणश्रीवृन्दावनं तत् कतमच्चकास्ति॥

श्रीयुधिष्ठिर महाराज ने श्रीकृष्ण के पौत्र बज्रनाभ को मथुरा का राज्य एवं अपने पौत्र परीक्षित को हस्तिनापुर का राज्य सौंपकर उनका राज्याभिषेक किया और इसके पश्चात् परलोक गमन किया। तदुपरांत एकबार राजा परीक्षित मथुरा पधारे, राजा बज्रनाभ ने उनका भव्य स्वागत किया और फिर प्रणाम करके निवेदन किया—"हे तात! यद्यपि मैं मथुरा जनपद पर राज्यासीन हूं तथापि मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं एक निर्जन वन में ही निवास करता हूँ।" राजा बज्रनाभ का यह कथन सुनकर महाराज परीक्षित ने उनका भ्रम दूर करने हेतु गोप कुल के पुरोहित शांडिल्य ऋषि का आह्वान किया। शांडिल्य ऋषि के आगमन पर उन्होंने दोनों राजाओं से कहा, "हे नृपगण! आप लोग एकाग्रचित्त होकर बृज भूमि के रहस्य का श्रवण करें। इस भूमि में अतीत

से परब्रह्म का स्वरूप सर्वव्याप्त है, इसीलिये इसे ब्रज भूमि कहा गया है एवं यह सदा आनन्दमयी है, अविनाशी है एवं मुक्तिदायक है। यहाँ काल व प्रलय के विकार का कोई प्रभाव नहीं है। हे महाराज बज्रनाभ आप मेरे आदेश अनुसार श्रीकृष्ण को विभिन्न लीलाओं के अनुरूप यहाँ पर अनेक गाँव व नगरों की स्थापना करिये जिसके फलस्वरूप आपकी समस्त अभिलाषायें पूर्ण होंगीं।"

राजा बज्रनाभ ने शांडिल्य ऋषि के आदेशानुसार आनन्द सहित समस्त ब्रजमंडल का भ्रमण किया और श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित समस्त क्रीड़ास्थलियों को प्रगट किया। तदानुसार उन्होंने कहीं गाँव, कहीं नगर, कहीं कुँआ एवम् कहीं मूर्ति स्थापना का कार्य सम्पादन किया। परन्तु यह सब स्थान क्रमशः लुप्त से हो गये।

वृन्दावन धाम व इसके निकटवर्ती स्थित तीर्थों की कथा सब लोग प्रायः भूल ही से गये थे। इसी बीच कलियुग पावनावतार स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु बालक, वृद्ध, स्त्री, जीव व जन्तु सभी को प्रेम देकर कृतार्थ करते करते श्रीबलभद्र भट्टाचार्य की प्रेरणा से वृन्दावन धाम में पधारे। उन प्रेम पुरुषोत्तम के प्रकाश से श्रीकृष्ण लीला भूमि का सौन्दर्य हजार गुना प्रकाशित हुआ। उनके दर्शन से श्री वृन्दावन के पशु, पक्षी, मोर, जीव व जन्तु सभी प्रेम में विभोर होकर नृत्य करने लगे।

श्रीचैतन्य महाप्रभु के चरणों के स्पर्श से श्रीवृन्दावन की भूमि अपने को कृतार्थ मानने लगी। इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रज मंडल का परिभ्रमण करते हुये उन्होंने राधाकुण्ड इत्यादि पवित्र तीर्थ

स्थानों का अन्वेषण कर लोगों को दर्शन किया। अन्य शब्दों में यह कहना उचित होगा कि श्रीवृन्दावन श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा ही पुनः प्रकट किया हुआ धाम है। उन्होंने ही इसकी नींव स्थापित की है। श्रीरूप गोस्वामी व सनातन गोस्वामी ने इसी नींव पर अपूर्व प्रासाद का निर्माण किया। वर्तमान वृन्दावन उन्हीं की देन है। श्रीचतन्य महाप्रभु के आदेशानुसार गोस्वामी गणों ने समस्त ब्रजभूमि का परिभ्रमण करके एवं हिन्दू शास्त्रों का अध्ययन करके बड़े ही प्रयत्न के साथ समस्त लुप्त तीर्थ स्थानों का पुनः उद्धार किया। तीनों लोकों के सभी तीर्थ स्थानों में यह वृन्दावन ही सबसे अधिक धन्य है। तुलसी देवी का यह वन सर्वप्रकार से सुरक्षित है। भगवान शंकर यहाँ के क्षेत्रपाल हैं। सर्व मनोहर लीला माधुर्य युक्त श्रीब्रजेन्द्रनंदन गोप गोपियों सहित नित्य अपनी लीलाओं में मगन हैं। सभी पापियों को तारने वाला यह रमणीय वन देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। देवता लोग भी यहाँ सूक्ष्म रूप से निवास करते हैं। यह वन सब प्रकार के दुःखों को हरने वाला, जीव मात्र को मुक्ति देने वाला. समस्त धामों को अपने में संजोने वाला तथा समस्त तीर्थों को अपने में समेटे हुये है। यह वन वैकुण्ठ के समस्त वैभवों से भी अधिक वैभवशाली तथा गुणी व शोभा युक्त है। इसके चारों ओर श्रीकृष्ण की प्रेयसी यमुना देवी झिलमिलाती व कलकल ध्वनि करती हुई, समस्त ब्रह्माण्ड को भेदती हुई, गोलोक धाम में भ्रमण करती हुई सेवा में निरन्तर यहाँ सुशोभित है। श्रीयमुना सूर्य तनया हैं। सूर्य जिस प्रकार सर्व धर्मों के प्रकाशक हैं उसी प्रकार श्रीयमुना भी सर्व धर्मों की प्रकाशिका व पालिका हैं। सूर्य १२ मासों में विभिन्न १२ नामों से शास्त्र विश्रुत हैं। अतः श्रीराधा कृष्ण के रास विलास की सुख द्रष्टा अपनी पुत्री श्रीयमुना की अलौकिक

छटा का दिव्य दर्शन करने सूर्य मानों १२ घाटों का रूप धारण कर श्रीवृन्दावन धाम में उपस्थित हैं।

श्री यमुना जल प्रवाह स्वरूप यहाँ परमतीर्थ होने की द्योतक हैं। यह मथुरा मंडल में अनेक प्रकार की लीला भंगिमा करती हुई प्रवाहित हो रही है। श्रीबामन अवतार के चरणों मे गंगा जी अवतरित हुई हैं एवं श्रीयमुना जी श्रीकृष्ण के प्रेयसी के रूप में मधुपुर, गोकुल व द्वारका में जल प्रवाह स्वरूप विद्यमान हैं अर्थात श्रीयमुना श्रीकृष्ण भक्ति रस को निरन्तर प्रवाहित करती हैं। श्रीयमुना का जल गंगा जल से कहीं अधिक महिमा शालिनी है। श्रीयमुना जल के स्पर्श एवं आचमन मात्र से अखंड पापों व शोकों का नाश होता है एवं भक्ति उत्पन्न होती है तथा इस प्रकार जीव परम आनन्द को प्राप्त होकर इस भवसागर से तर जाता है। श्रीकृष्ण ने गौ, गोप एवं गोपियों के साथ नित्य इसी यमुना तट पर अपनी समस्त लीलायें की हैं। अतः श्रीयमुना जी के दर्शन सेवन, स्नान, स्पर्श व पूजन करने से जीव धन्य होता है। श्रीयमुना महारानी श्रीकृष्ण की लीलाओं की एक मात्र साक्षी व प्रमाण हैं।

"कालिन्दिजा कूल सदा विमोहै।
विचित्र वृन्दावन धाम सोहै।।
जहाँ तहाँ मत्त मिलिन्द गुंजैं।
मनोहरा धीर समीर कुंजैं।।१।।
मयूर पारावत मञ्जू बोलैं।
सुआ सदाँ कोकिल कण्ठ खोलें।।
बसन्त वृन्दावन नित्य राजैं।
बिलोक गोलोक त्रिलोक लाजैं।।२।।

श्रीवृन्दावन के सभी वृक्ष भगवान के अवतारों के तुल्य शक्तिशाली, रमणीय व चिन्मय हैं। श्रीवृन्दावन सर्व धाम मय, सर्व देवतामय, सर्व तीर्थमय एवं सब वैकुण्ठ वासियों के चित्त को हरने वाला है।

"श्रीब्रज वृन्दाबन" श्रीराधा कृष्ण की निकुंज लीलाओं की प्रधान रङ्गस्थली भूमि है। अतः यह भूमि पूर्णानन्द रस का आश्रय स्थल है। श्रीकृष्ण की चरण-रज का स्पर्श होने के कारण शास्त्रों में वृन्दावन इस भूतल पर प्रभु का नित्य धाम कहा गया है।

सतयुग में केदार नामक राजा की पुत्री वृन्दा ने श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिये दीर्घकाल तक इसी पावन भूमि में तप किया था। वृन्दा देवी की तप स्थली होने के कारण भी यह वृन्दावन कहा जाता है।

"वाहू च द्वौ समाख्यातौ वृन्दारण्य महावनौ" से स्पष्ट है कि ब्रजभूमि रूप श्रीकृष्ण प्रभु की महावन तथा वृन्दावन दो भुजाएँ हैं अर्थात मथुरा में प्रवाहित होते हुये श्री यमुना जी ने ब्रज के पूर्वांचल और पश्चिमांचल दो विभाग किये। जिनमें पूर्वांचलस्थ महावन तथा पश्चिमांचलस्थ वृन्दावन को श्रीकृष्ण की दो भुजा कहा गया है।

"वृन्दावनं सम्प्रविश्य सर्व काल सुखावहम्।
गोप गोपी गवां मध्ये मुनि शिष्योपशोभितम्॥"

तभी वृन्दावन को श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीरामानुज, श्रीनिम्बार्क, श्रीमाध्वाचार्य, श्रीविष्णु स्वामी, श्रीबल्लभाचार्य इत्यादि बिभूतियों ने अपना भक्ति केन्द्र चुना। श्रीपद्मपुराण के अनुसार श्रीनारद को श्रीयमुना तट पर ज्ञान-वैराग्य पुत्रों

सहित भक्ति देवो के दर्शन इसी वृन्दावन में हुये। यहों से भक्ति और ज्ञान वैराग्य के कष्ट निवारणार्थ नारद जी द्वार श्रीमद् भागवत के सप्ताह-परायण का उद्योग आरम्भ हुआ। इसी स्थल को श्री स्वामी हरिदास, हित हरिवंश ने अपना आराधना केन्द्र चयन किया। और भी न जाने कितने कितने शुक-सम्प्रदाय, राम स्नेही, कबीर पंथी, दादू पंथी, उदासीन, परनामी सम्प्रदाय के आचार्यों की बैठक, मठ, मन्दिर सर्वाधिक संख्या में वृन्दावन में ही मौजूद हैं। भारत के सभी प्रान्तों के श्रीकृष्ण भक्त प्रवरों के आदि स्थल और समाधियाँ भी यहीं विद्यमान हैं। यहीं पर श्रीकृष्णाह्लादिनी शक्ति परम्बा श्रीराधा अधीश्वरी स्वरूप हैं। यत्र-तत्र-सर्वत्र उनकी सहचरी गणों की अगणित कुञ्ज-निकुञ्जें हैं। न जाने कितने भक्त जनों ने उपासना द्वारा यहाँ श्रीकृष्ण और श्रीराधा रानी का रास विलास अपने अन्तर्चक्षुओं द्वारा देखा है।

"हे राधे वृषभानु भूपतनये हे अनंत चंद्र प्रभे।
हे कान्ते कमनीय कोकिल रवे वृन्दावनाऽधीश्वरि॥
हे मत्प्राण परायणे च रसिके दामोदर प्रेयसी।
मत्स्वान्ताब्ज वरासने विशमुदा मान्दीनमानन्दय॥

आज भी श्री बृन्दावन के कण कण, रज, जल, वायु तथा प्रति वृक्ष के पात पात से श्रीराधा कृष्ण नाम ध्वनि प्रतिध्वनित ही नहीं अपितु प्रतिदर्शित होती है :—

"वृन्दावन सौ बन नहीं नंद गाम सौ गांव।
वंशीवट सौ वट नहीं, कृष्ण नाम सौ नाम॥
ब्रज चौरासी कोस में, चार गाँम निजधाम।
वृन्दावन और मधुपुरी, बरसानौ नन्दगाम॥

वृन्दावन के वृच्छ को, मरम न जानै कोय।
डारि डारि अरु पात पै, राधे राधे होय॥
रमनरेत लोट्यौ नहीं, कियौ न यमुना पान।
तौ तैंने जान्यौ कहां, ब्रज कौ तत्व महान॥

यदि कोई व्यक्ति श्रीवृन्दावन में एक दिन ही निवास करे तो उसमें श्रीकृष्ण भक्ति उत्पन्न होती है। यहाँ पर घर में, निर्जन स्थान में, श्मशान में, शून्य में, सर्प के काटने से, पशु द्वारा भाड़न होने पर, अग्नि दाह में, जल मग्न होकर जो प्राण त्याग करते हैं वे विष्णुलोक में जाते हैं।

यहाँ पर जिन्होंने एक बार श्री गोविन्द देव जी के दर्शन कर लिये तो पृथ्वी पर उनका जीवन कृतार्थ हो गया। जो गति एक पुन्यात्मा की होती है वह उनकी होगी। भगवान श्रीकृष्ण अनादिकाल से विभिन्न मूर्तियों में जगह जगह विराजमान हैं। सभी दर्शनीय स्थानों का नाम व परिचय देना सम्भव नहीं है अतः यहां केवल उन्हीं भगवत् मूर्तियों व स्थानों की चर्चा की गई है जिनका दिग्दर्शन गोस्वामी गेणों ने किया है अथवा जो प्राचीन महत्तमपूर्ण हैं।

संक्षेप में यह लिखना असंगत नहीं कि "धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र"

अथवा

"नित्यां में मथुरां विद्धि वनं वृन्दावनं तथा", यहाँ श्रीकृष्ण व राधारानी तथा उनकी अनन्य भक्ति का नित्य निवास है। यह स्थल मन्दिरों का नगर है। ब्रह्म मुहूर्त की बेला से मध्य रात्रि तक कोई स्थल ऐसा नहीं जहां भगवन्नाम संकीर्तन की ध्वनि सुनाई न दे। प्रतिपल, प्रतिक्षण श्रीराधा

कृष्णाराधना ही यहां का प्रधान लक्ष्य है। यहाँ के भक्त जन मोक्ष की अपेक्षा प्रभु के नित्य सानिध्य व सेवा की ही कामना करते हैं।

श्रीवृन्दावन के प्रमुख मन्दिर

(१) श्री श्रीराधागोविन्द देव जी (२) श्री श्रीराधा गोपीनाथ जी (३) श्रीश्रीराधा मदन मोहन जी (४) श्रीश्री साक्षी गोपाल जी (५) श्रीश्रीराधारमण जी (६)श्रीश्रीगोकुलानन्द जी (७) श्रीश्रीराधामाधव जी (८) श्रीश्रीराधा दामोदर जी (९) श्रीश्रीराधा श्याम सुन्दर जी (१०) श्रीश्रीराधावल्लभ जी (११) श्रीश्रीबांके बिहारी जी (१२) श्रीश्रीगोपेश्वर महादेव (१३) श्रीश्रीबनखंडी महादेव (१४) पिसिमा का श्रीनिताई गौर (१५) श्रीश्री गौरांग महाप्रभु (१६) श्रीश्रीरंगनाथ मन्दिर (१७) श्रीलालाबाबू का श्रीश्रीकृष्णचन्द्र मन्दिर (१८) श्री ब्रह्मचारी मन्दिर (१९) श्रीशाह जी मन्दिर (२०) श्रीजमाई विनोद (२१) श्रीगौड़ीय मठ (२२) इस्कोन का हरे राम हरे कृष्ण मन्दिर (२३) कात्यायिनि जी (२४) पागल बाबा मन्दिर

श्रीश्रीराधागोविन्द देवजी

दोव्यद्वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ ॥
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्द देवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि

श्रीरूप गोस्वामी के प्रेम में आकृष्ट होकर प्राचीन मन्दिर से संलग्न गोमा टीला से श्रीगोविन्द देव जी की मूर्ति प्रगट हुई थी। एक बार श्रीरूप गोस्वामी ब्रह्मकुण्ड के तट पर अपने भजन में लीन थे कि अचानक एक गोप बालक ने उन्हें एक कुल्हड़ में दूध लाकर दिया और तेजी से चला गया।

श्रीश्रीराधागोविन्द देवजी

दीव्यद्वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा श्रील गोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥

उस बालक के दिव्य सौन्दर्य को देखकर गोस्वामी जी मुग्ध हो गये। इसके पश्चात उन्होंने इस बालक का दिव्य स्वरूप व दूध देने का कारण चिन्तन करते हुये वे दूध पीने लगे और उन्हें दूध का स्वाद ऐसा लगा कि वह अमृत पी रहे हां। तदुपरान्त वह प्रेम में ऐसे विभोर हो गये कि उन्हें फिर वह कुल्लढ़ भी नहीं दिखाई दिया। गोस्वामी जी ने बालक का दिव्य स्वरूप, अमृतमय दूध का स्वाद और मिट्टी के कुल्लढ़ का सहसा गायब हो जाना आदि घटनाओं पर विचार किया कि यह काम श्रीनन्दनन्दन गोविन्द द्वारा ही किया जा सकता है। तब वह उनके दर्शन करने की उत्कंठा से कातर भाव से रोने व विलाप करने लगे। उनके निरन्तर विलाप से आकृष्ट होकर भक्त बत्सल भगवान श्रीगोविन्द ने उन्हें स्वप्न में आदेश दिया कि वे योगपीठ में मूर्ति रूप में मिट्टी के नीचे स्थित हैं जहाँ कि एक गाय आकर खड़ी होगी और उसके थन से दूध गिरेगा—तुम उस स्थान को खोद कर मुझे निकालो और मेरी सेवा करो। स्वप्नादेशानुसार श्रीरूप गोस्वामी ने योगपीठ में जाकर देखा कि एक कपिला गाय खड़ी है और उसके थन में से दूध की धारा बह रही है, तदुपरांत उन्होंने वहाँ की मिट्टी को खोदना प्रारम्भ किया और ललित त्रिभंग श्रीगोविन्द देव जी की मूर्ति प्राप्त की। इसके पश्चात् उन्होंने उस मूर्ति का अभिषेक करके सिंहासन पर स्थापना की और स्वयं उनकी सेवा करने लगे।

श्रीपाद जीव गोस्वामी की प्रेरणा व प्रयत्न से राजा मानसिंह ने सात मंजिल का बहुत उच्च शिखा युक्त श्रीगोविन्द देव जी का एक लाल पत्थर का भव्य मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर के निर्माण काल में एक अद्भुत दैव घटना घटित हुई।

मन्दिर के बीचों बीच जगमोहन के ऊपरी हिस्से में एक सहस्त्र दल युक्त एक विशिष्ट कमल का फूल आज भी विद्यमान है जो कि पुनः एक दैवी प्रेरणा से बना और यह सभी दर्शनार्थियों को नैनसुख प्रदान करता है।

किंवदंती है कि श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ व श्रीमदन मोहन जी की मूर्तियों का निर्माण श्रीकृष्ण के प्रपौत्र राजा बज्रनाभ ने उत्तरादेवी के आदेशानुसार निर्माण करवाया था। उत्तरादेवी ने मूर्तियों का दर्शन करके कहा था— श्रीगोपीनाथ जी का वक्षस्थल निःसंदेह श्रीकृष्ण की तरह बना है एवं श्री गोविन्द देव जी का मुखारविन्द व श्रीमदनमोहन जी का चरण सब मिलकर श्रीकृष्ण के साक्षात अनुरूप है। भक्तगण नित्य ही एक बार इस अलोकिक विग्रह मूर्ति का दर्शन करने की अभिलाषा रखते हैं।

श्रीजीव गोस्वामी की सद्भावना के बाद में उड़ीसा से श्रीराधा रानी की मूर्ति वन्दावन में लाकर श्रीगोविन्द देव के बाँई ओर सुशोभित की गई। कहावत है कि दक्षिण देशवासी श्रीवृषभान नामक ब्राह्मण परम वैष्णव थे। वे बड़े प्रेम के सहित श्रीराधा मूर्ति की सेवा पूजा करते थे बाद में उस मूर्ति को उनकी मृत्युपश्चात गाँव वालों ने पुरी के राजा प्रताप रुद्र के पास भेज दिया। उस राजा ने स्वप्नादेशानुसार श्रीराधा मूर्ति को श्रीजगन्नाथ देब की वाँई ओर विराजमान किया और वहाँ के सेवकगण उस मूर्ति को श्रीलक्ष्मी देवी रूप में पूजने लगे। उन्हीं दिनों श्रीरूप गोस्वामी के हृदय सर्वस्व श्रीगोविन्द देव जी वृन्दावन में प्रगट हुये थे। एक रात श्रीराधा जी ने राजा प्रतापरुद्र के पुत्र पुरुषोत्तम को एवं श्रीगदाधर गोस्वामी

के एक शिष्य को स्वप्न दिया और कहा कि मेरे प्राणनाथ श्रीनन्द नन्दन श्रीवृन्दावन में प्रगट हुये हैं मैं एक भक्त के वशीभूत होकर उड़ीसा आई हूँ परन्तु मुझे शीघ्रातिशीघ्र, ब्रजभूमि में भेज दो मैं लक्ष्मी देवी नही हूँ। श्रीराधिका के स्वप्नादेशानुसार राजा पुरुषोत्तम देव ने श्रीगदाधर पंडित के शिष्यों द्वारा श्रीराधारानी की मूर्ति को वृन्दावन भेज दिया। उन लोगों ने बड़े भव्य समारोह का आयोजन कर श्रीगोविन्द देव जी की बाँई ओर श्रीराधा मूर्ति को प्रतिष्ठित किया। वर्तमान समय में वह मूर्ति जयपुर स्थित श्रीगोविन्द देव जी की बाँई ओर शोभित हैं।

उक्त गोस्वामी गणों के परलोक गमन के बाद दस्यु कालापाहाड़ के वृन्दावन में विध्वंस की आशंका से जयपुर के राजा यहाँ से श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ श्रीमदन मोहन, श्री राधामाधव, श्रीराधा दामोदर व श्रीराधाविनोद को मूर्तियों को अपने जयपुर राज्य में ले गये और वहाँ उनकी स्थापना की। उन्हीं दिनों श्रीराधारमण, श्रीराधाबल्लभ एवं श्रीबाँके बिहारी जी की मूर्तियों को भी यहाँ से बाहर ले जाने की बात हुई थी किन्तु मन्दिरों के सेवकों ने इन मूर्तियों को ब्रज के बाहर ले जाने के लिये सम्मत नहीं हुये और इन मूर्तियों को श्रीवृन्दावन में रखा गया। जिन मूर्तियों को यहाँ से जयपुर ले जाया गया था उनमें श्रीमदनमोहन जी करौली में, श्रीराधा माधव जयपुर निकट घाटी में, श्रीगोपीनाथ, श्रीराधाविनोद व श्रीराधा दामोदर व श्रीगोविन्द जी जयपुर में बड़े ही सुन्दर ढंग से सेवा में विराजमान हैं। वृन्दावन में हमला होने पर मन्दिरों में जब कोई मूर्तियाँ नहीं मिली तो काला पाहाड़ ने

यहाँ के विशिष्ट मन्दिरों के ऊपरी हिस्सों को तुड़वा दिया। उसके हमले व विध्वन्स के पश्चात जब वह यहाँ से चला गया तो उन मन्दिरों के सेवकों ने उन प्राचीन मन्दिरों के समीप संलग्न नये मन्दिरों का निर्माण किया और उनमें मूर्तियों की स्थापना की। वही गोविन्द देव जी प्राचीन मन्दिर के साथ संलग्न नये मन्दिर में नित्य विहार करने के निमित्त विराजमान हैं।

जिन लोगों ने जीवन में मात्र एक बार वृन्दावन में वृन्दावनाधिदेव ललित त्रिभंग अद्वितीय रूप माधुर्य युक्त श्रीगोविन्द देव जी के दर्शन किये हैं वे कृतार्थ हैं एवं वे कभी यमलोक नहीं गमन करते, इसमें कोई संदेह नहीं है श्रीगोविन्द देव जी के इस नये मन्दिर का निर्माण करवाया है श्रीनन्दकुमार बसु ने। प्राचीन मन्दिर के पूर्व में श्रीरंगनाथ जी के मन्दिर में गजराज कुण्ड स्थित है जिसमें श्रावणी पूर्णिम के अवसर पर गजेन्द्र मोक्ष लीला प्रदर्शित होती है। श्रीगोविन्द देव जी मन्दिर के उत्तरी पूर्व में ब्रह्मकुण्ड स्थित है। इस पावन रमणीय महातीर्थ में प्राण त्याग करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। इस कुण्ड के पूर्वीय कोने में तपस्यारत ब्रह्माजी दर्शनीय हैं तथा चौंसठ महन्तों की समाधियाँ स्थित हैं। यहां श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी तथा छह चक्रवर्ती व आठ कविराजों की समाधि भी स्थित हैं। इन समाधियों के उत्तर में 'वेणु कूप' स्थित है। एक बार श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ मल्लयुद्ध किया था, उस समय सभी प्यासे सखाओं ने श्रीकृष्ण से पानी माँगा उस समय श्रीकृष्ण ने अपनी बाँसुरी से मिट्टी में फूँक मारी और पाताल से पानी की धारा फूट निकली, सखाओं बड़े ही हर्ष

श्रीश्रीराधागोपीनाथ जी

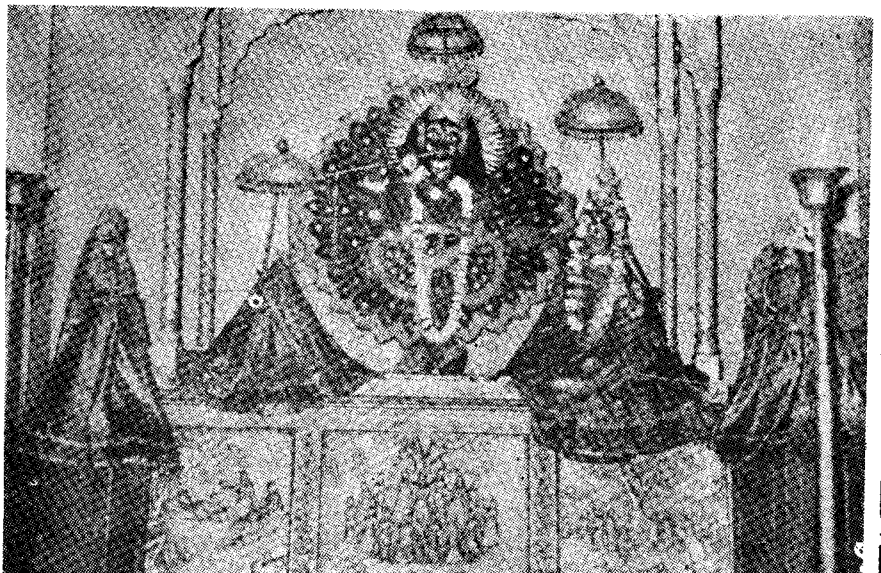

श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवट तटस्थितः।
कर्षन् वेणस्वनैर्गोपी गोपीनाथः श्रियेऽस्तुनः ॥

उल्लास के समय जल से अपनी प्यास बुझाई तथा श्रीकृष्ण से आलिंगन किया। तब से यह कुँआ 'वेणु कूप के नाम से प्रसिद्ध है। पुराने मन्दिर के विभिन्न कोनों में श्रीपाताल देवी या योगमाया देवी व वृन्दादेवी विराजमान हैं। तथा मन्दिर के सामने दक्षिण में श्रीकृष्ण बलराम व बाई ओर श्रीराधा गोपाल जी सुशोभित हैं।

श्रीश्रीराधा गोपीनाथ जी

श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवट तट स्थितः।
कर्षन् वेणुस्वनै र्गोपी गोपीनाथः श्रियेऽस्तुनः॥

श्रीगदाधर गोस्वामी के शिष्य श्रीमधु पंडित नवद्वीप में श्रीकृष्ण गुण गान में दिन रात निरन्तर विभोर रहते थे कि एक दिन किसी भक्त के मुँख से श्रीकृष्ण के गुण, रूप व लीला माधुर्य का श्रवण करके श्रीकृष्ण के दर्शन के लिये व्याकुल हो उठे और अकस्मात गृह त्याग करके पागलों की तरह वृन्दावन आगमन किया और केशीघाट पर श्रीपरमानन्द भट्टाचार्य के निकट रहने लगे। किन्तु हृदय में श्रीकृष्ण दर्शन की निरंतर लालसा होने से वे पागलों की तरह सारे वृन्दावन में घूमने लगे। इसी प्रकार भ्रमण करते करते एक दिन वंशीवट के किनारे बैठकर विलाप करते करते वे बेहोश हो गये। भक्तवत्सल श्रीभगवान व्याकुल क्रन्दन सुनकर अपने को और नहीं रोक पाये, और ललित त्रिभंग स्वरूप में वंशी बजाते बजाते श्रीगोपीनाथ जी के रूप में उनको दर्शन दिया। प्यासे चकोर की तरह प्रभु के रूपामृत पान करके अतृप्त होकर उन्होंने प्रार्थना की कि हे प्रभु आप इसी प्रकार मेरे निकट

सर्वदा रहिये और मुझे अपने से वंचित न करिये। भक्त वत्सल श्रीभगवानने श्रीमधु पंडित से कहा मधु! मैं तुम्हारे निकट सर्वदा इसी रूप में रहूँगा परन्तु यह कलियुग है हरेक के समक्ष मेरे इस रूप में प्रकट होना सम्भव नहीं, सबके लिये मैं मूर्ति रूप में दर्शन दूँगा यह कह कर श्रीगोपीनाथ मूर्तिरूप में परिवर्तित हो गये श्रीमधु पंडित ने उनका आलिंगन किया एवं श्रीराधिका की मूर्ति के साथ श्रीराधा गोपीनाथ नाम से उन मूर्तियों को यहाँ स्थापित किया। तब से श्रीराधिका गोपीनाथ जी के बाँई ओर विराजमान हैं। उसके पश्चात खड़ दह श्रीपाट से श्रीनित्यानन्देश्वरी जाह्नवा देवी ने श्रीवृन्दावन आगमन किया तब श्रीरूप सनातन, गोपाल भट्ट व जीव गोस्वामी गणों ने उनकी भक्ति वंदना की और उनको साथ लेकर श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ व श्रीमदन मोहन जी के दर्शन कराये व परिक्रमा की श्रीमती जान्हवा देवी ने अपने श्रीमुख से इन मूर्तियों की महिमा का वर्णन करके गोस्वामी गणों को आनन्दित किया इसके पश्चात् श्रीरामाई प्रभु के आग्रह पर वे श्रीरूप सनातन व जीव गोस्वामी गणों को साथ लेकर श्रीराधाकुण्ड में श्रीरघुनाथ दास गोस्वामी को दर्शन देते हुये श्रीकामवन पहुंचे। कामवन में श्रीगोविन्द जी के दर्शन करके उन्होंने श्रीगोपीनाथ जी के दर्शन किये और आनन्दित हुई। माता जान्हवा ने श्रीगोपीनाथ जी के निमित्त अपने हाथ से रसोई बनाकर भोग समर्पित किया। तदुपरांत श्रीरूप सनातन व प्रमुख गोस्वामी गणों ने व्याकुल होकर बड़े भाव में श्रीगोपीनाथ जी के सम्मुख संकीर्तन आरम्भ किया और माता जान्हवी ने संध्या आरती आरम्भ की। आरती की समाप्ति र परिक्रमा करके जैसे ही वह बाहर आने को हुई कि श्रीगोपी-

नाथ जी ने उनका आँचल पकड़ कर खींचा और देवी को प्रेम पूर्वक अपनी बाँई ओर बिठा लिया। माता जान्हवी उसी समय वही मूर्ति रूप में समाधिस्थ हो गई। तब से श्रीगोपीनाथ जी के बाँई ओर माता जान्हवी जी की मूर्ति सुशोभित है तथा दाँई ओर राधारानी मूर्ति। वर्तमान में यह मन्दिर गोपीनाथ बाजार से संलग्न है तथा श्रीराधारमण मन्दिर के पूर्व में स्थित है। काला पाहाड़ के उपद्रव काल में श्रीगोपीनाथ जी जयपुर स्थानान्तरित हो गये थे तथा भगवत आदेशानुसार मन्दिर के सेवकों ने पुराने मन्दिर के उत्तरी भाग में श्रीगोपीनाथ जी के नवीन मन्दिर की स्थापना की, इस मन्दिर के पास में श्रीमधु पडित की समाधि स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण भी श्रीनन्दकुमार बसु ने करवाया था और उन्होंने अपने नाम को इस प्रकार सार्थकता प्राप्त की।

श्रीश्रीराधा मदनमोहन जी

जयतां सुरतौ पङ्गोर्ममन्द मतेर्गती।
मत् सर्वस्व पदाम्भोजौ राधामदन मोहनौ॥

श्रीपाद सनातन गोस्वामी जी की भक्ति से प्रसन्न होकर श्रीमदनमोहन जी मथुरा के चौबे रमणी के घर से आकर उनकी सेवा प्राप्त की। किंवदन्ती है कि बहुत पहले श्री वृन्दावन में किसी गृहस्थी का वास नहीं था। यहाँ हर तरफ जंगल ही जंगल था। अतः श्रीसनातन गोस्वामी भिक्षा के लिये मथुरा जाते थे। एक दिन किसी चौबे के घर में श्रीमदन मोहन को दर्शन करके उनके रूप लाबण्य को देखकर मोहित हो गये। उसी दिन से श्रीसनातन प्रतिदिन मथुरा जाकर

श्रीमदनमोहन जी के दर्शन करते फिर भिक्षा माँगकर वृन्दावन लौटते। चौबे को पत्नी स्वाभाविक प्रीति व वात्सल्य के साथ श्रीमदनमोहन की सेवा करती थी। परन्तु उनका आचार व्यवहार में उतनी पवित्रता नहीं थी इससे श्रीसनातन को दुःख हुआ। इस पर चौबिन ने आचार में कुछ पवित्रता दिखाई। परन्तु चौबे की पत्नी स्वाभाविक प्रीति व वात्सल्य के कारण हर तरफ ध्यान नहीं रख सकी। एक दिन चौबे के

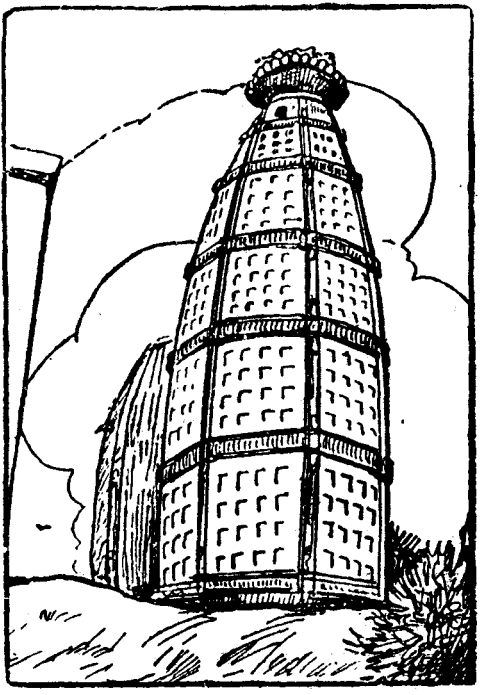

श्रीमदनमोहन जी का पुराना मन्दिर

घर जाकर श्रीसनातन गोस्वामी ने देखा कि श्रीमदनमोहन चौबे के बालकों के साथ बैठकर भोजन कर रहे हैं और तरह तरह की चपलता में व्यस्त हैं। तब श्रीसनातन गोस्वामी ने आश्चर्य चकित होकर चौबे की स्त्री को प्रणाम किया और उन पर अपनी दोष दृष्टि के लिये क्षमा याचना की व अपने को धिक्कारा। वस्तुतः जहाँ भावना की शुद्धि है वहाँ आचार विचार व पवित्रता का कोई स्थान नहीं, शुद्ध भावना हेतु ही आचार व्यवहार का अनुष्ठान होता है। तत्पश्चात श्रीसनातन गोस्वामी ने चौबे की पत्नी से श्रीमदन मोहन के झूठे भोजन की याचना की। इस पर चौबे की पत्नी ने प्रसन्न होकर श्रीमदन मोहन का भोजनावशेष उन्हें दे दिया जिसे पाकर वे पुलकित हो उठे और प्रेम में विभोर होते हुये श्रीवृन्दाबन लौटे।

एक रात स्वप्न में श्रीमदन मोहन ने श्रीसनातन गोस्वामी से कहा कि तुम मुझे मथुरा से यहाँ ले आओ और केवल जल व तुलसी द्वारा मेरी सेवा करो। इधर चौबे की पत्नी को श्रीमदन मोहन ने बताया कि तुम मुझे श्रीसनातन गोस्वामी के हाथ में सौंप दो।

चौबे की पत्नी से प्राप्त सनातन गोस्वामी को श्रीमदनमोहन ही श्रीअद्वैत आचार्य के प्रकटित श्रीमदनगोपाल थे वह श्रीअद्वैत प्रकाश ग्रन्थ में कथित है। श्रीअद्वैत प्रभु अपने माता पिता के स्वर्गवास के पश्चात गया में उनका पिंड देकर वृन्दावन-गोवर्धन तीर्थ यात्रा को आये और यहाँ की शोभा देखकर पुलकित हो उठे। रात्रि में उन्होंने एक वट वृक्ष तले विश्राम किया और स्वप्न में उन्होंने बंशी बदन

श्रीभुवनमोहन का दिव्य स्वरूप दर्शन किया। तब श्रीकृष्ण ने उनसे कहा हे अद्वैत सुनो। तुम मेरे एक अंश गोपीश्वर शिवस्वरूप हो और जीव उद्धार के लिये तुम्हारा अवतार हुआ हैं। यमुना किनारे श्रीमदनमोहन नामक एक दिव्य मूर्ति थोड़ी मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है, इस मूर्ति की सेवा कुब्जा ने की थी। डाकुओं के डर से इस मूर्ति को छुपा दिया गया था। गाँव से अनेक लोगों को लाकर मुझे बाहर निकालो और जगत के कल्याण के लिये मुझे विराजित कर सेवा करो। श्रीअद्वैत ने गांव से लोगों को बुलाकर स्वप्नादेशानुसार तथा कथित यमुना किनारे स्थान को फावड़ों से खोद खोद कर श्रीमदन मोहन जी की मूर्ति को ढूंढ़ निकाला और उसे विधिवत वट वृक्ष के नीचे झोंपड़ी में प्रतिष्ठित किया और सेवा के लिये एक वैष्णव ब्राह्मण को नियुक्त किया। इसके पश्चात श्रीअद्वैत अपनी ब्रज परिक्रमा में निकल पड़े। इसी अवसर में ठाकुर जी की महत्ता को नष्ट करने के उद्देश्य से दुष्ट यवनों ने अद्वैत वट पर हमला किया, म्लेच्छों के डर से श्रीमदन मोहन फूलों में गोपाल रूप में छुप गये। इधर जब सेवक कुटिया में आया तो वहाँ श्रीमदनमोहन को न पाकर हाहाकार कर उठा तथा बिलाप करता हुआ बोला हे प्रभो मेरे अपराध की वजह से आप मेरे प्रति निर्दय होकर छोड़कर चले गये हैं। इसी बीच श्रीअद्वैत परिक्रमा से वापस आये और घटना को सुनी तो वो भी बिलाप करने लगे और अनशन करके वट वृक्ष के नीचे सो गये। तब श्रीमदनमोहन मधुर स्वर में बोले—अद्वैत उठो म्लेच्छों के डर से मैं गोपाल रूप में पुष्पों में छुपा हुआ था। स्वप्न देखते ही श्रीअद्वैत शीघ्र मन्दिर में गये और फूलों के बीच में गोपाल मूर्ति पाकर आनन्द बिभोर

हो गये फिर गोपालजीको फल व जल समर्पित किया और फिर स्वयं प्रसाद लिया। तदुपरान्त उन्होंने उस ब्राह्मण सेवक को यमुनातटपर पाकर ठाकुरजी को जगाकर पूजा करनेको कहा। ब्राह्मण ने कहा प्रभु ठाकुर जी तो मन्दिर में नहीं हैं। इस पर प्रभु ने कहा कि ठाकुर जी सेवक को कभी त्याग नहीं करते, अतः शीघ्र मन्दिर में जाओ और श्रीमदन गोपाल जी की पूजा करो। विप्र ने शीघ्र मन्दिर का द्वार खोला और ठाकुर जी को देखकर प्रेमाविष्ट हो गया और श्री मदन गोपाल जी की पूजा की। तब से श्रीमदन मोहन श्रीमदन गोपाल नाम से विख्यात हो गये। कुछ दिन पश्चात श्रीमदन गोपाल जी ने स्वप्न में कहा अद्वैत ! मेरी एक बात रखो, यहाँ पर दुष्टा का डर हैं, मथुरा से एक चौबे प्रातः काल यहाँ आयेगा तुम मुझे उसके हाथों सौंप देना। श्रीअद्वैत बोले हे मदन गोपाल आप तो मेरे हृदय सर्वस्व हैं, आपके बिना मैं कैसे जीवन धारण करूँगा। तब श्री मदन गोपाल हँसते हँसते बोले अद्वैत ! मैं हमेशा से ही तुम्हारा वशीभूत हूँ, तुम्हारे बिना मेरी लीला प्रभावशाली नहीं जहाँ तुम वहीं मैं, तभी तो मैं कहता हूँ कि तुम मेरी यह सिद्ध मूर्ति समर्पित करके चौबे भक्त की अभिलाषा पूर्ण करो। पहले की एक घटना तुमको याद दिला दें। विशाखा ने मेरी जो तसवीर बनबाई थी और जिसे देखकर श्रीराधिका मुग्ध हुई थीं, वह मूर्ति मुझसे अभिन्न है वर्तमान में वही मूर्ति निकुंज वन में है, तुम जाने से वह अवश्य पाओगे, यह फोटो लेकर तुम स्वदेश जाकर रस का प्रकाश करके जीवों का उद्धार करो। स्वप्न देखकर श्रीअद्वैत प्रभु प्रेमाविष्ट हो गये, इसी समय मथुरा के चौबे ने हाथ जोड़कर आकर प्रणाम किया और कहा, "प्रभो ! आप सर्वत्र हैं।

श्रीमदन गोपाल जी ने मुझे स्वप्न में आदेश दिया कि आपने कुब्जा के सेवित मूर्ति को प्रकट किया है वह मूर्ति मुझे समर्पण करके धन्य करिये। श्रीअद्वैत ने चौबे को वह मूर्ति समर्पित कर दिया और व्याकुल होकर रोते रोते सेवाकुंज गये जहाँ विसाखा जी द्वारा अंकित चित्र लेकर शान्तिपुर चले गये। श्रीसनातन गोस्वामी श्री मदन गोपाल जी का स्वप्नादेश पाकर दूसरे दिन चौबे की पत्नी को जाकर अपने स्वप्न के बारे में बताया जिसे सुनकर उसने रोते रोते श्री मदन मोहन जी को श्री सनातन गोस्वामी के हाथों सौंप दिया और मूर्छित हो गयी किसी प्रकार उनको सांत्वना देकर श्री सनातन श्री मदन मोहन जी को लेकर श्री वृन्दावन पधारे और एक ऊँचे टीले पर कुटिया बनाकर उनकी सेवा करने लगे। भिक्षा द्वारा जो आय होती थी उसकी मोटी रोटी बनाकर बिना नमक के उसका श्री मदन मोहन जी को भोग लगाते थे, फिर उसे स्वयं पा लेते। श्री मदन मोहन जी श्री सनातन गोस्वामी के साथ बात करते थे। एक दिन बिना नमक के भोजन अर्पण करने पर श्री मदन मोहन जी ने श्री सनातन से नमक की माँग की उस पर श्री सनातन ने कहा मैं एक बैरागी हूँ किससे नमक माँगने जाऊँगा। इस पर श्री मदन मोहन जी बोले यदि किसी तरह मैं नमक की व्यवस्था कर दूँ तो उस पर तुम्हें कोई ऐतराज तो नही है श्री सनातन ने इस पर कहा तुम यदि नमक ला दो तो मैं रसोई बना दूँगा।

इधर अमृतसर का एक व्यापारी एक नौका सामग्री लेकर मथुरा बेचने जा रहा था। वह नौका वृन्दावन के आदित्य टीले के निकट आकर यमुना नदी में इस पार अटक गई और बहुत प्रयत्नों के बाद भी नौका वहाँ से नहीं हिली।

तब वह सौदागर दुःख से बहुत व्याकुल हो उठा। तभी श्री मदन मोहन पास के जंगल से एक गोप बालक के रूप में प्रगट हुये और बोले तुम वृथा क्यों विलाप करते हो? इस टीला के ऊपर सनातन नामक एक साधु है तुम उसके पास जाओ, उस साधुकी इच्छा हो तो तुम्हारी नौका मुक्त हो सकती है नहीं तो अनेक चेष्टाओं के उपरान्त भी तुम सफल नहीं होगे। यह कह कर वह गोप बालक कहीं लुप्त हो गया। तब उस सौदागर ने श्री सनातन के पास जाकर सारी घटना कही। श्री सनातन ने श्री मदन मोहन की चतुराई का अनुमान लगा लिया, और सौदागर से बोले उस कुटिया के अन्दर बैठे एक शिशु ने तुम्हारी नौका को रोका है अतः उन्हीं के पास जाकर अपने दुःख का निवेदन करो। कुटिया के अन्दर जाकर सौदागर ने कातर होकर निवेदन किया—हे प्रभो! आपने जिस उद्देश्य से मेरी नौका को रोका है उसका मर्म मैं भली भाँति समझ गया हूँ। अतः मथुरा जाकर व्यापार में जो भी लाभ होगा वह सब मैं तुम्हारी सेवा में अर्पित करूँगा। ऐसा बोलते ही किसी ने आकर समाचार दिया कि नौका अब मुक्त हो गई है। मथुरा में जाकर सौदागर का माल कई गुने-लाभ पर बिका फिर सौदागर ने उस लाभ धन से श्रीवृन्दावन में श्री मदन मोहन जी का भव्य मन्दिर निर्मित करवाया और समस्त सेवा की सुव्यवस्था करके व्यापारी वर्ग के गौरव की रक्षा की। इस मन्दिर के पश्चिम दिशा में स्थित ऊँचा स्थान ही वही द्वादशा दित्य टीला है। यहीं से श्रीसनातन गोस्वामी ने बादशाह अकबर को श्रीवृन्दावन की शोभा दिखाई थी। इसी द्वादशादित्य टीलेपर ही श्रीसनातन गोस्वामी

के प्राण सर्वस्व श्री मदन मोहन जी का प्राचीन मन्दिर स्थित है। काला पहाड़ के उपद्रव के पहिले ही भगवत प्रेरणा से जब जयपुर के राजा सभी मूर्तियों को यहाँ से अपनी राजधानी ले जा रहे थे,तब राजस्थान के करौली नामक स्थान पर श्री मदन मोहन जी युत गाड़ी अचल हो गई और बहुत चेष्टा करने पर भी आगे नहीं बढ़ी तब भगवत प्रेरणा से श्री मदन मोहन जी की स्थापना वहीं मन्दिर बना कर हुई। बाद में सेवक गणों की प्रचेष्ठा से श्री मदन मोहन जी की विजय मूर्ति वृन्दावन में नये मन्दिर में हुई। इधर पुरी के राजा प्रताप रुद्र के पिता पुरुषोत्तम देव ने श्रीराधा व ललिता जी की मूर्ति बनवाकर वृन्दावन भेज दिया जिन्हें श्री मदन मोहन जी के क्रमशः बाँये व दायें सुशोभित किया गया।

इस नये मन्दिर के समस्त परिचालन व्यय का भार श्री नन्दलाल बसु ने ग्रहण करके संपूर्ण बंगाली जाति के गौरव की रक्षा की। प्राचीन मन्दिर के दक्षिण की ओर आदित्य टीला के निकट श्री सनातन गोस्वामी की समाधि स्थित है एवं प्राचीन मन्दिर के पूर्व की ओर श्री अद्वैत वट स्थित है। श्री अद्वैत प्रभु वृन्दावन आकर इसी वट वृक्ष तले विराजमान हुये थे। श्री अद्वैत प्रभु के प्रेमाकर्षण द्वारा यहाँ श्री मदन गोपाल जी प्रकट हुये थे एवं सेवाकुंज से विशाखा जी द्वारा अंकित चित्र लेकर अपने स्वदेश गये थे। यहीं सीता देवी व श्री अद्वैत प्रभु एवं श्री राधा गोपाल जी विराजमान हैं।

श्रीसाक्षी गोपाल जी

श्री गोविन्द देव मन्दिर के उत्तर पश्चिम भाग में श्री गोपाल जी का मन्दिर स्थित है। छोटे विप्र व बड़े विप्र के प्रेम में वशीभूत होकर श्री गोपाल जी इस स्थान से पुरुषोत्तम क्षेत्र में साक्षी देने गये थे एवं वर्तमान में श्री जगन्नाथ क्षेत्र से २० कि० मी० दूर श्री सत्यवादीपुर में विराजमान है। कहावत है कि उड़ीसा निवासी दो ब्राह्मण तीर्थ भ्रमण करने आये थे। बड़े ब्राह्मण वृद्ध थे और छोटे युवा। छोटे विप्र सदा सेवा द्वारा बड़े विप्र को सन्तुष्ट रखते थे। सेवा से संतुष्ट होकर बड़े विप्र ने अपनी कन्या का विवाह श्री गोपाल जी को साक्षी मानकर कर दिया। छोटा विप्र बड़े विप्र की तरह कुलीन ब्राह्मण नहीं था। उड़ीसा लौटने पर वहाँ बड़े विप्र के स्वजनों ने इस विवाह को स्वीकार नहीं किया। बड़े विप्र बड़ी समस्या में पड़ गये तब छोटे विप्र ने श्री गोपाल जी के उक्त विवाह के साक्षी होने की बात सबके समक्ष रखी। इस पर सभी स्वजनों ने कहा-- अच्छा यदि श्री गोपाल देव वहाँ आकर गवाही दें तो कन्या दान किया जायगा। उन लोगों ने समझा था कि मूर्तिमान श्री गोपाल जी का आकर गवाही देना तो संभव ही नहीं। कदाचित छोटे विप्र ने वृन्दावन आकर श्री गोपाल देव के निकट रो रो कर उड़ीसा जाकर विवाह की गवाही देने की प्रार्थना की। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर मूर्तिमान श्री गोपाल जी ने उसके साथ साथ उचित स्थान पर समय अनुसार गवाही दी। इस प्रकार छोटे बिप्र का विवाह सम्पन्न हुआ। तब से श्री गोपाल

जी उड़ीसा के पुरुषोत्तम क्षेत्र में सत्यवादी गाँव में रह गये और उनका नाम साक्षी गोपाल पड़ गया।

इन श्री गोपाल जी को मूर्ति के निर्माता हैं राजा श्री बज्रनाभ। वर्तमान समय में श्री गोपाल जी का खंडहर मन्दिर श्री साक्षी गोपाल के चिन्ह स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इस प्राचीन मन्दिर के सामने पूर्व की ओर श्री सिंह पौर हनुमान जी का प्राचीन मन्दिर है।

श्रीश्रीराधारमण जी

गोपाल भट्ट प्रिय पूज्यशाल-
ग्रामोद्भवं श्याम तनुं सुशोभम्।
त्रिभङ्गरूपं कलवेणु वक्त्रं
श्री श्रील राधारमणं नमामि॥

श्री राधारमण जी श्रीपाद गोपाल भट्ट गोस्वामी के ऊपर प्रसन्न होकर प्रगट हुये थे। श्रीभट्ट जी श्रीशालीग्राम शिला का पूजन करते थे और उनकी प्रेम मन्दिर से मुग्ध होकर उसी शालीग्राम शिला में से ललित त्रिभंग स्वरूप श्रीराधारमण जी प्रगट हुये। कहा जाता है कि श्रीपाद गोपाल भट्ट गोस्वामी के पिता का स्वर्गवास होने पर वह पितृवियोग में श्री नीलाचल धाम में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु की शरण में गये। श्री चैतन्य महाप्रभु ने श्रीभट्ट गोस्वामी को श्री वृन्दावन जाने का आदेश दिया। वृन्दावन आते समय श्रीभट्ट गोस्वामी एक शालीग्राम की मूर्ति शिला अपने साथ लाये और उनकी सेवा करते थे। एक बार एक धनी भक्त ने वृन्दावन आकर सभी मन्दिरों में ठाकुर मूर्तियों के निमित्त

वस्त्र, अलंकार व भोज्य सामग्री भेंट स्वरूप प्रदान किया। श्रीभट्ट गोस्वामी के श्रीशालिग्राम शिला के लिये भी वह भेंट प्राप्त हुआ तब गोस्वामी जी ने मन ही मन कल्पना किया कि श्री शालिग्राम के यदि हाथ पैर और अन्य अंगादि होते तो वह सब वस्त्र अलंकार इत्यादि धारण करने से कितनी उनकी शोभा होती। श्रीगोस्वामी जी के इस मनोकामना के उदय होते ही श्री शालिग्राम शिला में से अदभुत ललित त्रिभंग स्वरूप प्रगट हुये—

"भक्त वान्छा पूर्ति बिना नहिं अन्य कृत्य।"

दूसरे दिन उठकर श्रीगोस्वामी जी ने देखा कि निःसंदेह भक्त वत्सल भगवान ने उनकी मनोवासना पूर्ण कर दी है। श्री शालिग्राम द्विभुज मुरलीधर त्रिभंग भंगिम स्वरूप की छटा श्री वृन्दावन भूमि में सुशोभित हैं। आज भी श्री श्री राधारमण जी की मूर्ति के पीछे वही शालिग्राम शिला चिन्ह विराजित है।

यह मन्दिर निधुवन से संलग्न तथा श्री गोपीनाथ जी के मन्दिर के पिछले भाग में स्थिति है। काला पहाड़ के उपद्रव काल में श्री राधारमण जी को यहाँ से स्थानन्तरित करने का प्रस्ताव हुआ था परन्तु मन्दिर के सेवक गणों की इच्छा न होने पर वह प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हुआ।

अतएव हम लोग जिन श्री राधारमण जी के आज भी दर्शन करते हैं यह उन सेवक गणों की कृपा है अन्यथा यह मूर्ति भी आज जयपुर विद्यमान होती। इस मन्दिर के एक ओर श्री राधारमण जी के प्राकट्य स्थान नित्य पूजित है एवं

श्री राधारमण जी प्राकट्य तिथि पर इस मन्दिर में विशेष उत्सव का प्रति वर्ष आयोजन किया जाता है। इस मन्दिर में श्री जन्माष्टमी तिथि को विशेष अभिषेक आकर्षणीय है। मन्दिर के एक और हिस्से में श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी की समाधि दर्शनीय है।

श्रीश्री राधाविनोद व श्रीगोकुलानन्दजी

श्रीलोकनाथ गोस्वामी के प्रेम में आकृष्ट होकर श्रीराधाविनोद देव उमाराव के श्रीकिशोरी कुंड से प्रकट हुये थे। श्री राधारमण मन्दिर के उत्तर पश्चिम कोने में श्री राधाविनोद जी की विजय मूर्ति सुशोभित है। इस मन्दिर में श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवर्ती की सेवित श्री श्रीराधा गोकुलानन्द जी भी विराजमान हैं एवं श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रदत्त व श्री रघुनाथ दास गोस्वामी के सेवित श्रीश्रीराधा गिरिधारी जी भी विराजमान हैं। इस मन्दिर की चार दिवारी के अन्दर बाई ओर दर्शनीय है श्री लोकनाथ गोस्वामी की समाधि, श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती की समाधि व श्री नरोत्तम दास ठाकुर की बैठक।

श्रीश्रीराधामाधव जी

वैष्णव जगत के चिरस्मरणीय तथा कलियुग पावनावतार स्वयं भगवान श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु के आस्वादित ग्रन्थ 'श्री गीत गोविन्द' के रचियेता श्री पाद जयदेव गोस्वामी के प्रेम गीत मग्न सेवा को राधामाधव जी ने स्वीकार किया था। यह मन्दिर श्री गोकुलानन्द मन्दिर के उत्तर पश्चिम में

स्थित है। इस मन्दिर में श्री राधामाधव की विजय मूर्ति विराजमान है। इस मन्दिर के एक कोने में श्री युगल किशोर का उच्च मन्दिर (गुम्बद विहीन) दर्शकों की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करता है।

श्री श्री राधादामोदर जी

श्रीजीव प्रकटीकृतं राधालिङ्गित विग्रहम्।
राधादामोदरं वन्दे श्रीजीव जीवितेश्वरम्॥

यह श्री जीव गोस्वामी पाद जी के सेवित विग्रह हैं। यह मन्दिर शृंगार वट के दक्षिण पूर्व कोने में स्थित है। मन्दिर में श्री राधा दामोदर जी की विजय मूर्ति सुशोभित है। श्री पाद सनातन गोस्वामी को श्री कृष्ण के चरण चिन्ह युक्त जो गोवर्धन शिला मिली थी वह इसी मन्दिर में आज भी पूजित है। कहा जाता कि श्रीपाद सनातन गोस्वामी नित्य श्री गिर्राज गोवर्धन की परिक्रमा करते थे। वृद्धावस्था में परिक्रमा में अत्यन्त परिश्रम होने पर एक दिन श्री राधा मदन मोहन ने गोप बालक के वेश में उनको दर्शन दिया और उनके पसीने को पोंछते हुये कहा—'बाबा तुम तो बहुत वृद्ध हो गये हो अब परिक्रमा करने की तुम्हारी सामर्थ भी नहीं अतएव मेरी एक बात मानो।' गोस्वामी जी ने कहा 'बोलो'। इस पर गोप बालक श्री मदन मोहन ने गोवर्धन से एक अपने चरण चिन्ह युक्त शिला लाकर उनके सम्मुख रख कर कहा, 'बाबा आज से तुम इस शिला की परिक्रमा करना इसी से तुम्हारी गोवर्धन परिक्रमा पूर्ण होगी। उस शिला को श्री सनातन जी की कुटिया के सामने रख कर वह बालक अन्तर्द्धान हो गया।

बाद में श्रीसनातन बालकको न देखकर अत्यन्त व्याकुल होकर रोने लगे तब श्री मदन मोहन ने अदृश्य होकर अपना परिचय स्नेह सहित दिया तो श्री सनातन रोते रोते और भी प्रलाप करने लगे और बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपने आपको ढांढ़स बंधाया। इस प्रकार प्रतिदिन वह उस शिला की पूजा व परिक्रमा करने लगे। वह चरण चिन्ह युक्त शिला आज भी इस मन्दिर में दर्शायी जाती है। जन्माष्टमी के दिन यह शिला अभिषेक हेतु सर्व साधारण के दर्शन के लिये बाहर रखी जाती है। वर्तमान समय में इस मन्दिर में श्रीपाद भूगर्भ गोस्वामी के सेवित श्री राधा छत चिकनीया एवं श्री जयदेव गोस्वामी के सेवित श्री राधा माधव जी तथा श्रीपाद कृष्णदास कविराज गोस्वामी के सेवित श्री राधा वृन्दावन चन्द्र विराजमान हैं। इस मन्दिर के पिछले भाग के दक्षिण में श्रीपाद जीव गोस्वामी व श्रीपाद कृष्णदास कविराज गोस्वामी की समाधियां स्थित हैं एवं पिछले हिस्से के उत्तर दिशा में श्री भूगर्भ गोस्वामी एवं श्रीपाद रूप गोस्वामी की समाधियां स्थित हैं। श्रीपाद रूप गोस्वामी की समाधि के समक्ष उनकी एक बैठक निर्मित है। यहाँ पर और भी अनेक साधु संत व महापुरुषों की समाधियां दर्शनीय हैं।

श्रीश्री राधा श्याम सुन्दर जी

श्यामानन्द हृदानन्दं वृन्दारण्य पुरन्दरम्।
राधाभूषित वामाङ्गं नमामि श्याम सुन्दरम्॥

श्री श्यामानन्द प्रभु के प्रेम में वशीभूत होकर श्री श्याम सुन्दर जी ललित त्रिभंग स्वरूप प्रकट हुये थे और उनकी सेवा स्वीकार की। यह मन्दिर श्री दामोदर मन्दिर के दक्षिण

श्रीश्रीराधाश्यामसुन्दर जी

श्यामानन्दहृदानन्दं वृन्दारण्यपुरन्दरम् ।
राधाभूषित वामाङ्गं नमामि श्यामसुन्दरम् ।।

भाग में लोई बाजार के निकट स्थित है। श्री राधा श्याम सुन्दर जी वास्तव में अपनी सुन्दरता से श्री वृन्दावन को आलोकित कर रहे हैं एवं प्रत्येक दर्शक को मुग्ध करते हैं। मन्दिर की सुन्दर सेवा व्यवस्था ने सुन्दरता को और भी बढ़ा दिया है। ठाकुर जी की श्रृंगार व्यवस्था भी दर्शनार्थी के चित्त में और भी चमत्कारिता उत्पादन करता है।

विशेषत: अक्षय तीज के दिन जिन्होंने श्री श्याम सुन्दर का चन्दन श्रृंगार एक बार दर्शन किया है वे श्री श्याम सुन्दर के मन को मोहने वाला मोहक रूप की छवि कभी नहीं भूल सकते। उस रूप के दर्शन से भगवत भक्तों का हृदय अपार्थिव आनन्द से भरपूर हो जाता है। इस मन्दिर के निकट ही श्री निधुवन स्थित है। कहावत है कि श्री श्यामानन्द प्रभु को निधुवन में जाड़ू लगाते समय श्री वृषभानु नन्दिनी राधा जी की एक पायल मिला थी। इस मन्दिर के सम्मुख समाधिस्थल निधुवन में जहाँ पायल मिली थी वह स्थान नित्य पूजित है। इस स्थल के पीछे श्री श्यामानन्द प्रभु की समाधि स्थित है तथा अन्य अनेक बड़े बड़े भक्तों की समाधियाँ दर्शनोय हैं। श्री श्याम सुन्दर मन्दिर के पीछे के हिस्से में श्री हरिराम व्यास का भजन स्थल श्री किशोर वन स्थित हैं।

श्रीश्री राधाबल्लभ जी

मुरली वादनानन्दं राधिका चित्त चन्दनम्।
श्रीराधावल्लभं वन्दे हरिवंशैक जीवनम्॥

श्रीपाद हरिवंश गोस्वामी के प्रति कृपा करके श्रीराधा बल्लभ जी सेवाकुञ्ज (पहला नाम श्री निकुंज वन) से प्रकट

हुये थे। यह मन्दिर श्रीसीतानाथ मन्दिर के कोने में स्थित है। काला पहाड़ के उपद्रव कालीन इस मूर्ति को यहाँ से स्थानांतरित करने का प्रस्ताव हुआ परन्तु मन्दिर के सेवकों का असहमति होने से वह सफल नहीं हुआ। श्री राधाबल्लभ जी के सेवाइतों को राधाबल्लभी गोसाँई कहा जाता है। श्री राधाबल्लभ जी की सेवा व्यवस्था बहुत सुन्दर रही है। इस मन्दिर के उत्तर की ओर श्री युगल बिहारी का गुम्बद

श्रीश्री राधा बल्लभ जी

विहीन ऊँचा मन्दिर स्थित है। श्रीराधा बल्लभ जी के मन्दिर के पास में ही श्रीपाद हरिवंश गोस्वामी की समाधि मन्दिर स्थित है।

श्रीश्री बाँके बिहारी जी

श्रीपाद हरिदास स्वामी के प्रति प्रसन्न होकर श्रीबांके बिहारी जी निधुवन से प्रकट हुये थे। श्री हरिदास जी त्यागी व उदासीन वैष्णव थे। वे वृन्दावन आने के बाद निधुवन में भजन करते थे। श्री बाँके बिहारी जी ने स्वामी हरिदास जी

श्री बांके बिहारी जी

को प्रसन्न होकर स्वप्न दिया कि मैं उस स्थान पर जमीन के नीचे मूर्ति स्वरूप विद्यमान हूँ मुझे निकाल कर सेवा करो। भूमि खोदकर स्वामी हरिदास जी ने श्री बिहारी जी को बाहर निकाला और परम आनन्द सहित उनकी सेवा करने लगे। यह मन्दिर, श्री मदन मोहन जी के मन्दिर की पूर्व दिशा में स्थित है। मन्दिर को सेवा व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। श्री बिहारी जी के चरण दर्शन हमेशा हर समय नहीं होते। केवल वैसाख के महीने में तृतोया शुक्लपक्ष के दिन सभी भक्त जनों को युगल चरण दर्शन होते हैं। श्री बिहारी जी के दर्शन में बड़ा ही कौतुक है—वह है उनके सामने का पर्दा बार बार खोला व बंद किया जाता है—झाँकी की दर्शन।

श्रीश्री गोपीश्वर महादेव

श्री बंशीवट के निकट बाबा श्री गोपीश्वर महादेव विराजमान हैं बंशीवट श्री कृष्ण की रासलीला का प्रसिद्ध स्थल है। रासलीला के समय श्री कृष्ण ने यहाँ खड़े होकर अपनी बंशी की मधुर ध्वनि से बृज गोपियों को अपनी ओर आकर्षित किया था लीला पुरुषोत्तम की बृज लीलाओं का ऐसा ही आकर्षण था कि देवाधिदेव महादेव भी उनकी लीला में विभोर हो गये और श्रीकृष्ण प्रेम वश गोपियां के पीछे पीछे श्रीकृष्ण प्रेम प्राप्ति के लिये गोपी रूप में प्रेम राज्य में प्रवेश हो गये। महादेव जी के गोपी रूप में प्रवेश करने पर श्रीकृष्ण की दृष्टि उन पर पड़ी और उन्होंने उन्हें गोपीश्वर कहकर सम्बोधित किया। इसी कारणवश श्री महादेव इस स्थान पर गोपीश्वर नाम से हो प्रतिष्ठित हुये। वस्तुतः ब्रज गोपी जनों

ने अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये श्रीमहादेव जी को लिंग रूप में स्थापित करके पूजा किया था, तब से गोपीश्वर नाम से ही श्रीमहादेव जी यहाँ पूजित हैं। परन्तु सर्व साधारण के लिये यह गोपेश्वर नाम से परिचित हैं। यह प्राचीनतम मन्दिर दर्शकों (परिचित) के लिये दर्शनीय है। इस मन्दिर के समीप सप्त समुद्र कुँआ एवं एक कोने में श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं।

श्रीश्रीबनखंडी महादेव

श्रीबांके बिहारी जी के मन्दिर जाने के रास्ते में ही तिराहे पर श्रीबनखंडी महारदेव जी का मन्दिर स्थित है। कहा जाता है कि श्रीसनातन गोस्वामी वृन्दाबन वास कालीन नित्य श्रीगोपेश्वर दर्शन के लिये जाते थे। उस समय वृन्दावन पूरा जंगल था। इसलिये श्रीसनातन जी को बीच बीच में बहुत कष्ट होता था। एक दिन प्रसन्न होकर श्रीगोपीश्वर जी ने श्रीसनातन जी को स्वप्न दिया कि सनातन तुम्हें मेरे लिये इतना कष्ट करके इतनी दूर प्रतिदिन आने की आवश्यकता नहीं। मैं अब तुम्हारे निकट ही बनखंडी नाम से प्रकट होता हूँ। अतः तुम नित्य मेरा यहीं पर दर्शन करो। तब से श्रीसनातन प्रभु यहीं आकर श्रीबनखंडी महादेव जी के दर्शन करते थे।

पोसिमा के श्रीनिताई गौर

वीरभूम जिला के अन्तर्गत घोड़ा डांगा पारूलिया एवं कालीपुर कड्या गाँव क्षेत्र में एक मनोरम उपवन था। वहाँ

निकटवर्ती गाँवों में लोग गाय भैंस चराया करते थे। खेपा नामक एक ग्वाले ने एक दिन गाय चराते हुये देखा कि उसकी एक गाय एक जगह खड़ी होकर अपने आप अपने थन में से दूध गिरा रही है। इससे उसके मन में संदेह उत्पन्न हुआ, उसने उस स्थान पर अपनी नजर रक्खी। इसी प्रकार कई दिन उसी स्थान पर गाय द्वारा दूध गिराने से यह बात सारे गाँव में फैल गई। तब खेपा ग्वाले ने गांव वालों के साथ मिलकर उस स्थान की खुदाई शुरू की और क्रमशः देखा कि एक पुराने लकड़ी के सिंहासन पर छोटे आकार के मूर्ति स्वरूप श्रीगौराङ्ग, श्रीनित्यानन्द, श्रीराधा गोपीनाथ व श्रीधर शालीग्राम चारों विराजमान हैं। बहुत दिन तक जमीन के अन्दर रहने से श्रीगौर निताई की मूर्ति के नाक नक्शे बहुत साफ नहीं थे। इससे पहले श्रीमुरारी गुप्त के वंशज उस गांव के निकट ही रहते थे परन्तु दैवी प्रकोप से सारा गाँव महामारी में विध्वंस हो जाने से सारा का सारा मन्दिर भग्नावस्था में भूमिगत हो गया। खेपा ग्वाले ने अन्य भक्त गणों की प्रेरणा से शिउड़ि में श्रीनिताई गौर मूर्तियों का अंगराग कराया, और तभी यह देखा गया कि उन विग्रहों के नीचे दास मुरारी गुप्त नाम खुदा हुआ था। अंगराग के पश्चात भव्य समारोह के साथ उन मूर्तिओं का अभिषेक सम्पन्न हुआ। श्रीनिताई गौर की बाल मूर्ति त्रिभंग रूप में खड़ी इतना सुन्दर लगती है जैसे कि मानों सारे जीवों को प्रेमदान कर रहे हों। उनके सुन्दर मुखारविन्द से ऐसा प्रतीत होता है मानों केतकी समान उनके नयनों से अश्रु धारा अभी बह निकलेगी, जगत के दुःखी लोगों के लिये प्रभु रो उठे हों। शिउड़ि ग्राम में भक्तों की सेवा प्राप्त करने के बाद भक्तों का दुःख दूर करने के लिये उन्हें श्रीवृन्दा-

वन लाया गया और लोईबाजार बनखंडी मौहल्लेमें एक मन्दिर में उन्हें विराजित किया गया। यहाँ आकर वे नित्य नई लीला रहस्य प्रकाशित करके भक्तों को आनन्द प्रदान कर रहे हैं। पिसिमा गोस्वामिनी के सेवित श्रीनिताई गौर की मूर्ति ८-९ साल के बालक की तरह अत्यन्त सुन्दर व भावपूर्ण हैं। पिसिमा श्रीनिताई गौर को अपने पुत्रों की तरह स्नेह से प्रतिपालन करती थीं तथा प्रभु भी उन्हें मातृ स्वरूप प्रेम करते थे। प्रेम और वात्सल्य की यह मूर्ति अवश्य ही दर्शनीय है। यह मन्दिर बनखंडी महादेव जी के मन्दिर के ऊपरी भाग में श्रीमुरारी गुप्त द्वारा प्रतिष्ठित तथा पिसीमा गोस्वामिनी द्वारा सेवित श्रीनिताई गौर मूर्ति युक्त दर्शकों के लिये अवश्य ही दर्शनीय है।

श्रीश्रीगौरांग महाप्रभु

इमली तला में श्रीश्रीगौरांग महाप्रभु की अपूर्व मूर्ति दर्शनीय है। श्रीमदनमोहन के पुराने मन्दिर में श्रीश्रीगौरांग महाप्रभु की दर्शनीय मूर्ति विराजमान है। श्रीगोविन्द देव जी के प्राचीन मन्दिर में श्रीगौरांग महाप्रभु की मूर्ति विराजमान है। श्रीश्रृंगारवट में श्रीगौरांग महाप्रभु व श्रीनित्यानन्द प्रभु की मूर्ति दर्शनीय है। धीर समीर में श्रीश्रीनिवास आचार्य प्रभु कुंज में श्रीचैतन्य महाप्रभु की नृत्य भंगिमा में मूर्ति दर्शनीय है। पत्थरपुरा में श्रीश्रीकांगली महाप्रभु दर्शनीय हैं। सारस्वत गौड़ीयमठ व श्रीचैतन्य गौड़ीयमठ में श्रीमन्महाप्रभु की मूर्ति विराजित हैं। श्रीराधारमण जी के मन्दिर के पश्चिम दिशा में श्रीश्रीषड़भुज महाप्रभु दर्शनीय हैं। महात्मा शिशिर बाबू द्वारा प्रतिष्ठित गोपीनाथ बाजार में श्रीश्री अमिय

निमाई गौरांग महाप्रभु पतित पावन नाम को सार्थक करते हुये मनमोहिनी नाट्य भंगिमा युक्त अपनी आजानुलम्बित बाहुओं को खोले सर्व साधारणों को दर्शन देते हुये मन्दिर में सुशोभित हैं। ब्रह्मकुण्ड की तरफ श्रीश्रीनिताई गौर सीतानाथ मन्दिर दर्शनीय है। केशीघाट पर श्रीकुंजदास गोस्वामी द्वारा प्रतिष्ठित श्रीश्रीप्रान गौर नित्यानन्द प्रभु की अपूर्व मूर्ति दर्शनीय है। वनखंडी मौहल्ले में वात्सल्यरस की साधिका पीसीमा के निताई गौर दर्शनीय है।

श्रीश्रीरंगनाथ जी मन्दिर

प्राचीन श्रीगोविन्द मन्दिर के पूर्व दिशा में यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर की विशालता दर्शकों

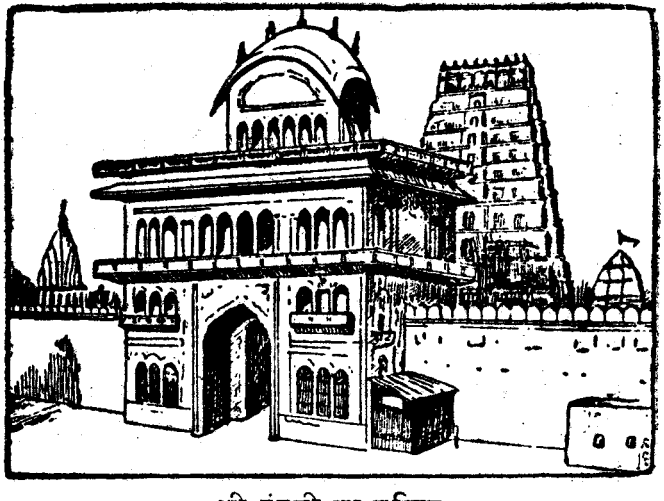

श्री रंगजी का मन्दिर

का चित्त आकृष्ट करता है। मन्दिर को बनावट एक दुर्ग की तरह है। मन्दिर के मध्य में स्थित सोने का स्तम्भ दर्शकों को विस्मित कर देता है। श्रीलक्ष्मीचन्द सेठ के भाई श्रीराधाकृष्ण दास व गोविन्ददास इस मन्दिर के प्रतिष्ठाता हैं। श्रीरंगनाथ जी के अनेक चित्ताकर्षक लीलाओं को यहाँ के उत्सवों में प्रदर्शित किया जाता है जिनसे यह मन्दिर प्रसिद्ध हैं। कुछ लीलाओं को यहाँ उल्लेखित किया जाता है—पूस शुक्ल एकादशी से माह कृष्ण पंचमी तक यहाँ वैकुण्ट उत्सव होता है। चैत कृष्ण द्वितीया से द्वादशी तक यहाँ रथोत्सव मेला होता है। इस उपलक्ष में श्रीरंगनाथ जी रथ में बैठकर बाहर निकलते हैं तथा सब दर्शकों को कृतार्थ करते है। इस मन्दिर के अन्दर श्रीगजराज कुण्ड में सावन पूर्णिमा के दिन श्रीगजेन्द्र मोक्ष लीला को अभिनीत किया जाती है।

श्रीश्रीकृष्ण चन्द्र जी-लाला बाबू मन्दिर

यह मन्दिर ब्रह्मकुण्ड के पूर्व दिशा में स्थित है। कलकत्ते के प्रसिद्ध जमीदार श्रीलाला बाबू इस मन्दिर के प्रतिष्ठाता हैं। श्रीलाला बाबू किसी दैविक प्रेरणा से वशीभूत होकर अपना सर्वस्व त्याग कर श्रीवृन्दावन आ गये और श्रीराधा कृष्णचन्द्र जी के मन्दिर का निर्माण किया तथा उनकी सेवा पूजा की सुन्दर व्यवस्था की। तदुपरान्त वे गोवर्द्धन जाकर भगवत भजन में लीन हो गये। मन्दिर की सेवा व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। श्रीकृष्ण चन्द्र दर्शन मात्र से ही मन को मोह लेते हैं। इस मन्दिर के प्रमुख द्वार के बांई ओर श्रीलाला बाबू की समाधि स्थित है। साथ ही श्रीश्रीजगत बन्धु का बन्धु कुञ्ज स्थित है।

श्रीतुलसी राम दर्शन स्थल

यह प्राचीन स्थल श्रीयमुना पुलिन में श्रीकृष्ण चन्द्र जी लाला बाबू मन्दिर के पीछे स्थित है। यह वही स्थान है जहाँ गोस्वामी तुलसीदास को भगवान श्रीकृष्ण ने भगवान श्रीराम रूप में दर्शन दिये। इसी स्थली पर भक्तमाल के रचियेता संत नाभदास जी एवं श्री गोस्वामी तुलसीदास जी का साक्षात्कार हुआ था तथा "भक्तमाल" में सुमेरू की पदवी यहीं पर गोस्वामी जी को प्रदान की गई। स्थल के उत्तर दिशा में जीर्णावस्था में गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी की भजन कुटी विद्यमान है। स्थल के गर्भ मन्दिर के द्वार पर एक ओर गरूड़ व दूसरी ओर हनुमान श्रीराम-कृष्ण के एकत्व के प्रतिपादक हैं। मन्दिर के गर्भ द्वार के ठीक ऊपर सूर्य चन्द्र पाषाण पर उत्कीर्ण हैं जो सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश अर्थात श्रीराम और श्रीकृष्ण के वंश के द्योतक हैं। मन्दिर के गर्भ द्वार के ठीक ऊपर श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन की कुछ घटनाओं का चित्रण बड़ा ही मनोरम है। क्षण में श्याम क्षण में राम—जो राम वही श्याम—इसे विद्युत परिचालक द्वारा बड़े ही सुन्दर ढंग से दर्शकों के लिये प्रस्तुत किया जाता है। समय समय पर देश विदेश के सुप्रसिद्ध संत, राजनैतिक, धार्मिक श्रद्धालु यहाँ पधार कर कृतार्थ होते हैं।

श्रीब्रह्मचारी जी मन्दिर

यह मन्दिर श्रीगोपीश्वर महादेव व लालाबाबू मन्दिर के बीच में एक सड़क पर स्थित है। कहा जाता है कि ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारी दास जी की मनोअभिलाषा पूर्ण करने हेतु

ग्वालियर महाराज ने यह मन्दिर निर्माण करवाया और श्रीगोपाल जी की मूर्ति प्रतिष्ठित की तथा सेवा पूजा की सुव्यवस्था कर ग्वालियर राजा कृतार्थ हुये। मन्दिर की विशालता मन को आकृष्ट करती है। इस मन्दिर के पूर्व की ओर लालाबाबू मन्दिर के साथ एक और सुन्दर नये मन्दिर 'गोदा बिहार' का निर्माण हुआ है। भारत के सभी देवी देवताओं की मूर्तियाँ इस नये मन्दिर में पूजित हैं जो कि दर्शकों के चित्त में एक चमत्कारिता पैदा करती है। अनेक देवी देवताओं का सम्मिलित समुदाय एक अपूर्वता व उत्कर्षता को बढ़ाती है।

श्रीशाह जो मन्दिर

यह मन्दिर निधुवन के समीप स्थित है। मन्दिर के

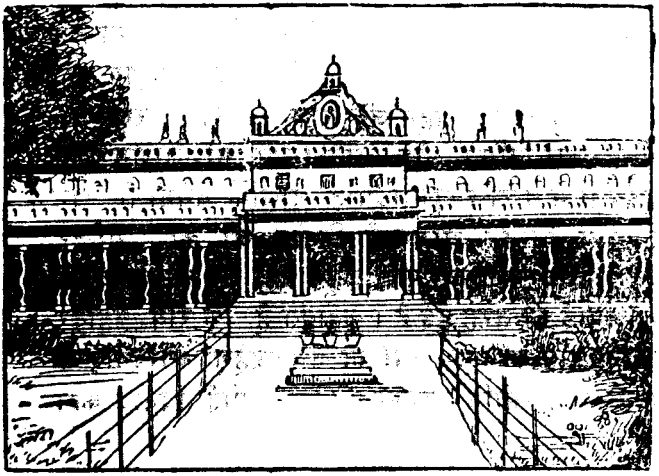

श्रीशाह जी का मन्दिर

ठाकुर विग्रह श्रीराधा रमण जी नाम से परिचित हैं। लखनऊ निवासी श्रीकुन्दन लाल जी ने इस मन्दिर का निर्माण संगमरमर से करवाया था एवं मन्दिर की सर्व प्रकार से सुव्यवस्था की। इस मन्दिर में माघ शुक्ल पंचमो के दिन 'बसन्ती कमरा' दर्शकों के चित्त को विस्मित करता है। श्वेत संगमरमर के टेढ़े खम्भे भारतीय शिल्प कला के द्योतक हैं। इस मन्दिर के निकट श्रीमीरा बाई का मन्दिर दर्शनीय है। इस मन्दिर की विशेषता है कि प्रतिदिन प्रातः व सायं यहाँ मीरा बाई व अन्य कवि भक्तों के भजन गाये जाते हैं। इस मन्दिर में श्रीरूप गोस्वामी जी की एक बैठक भी है।

श्रीश्रीजमाई विनोद जी

यह मन्दिर वर्तमान रामकृष्ण मिशन के पास स्थित है। बस स्टैण्ड से रामकृष्ण मिशन की ओर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ, मुंगेर मन्दिर-श्रीराधा मोहन जी राज श्री राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह द्वारा निर्मित और आनन्दमयी माँ आश्रम होते हुये पूर्व दिशा में ताराश भूमाधिपति राजर्षि बनमाली राय बहादुर द्वारा निर्मित श्रीजमाई विनोद जी का मन्दिर आता है। मन्दिर की सेवा पूजा अपूर्व रही है। श्रीविनोद जी की सेवा जमाई की तरह हुई है। कहावत है कि राय बहादुर श्रीबनमाली राय की एक कन्या का पाणिग्रहण श्रीविनोद जी के साथ हुआ था इसीलिये ठाकुर जी को जमोई बिनोद कहा जाता है।

श्रीश्रीचैतन्य गौड़ीय मठ

वृन्दावन मथुरा प्रधान मार्ग पर रोडवेज बस स्टैंड से पूर्व बाँई ओर बंग प्रदेशीय स्थापित्यकला पर आधारित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ अतीव मनोरम है। यहाँ श्रीचैतन्य महाप्रभु की सुन्दर मूर्ति एवं श्रीश्रीराधा गोविन्द की शोभा दर्शनीय है।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर (इस्कोन)

रमणरेती नामक स्थान के बाहर वृन्दावन छटीकरा मार्ग पर दाहिनी ओर यह विशाल तथा भव्य मन्दिर श्रीमाध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदायानुयायी त्रिदण्डी श्रीभक्ति वेदान्त तीर्थ प्रभुपाद ने अपने विदेशीय शिष्यों की संस्था के माध्यम

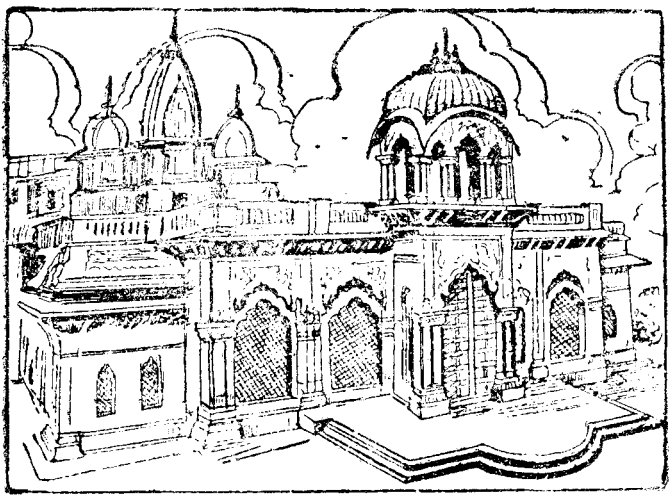

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर (इस्कोन)

से वंग प्रान्तीय स्थापित्यकला पर आधारित इसका निर्माण कराया है। मन्दिर में श्रीचैतन्य महाप्रभु श्री भगवान कृष्ण बलराम की अतीव दिव्य चित्ताकर्षक प्रतिमा स्थापित की गई है। मन्दिर से पहले ही श्री भक्ति वेदान्त प्रभुपाद की समाधि पर उनकी भी प्रतिमा स्थापित है। यहाँ की व्यवस्था और प्रबन्ध सराहनीय है। मन्दिर में ही आवास, अध्ययन, संकीर्तन, वाचनालय, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि पृथक पृथक कक्ष हैं।

श्रीश्रीकात्यायिनी मन्दिर

हेमन्ते प्रथमे मासि नन्द व्रज कुमारिकाः।
चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चन व्रतम् ॥
कात्यायनि महा भाये! महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्द गोप सुतं देवि! पतिं मे कुरुते नमः॥
(श्रीमद् भावगत)

श्रीरंगनाथ जी के बगीचे के निकट श्रीकात्यायिनी देवी का मन्दिर है। यहाँ गोप कन्याओं ने श्रीकृष्ण को पति रूप में प्राप्ति की अभिलाषा से श्रीकात्यायिनी देवी का पूजनानुष्ठान किया था। वृन्दावन की परिक्रमा में राजपुर ग्राम से चलकर आगे श्रीचामुण्डा देवी का प्राचीन मन्दिर है। जनश्रुति के अनुसार यहाँ मथुरा पधारने के पहले श्रीकृष्ण बलराम ने देवी का पूजन कंस-बध की अभिलाषा से किया था।

श्रीपागल बाबा मन्दिर

यह मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर आई०टी०आई० के निकट स्थित है। श्वेत संगमरमर का सात मंजिला बंग प्रदेशीय स्थापित्य कलायुक्त चित्ताकर्षक यह लीलानन्द मन्दिर श्रीपागल बाबा लीलानन्द ठाकुर द्वारा बनवाया गया। यह भक्त जनों के आकर्षण का एक केन्द्र है। यहीं निकटस्थ प्राचीन श्रीलुटेरा हनुमान जी का मन्दिर सड़क के किनारे है। इसके ठीक सामने सड़क के दांई ओर श्रीभतरोंड बिहारी का पुरातन देवलाय है, जहाँ अपने सखाओं के साथ गोचारण काल में श्रीकृष्ण बलराम ने दाल-भात का भोजन किया था।

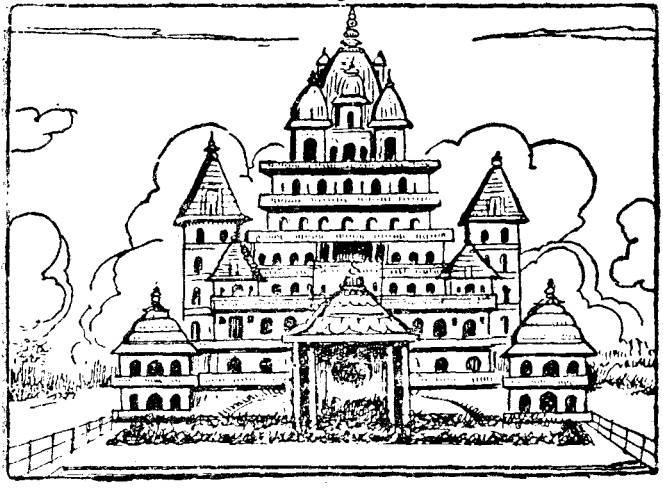

श्रीपागल बाबा मन्दिर

श्रीवृन्दावन की परिक्रमा (वर्तमान काल में)

वृन्दावन परिधि में प्रवेश करने से पूर्व सड़क पर नगर पालिका, वृन्दावन की चुंगी चौकी अटल्ला नाम से प्रसिद्ध है। जिसके पार्श्व से ही हम अटल वन की ओर परिक्रमा में प्रवेश कर जाते हैं। भविष्योत्तर पुराण में वृन्दावन की परिक्रमा पंचकोसीय कही है। ब्रह्मयामल में वृन्दावन की प्रधाना श्रीराधा स्वरूपा वृन्दादेवी मानी गई हैं। परिक्रमा करने वाले भक्त को यह आवश्यक है कि संकल्प ग्रहण कर श्रद्धा से मन्त्र जप करता हुआ ब्रज के प्रत्येक तीर्थ की परिक्रमा करे।

अटल बन से आगे दावानल कुण्ड, उड़िया बाबा आश्रम, आनन्द वृन्दावन से चलते हुये परिक्रमा करने वाले भक्तजन छटीकरा रोड़ पर पहूँचते हैं। यहीं पर रमणरेती नामक स्थली को पार करते हुये श्री यमुना की ओर बढ़ते हुये मुड़कर मदनटेर और उससे आगे कालीदह तथा श्रीमदन मोहन जी के मन्दिर के नीचे से परिक्रमा आगे बढ़कर केशी-घाट, बंशीवट एवं टिकारी वाले मन्दिर से चलते हुये पानी-घाट, और तटीय संस्थान की सुरम्य सम्पन्न वृक्षावलि से आगे श्रीयमुना जी की छबि की छटा का आनन्द लेते हुये परिक्रमा में भक्त दाहिनी ओर मुड़कर हरिदास नगर में भ्रमण करते हुये पुनः अटलवन आ जाते हैं और यहीं परिक्रमा संपूर्ण हो जाती है।

उपरोक्त प्रमुख मन्दिरों एवं पुन्य स्थलों के अतिरिक्त श्रीवृन्दावन में बहुत से मन्दिर विद्यमान हैं। सभी का परिचय विस्तार से देना सम्भव नहीं है।

श्रीकृष्ण के चरण कमलों से विलसित श्रीगोविन्द का यह वैकुण्ठ अति विशाल व विस्तृत हैं। यहाँ वे अपनी नित्य लीलाओं में सखाओं व गोपियों के साथ रत हैं। श्रीवृन्दावन के माधुर्य ध्वजा स्वरूप विद्यमान हैं श्रीगिर्राज गोवर्धन, एवं श्रीराधा कुण्ड, श्रीश्याम कुण्ड, श्रीनन्दीश्वर इत्यादि हैं उनकी लीलास्थली। द्वादश वनों में श्रीवृन्दावन श्रीकृष्ण की मुख्य लीलास्थली है। इन्हीं द्वादश वनों में श्रीवृन्दावन चंद्र श्रीकृष्ण ने अपनी प्रियतमा श्रीराधा व अन्य ब्रजसुन्दरियों सहित शोभा बढ़ाते हुये कुंज, कुंज व मन्दिर आदियों के चमत्कार प्रकाशित किये जिसे देखकर साक्षात् श्रीलक्ष्मी जी को भी क्षोभ होता है। इन द्वादश वनों की परिक्रमा व दर्शन से श्रीराधा गोविन्द की विविध लीलाओं का स्फुरन हाता है और यही है, श्रीवृन्दावन दर्शन की परिपूर्णता। इसी लिये पहिले आचार्य गणों के शास्त्रों में द्वादश वन दर्शन व परिक्रमा का विधान दिया और दर्शन की महिमा का वर्णन किया। श्रीसनातन गोस्वामी पाद के अनुकरण स्वरूप भाद्र कृष्णा द्वादशी को प्रति वर्ष श्रीमदन मोहन जी के पुराने मन्दिर से श्रीद्वादश वन दर्शन व परिक्रमा उठती है।

श्रीब्रज मंडल परिक्रमा व दर्शन

श्रीद्वादश वन

(पद्म पुराणनोक्त)

भद्र श्री लौह भान्डीर महातालं खदिरकाः।
बदला कुमुद काम्य मधु वृन्दावनं तथा॥

द्वादशैतान्यरन्यानि कालिन्द्याः सप्त पश्चिमे ।
पूर्वे पंच वनं प्रोक्तं तत्रास्ति गुह्यमुत्तमम् ।।
मधुताल कुमुद बहुला काम्य आर ।
खदिरा श्री वृन्दावन यमुना ये पार ।।
श्रीभद्र भाण्डीर बिल्व लौह महावन ।
यमुना ओ पार एई पंचम कानन ।।
परिक्रमा बंधे कहि ब्रजेर आख्यान ।
मधुबन आदि जार अन्त्य वृन्दावन ।।
उपवन महावन जतेक कानन ।
संक्षेपे करिये मात्र दिक् दरशन ।।

श्रीब्रजमंडल परिक्रमा यात्रियों के ज्ञान वर्धक विषय

श्रीराधा गोविन्द की लीलाओं का ध्यान रखते हुये दर्शनार्थी यात्रीगण वन यात्रा करने से उनकी सर्व कामना पूर्ण होती है तथा वे श्रीविष्णु लोक की प्राप्ति करते हैं। यही नहीं अपनी वन यात्रा की कथा का प्रचार करने से उसे सर्वत्र विजय लाभ होता है। परिक्रमा देते समय रास्ते में पड़ने वाले प्रत्येक वृक्ष, गुल्म, गौ, ब्राह्मण, मूर्ति, पाषाण, तीर्थ व भगवत् लीलास्थल को छोड़ते हुये नहीं चलना है बल्कि उनकी यथा योग्य पूजन वंदना सबका कर्तव्य है। तीर्थ स्थानों में स्नान आचमन एवं वृक्षों व देवताओं का यथा विधि पूजन करते हुये वन यात्रा करने का विधान है। परिक्रमा देते समय पथ में आने वाले वृक्ष, गौ व श्रीभगवत मूर्ति इत्यादि का किसी

प्रकार असम्मान करने से यात्रा निष्फल हो जाती है एवं गुरूतर अभिशाप प्राप्त होता है। सर्वदा हरिनाम करते करते परिक्रमा करना चाहिये एवं वनयात्रा की सीमा लांघने पर आचमन करना चाहिये। जिस स्थान से यात्रा आरम्भ होगी वहाँ श्रीमहादेव जी की पूजा करके यात्रा शुरू करनी होगी तथा पुनः इसी स्थान पर आकर यात्रा समाप्त करनी होगी। इसके विपरीत होने पर यात्रा सफल नहीं होगी। इस विषय में सरल, सदाचारी व शास्त्र ज्ञानी वैष्णव महात्मा अथवा तीर्थ गुरू ब्रजवासियों के निकट अवगत होकर तदनुसार कार्य करना चाहिये।

परिक्रमा काल में नित्य की आवश्यकतानुसार सामान इत्यादि का साथ रखना आवश्यक है एवं प्रतिदिन प्रत्येक स्थान से रात्रि प्रभात होने से पूर्व ही यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिये व दोपहर के पहले ही गंतव्य स्थल पर पहुँच कर आहार इत्यादि की व्यवस्था करनी चाहिये व तंबुओं में रात्रि व्यतीत करनी चाहिये। गौड़ीय सम्प्रदाय के आचार्य श्रीसनातन गोस्वामी, श्री श्रीनिवासाचार्य एवं श्रीनरोत्तम ठाकुर ने भाद्र कृष्ण पक्ष में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के बाद द्वादशी के दिन श्रीवृन्दावन धाम से यात्रा प्रारम्भ की और भूतेश्वर पर रात्रि व्यतीत करके त्रयोदशी के दिन ब्रज मण्डल की परिक्रमा शुभारम्भ की। गोस्वामी गणों के पद चिन्हों पर अनुकरण करते हुये गौड़ीय वैष्णव गण आज भी उसी नियम का पालन करते हैं। तदनुसार ब्रज मण्डल परिक्रमार्थी यात्रीगण भाद्र कृष्ण पक्षीय द्वादशी दोपहर को श्रीराधा मदन मोहन जी के दर्शन करके उनके चरणों में प्रार्थना करते हुये व श्रीसनातन गोस्वामी को प्रणाम करके व उनकी अनुमति

लेकर यात्रा का शुभारम्भ करके इस दिन वृन्दावन से मथुरा भूतेश्वर महादेव पर आकर विश्राम करते हैं। इसका कारण है कि भूतेश्वर बाबा मथुरा मण्डल के क्षेत्रपाल हैं, उनकी कृपा लाभ करने के लिये उनके चरणों में विश्राम करना व उनकी अनुमति लेना आवश्यक है। पापी लोगों के मोक्ष हेतु श्रीभूतेश्वर महादेव व श्री पाताल देवी, दर्शनीय हैं। भूतेश्वर होकर फिर मधुवन की ओर बढ़ना पड़ता है।

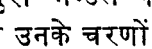

श्रीमधु वन

प्रथमम् मधुवनं प्रोक्तं द्वादशं वृन्दिका वनम्।
एतानि ये प्रप्रश्यन्ति न ते नरक भोजिनः॥
रम्यं मधुवनं नाम विष्णु स्थानमनुत्तमम्।
यद् दृष्ट्वा मनुजो देवि! सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

पहिले मधुवन होकर द्वादश वृन्दावन तक वन समूह का जो लोग केवल दर्शन मात्र करते है उनको नरक की यंत्रणा नहीं भोग करनी पड़ती। जो लोग यथा क्रमानुसार द्वादश वन यात्रा करते हैं, वे विष्णुलोक गमन करते हैं। मधुवन द्वादश वन का प्रथम चरण है। इस वन का वर्तमान नाम है महली जो कि मथुरा शहर में स्थित है। त्रयोदशी के दिन यात्रा करके इस वन में आगमन होता है, इस गाँव के पूर्व की ओर ध्रुव टीला स्थित है। यहाँ पर भक्त ध्रुव की मूर्ति दर्शनीय है, कोई कोई इस टीले को ध्रुव के तप स्थली के रूप में उल्लेख करते हैं। गाँव के एक ओर मधु कुण्ड स्थित

है। यमुनातीर पर अत्यन्त रमणीय यह वन श्रीरामकृष्ण के गोचारण का अति उत्तम स्थान है। हरि भक्त गणों की यह पुन्य भूमि पापी लोगों को पाप से मुक्त करती है। भगवान श्रीकृष्ण ने इस वन में मधु नामक दैत्य का संहार किया था। तब से यह स्थान मधुवन के नाम से प्रसिद्ध है। इस बन का जिन्होंने दर्शन किया है एवम् नाम सुना है या सेवा किया है अथवा महिमा कीर्तन किया है पृथ्वी पर वह धन्य हैं। श्रीहरि के इस मधुवन में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। जिन लोगों ने इस वन में आगमन किया है उनकी सभी अभिलाषायें पूरी होती हैं। इस वन के बाद में आता है तालवन।

श्री तालवन

वनं ताल वनाख्यंच द्वितीयं वन मुत्तमम् ।
यत्र स्नात्वा नरो देवि ! कृत कृत्यो ऽभिजायते ।।

तालवन नामक यह द्वितीय वन अति उत्तम वन है। इस वन का वर्तमान नाम ताड़सि है। यह वन मधुवन से दो मील दूर है। श्रीबलदेव ने यहाँ धेनुकासुर का वध किया था। एक दिन सखाओं के साथ श्रीकृष्ण बलराम गाय चराते हुये तालवन के समीप आये तो श्रीदामा आदि सखाओं ने पके ताल की सुगन्धि पाकर श्रीकृष्ण बलराम की ओर देखकर कहा—हे बलराम ! हे प्राणसखा कृष्ण घने वृक्षों के पीछे उस तालवन में ताल वृक्षों पर अनेक ताल हैं एवं भूमि पर भी बहुत ताल गिरे हुये हैं, किन्तु कंस के आदेशानुसार धेनुक नामक एक असुर अपने बल से उस तालवन की रक्षा करता है, उसके डर से वहाँ कोई भी नहीं जा सकता। हम सभी की इच्छा है उन सुगन्धित तालों को खाने की। यह सुनते ही श्रीबलराम बढ़ते हुये तालवन पहुँचे और पीछे पीछे श्रीकृष्ण सखाओं सहित सींग वेणु बजाने लगे। देखते देखते श्रीबलराम ने दोनों हाथों से ढेरों ताल भूमि पर गिरा दिये। ताल गिरने की आवाज से महाबलवान धेनेकासुर दौड़ कर आया और अपने पैरों से श्रीबलराम की छाती पर आघात किया। दोबारा फिर उसने पैरों से प्रहार किया तो श्रीबलराम ने अपने बाँयें हाथ से उसके दोनों पैरों को पकड़ लिया और ऊपर घुमाते हुये वृक्षों के ऊपर फैंक दिया उससे उसके प्राण निकल गये और उसके शरीर के भार से अनेक वृक्ष पृथ्वी पर गिर पड़े। गधे रूपी उस असुर के पार्थीव शरीर को देखकर

सखाओं को बहुत आनन्द मिला। इधर धेनुकासुर की मृत्यु की खबर सुनकर उसके दल के लोग वीभत्स शोर मचाते हुये तालवन में आये और श्रीकृष्ण बलरामको मारने को उद्यत हुये तो उन्होंने पैरोंको पकड़ पकड़ के उन्हें मार गिराया। श्रीकृष्ण बलराम की इस अद्भुत लीला को देखकर देवतागण पुष्प वृष्टि करने लगे। तब श्रीकृष्ण बलराम ने सखाओं से कहा— जो जितना खा सकते हो इच्छानुसार ताल फल खाओ।

सखा लोग श्रीकृष्ण बलराम के साथ ताल फल खाकर सायं गौ चराकर श्रीबलराम की प्रशंसा करते करते घर लौटे। इस ताल वन के पश्चिम दिशा की ओर स्वच्छ जल का कमल युत एक तालाब है, इस कुण्ड में स्नान करने से मानव कृतार्थ हो जाता है। केवल इसी कुण्ड में नहीं ताल वन स्थित किसी जल में स्नान करने से मानव मृत्यु उपरान्त श्रीकृष्ण चरण को प्राप्त होता है। इस कुंड के पूर्व दिशा में श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं। इस वन के पश्चिम दिशा में है श्री कुमुद वन।

श्री कुमुद वन

वनं कुमुद वनाख्य च तृतीयमुत्तमम् परम्।
तत्र गत्वा नरो देवि! ममलोके महीयते॥

परम उत्कृष्ट कुमुद नामक यह वन ताल वन से दो मील दूरी पर स्थित है। इस वन का वर्तमान नाम कदर वन यह श्रीकृष्ण की विहार स्थली है। इस वन में एक मनोहर सरोवर शोभित है। इसमें सैकड़ों कमल प्रस्फुटित हैं जिन पर अनेकों भ्रमर भ्रमरी निरंतर मधु पान में रत हैं। सरोवर के चारों ओर नाना प्रकार के सुन्दर वृक्ष हैं। सखाओं के साथ

श्रीकृष्ण यहाँ विहार करते हैं मानव लोग यहाँ आने से विष्णु लोक में पूजे जाते हैं। यहाँ पर श्रीकपिल देव दर्शनीय हैं। इस वन के एक ओर शान्तनु कुंड है।

शान्तनु कुण्ड या साँतोया

यह कुमुद वन से छह मील दूर तथा मथुरा से ढ़ाई मील दूर पश्चिम में स्थित है। कुमुद वन से शान्तनु कुण्ड जाते तीन गाँव— उस्पार माना, कोन ग्राम व लागाओं पड़ते हैं। श्रीशान्तनु महाराज ने पुत्र कामनार्थ इस स्थान पर श्री सूर्य नारायण की आराधना की थी। इस गाँव से दों मील दूर गनेशा गाँव है जहाँ गन्धेश्वरा नामक कुण्ड स्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने गन्ध द्रव्य व्यवहार किया था। तब से यह कुण्ड गन्धेश्वरा नाम से विख्यात है। इस कुण्ड के उत्तर दिशा की ओर बहुला वन हैं।

श्री बहुला वन

पंचमम् बहूल वनं वनानां वनं मुत्तमम्।
तत्र गत्वा नरो देवि! अग्निस्थानं स गच्छति॥

सर्वोत्तम बहुला वन ही पंचम वन हैं। इस वन का वर्तमान नाम वाटी है। यह शान्तनु कुण्ड से चार मील दूर उत्तर दिशा में स्थित है। पुष्प उद्यानों से समृद्धशाली शोभायमान इस वन स्थान में आने से मानव अग्निलोक में वासी होता है। श्रीविष्णु पत्नी श्री बहुला देवी सदैव इस वन में निवास करती हैं। कहावत है कि किसी कृष्ण भक्त ब्राह्मण की एक गाय चरते चरते बहुलावन आई तो एक बाघ ने उस

पर आक्रमण किया—गाय ने बाघ से निवेदन किया कि वह उसे अपने भूखे बच्चे को दूध पीलाकर आने की अनुमति दे। तदानुसार गाय अपने बछड़े के पास गई और बोली वत्स! तुम्हें जितना दूध पीना है पीलो यह तुम्हारा अन्तिम दूध पीना है। क्योंकि मैं बाघ के साथ बचन बद्ध हूँ। यह सुनकर बछड़ा बोला—जिस प्रकार तुम बाघ से वचन बद्ध हो उसी प्रकार मैंने भी प्रतिज्ञा की है कि यदि मैं तुम्हें बाघ से न बचा पाया तो मैं एक बूंद भी दूध नहीं पीयूँगा। उस ब्राह्मण ने जब गाय और बछड़े का संकल्प सुना तो गाय और बछड़े को लेकर बाघ के सम्मुख पहँचा। उनको आया देखकर बाघ बोला मैंने एक को खाने के लिये कहा है तीनों को नहीं। बछड़े व ब्राह्मण ने बाघ से कहा कि यदि तुमने बहुला गाय को जाने दिया तो हम दोनों तुमको समर्पित हैं। इधर ब्राह्मण की श्रीकृष्ण की सेवारत गाय की इस प्रकार संकट अवस्था जानकर श्रीकृष्ण ने नारद जी को वहाँ भेजा। नारद जी ने आकर श्रीकृष्ण को सारा वृत्तांत जब सुनाया तो श्रीकृष्ण ने जाकर उस बाघ का वध किया और गाय की रक्षा की। गांव के उत्तर में श्रीबहुला कुण्ड स्थित है। इस कुण्ड के उत्तर में एक और कुण्ड कृष्ण कुण्ड के नाम से शोभित है। इस कुण्ड के उत्तर का ओर श्रीबल्लभाचार्य जी की बैठक है। कुंड के दक्षिण में बहुला नामक गाय की स्थली है। गाँवके पूर्वकी ओर श्रीसंकर्षण कुंड है तथा गाँव के एक मील दक्षिण में मान सरोवर है। वर्तमान में यह खड़िया नाम से प्रसिद्ध है। जो व्यक्ति चैत माह में यहाँ स्नान करता है वह श्रीलक्ष्मी जी के साथ श्रीहरि के दर्शन करता है। गाँव से सरोवर जाते समय नीम के वृक्षों के निकट अति प्राचीन श्रीपंचानन महादेव दर्शनीय हैं। गाँव के मध्य

भाग में श्रीलक्ष्मी नारायण का मन्दिर दर्शनीय है। यहाँ से दो मील दूर राल गाँव है जहाँ श्रीबलराम कुंड स्थित है एवं पश्चिम में श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं। इसके बाद आता है मघेरा।

मघेरा

यह गाँव राल से डेढ मील दूर एवं बहुला वन से दो मील उत्तर दिशा की ओर स्थित है। अक्रूर जी जब श्रीकृष्ण बलराम को ब्रज से लेकर मथुरा जा रहे थे तब उनके लिये व्याकुल होकर ब्रजवासीगण यहाँ पर मूछित हो गये थे। इसके बाद उत्तर की ओर जैत गाँव है।

जैत गाँव

यह मघेरा से सवा मील दूर उत्तर की ओर स्थित है। अघासुर के बध के बाद देवताओं ने यहाँ जय ध्वनि की थी एवं श्रीकृष्ण के ऊपर पुष्प बरसाये थे। इसके आगे है छटीकरा गाँव।

छटीकरा गाँव

यह गाव जैत से डेढ़ मील आगे और बहुला वन से दो मील पूर्व की ओर तथा मथुरा से चार मील उत्तर की ओर स्थित है। यमलार्जुन को उद्धार करने के पश्चात श्रीकृष्ण ने महावन छोड़कर कुछ वर्ष यहाँ निवास किया था। इस स्थान पर निवास काल में श्रीकृष्ण ने माता यशोदा से गौ चराने की

इच्छा प्रगट की। तब माता यशोदा व रोहिणी ने श्रीकृष्ण और बलराम को मार्ग शीर्ष के शुक्लाष्टमी के शुभ दिन को सजा धजाकर गोप वेष में आनन्द सहित श्रीनन्द बाबा के राज सभा में भेजा। श्रीनन्द बाबा ने २ साल ३ महीने के बालक कृष्ण व भाई बलराम को सउल्लास गोदमें लेकर चुम्बन दिया। तभी अन्य गोप बालकों ने आकर बाजे बजाते हुये उनको घेर लिया। तब श्रीराम कृष्ण दो भाई बछड़ों के पूंछ पकड़ कर नाचते नाचते चलने लगे। श्रीनन्द बाबा और मातायें नयनों से आनन्द अश्रु लिये हुये कुछ दूर जाकर वापस लौट आये।

श्रीराम और कृष्ण को गाय चराने की लीला प्रारम्भ हुई और उसे देखकर सभी ब्रजवासीगण परमानन्दित हुये। श्रीकृष्ण बलराम सम वयस्क शिशुओं के साथ सींग वेणु सीखते फिर आपस में हाथापाई करते फिर कभी कभी धक्का मुक्कि व अन्य चपलताओं के साथ दिन काटते। इसी बीच श्रीकृष्ण बलराम की हत्या हेतु एक असुर बछड़े के रूप में अन्य बछड़ों में आकर मिल गया तब श्रीबलराम ने श्रीकृष्ण को इशारा किया। श्रीकृष्ण ने चुपके चुपके जाकर उस आसुरी बछड़े की पूंछ व पिछली ढ़ांगों को पकड़ कर घुमाते हुये पेड़ों के ऊपर फेंक दिया और वह असुर विशाल आकर में भूमि में गिरकर धराशायी हो गया। साथी गोप बालकों ने श्रीकृष्ण की भूरि भूरि प्रशंसा की और आश्चर्य से चकित हो गये। देवताओं ने स्वर्ग से पुष्य वृष्टि की।

इसी प्रकार एक और दिन श्रीकृष्ण बलराम गोप बालकों के साथ सुबह भोजन उपरांत जल पीने के लिये यमुना

तट पर गये। पहले उन्होंने अपनी अपनी गायों को जल पिलाया फिर स्वयं जल पिया तभी उन्होंने एक विशाल काय वकाकृति का एक असुर देखा और भयभीत हुये। गोप बालकों को भयभीत देखकर श्रीकृष्ण सबसे आगे जाकर उस असुर के सम्मुख खड़े हो गये तो बकासुर ने श्रीकृष्ण को निगल लिया। गोप बालक सभी श्रीकृष्ण की यह दशा देखकर रोते रोते मूछित हो गये। श्रीकृष्ण ने वकासुर के पेट में प्रवेश करके अग्निसम तेज प्रकाशित किया जिसे वह असुर सहन नहीं कर पाया और उसने श्रीकृष्ण को पेट से उलट दिया। श्रीकृष्ण को अक्षत देखकर वकासुर ने क्रोध से पुनः हमला किया। श्रीकृष्ण को बाहर देखकर बालकों में पुनः चेतना आई। कंस-सखा वकासुर जैसे ही अपने दोनों जबड़ों को खोलकर आक्रमण करने आया तभी श्रीकृष्ण उसके दोनों होठों को पकड़ कर जबड़ों को चीर कर फेंक दिया। देवताओं ने श्रीकृष्ण की यह लीला देखकर अन्तरिक्ष से पुष्प वर्षण किया। इसके पश्चात सभी गोप बालकों ने अपनी गायों के साथ अपने अपने घर को प्रस्थान किया। श्रीकृष्ण बलराम के हाथों छटीकरा में वत्सासुर व वकासुर का वध हुआ था। इसके बाद श्रीनन्द बाबा ने नन्दीश्वर प्रस्थान किया था। इसी छटाकरा गाँव के उत्तर की ओर है श्रीगरुड़ गोविन्द।

श्रीगरुड़ गोविन्द

यह छटीकरा गाँव के उत्तर दिशा में स्थित है। कहावत है कि श्रीराम अवतार में इन्द्रजीत ने श्रीरामचन्द्र जी को नागपाश में बांधने पर श्रीगरुड़ ने श्रीराम का बन्धन काटा

था। तब श्रीरामचन्द्र जी के भगवत स्वरूप पर गरुड़ को सन्देह हुआ था। बाद में श्रीकृष्ण अवतार में गरुड़ श्रीकृष्ण की विभूति के दर्शन समूचे ब्रज मंडल में करने लगे, इससे गरुड़ नितान्त विस्मृत हुये और श्रीकृष्ण की माया को जान लेने के पश्चात बड़े आर्तनाद के साथ उनके शरणागत हुये एवं नाना प्रकार से स्तुति करके श्रीकृष्ण की उन्होंने कृपा प्राप्तकी। तदुपरांत श्रीकृष्ण गरुड़के स्कन्धोंपर आरोहित हुये और बोले आज से मेरे नाम के पहले तुम्हारा नाम उच्चारित किया जायेगा और हमारी मूर्ति का नाम भीगरुड़ गोविन्द कहा जायेगा। एक दिन श्रीकृष्ण सखा श्रीदामा ने खेल खेल में श्रीगरुड़ का रूप धारण किया। तब श्रीकृष्ण ने चतुर्भुज नारायण रूप प्रकाशित किया एवं गरुड़ रूपी श्रीदामा के कन्धों पर सवारी की। इस प्रकार श्रीगरुड़ गोगिन्द नाम सर्व साधारण को विदित हुआ। इसके बाद आता है मोर ग्राम।

मयूर ग्राम—यह बहुला वन से दो मील की दूरी पर है। इसका वर्तमान नाम है मोर। एक बार जब श्रीकृष्ण व राधिका एक साथ हुये तो उनके चारों ओर मोर आनन्द से अपनी अपनी पूँछे विस्तारित करके नृत्य करने लगे। तब से इस गाँव का नाम है मयूर ग्राम। बहुला वन से मयूर गाँव जाते रास्ते में पड़ता है छफना गाँव। मोर गाँव के आगे पड़ता है दंतिहा।

दंतिहा—मोर गाँव से सवा मील दूरी पर स्थित है यह दन्तवक्र बध का यह स्थान। श्रीकृष्ण इस स्थान पर दन्तवक्र का बध करके यमुना के उस पार गरूई नामक स्थान

पर पिता श्रीनन्द महाराज से मिले थे। यह स्थान श्रीमहावन से चार मील दूर कलौहवन से पाँच मील दूर स्थित है। इस गाँव से आधा मील दूर जो आलीपुर नामक गाँव है वही है प्राचीन आयरे गाँव।

आयरे—दन्तवक्र का वध करने के बाद श्रीकृष्ण जब लौटे तब समस्त ब्रजवासी प्रेम से 'आयो रे आयो रे' कह कर इस स्थान पर एकत्रित हुये थे। आयरे गाँव से १ १/४ मील पूर्व की ओर है कृष्णापुर। कोई कोई इस गाँव को गोपालपुर भी कहते हैं। लम्बे समय के विरह के बाद श्रीकृष्ण बलराम को ब्रजवासीगणों ने यहाँ पाकर ब्रज मण्डल को परिपूर्ण समझा था। इसके पश्चिम की ओर है अड़ींग गाँव।

अड़ींग—यह दतिहा से पाँच मील दूर पश्चिम में तथा गोवर्द्धन से चार मील दूर पूर्व में स्थित है। यह गाँव श्रीबलदेव जी का विलास स्थल है। गांव के उत्तर पश्चिम कोने में किलोल कुण्ड स्थित है। इस कुण्ड के पूर्व की ओर कुछ दूरी पर एवं गाँव के उत्तरी भाग में श्रीबलदेव की मूर्ति दर्शनीय है। श्रीबल्लभाचार्य के मतानुसार इस स्थान पर श्रीकृष्ण ने जबरदस्ती गोपियों से दान ग्रहण किया था। इसके बाद आता है माधुरी कुण्ड।

माधुरी कुण्ड—यह अड़ींग से दो मील दूर आगे स्थित है।

जखीन गाँव—यह अड़ींग से ढाई मील दूर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। यहाँ श्रीरेवती जी, श्रीबलदेव, बलभद्र

कुण्ड व रेनुक कुण्ड दर्शनीय हैं। इस गाँव को कोई कोई दक्षिण गाँव भी कहते हैं।

तोष—यह जखीन गाँव से दो मील दूर आगे है। यह गाँव श्रीकृष्ण बलराम का तोष स्थल है। यहाँ तोषन कुण्ड दर्शनीय हैं। तोष से दो मील दूर जनती गाँव स्थित है। इसके पश्चिम दिशा में बस्ती गाँव है।

बस्ती-यह गाँव जनती गाँव से सवा मील दूर पर स्थित है। महाराज श्रीनन्द महाबन त्याग करके जब छटीकरा निवास करते थे तब महाराज श्रीवृषभानु राधेल से आकर यहाँ निवास करते थे। यहाँ से छटीकरा छह मील पूरव की ओर है। बाद में महाराज श्रीनन्द नन्दीश्वर में और महाराज श्रीवृषभानु बरसाने में निवास करने गये।

मुखराई—यह बस्ती से दो मील दूरी पर एवं श्रीराधाकुंड से सवा मील पूरब दिशा में स्थित है। श्रीराधिका की जननी श्रीमुखरा के नाम पर इस गाँव का नाम मुखराई पड़ा। यहाँ श्रीकृष्ण कुंड व वाद्यशीला दर्शनीय है। इसके उत्तर दिशा में है आरिट गाँव जिसका नाम बाद में पड़ा श्रीराधा कुण्ड।

श्रीश्रीराधा कुण्ड

**राधैव कुण्डम् द्रवतां गता भूत् कृष्णेक्षणानन्द भरेन मन्ये।
कृष्णोऽपि राधेक्षण मोदभरात्तेनैवतन्मा मगुणा द्विकुण्डी ।।**

मुखरा गाँव से सवा मील दूर उत्तर में श्रीराधा कुण्ड स्थित है। अरिष्ठासुर वृष रूप धारण करके ब्रज में उत्पात मचा रहा था। श्रीकृष्ण ने यहाँ उसका वध किया। कंस का अनुचर अरिष्ठासुर वृष का रूप धारण कर ब्रज में तरह तरह से उपद्रव करने लगा जिससे ब्रजवासी लोग परेशान हो उठे। वह दुरात्मा कभी उल्टा होकर पृथ्वी में घूमता था, कभी जहाँ तहां मल मूत्र त्याग करता था या कभी क्रोध में गर्जना करता था जिसे सुनकर गर्भवती औरतों के गर्भ गिर जाते। उसके तीक्ष्ण सींगों के प्रहार व कर्कश गर्जन सुनकर दूसरे पशु गण वन त्याग कर जाने लगे, तब ब्रजवासी लोग श्रीकृष्ण के शरणापन्न हुये, तब श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को अभय दान दिया और वृषासुर को ललकार कर बोले—ओ अधम ! तेरी तरह जो दुरात्मा हैं उनको मैं शासित करता हूँ। श्रीगोविन्द इस प्रकार उसको प्रताड़ित करते हुये अरिष्ठासुर की तरह टकटकी नेत्रों से देखने लगे। इस पर कुपित अरिष्ठासुर मेघ की गर्जना करते हुये अपनी पूँछ फैलाते हुये अपने सींग सामने कर श्रीकृष्ण की ओर दौड़कर आया। तब श्रीकृष्ण ने अरिष्ठासुर की दोनों सीगों को पड़क कर अस्सी पद दूर घुमाकर पटक दिया। श्री भगवान सर्व शक्तिमान, असुर भी वड़ा बलवान, दोनों में जोर से संघर्ष हुआ, श्रीकृष्ण ने उसे पकड़ कर पृथ्वी पर जोर से दे पटका और उसका समस्त शरीर चूर चूर कर दिया और वह मुँह से खून उलटते हुये मर गया। इस दिन श्रीकृष्ण ने संध्याकाल में अरिष्ठासुर का

वध किया था। इसी रात ब्रज गोपियों की क्रीड़ा कौतूहल स्वरूप श्रीकृष्ण युगल प्रगट हुये थे। इसी रात को श्रीकृष्ण ने जब रास लीला की अभिलाषा की तब गोपियों ने उनसे कहा—हे वृषासुर के वध करने वाले। आज तुम हमें मत छुओ आज तुमने वृष हत्या करके अपने गोविन्द नाम को कलंकित किया है। श्रीकृष्ण ने कहा—हे सुन्दरी गण! वह तो वृष नहीं बल्कि एक भंयकर असुर था। गोपियों ने कहा—सुनो, वृत्रासुर ब्राह्मण शरीर होने के कारण उसे वध करने पर इन्द्र को ब्रह्म हत्या का पाप लगा था और यह असुर तो वृष के रूप में था। गोपियों की न्याय युक्त बचन सुनकर श्रीगोविन्द बोले—हे प्रिय गोपियो! तब मैं कैसे मुक्ति लाभ करूँ? इस पर गोपियों ने कहा—हे प्रियतम! तुम यदि त्रिभुवन के समस्त तीर्थों में भ्रमण कर सको तभी पाप मुक्त होंगे। श्रीकृष्ण बोले—मैं ब्रज भूमि त्याग करके त्रिभुवन के तीर्थों में स्नान करने कहाँ जाऊँ? मैं यहीं पर त्रिभुवन के सभी तीर्थों को आह्वान करके तुम लोगों के सामने स्नान करूँगा। यह कहकर श्रीकृष्ण ने उस स्थान पर जोर से चरणों को पटका तभी पाताल से गंगा व सभी तीर्थों का आगमन हुआ तब कृष्ण ने उन्हें कहा—तुम सब मेरे कुंड में विराजमान हो। श्रीकृष्ण का आदेश पाकर सभी तीर्थ कुंड में उपस्थित हुये। तब श्रीकृष्ण बोले—हे प्रिय गोपियों! देखो सभी तीर्थ यहाँ उपस्थित हैं। गोपियों ने कहा—हे हरि तुम्हारी बात पर हमें विश्वास नहीं। ये सुनते ही सभी तीर्थों ने अपना अपना स्वरूप धारण कर लिया और हाथ जोड़कर अपना अपना परिचय देने लगे—मैं लवण समुद्र हूँ, मैं क्षीर सागर हूँ, इत्यादि इत्यादि। तदानुसार श्रीकृष्ण उन तीर्थों

में स्नान करके पवित्र हुये और गर्व से बोले मैंने सब तीर्थमय यह कुण्ड प्रकाशित किया। तुम सबों ने पृथ्वी में जन्म लेकर कोई धर्म पुन्य नहीं किया अब इस कुंड में स्नान करके सभी तीर्थों का माहात्म्य अर्जन करो। यह सुनकर श्रीराधिका ने सखियों से कहा—हे सखियो ! अब हम लोग भी इसी प्रकार का एक कुंड निर्माण करेंगे।

स्वामिनी की आज्ञा से सखियों ने श्री कुंड के पश्चिममें वृषासुर के खुरों से निकसित मिट्टी पर एक मनोहर कुंड का निर्माण किया परन्तु इसमें सर्वसाधारण को जल नहीं दिखाई दिया। इस कुंड का नाम कंकण कुंड हुआ। श्रीमती भानु नन्दिनी ने अपने हस्त कंगनों के द्वारा इस कुंड का निर्माण किया था। यह कुंड यद्यपि सर्वदा अदृश्य तथापि श्रीकुंड के संस्कार काल में भाग्यवानों को यह दिखाई देता है। उस कुंड को देखकर श्रीकृष्ण श्रीराधिक से बोले—प्रिये ! तुम्हारा कंड अवश्य ही सुन्दर है. परन्तु इसमें जल तो नहीं, अतः अपनी सखियों को लेकर अपने कुंड को मेरे कुंड से जल लेकर पूर्ण करो। इसके उत्तर में श्रीराधिका बोली—नहीं कदापि नहीं। तुम्हारे द्वारा प्राप्त जल गौबध के पाप से युक्त है अतएव मानस गंगा के पवित्र जल से यह कुंड हम पूर्ण करेंगे। श्रीकृष्ण ने श्रीराधा के अभिप्राय को जानकर मन्द मन्द हँसते हुये सभी तीर्थों को इशारा किया तो वे सब श्रीश्याम कुंड से आकर श्रीवृषभानु नन्दिनी के युगल चरणों में प्रणाम कर हाथ जोड़कर बोले—देवि ! ब्रह्मादि देवगण आपकी महिमा जानने में अक्षम हैं अतएव आप हमारे प्रति कृपा पूर्ण दृष्टि से अवलोकन करिये।

सभी तीर्थों की बात सुनकर श्रीभानु नन्दिनी बोलीं—तुम लोगों की क्या अभिलाषा है ? तीर्थ गणों ने कहा—हम लोग आपके कुंड में प्रवेश करेंगे। तब श्रीराधा ने सखियों के सम्मुख अपने प्राण बल्लभ की ओर बाँकी चितबन से देख कर हँसते हँसते कहा—हे तीर्थगण ! तुम लोग मेरे कुंड में आगमन करो। तब सभी तीर्थों ने दोनों कुंडों के बीच में से भेद करते हुये अपने जल से कुंड को परिपूर्ण कर दिया। तब श्रीकृष्ण बोले—हे प्रियतम ! जगत में मेरे कुंड से भी अधिक तुम्हारे कुंड की महिमा ख्याति प्राप्त करेगी एवं मैं प्रतिदिन तुम्हारे कुंड में स्नान व जल विहार करूँगा। कार्तिक मासके कृष्णाष्टमी के मध्य रात्रि में इस कुंडका आविर्भाव हुआ था। श्रीकृष्ण के दर्शनानन्द में श्रीराधा ने द्रवीभूत होकर श्रीराधा कुण्ड और श्रीराधा के दर्शनानंद में श्रीकृष्ण ने द्रवीभुत होकर श्रीश्याम कुंड, समस्त जीवों को प्रेममाधुर्य की पराकाष्ठा अनुभव कराने हेतु निर्मित किया था। इसीलिये इस दोनों कुंडों को श्रीराधा गोविन्द के प्रेम के कुंड कहकर अभिव्यक्त किया गया है। इन कुंडों में जो लोग निमग्न होते है वे धन्य हैं।

श्रीयुगल किशोर का मधुर प्रेम रस ही कुंडों के रूप में विराजमान हैं। इन कुंडों में जो स्नान करते हैं वे प्रेम में बिभोर हो जाते हैं। श्रीराधाकुंड के चारों ओर सखियों के भ्रमर गुंजित निकुंज पुंज शोभायमान हैं।

श्रीराधा श्याम कुंड का प्राकृतिक वर्णन है—श्रीराधा कुंड के साथ उत्तर पूर्व में श्रीश्याम कुंड शोभयमान है। श्रीश्याम कुंड के पूर्व में श्रीललितादि अष्ट सखियों के कुंड विराजमान हैं। तीनों कुंड के जल निकास के लिये परस्पर

संगम व सेतु हैं। श्रीश्याम कुंड के दक्षिण तट पर तमाल वृक्ष के नीचे श्रीगौरांग महाप्रभु की बैठक स्थित है। इसके पश्चिम में श्रीबल्लभाचार्य की बैठक प्राचीन छोंकरा वृक्ष तले उपस्थित है। उसके पश्चिम में श्रीराधा मदन मोहन जी का मन्दिर है, इस मन्दिर के साथ के संगम में जाते बांई ओर श्रीश्रीनिताई गौर मन्दिर शोभित है। इसके पश्चिम में धर्मशाला व श्रीराधा कुण्ड के दक्षिण तट पर श्रीराम मण्डली वेदी (रास बड़ी) स्थित है, फिर दक्षिण में श्रीराधा गोपीनाथ जी का मन्दिर स्थित है। फिर उत्तरी कोने में श्रीहनुमान जी का मन्दिर है, फिर उसके दक्षिण में श्रीराधा गोकुलानन्द का मन्दिर, उसके दक्षिण में मणिपुर महाराज का प्राचीन श्रीगौर-गोपाल जी का मन्दिर सुशोभित है। श्रीहनुमान जी के मन्दिर के सामने प्रमुख बाजार व श्रीराधाकुण्ड गाँव की बस्ती स्थित है। श्रीहनुमान जी की बाँई ओर श्रीकुण्डके पारा महादेव जी विराजमान है। श्रीकुण्डेश्वर महादेव के कुछ उत्तर की ओर प्राचीन वट वृक्ष स्थित है। इस वृक्ष के पश्चिम उत्तर की ओर श्रीराधा कृष्ण का प्राचीन मन्दिर है, कहावत है कि—श्रीराधा कुण्ड के उद्धार के समय यह युगल मूर्ति श्रीकुण्ड में से प्रगट हुये थे। श्रीपाद रघुनाथ दास गोस्वामी ने इस मूर्ति का सेवा भार ब्रजवासियों के हाथों सौंपा था। बाद में किसी धनी व्यक्ति ने श्रीराधा कृष्ण का मन्दिर निर्माण करवाया तथा बहुत समय बाद इसके जीर्ण अवस्था में पहुँचने पर किसी भाग्यवान व्यक्ति ने इस मन्दिर का संस्कार करवा दिया था।

कुछ काल पूर्व मणीपुर महाराज श्री चूड़ा चाँद सिंह

की आर्थिक सहायता से श्रीकुण्ड के परिक्रमा का मार्ग पक्का बनवाया गया था। इस बट वृक्ष के पश्चिम में मणिपुर युवराज का कुंज स्थित है। वट वृक्ष के उत्तर की ओर श्रीश्यामानन्द प्रभु का श्रीराधा श्याम सुन्दर मन्दिर विराजमान है, उसके उत्तर में श्रीदामोदर मन्दिर व उसके और उत्तर में श्री श्रीनिवास आचार्य प्रभु का स्थान शोभायमान है। यहाँ पर श्रीमन्महाप्रभु की नृत्य मुद्रा की मूर्ति शोभायमान है एवं श्रीश्याम सुन्दर मन्दिर के पूर्व व श्रीराधा कुण्ड के उत्तर में श्रीजान्हवा माता का स्थान व श्रीराधा गोपीनाथ मन्दिर स्थित है। उसके पूर्व में 'श्रीपाद रघुनाथ दास गोस्वामी का घेरा' व समाधि स्थित है। इसके उत्तर में 'ब्रजानन्द घेरा' है। श्रीराधा कुण्ड के पूर्व तट पर श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी की भजन कुटीर व उसके दक्षिण में श्रीराधा श्याय कुण्ड का संगम स्थल है। श्रीश्याम कुण्ड के उत्तरी तट पर श्रीरघुनाथ दास गोस्वामी का भजन कुटीर है। साथ ही पूर्वीय कोने में श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी श्रीदास गोस्वामी व श्रीकृष्ण दास कविराज गोस्वामी तीनों की एक साथ चिता समाधि स्थित है। कहा जाता है कि—श्रीपाद सनातन गोस्वामी के भातृपुत्र श्रीराजेन्द्र श्रीकुण्ड के तट पर माथुर लीला श्रवन करके इतने उतावले हो गये कि तुरन्त वे श्रीकृष्ण को मथुरा से ले आने को चल दिये। कुछ दूर जानेपर उनकी जब चेतना हुई तो वहीं उन्होंने जल समाधि ले ली। श्रीपाद दास गोस्वामीकी समाधि के उत्तर दिशा में श्रीकृष्ण दास कविराज की भजन कुटीर है और उसके दाँई ओर है श्री श्रीगदाधर चैतन्य मन्दिर तथा बाँई ओर है श्रीराधा गोबिन्द जी का मन्दिर। इस मन्दिर के पश्चिम दिशा में श्रीराधा कुंड के एक ओर कोने में स्थित

है एक रासवेदी श्रीगोविन्द मन्दिर के साथ ही स्थित है श्रीगोवर्धन शिला जो कि श्रीगोवर्धन बिह्वा के नाम से विख्यात है।

श्रीपाद दास गोस्वामी ने साधारण निर्वाह के निमित्त श्रीश्याम कुण्ड के पूर्व दिशा में एक कुँआ खुदवाया था—वर्तमान समय में इसे गोप कुँआ कहकर पुकारा जाता है। इस गोप कुँऐ से उक्त श्रीगोवर्धन शिला खंड का प्रादुर्भाव हुआ था। श्रीदास गोस्वामी को इन शिला खंड व श्रीगोवर्धन जिह्वा ने स्वप्न में आदेश दिया कि उन्हें श्रीगोविन्द मन्दिर के बगल में स्थापित किया जाय। बाद में बड़े समारोह के साथ एक छत्र बनाकर इनकी स्थापना की गई। गोप कुँआ से श्रीगोवर्धन शिला प्रादुर्भाव होने से उस कुँए के पानी को प्रयोग करना धर्म विरुद्ध समझा गया। बाद में श्रीललिता कुंड के पूर्वी तट पर एक कुँआ खुदवाया गया और उसका पानी प्रयोग में लाया गया। श्रीगोविन्द मन्दिर के साथ ही स्थित है 'पंचायती घेरा' इसके आगे श्रीराधारमण श्रीरेवती व श्रीबलदेव का मन्दिर स्थित है। इनके उत्तर में है 'नूतन घेरा', श्रीगोविन्द मन्दिर के आगे उत्तर में स्थित है श्री जगन्नाथ मन्दिर एवं दक्षिण में है श्रीव्रज मोहन जी का मन्दिर, और आगे दक्षिण में है श्रीराधा बल्लभ मन्दिर, और आगे विराजमान है श्रीमहादेव। श्रीराधा बल्लभ व श्रीकाला चाँद मन्दिर के पूर्वी भाग में है तराश भूमाधिपति का श्रीराधा विनोद जी का मन्दिर। इसके आगे है 'नन्दिनी घेरा' जिसमें स्थित है श्रीजीव गोस्वामी की भजन कुटीर। इसके अगले हिस्से में श्रीललिता बिहारी का मन्दिर, दक्षिण में 'घन माधव घेरा' व सामने एक रास मण्डल स्थित है। श्रीललिता विहारी

मन्दिर के निकट है मणिपुर राजा का कुंज व श्रीगोविन्द मन्दिर, पश्चिम में स्थित है। श्रीराधा विनोद मन्दिर, पूर्व कोने में स्थित है श्रीगोप कुँआ, पश्चिम में धर्मशाला, उसके दक्षिण में श्रीसीतानाथ मन्दिर, सामने श्रीललितादि अष्ट सखियों का कुंज, व्यास घेरा दक्षिण में श्रीराधा माधव मंदिर व श्रीबनखंडी महादेव। श्रीबनखंडी महादेव के दक्षिण तक श्रीललिता कुण्ड की सीमा है। इसके आगे स्थित है श्रीगौरांग महाप्रभु का मन्दिर जो कि तमाल तला के महाप्रभु के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीराधा कुण्ड व श्रीश्याम कुण्ड के चारों दिशाओं में स्थित घाट

श्रीगोविन्द घाट—यह कुण्ड के पूर्वीय तट पर स्थित है। श्रीपाद सनातन गोस्वामीने इस घाट पर स्नान करते समय श्रीराधा गोविन्दकी झूलन लीलाका दर्शन किया था और श्रीरूप गोस्वामी कृत 'चाटु पुष्पाञ्जलि' को 'वेणी व्यालांगना फणा" इस श्लोक का रहस्य हृदयंगम किया था। यह घाट श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी के भजन कुटी व श्रीबांके बिहारी मन्दिर के मध्य पश्चिम दिशा में स्थित है। श्रीकुण्ड के संस्कार काल में श्रीलाला बाबू ने इस घाट की सीमा का निर्माण कराया था। यात्रियों के लिये इस घाट पर स्नान करने का विधान है।

श्रीमानस पावन घाट—कथित है कि यह घाट श्रीवृषभानु नन्दिनीको अतिशय प्रिय है। यह श्रीश्याम कुन्ड के दक्षिण पश्चिम कोने में स्थित है।

श्रीपंच पाण्डव घाट—यह श्रीश्याम कुंड के उत्तर एवं मानस पावन घाट के पूर्व में संलग्न है। इस घाट के ऊपर स्थित पाँच वृक्षों ने श्रीदास गोस्वामी को पंच पाण्डव कहकर अपना परिचय दिया था। कथित है—श्रीबद्रीनाथ की कृपा से एक सेठ ने श्रीकुण्ड की सफाई संस्कार का कार्य प्रारम्भ किया, उसी समय एक रात महाराज युधिष्ठिर ने स्वप्न में श्रीदास गोस्वामी से कहा—महाराज वृक्ष स्वरूप हम पाँचों भाई श्रीश्याम कुण्ड के तट पर निवास करते हैं आप प्रातः काल इस घाट पर आकर हमें प्रत्यक्ष देखिये और हमारी रक्षा करिये (संस्कार काल में श्रीश्याम कुण्ड के चारों कोने को बराबर बनाने की योजना थी जिसमें इन वृक्षों को काट दिया जाता)। अगले दिन सुबह गोस्वामी जी ने वहाँ जाकर पाँचों वृक्षों को देखा और उनको काटने से रोका। इस पंच पांडव घाट के उत्तर में श्रीकविराज गोस्वामी की भजन कुटीर स्थित है। श्रीकविराज गोस्वामी के भजन कुटीर के पूर्वीय भाग में एक प्राचीन छोकरा वृक्ष है, उन्होंने श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवर्ती को एक काशी वासी ब्राह्मण कहकर अपना परिचय दिया। यह श्रीगदाधर चैतन्य मन्दिर में प्रवेश करते समय रास्ते के ऊपर दिखाई देता है।

श्रीराधा बल्लभ घाट—यह पंच पांडव घाट के पूर्व दिशा में व श्रीगदाधर चैतन्य मन्दिर के एक कोने से संलग्न है। इस घाट के ऊपर श्रीपाद हरिवंश गोस्वामी की बैठक स्थित है। उसके उत्तर में प्राचीन रास मंडल स्थित है।

श्रीराधा विनोद घाट—यह श्रीराधाबल्लभ घाटके पूर्व में व श्रीश्याम कुंड के उत्तरी भाग पर स्थित है। इस घाट के ऊपर श्रीमहादेव विराजमान हैं तथा इसके उत्तरी भाग में श्रीराधा विनोद मन्दिर शोभित है।

नन्दिनी घेरा घाट—यह श्रीराधा विनोद घाट के पूर्व दिशा में स्थित है। घाट के उत्तर में नन्दिनी घेरा घाट स्थित है। इस घेरा में किसी महात्मा द्वारा निर्मित एक रास मंडल है।

श्रीजोव गोस्वामी घाट—नन्दिनी घेरा के अगले भाग में यह घाट स्थित है। घाट के पूर्वी ओर श्रीजीव गोस्वामी की भजन कुटी व घेरा है। यह घाट श्रीललिता कुंड संगम के उत्तरी सीमा तक विस्तृत है।

श्रीघन माधव घेरा घाट—श्रीजीव गोस्वामी घाट के पूर्वीय कोने एवं गया घाट के पूर्वीय सीमा तक यह घाट विस्तृत है। इस घाट के पूर्वीय भाग में घनमाघव घेरा स्थित है। यह घाट ललिता कुण्ड संगम के पूरब में स्थित है।

श्रीगया घाट—यह मणिपुर राजा का घाट है जो श्रीश्याम कुण्ड के पूर्वी भाग में स्थित है। गोप कुँआ होते हुये कुंड में जाते यह घाट पड़ता है। इस घाट के ऊपर ही श्रीपाद हरिराम व्यास का घेरा स्थित है। यहाँ एक चबूतरा है जहाँ श्रीपाद माधवेन्द्रपुरी आकर विराजे थे।

अष्ट सखी घाट—गया घाट व श्रीचैतन्य महाप्रभु की बैठक के बीच में यह स्थित है। यह घाट श्रीश्याम कुण्ड के पूरव में स्थित है।

श्रीश्री चैतन्य महाप्रभु की बैठक व घाट

यह श्रीश्याम कुण्ड के दक्षिणी तट पर स्थित है। यहाँ तमाल वृक्ष के तले बैठकर श्रीगौरांग महाप्रभु ने आरिट ग्राम वासियों से दोनों कुण्डों के विषय में जिज्ञासा वार्ता की थी। परन्तु उस समय दोनों कुंड लुप्त होने के कारण कोई इनके बारे में कुछ सूचना नहीं दे पाया। कदाचित श्रीचैतन्य महाप्रभु निकटवर्ती दो धान के खेतों के थोड़े से जल में स्नान करके पुलकित होकर दोनों युगल कुण्डों की महिमा कीर्तन करने लगे, कुछ काल पश्चात श्रीमद दास गोस्वामी ने जब कुंड युगल के सफाई संस्कार की इच्छा की तब श्रीश्याम कुंड के चारों ओर स्थित प्राचीन वृक्षों ने अपना अपना परिचय स्वप्न में दिया और श्रीकुंड की सीमा निर्देश करने लगे। उस निर्देशानुसार जब श्रीश्याम कुंड की रज उठानी शुरू हुयी तब श्रीश्याम कुंड को आकृति श्रीकृष्ण के दाहिने चरण की आकृति के अनुरूप प्रकाशित हुयी। यह देखकर श्रीदास गोस्वामी व कविराज गोस्वामी के मन में एक अनिर्वचनीय आनन्द की तरंग उछलने लगी। दूसरी ओर अन्य लोग श्रीयुगल कुण्डों के निर्देशित स्थान को लेकर परस्पर तर्क वितर्क करने लगे परन्तु उनका सन्देह और अधिक क्षण तक स्थिर नहीं रह पाया। क्योंकि कुंड के रज उठाने के साथ ही श्रीचैतन्य महाप्रभु की बैठक स्थलि के सम्मुख ही श्रीबज्र नाभकृत पाँच हजार वर्ष प्राचीन कुण्ड प्रकट हो गया। श्रीबज्रनाभ मथुरा राज्य सिंहासन पर आसीन होने पर गालव्य ऋषि को साथ लेकर जब अपने पितामह श्रीकृष्ण के ब्रज मण्डलीय लीला स्थलियों का संस्कार व उद्धार करने

निकले, तब उन्होंने इसी आरिट गाँव में आकर अरिष्टासुर बध स्थली पर अपने नाम से एक कुंड का निर्माण किया। कदाचित श्रीश्याम कुंड के मध्य भाग में श्रीवज्रनाभ कुंड नामक यह कुंड प्रसिद्ध है। जब श्रीवज्रनाभ कुंड प्रगट हुआ तब श्रीकुंड युगल स्थलि के स्थान संबन्ध में किसी का कोई सन्देह नहीं रह गया। तब से नाना दश दिशाओं से असंख्य यात्री गण आकर कुंड युगल में स्नान करके कृतार्थ होने लगे।

श्रीपासा खेल (चौपड़) घाट——यह श्रीश्रीमहाप्रभु की बैठक घाट के पश्चिम एवं श्रीश्याम कुंड के दक्षिण तट पर स्थित है। वर्तमान में श्रीबल्लभाचार्य जी की बैठक इस घाट पर स्थित है। जो लोग श्रीकुंड में स्नान करके श्रीचिंता हरन बाबा का दर्शन करते हैं उनकी समस्त चिन्तायें दूर हो जाती हैं। इस घाट के ऊपर एक प्राचीन छोकरा वृक्ष है। इस घाट के व श्रीमदन मोहन मन्दिर के मध्यवर्ती स्थान में एक गौ घाट स्थित है।

श्रीमदन मोहन घाट——श्रीश्याम कुंड के दक्षिण पश्चिमी कोने में एवं श्रीराधा कुंड के दक्षिण पूर्वीय तट पर यह घाट स्थित है। घाट के दक्षिण तट पर श्रीमदन मोहन जी का मन्दिर है।

श्रीयुगल संगम घाट——यह श्रीराधा कुंड व श्रीश्याम कुंड के सन्धि स्थल पर सुशोभित है। पहले श्रीराधा कुण्ड स्नान करके फिर श्रीश्याम कुण्ड स्नान करना चाहिये। इस संगम घाट के ऊपर ही है प्राचीन तमाल वृक्ष, श्रीकुण्ड

संस्कार के समय श्रीलाला बाबू को अगस्त्य ऋषि कहकर अपना परिचय स्वप्न में दिया था।

श्रीरास बाड़ी घाट——यह श्रीराधा कुण्ड के दक्षिण तट पर स्थित है, इस घाट के दक्षिणी भाग में एक रास मंडल शोभायमान है। इस रासबेदी के नामानुसार प्राचीन रास मण्डल रासबाड़ी नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थलि पर, ज्ञानी, रसस्वी व भजनशील महापुरुष श्रीतीनकड़ि गोस्वामी जी ने कुछ दिन भजन किया था। अभी भी उनकी भजन स्थली को उनके शरणागत सेवकों ने सुरक्षित रखा है। रास बाड़ी व श्रीहनुमान जी के मन्दिर के मध्य भाग में एक गौ घाट स्थित है।

श्रीझूलन वटीय घाट——यह श्रीराधाकुण्ड के पश्चिम तट पर स्थित है। इस घाट के ऊपरी भाग में अति प्राचीन वट वृक्ष सुशोभित है। हर साल जल क्रीड़ा उत्सव के दूसरे दिन इस वृक्ष के डाल पर गाँवों के ब्रज गोपी गण महा-समारोह के साथ झूलन लीला अभिनीत करते हैं। इस घाट का अन्य नाम श्रीश्रीराधा कृष्ण का घाट भी है।

श्रीजाह्वी घाट——यह श्रीराधाकुण्ड के उत्तर में स्थित है। श्रीनित्यानन्देश्वरी श्रीजाह्वी माता श्रीकुण्ड दर्शन करने आकर इस स्थान पर बैठी थीं एवं श्रीकुण्ड के जिस घाट पर उन्होंने स्नान किया था तब से यह घाट श्रीजाह्वी घाट कहलाता है। घाट के उपर ही श्रीजाह्वी माता को बेंठक व घाट पर उपस्थित श्री मन्दिर में श्रीगोपीनाथ जी

के बाईं ओर विराजित श्री जाह्नवा जी शोभित हैं। मन्दिर के पश्चिम में है गो घाट।

श्रीवज्रनाभ कुण्ड—यह श्रीश्याम कुण्ड के मध्य भाग में स्थित है। श्रीकृष्ण के प्रपौत्र श्रीवज्रनाभ ने अरिष्ठासुर के बध के स्थान पर अपने नाम पर जिस कुंड का निर्माण करवाया था, वह कुण्डवज्रनाभ कुंड के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीभानुखोर—यह श्रीराधाकुण्ड ग्राम के उत्तर में स्थित है। श्रीगोवर्धन पर्व के समय श्रीवृषभानु महाराज ने यहाँ शिविर स्थापित किया था। इसके दक्षिण में एक रास मण्डल शोभित है।

श्रीबलराम कुण्ड—यह भानुखोर के निकट ही उपस्थित है। शंखचूड़ के बध के दिन श्रीपूर्णमासी देवी के आदेशानुसार सभी सखाओं सहित श्रीबलराम ने यहाँ विश्राम किया था। कुंड के दक्षिणी तट पर दो मनोरम कदम्ब के वृक्ष विराजमान है।

श्रीललिता कुण्ड—यह श्रीबलराम कुण्ड के दक्षिण व श्रीश्याम कुंड के उत्तरी भाग में स्थित है। इस कुण्ड के मध्य में अष्ट सखी कुण्ड है। यह अष्ट सखी कुण्ड एक ही स्थान पर अर्धचन्द्राकार में श्रीश्याम कुण्ड के तीन ओर विद्यमान है।

श्रीलगमोहन कुण्ड—श्रीराधा कुण्ड से एक मील दूर पूरबमें यह कुण्ड स्थित है। इस कुण्ड के चारों ओर कदम्ब

के वृक्षों का वन दूर दूर तक फैला हुआ है। सर्व साधारण लोगों को यह वन श्रीराधा बाग के नाम से विदित है। कहावत है—इस कुण्ड के पश्चिम तीर से शंख चूड़ श्रीराधा को हर कर उत्तर दिशा में ले भागा था तथा बाद में वह श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था। श्रीकृष्ण ने शंख चूड़ के मस्तक से मणी निकालकर श्रीबलराम को अर्पण की थी जो कि उन्होंने मधुमंगल के द्वारा श्रीराधिका को अर्पण किया था। कुंड के पश्चिमी तट पर अभी भी एक मिट्टी का ढेर है जिसके ऊपर कोई घास इत्यादि की उपज नहीं होती है। उस स्तूप के ऊपर श्रीराधिका विराजी थीं। कुंड के पूर्वी भाग में एक और स्तूप है। श्रीपाद रघुनाथ गोस्वामी उसके ऊपर बैठकर भजन करते थे। बाद में श्रीसनातन गोस्वामी के आदेशानुसार श्रीकुंड के भजन कुटिया में आकर निवास करने लगे।

शिवाखोर—श्रीराधा कुंड एवं गाँव के पश्चिमी भाग में यह स्थित है। कहा जाता है—एक समय एक सियारनी पानी पीने यहाँ आयी तो ब्रजवासियों के बालकों ने खेलते हुये उस पर ईंट पत्थर या लाठियों से प्रहार किया तो वह सियारनी प्राण बचाने के लिये चारों तरफ दौड़ते दौड़ते इस शिवाखोर के एक गढ्ढे में प्रवेश कर गयी। बालकों ने यह देखकर लकड़ी घास फूंस इत्यादि इकट्ठा करके उस गढ्ढे के चारों ओर आग लगा दी जिससे सियारनी जलकर मृत प्रायः हो गयी। उसी समय श्रीभानु नन्दिनी सखियों के साथ मध्यान्ह लीला में सूर्य पूजा निमित्त श्रीराधा कुंड आई हुई थीं। किसी सखी ने उन्हें उस सियारिनी की दुर्दशा का

वर्णन किया। सुनकर स्वामिनी के हृदय में करुणा उदय हुई और वह गदगद स्वर से बोली—'अ हा ! मेरे कुण्ड के निकट सियारनी इतने दुःख से मर रही है, उसे शीघ्र ही मेरे निकट ले आओ"। सखियों ने तभी सियारनी को सेवा योग्य सखी स्वरूप प्रदान किया और स्वामिनी के निकट ले आई, वह स्वामिनी को देखकर उनके श्री चरणों में लौटने लगी और व्याकुलता से रोने लगी। श्रीस्वामिनी जी ने अति प्रीति सहित उसके मस्तक में हाथ रखा और सुमधुर वाणी से उसे सान्त्वना प्रदान करके अपनी सेवा देते हुये कतार्थ किया। तब से श्रीराधा कुण्ड में जो कोई मृत्यु होती है उसे यहीं पर लाकर चिता पर रक्खा जाता है। कुंड के उत्तर में श्री महादेव विराजमान हैं।

माल्याहार या श्रीमालीहारी कुण्ड

क्रय विक्रय खेलाब्धौ मुक्तानां मज्जितात्मनोः।
मिथो जयार्थिनो वंन्दे राधामाधवयोर्युगम्॥
माल्यहार स्थितं दिव्यं क्रीड़नकं मनोहरम्।
श्रीराधा कृष्णयो वंन्दे मुक्ता चरित्रनामकम्॥

श्रीराधा कुंड एवम् श्रीश्याम कुण्ड के पश्चिम दिशा में इस माल्याहार कुण्ड के तीर पर माधवी कुञ्ज में श्रीराधा रानी सखियों के साथ अपने प्राण कान्त के लिए मुक्ताहार की रचना कर रही थीं। इसी बीच में इस स्थान पर श्रीराधा माधव के एक अपूर्व लीला का आविर्भाव हुआ था। एक बार कार्त्तिक के महिने में गिरि गोवर्द्धन में दीपमालिका महोत्सव में गोपगण अपने अङ्गों को एवम् गाय तथा भैंसों को विविध

आभूषणों से सुसज्जित कर रहे थे। श्रीराधिका भी अपनी सखियों के साथ अमरापुरी के नन्दन कानन को भी विनिन्दित करने वाले इस मनोहर उद्यान में बैठकर अपने प्राण कान्त के निमित्त मुक्ताहार की रचना कर रही थीं। इसी बीच श्रीकृष्ण ने अपने विचक्षण शुक पक्षी के मुख से इस संवाद को श्रवण किया। कृष्ण की इच्छा हुई अपनी हंसी और हरिनी नामक दो गायों को मोतियों से सजाने की। वे राधा और अन्य गोपियों के निकट उनसे मोती माँगने गये। उन्होंने मोती देने को मनाकर दिया। तब वे माँ के पास गये और कहा—माँ मुझे मोती दे दो, मैं मोतीयों की खेती करूँगा माँ ने बहुत समझाया कि मोती पेड़ में नहीं उगते। पर श्रीकृष्ण के आग्रह करने पर उन्होंने वात्सल्य वश कुछ मोती दे दिये। श्रीकृष्ण ने मोती वो दिये। वे फिर गये राधा और उनकी सखियों के पास और कहा—तुम लोग मेरे मोती के खेत को दूध से सींचा करो। फसल होने पर उसका कुछ अंश तुम्हें भी दूँगा। गोपियों ने कृष्ण के मोतियों की खेती का मखौल उड़ाया और बात टाल दी।

इधर लीला बिस्तारिणी योगमाया की आचिन्त्य शक्ति के प्रभाव से कृष्ण के मोतियों के खेत में तीन ही दिन में अंकुर फूट आये और सुन्दर सुन्दर मोती फलने लगे। तब गोपियों ने स्वयं भी मोतियों की खेती करने का विचार किया। वे अपने अपने घरों से बिना घर वालों के बताये सब मोती ले आयीं। मोती वो दिये और खेत को मक्खनादि से सींचने लगीं, जिससे उनकी खेती कृष्ण की खेती से भी अच्छी हो। कुछ दिन बाद देखा गया कि मोती फलना तो दूर बोये हुए मोती भी चोरी हो गये।

इधर कृष्ण गोपियों को चिढ़ाने के लिये अपने साथियों गाय बैलों और बन्दरों तक को मोतियों से सजाने लगे।

गोपियों को अपने मोती चोरी हो जाने के कारण गुरुजनों की ताड़ना का भय था। उन्होंने सोचा कृष्ण से कुछ मोती खरीदकर घर रख दें। जब वे मोती खरीदने गयीं तो कृष्ण से मूल्य के सम्बन्ध में हास परिहास युक्त लम्बा वाद बिबाद हुआ। अन्तमें कृष्णने मूल्य के रूपमें गोपियोंके अंग संग की माँग की। गोपियों ने इसे स्वीकार नहीं किया। वे राधा कुण्ड में वकुल कुंज में जा बैठी और सोचने लगी क्या करना चाहिये। तब कृष्ण ने प्रत्येक गोपी के लिये सखाओं द्वारा बहुत से मोती भेज दिये गोपियों ने उन मोतियों मे श्रीराधाको और अपने आपको सजाया और गुरुजनों के सामने जाकर उन्हें प्रसन्न किया।

यह कहानी श्रीकृष्ण द्वारका में सत्य भामा को सुना रहे थे। सुनाते सुनाते वे राधा की यादमें अधीर होकर विलाप करने लगे। सत्यभामा अपने वस्त्रांचल से उन्हें वीजन करने लगी एवं धीरज देने लगीं।

श्रीकुसुम सरोवर

यह श्रीराधा कुण्ड से दो किलो मीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में कमलों के समूह की आकृति में स्थित है। इसलिये इसका नाम है कुसुम सरोवर। कमल चुनने के बहाने श्रीराधा गोविन्द के नित्य मिलन की यह स्थली है। इस सरोवर में स्नान करते ही श्रीनारद ने गोपी स्वरूप प्राप्त किया था। सरोवर के पश्चिमी तट पर श्रीबलदेव जी के दो मन्दिर उत्तर

व दक्षिण दिशा में स्थित हैं। सरोवर के एक ओर श्रीउद्धव जी का मन्दिर है। इस मन्दिर के एक दूसरी ओर एवं सरोवर के पश्चिम भाग में श्री उद्धव कुण्ड स्थित है। इस स्थान पर श्रीउद्धव जी ने श्रीबज्रनाभ व द्वारका महीषी गणों को श्री कृष्ण के दर्शन कराये थे। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण के अन्तर्ध्यान के पश्चात द्वारका के महिषी गण श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल होकर मथुरा में श्रीकृष्ण प्रिया श्री यमुना को आनन्दित होकर बोले "हे कालिन्दी जिस प्रकार हम लोग श्रीकृष्ण के प्रिय हैं उसी प्रकार तुम भी उनकी प्रिया हो उनके विरह में जिस प्रकार हम लोग व्यथित हैं' उस प्रकार तुम तो व्यथित नहीं हो इसका कारण क्या तुम हमें बताओगी?' तब श्रीयमुना हँसते हँसते बोलीं, "आत्माराम श्रीकृष्ण की आत्मा श्रीराधा की मैं दासी हूँ, उन्हीं की दासिता के प्रभाव से मैं विरह वेदना को स्पर्श नहीं कर पाई हूँ। उनसे तुम्हारा कभी विच्छेद नहीं है, परन्तु व्याकुलता वश इस बात से आप अज्ञात हैं। अक्रूर के आगमन पर गोपियों में इस प्रकार विरह दिखाई दिया था किन्तु उद्धव जी की सान्त्वना से वह ज्वाला बुझ गई थी। उद्धब जी के साथ यदि किसी प्रकार तुम लोगों का साक्षात्कार हो तो निःसंदेह प्राणकान्त के साथ तुम्हारा नित्य बिहार होगा।"

यह सुनकर महिषी गण बोले, "सखि ! तुम धन्य हो क्योंकि प्रियतम से तुम्हारा कभी विच्छेद नहीं है, लेकिन जिससे तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हुआ है, हम भी उन श्रीभानु नन्दिनी की दासी बनेंगी। अतएव अब कैसे श्री उद्धव जी के दर्शन होंगे, हमें उसका उपाय बताओ।" श्रीकालिन्दी बोली

"अब उद्धव जी गोपियों के चरणों की रज प्राप्त करने के लिये वृक्ष लता का रूप धारण करके गोवर्धन के निकट निवास करते हैं। अतएव तुम लोग श्रीबज्रनाभ को साथ लेकर कुसुम सरोवर जाओ एवं वीणा बंशी मृदंग इत्यादि वाद्य सहित कृष्ण भक्तों के द्वारा वहाँ उत्सव मनाने से वहाँ श्रीउद्धव से अवश्य साक्षात्कार होगा।" यह सुनकर महिषी गणों ने श्रीकालिन्दी का अभिवादन किया तथा बज्रनाभ व परिक्षित के निकट जाकर सब कुछ वर्णन किया। तब महाराज परीक्षित उनके साथ आनन्द सहित गोवर्धन से आगे सखी स्थली के निकट गये एवं संकीर्तन उत्सव प्रारम्भ किया। संकीर्तन के आरम्भ होने पर सभो श्रीउद्धव के दर्शन के निमित्त तन्मयता को उद्दत हुये तभी सभी के समक्ष तृषागुल्म-लता से पीताम्बरधारी वनमाला से विभूषित श्यामकान्ति श्रीमद उद्धव जी आविर्भूत हुये ओर श्रीगोपी जन बल्लभ के गुणगान करते करते संकीर्तन के निकट आकर संकीर्तनोत्सव को शोभित किया। तब जिस प्रकार स्फुटिक मणि से चन्द्र किरण की आभा छिटकती है उसी प्रकार उद्धव के आगमन से सब लोग आनन्द में मगन होकर अपने अपने कर्तव्य भूल गये। थोड़े ही देर में श्रीकृष्ण सदृश रूपवान श्रोउद्धवे को दर्शन करके उनकी पूजा करके सभी का मनोरथ पूणे हुआ। श्रीउद्धव ने उन सबको यथायोग्य सत्कार व आलिंगनादि करके महाराज परीक्षित से कहा—"हे राजन् ! तुम धन्य हो, श्रीकृष्ण भक्ति में तुम्हारा मनोरथ पूर्ण है, इसीलिये श्रीकृष्ण संकीर्तन में तुम्हारा चित्त विशेष रूप से विभोर है एवं श्रीकृष्ण प्रिया व श्रीबज्रनाभ के प्रति तुम्हारी जो अतुलनीय प्रीति है यह भी अति सौभाग्य का विषय है। हे तात ! यह तुम्हारे

लिये उचित है क्योंकि श्रीकृष्ण ही तुम्हारे इस अंग वैभव के प्रदाता हैं। दूसरे द्वारिका महिषी गणों में यही लोग धन्य हैं। श्रीकृष्ण ने इन लोगों के ब्रज वास के लिये अर्जुन को आदेश दिया है। सोलह कला से परिपूर्ण श्रीकृष्ण से हजारों चिन्मय किरण चारों दिशाओं में प्रस्फुटित हैं, सोलह कलायुत पूर्ण चन्द्र स्वरूप होकर वे ब्रजभूमि को लगातार उज्ज्वलित कर रहे हैं। हे राजन ! श्रीकृष्ण के दांये चरण में श्रीवज्रनाभ का स्थान है किन्तु श्रीकृष्ण की योग माया के प्रभाव से अपने अपने स्वरूप को भूलकर दुःख का अनुभव कर रहे हैं। हृदय में श्रीकृष्ण के स्वरूप का प्रकाश अनुभव नहीं होता, द्वापर युगके अन्त में श्रीभगवान जब अपनी माया हटायेंगे तब सब लोग उनका दर्शन लाभ करेंगे। परन्तु अब वह समय बीत चुका है, अतएव कोई अन्य उपाय सुनो— श्रीभगवान के अप्रकट काल में श्रीमद्भागवत पाठ श्रवन करो उससे श्री भगवान का प्रादुर्भाव होता है। जहाँ श्रीमद्भागवत का एक या आधा श्लोक पाठ होता है, वहाँ पर श्री भगवान अपने प्रेयसी गणों सहित विराजते हैं। भारत भूमि में जन्म लेने से जो श्रीमद्भागबत नहीं सुनते हैं वे अपने हाथों अपनी हत्या करते हैं. जो नित्य प्रति श्रीमद् भागवत सुनते है वे पिता, माता व पत्नि के कुल का उद्धार करते हैं।

श्रीभागवत के श्रवण व पठन से ब्राह्मण के विद्या की उन्नति, क्षत्रिय की शत्रु पर विजय, वैश्यों को धन लाभ, शुद्रों को आरोग्य लाभ एवं स्त्री तथा अन्य जातियों की सर्व अभिलाषायें पूर्ण होती हैं। अनेक जन्मों की साधना व सिद्ध अवस्था के फल स्वरूप मानव श्रीमद्भागवत की प्राप्ति करता है एवं श्रीमद्भागवत से भगवत भक्ति एवं श्रीकृष्ण का प्रकाश उद्दीप्त होता है। अतएव श्रीमद्भागवत की

नित्य सेवा कोई भाग्यवान ही करता है। प्राचीन काल में सांख्यायन ऋषि की कृपा से बृहस्पति ने श्रीउद्धव को श्रीमद्भागवत प्रदान किया। जिसे वैष्णवीय रीति अनुसार एक मास तक पठन द्वारा वह श्रीकृष्ण के प्रियतम सखा हुये। तदुपरान्त श्रीकृष्णने कृपा करके उन्हें ब्रजमंडलमें बिरह सन्तप्त गोपियों के निकट भेजा और उन्होंने श्रीमद्भागवत की कथा उनके मुख से सुनकर अपनी विरह बेदना से मुक्ति पाई। स्वयं भगवान श्रीकृष्णने उद्धवजी को श्रीमद्भागवतका रहस्य प्रदान किया। श्रीकृष्ण के उपदेशानुसार बद्रिकाश्रम जाकर उन्होंने सिद्धि प्राप्त की और तदुपरान्त ब्रज के वृक्ष लताओं के समूह में निवास प्राप्त किया। श्रीउद्धव जी ने राजा परीक्षित से कहा—हे राजन! श्रीमद्भागगत के श्रवन से भक्त गणों के अन्दर श्रीकृष्ण का प्रकाश उत्पन्न होता है, अतएव मैं इनके निमित्त श्रीमद्भागवत की व्याख्या करूँगा परन्तु इस पुन्य कार्य में आपका सहयोग अत्यन्त प्रयोजनीय है। तब राजा परीक्षित ने श्रीउद्धव को प्रणाम करते हुये कहा—हे हरिदास आप निश्चिन्त मन से श्रीमद्भागवत की कथा कीर्तन करें एवं मुझे आज्ञा करिये कि मैं आपका किस प्रकार सहयोग करूँ। श्रीउद्धव ने कहा—श्रीकृष्ण के पृथ्वी परित्याग करने पर बलवान कलि शुभ कार्यों में विघ्न उत्पन्न कर रहा है इसलिये आप दिग्विजय करके कलि के प्रभाव को समाप्त करिये और मैं वैष्णवीय रीति से एक मास में श्रीभागवत रस का आस्वादन कराते हुये भक्त गणों को प्रभु के नित्य धाम को प्राप्त कराता हूँ।

यह सुनकर राजा परीक्षित व्याकुल होकर अपनी

अभिलाषा प्रगट करते हुये बोले—हे तात ! आपकी आज्ञानुसार में अवश्य कलि विजय निग्रह करूँगा, परन्तु मुझे श्रीमद्भागवत सुनने का सौभाग्य कैसे प्राप्त होगा। श्रीउद्धव ने कहा—हे राजन् ! इस विषय में आप कोई चिन्ता मत करें क्योंकि श्रीमद् भागवत की कथा सुनने का एक मात्र अधिकार आप ही को हैं। आपको श्रीशुकदेव श्रीमद्भागवत का श्रवण करायेंगे। आपके द्वारा ही पृथ्वी पर श्रीमद् भागवत की कथा का प्रचार होगा। अतएव हे राजन ! आप निश्चित होकर कलिनिग्रह का आयोजन करिये। श्रीउद्धव की वातें सुनकर परीक्षित महाराज ने उनकी प्रदक्षिणा की और उन्हें प्रणाम करके कलि विजय करने को प्रस्थान किया। इधर राजा बज्रनाभ ने अपने स्त्री पुत्रादिको मथुराके राजपद पर आसीन कर अपनी माताओं सहित श्रीमद् भागवत की अभिलाषा लेकर उक्त स्थान को प्रस्थान किया। श्रीउद्धव ने इस स्थान पर एक मास तक श्रीमद् भागवत कथा रस का आस्वादन कराया एवं कथा रस आस्वादन के समय श्री भगवान की लीलायें प्रगट होने लगीं और वहाँ श्रीकृष्ण स्वयं प्रगट हुये। तव उपस्थित भक्तगणों को अपना अपना स्वरूप भगवल्लीला के अन्तर्गत दर्शित हुआ। श्रीबज्रनाभ ने भी अपने को श्रीकृष्ण के दाहिने ओर चरणों के निकट देखा और उनके विरह से मुक्त हुये एवं उनकी माताओं ने भी अपने प्रियतम को निकट पाकर विस्मृत एवं विरह व्याधि से मुक्त हुये और अपने नित्य धाम को प्राप्त हुये। इसी प्रकार अन्य सभी उपस्थित भक्त गण इस लोक से अपने नित्य लीला में प्रवेशित हुये एवं श्रीकृष्ण के सहित श्री वृन्दावन नित्य लीला में परमानन्द सहित विहार मग्न हुये। इसी स्थान पर श्रीउद्धव ने सभी

भक्तगणों को श्री ब्रज मण्डल की महिमा कीर्तन एवं श्रीकृष्ण का अभूत पूर्व बाल्य चरित्र का वर्णन करके उन्हें आश्चर्य चकित किया था।

श्रीनारद कुण्ड—यह कुसुम सरोवर के दक्षिण पूर्वीय कोने में स्थित है। श्रीवृन्दादेवी के उपदेशानुसार श्रीनारद जी यहाँ तपस्या करके श्रीराधा गोविन्द के दर्शन प्राप्त किये थे। कहा जाता है कि एक बार श्रीराधागोविन्द की सेवा लाभ की अभिलाषा से श्रीनारद जी ने श्रीमहादेव जी से अपनी अभिलाषा प्रगट की, तब महादेव जी ने कहा—हे देवर्षि! श्रीगोविन्द की अष्ट कालीय लीलावली मैं भी सविस्तार नहीं जानता हूँ। केसी तीर्थ के सन्निकट श्रीकृष्ण की सतत दासी एवं अवस्थिता सखी श्रीवृन्दादेवी ही इसमें सविस्तार अवगत हैं। अतएव तुम उनके निकट जाओ वही तुम्हें विस्तार से इस बारे में बतायेंगी। श्रीमहादेव के आदेशानुसार देवर्षि नारद ने श्रीवृन्दा देवी के निकट जाकर निवेदन किया। श्रीवृन्दादेवी बोलीं—हे देवर्षि! यह लीला केश शेषादि के लिये भी अगम्य तथा अति गोपनीय है, आप यह लीला सर्वत्र प्रचार नहीं करियेगा। श्रीवृन्दा देवी के पास से श्रीगोविन्द की निशान्त लाला से नक्त लीला तक श्रवण करके कृतार्थ होकर नारद जी बोले—देवी! आप कृपा करके कहिये इन लालाओं का दर्शन लाभ कैसे होगा? श्रीवृन्दा देवी बोलीं—हे देवर्षि यदि कोई भाग्यपान रागानुगा मार्ग द्वारा गोपी के आनुगत्य होकर श्रीकृष्ण की सुखद व तात्पर्यमयी सेवा लालसा में दिन रात प्रार्थना में निमग्न हो, वह अतिशीघ्र सेवा योग्य स्वरूप प्राप्त कर सेवा रस में निमग्न हो

सकता है। श्रीवृन्दा देवी के श्रीमुख के आदेश को सुनकर उन्हें प्रणाम करके श्रीनारद जी आनन्द सहित ब्रज में भ्रमण करते करते श्री गोवर्धन आकर विचार करने लगे कि मैं यहाँ श्री गोवर्धन के श्रीचरण में आश्रय लेकर निर्जन कुण्ड तट पर निवास करके अपनी अभीष्ट साधना करूँगा। तब श्रीनारद ने दर्शन उत्कंठा से व्याकुल होकर हे नन्द नन्दन, हे भक्त चन्दन इत्यादि नामावली के उच्च स्वर से कीर्तन किया और थोड़े दिनों में ही सेवा योग्य स्वरूप को प्राप्त किया व श्रीगोविन्द के दर्शन किये। इस कुण्ड के पश्चिम तट पर श्रीनारद जी की मूर्ति दर्शनीय है।

श्रीरत्न सिंहासन—यह कुसुम सरोवर के ठीक सामने अवस्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने मणि सहित शंखचूड़ का वध किया था। कहा जाता है—एक दिन होली के समय श्रीकृष्ण श्रीराधिका के साथ गिर्राज जी के किनारे रत्न सिंहासन पर बैठकर सखिओं के साथ विविध हास्य परिहास कर रहे थे। उसी समय श्री मुखरा अपनी नातिन श्रीराधिका को ढूढ़ती हुई वहाँ आ पहुँची श्रीकृष्ण तभी तुरन्त एक कुंज में छिप गये। उस समय कंस द्वारा भेजा एक यक्ष श्रीकृष्ण के विनाश के अभिप्राय से गिर्राज जी के तट पर आया और वहाँ श्रीकृष्ण को न पाकर श्रीराधिका को रत्न सिंहासन सहित उठाकर वेग से मथुरा की ओर भागने लगा। श्रीललिता, कुन्दलता आदि सखियाँ व्याकुल होकर श्रीकृष्ण को अपनी रक्षा के लिये पुकारने लगीं। उनकी हाहाकार को सुनकर श्रीकृष्ण ने मुखरा आदि सभी को ढाढ़स बंधाया और कहा—आर्ये ! कोई चिन्ता नहीं, मैं अभी किशोरी जी को

ले आता हूँ। मुखरा बोली-हे चन्द्र मुख! तुम्हारी सर्वदा जयहो। तब श्रीकृष्ण ने शंखचूड़ को ललकारते हुये कहा—रे दुष्ट! थोड़ा रुक,तभी शंखचूड़ने श्रीराधिका सहित सिहासनको उतार दिया ओर श्रीकृष्ण के साथ घमासान युद्ध करने लगा। दूर खड़ी श्रीराधा अपनी सखियों के साथ नाना प्रकार की शंकाओं से चिन्तित थीं। परन्तु श्रीकृष्ण ने एक मुष्टि प्रहार मे शंखचूड़ को मणि सहित वध कर दिया। श्रीकृष्ण ने मणि श्रीबलदेव को प्रदान की जिसे उन्होंने मधु मंगल द्वारा श्री राधिका को भेज दिया।

इस पर श्रीकृष्ण ने आनन्दित होकर कहा कि कौस्तुभ कुटुम्ब तथा मणि समुह का श्रेष्ट अति उज्ज्वल मणि को धारण करने योग्य श्रीराधिका ही हैं। तब श्रीललिता आदि सखी गणों ने उस मणि को स्वामिनी जी के कंठ में पहना दिया। सब लोग उस शोभा को देखकर आनन्द सागर में डूब गये।

गो आल तालाब या गोआल कुण्ड—इसका वर्तमान नाम है गोआल पोखरा—यह रत्त सिंहासन के दक्षिण में स्थित है। यहाँ पर सखाओं ने मधु मंगल से सूर्य पूजा का नैवेद्य लूटा था। एक दिन दोपहर के पश्चात श्रीकृष्ण मधु-मंगल व सुबल सूर्य कुण्ड से सूर्य पूजा करने के बाद सखाओं के निकट गोवर्धन आये, सखाओं ने प्यासे चकोर की भाँति श्रीकृष्ण का स्पर्श किया, किसी ने उनका आलिगन करते कहा—भइया कन्हैया तूने इतनी देर कर दी। हम तो तेरा वियोग नहीं सह पाते। हम तुझे ढूंढ़ने के लिये जाने ही वाले

थे, यह हमारा सौभाग्य है कि तुम हमारे बीच में उपस्थित हो गये। इस प्रकार आलिगन, चुटकी, रहस्य इत्यादि द्वारा सब लोग श्रीबलराम व श्रीकृष्ण को हँसाने लगे। उसी समय मधुमंगल अपने बस्त्रों में सूर्य पूजा का नैवेद्य चोरी किये धन की तरह छुपाये हुये थे, उस पर श्रीबलदेव ने मधुमंगल से कहा—अरे बटुक ! तेरे वस्त्रों में क्या छुपा है। वह बटुक बोला—सूर्य नारायण का नैवेद्य। श्रीबलदेव ने पूछा—यह तुम्हें कहाँ मिला ? बटुक बोला—यजमान से, सब ब्रजवासियों का आज सूर्य पूजन का दिन था। बलदेव ने कहा—इसमें क्या है थोड़ा खोल कर दिखाओ। बटुक बोला—नहीं यह नहीं होगा। तुम और तुम्हारे सखा महा लोभी हो। बलदेव ने कहा—'सखाओं को इसमें से थोड़ा थोड़ा हिस्सा दो और तुम भी थोड़ा खाओ। बटुक बोला—किसी को कुछ देने की मेरी इच्छा नहीं और मेरी स्वयं खाने की भी कोई इच्छा नहीं। बलदेव बोले—यदि तुमने मेरे सखाओं को थोड़ा नहीं दिया तो जबरदस्ती छीनकर खा लगे। बटुक बोला—तुम्हारे सखाओं को मैं तृण तुल्य भी नहीं समझता और तुम्हें भी मैं कुछ नहीं समझता। यह कहने पर बलदेव ने इशारा किया, बटुक मौन होकर अपने नैवेद को छुपाने लगा, इसी बीच एक सखा पीछे से जाकर मधु मंगल की आँखें बन्द कर दी, तब दूसरे सखा ने नैवेद्य छीन कर खाना शुरु कर दिया। एक और सखा ने मधु मंगल की धोती खोल दी, सामने से एक सखा धोती खींचने लगा। यह देखकर बटुक दौड़ने लगा तब अन्य सखा गण निकट जाकर कोई पगड़ी, कोई चोटीं, कोई कुर्ता खीचने लगे। तब मधुमंगल निरूपाय होकर रोते हुये भीषण गर्जन तर्जन करते करते उन्हें तिरस्कार व अभिशाप

देने लगे। तब श्रीकृष्ण लाठी लेकर सबको भगाने लगे और किसी किसी से तो उनकी मारपीट भी हुई।

इसके पश्चात श्रीकृष्ण ने मधुमंगल को आलिंगन किया और सब सखाओं से छीने हुये वस्त्र इत्यादि लेकर मधुमंगल को पहना दिये। परन्तु अपनी कमर में लगी स्वर्ण अंगूठी (कटारी) को न पाकर क्रोधित होकर अभिशाप देते बोले—अरे चंचल बालको! तुमने जबरदस्ती नैवेद्य लूटा है और मेरे स्वर्ण अंगूठी (कटारी) की चोरी को है, अतः तुम लोग सब अपवित्र हो। महापापियों सावधान, आज से तुम मुझे स्पर्श मत करना। मैं शीघ्र ही ब्रज जाकर ब्रजराज की सभा में विचार करवाकर तुम सबको प्रायश्चित कराऊँगा और तब जल ग्रहण करूँगा। यह कह कर तेजी से वह चलने लगे तो पीछे पीछे श्रीबलदेव भी चलने लगे तो वह बलदेव से बोले—मेरे ब्रह्मस्व अपहरण के तुम ही कर्त्ता हो अतएव तुम भी जब तक इस पाप का प्रायश्चित नहीं करोगे, तब तक तुम्हारे साथ भी मेरा कोई वार्तालाप नहीं।

तब श्रीकृष्ण ने प्रीति सहित मधुमंगल को कपड़े पहना कह कहा—सखा! सखाओं के बीच में तो इस प्रकार होता ही रहता है, क्रोध मत करो। तब सब शान्त हुये।

इस गोआल पोखर के समीप ही श्री गोवर्धन शिला पर श्रीबलराम के चरणों के चिन्ह थे परन्तु कुछ दिन हुये कुछ साधुओं ने उन चिन्हों को स्थानांतरित कर दिया।

श्रीयुगल कुण्ड—यह गोआल पोखर से थोड़ा आगे

स्थित है। यहाँ पर श्रीराधा गोतिन्द का विलास संघटित हुआ है

किल्लल कुण्ड—यह युगल कुण्ड के दक्षिणी पूर्वी भाग में अवस्थित है। कुण्ड के निकटवर्ती वन को खेलन वन कहा जाता है। यहाँ पर श्रीकृष्ण बलराम सखाओं के साथ गेंद से खेला करते थे।

श्रीमानसी गंगा—यह कुसुम सरोवर से २ कि० मीटर दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में अवस्थित है। इस मानस गंगा में श्रीराधा गोविन्द प्रायः नौका बिहार करते थे। श्री-गिर्राज गोवर्धन के ऊपरी भाग में श्रीमानसी गंगा विराजमान हैं। कहा जाता है—श्रीनन्द महाराज ने सब गोप गणों व श्रीयशोदा माता सहित एक दिन गंगा स्नान के निमित्त यात्रा करते हुये रात्रि में श्री गोवर्धन क्षेत्र में वास किया। तब कृष्ण मन ही मन विचार करते रहे कि इस ब्रज में सभी तीर्थ विराजते हैं किन्तु ब्रजवासी गण इससे अवगत नहीं। श्रीकृष्ण मन ही मन ऐसा विचार कर ही रहे थे। कि श्रीगंगा देवी अपने मकर वाहन पर विराजमान होकर सबको नयन गोचर हुईं। श्रीगंगा देवी को देखकर ब्रजवासी गण विस्मित होकर परस्पर तर्क बितर्क करने लगे, तब श्रीकृष्ण ने ब्रजवासी गणों से कहा कि इस ब्रज में सभी तीर्थ विराजमान होकर समस्त ब्रज मंडल की सेवा करते हैं। आप लोग ब्रज के बाहर जाकर गंगा स्नान करना चाहते हैं। यह जानकर गंगा देवी अभी आपके सम्मुख प्रकट हुई हैं। अतएव आप लोग बिना बिलम्ब के गंगा स्नान का कार्य सम्पादन करिये। आज से यह तीर्थ श्री मानसी गंगा कहकर सर्व साधारण को जाना जायेगा।

यह श्रीकृष्ण के मन से प्रकट हुईं थीं इसी लिये यह मानसी गंगा नाम से प्रसिद्ध है। कार्तिक मास में अमावस्या के दिन यह तीर्थ प्रगट हुआ था इसी लिये प्रति दीपावली के उपलक्ष में मानसी गंगा स्नान व गोवर्धन परिक्रमा यहाँ बड़े धूमधाम से आयोजित किया जाता है।

इसी मानसी गंगा में श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ नौका विलास लीला किया था। मथुरा निवासी विप्र गणों ने गोविन्द कुंड में यज्ञ आरम्भ किया था तब पूर्णिमासी देवी ने घोषणा की कि जो लोग इस यज्ञ की भभूति लेकर जायेंगे उनके पति चिरंजीवि होंगे और उनके गोधन की वृद्धि होगी। यह सुनकर व्रज के बुजुर्गों ने अपने बन्धुओं के द्वारा यज्ञ की भभूति, अपने अपने घर भेज दी। इसी अवसर पर श्रीकृष्ण दर्शन लालसा में श्रीराधिका सखियों के साथ दूध लेकर यज्ञ स्थलि की ओर चलीं। इधर श्रीकृष्ण नौका लेकर गंगा तट पर नाविक के रूप में प्रतीक्षारत थे। गोपियाँ श्रीराधिका को लेकर उसी घाट पर आ पहुँची। श्रीकृष्ण सखियों सहित श्रीराधा को देखकर उल्लसित होकर बोले—आओ आओ राधे ! तुम्हारे लिये मैंने नौका किनारे पर तैयार रखी है। श्रीराधिका हँसते हँसते सखियों के साथ नाव पर जा बैठी परन्तु उसकी जीर्ण दशा देखकर बोलीं—अरे नाविक तुम तो युवा हो पर तुम्हारी नाव जीर्ण अवस्था में क्यों है ? अयोग्य वस्तु देखने पर हृदय में दुःख होता है और योग्य वस्तु देखने पर मनमें आनन्द होता है। तुम कह सकते हो कि तुम्हारे दुःख से हमें क्या ?

तुम यह कह भी सकते हो, एवं यह सत्य भी है, चलो

तुम्हारी बात ही सच है हमें उस पार ले चलो। हम लोग यज्ञ में जायेंगी। गोपियों की बात पर श्रीकृष्ण ने कहा—तुम्हारी बात अति सत्य है, मैं केवल योग्य के निमित्त अयोग्य को लिये हुये हूँ, योग्य को प्राप्त करते ही अयोग्य को त्यागकर दूँगा। अतएव तुम लोग यदि दया करके मुझे एक योग्य तरूणी दोगे तो मैं वही लेकर रहूँगा। गोपियों ने हँसते हँसते श्रीकृष्ण को कहा—सब लोग भाड़ा (तरनी) देकर पार जाते हैं और तुम तरुणी लेकर वह कार्य करोगे, ऐसी आश्चर्यजनक बात तो हमने कहीं नहीं सुनी। तब श्रीकृष्ण ने हास्यसह कहा—सुनो यह असम्भव नहीं, क्योंकि दोनों की पार करने की क्षमता है तुम लोग मेरा बात पर विचार करके देखो, तरणी नदी पार करती है और तरुणी समुद्र को पार कर सकती है, अतः तरणी की शक्ति से तरुणी की शक्ति बहुत अधिक है। श्रीकृष्ण के वाक्य पर गोपियाँ हँसते हँसते बोलीं, गोविन्द तुम अनेक चतुराई जानते हो और हम अवला गोप बालायें तुम्हारी बातें कुछ भी नहीं समझती, अब हमें पार उतार दो। श्रीगोविन्द गोपीगणों के साथ कौतुक रस के साथ तेज गति से नाव चलाने पर जीर्ण नाव हिलोलें लेने लगी। कुछ देर पश्चात श्रीगोविन्द ने चप्पू चलाना बन्द कर दिया तब नौका बीचों बीच हवा से घूमने लगी तथा हर झलक के साथ नाव में पानी भरने लगा। यह देखकर गोपियाँ डर के मारे काँपने लगीं और असमर्थ हो गईं। फलस्वरूप उनके वक्षस्थल के कपड़े भी पानीं में भीग गये। तब भयभीत गोपी गण अत्यन्त व्यग्र होकर श्रीकृष्ण को बोलीं—हे गोविन्द ! हमारा गोरस नष्ट होता है तो होने दो प्राण चले जायँ उससे भी कोई दुःख नहीं, परन्तु जहाँ पर श्रीकृष्ण कर्णधार हों वहाँ

नौका के डूबने की बात यदि सब जगह प्रचार हो तो व्रजधाम में तुम्हारा हमेशा के लिये अपयश होगा, यह कह कर सब लोग श्रीगोविन्द के वदन कमल को निहारने लगे। तब श्रीकृष्ण मन्द मन्द हँसते हँसते बोले—तुम लोग मन में किसी प्रकार की चिन्ता मत करो, तुम्हारा गोरस नष्ट नहीं होगा। मेरी बहुत दिनों की इच्छा थी कि एक स्थान पर एकत्रित तुम सबके अंगों का दर्शन करूँ किन्तु वायुरूपी विधि ने तुम्हारे अम्बर खोलकर आज वह भी अनुकुल कर दिया है। गोपी गणों का श्रीकृष्ण के साथ वाक्यालाप में कौतुक रस की तरंग उद्वेलित हो उठी जानकर योगमाया द्वारा गंगा के बीच श्रीयुगल किशोर के विलासोचित परम मनोहर स्थान आविर्भावित करने को अकस्मात नौका तट पर जा लगी। वह देखकर गोपी गणों ने आनन्द में हँसते हँसते उतर कर कुंज में प्रवेश किया। तब श्रीकृष्ण के मन में जो इच्छा थी वह पूर्ण करने की अभिलाषा में गोपी गणों के बीच में होते हुये श्रीराधिका के वस्त्रों से आकर्षित होने पर श्रीकृष्ण के अंग के स्पर्श से उनका सर्वांग पुलकित हो उठा, एवं आनन्द से सात्विक भाव से अंग काँपने लगा, समय की अनुकूलता देखकर सखि गणों ने छुप छुप कर युगल किशोर की विलास माधुरी के दर्शन करके अपने नयन व मन को धन्य किया। कुछ देर उपरान्त सखी गणों ने युगल किशोर के निकट आकर नाना प्रकार से हास परिहास करते हुये नौका पार की।

श्रीश्री गोवर्द्धन

यं पाणिना पालयदीश एव पालयत्तत परिवारमेव।
क्रीड़त्यजस्रं स्वयमेव यत्र स केन वर्ण्यो हरिदसार्वज्य:।।

श्रीगिरिराज गोबर्धन की आकृति मोर की तरह है, श्रीगोविन्द कुंड के दक्षिणांश ही उनकी पूँछ एवं प्रसिद्ध मानस गंगा ही इनका हृदय है। श्रीकुसुम सरोवर जिनका मुख स्वरूप है एवं श्रीराधागोविन्द के प्रेम में पूर्ण प्रसिद्ध श्रीराधा कुंड व श्रीश्याम कुण्ड जिनके दो नयनों के स्वरूप हैं। दान निवर्तन कुण्ड, संकर्षण कुंड व दान घाटी स्थान लीला स्थली के रूप में जिनके चारों ओर शोभायमान हैं। स्वयं भगवान नन्द नन्दन श्रीकृष्ण ने जिनको बांये हाथ पर सात दिन तक धारण किया था। और इन्द्रकृत अति वृष्टि से सब परिवार वर्ग की रक्षा की थी एवं स्वयं भी वहाँ निरंतर क्रीड़ा करते रहे। वह हरिदास वर्ज्य गोवर्धन की महिमा का वर्णन करने में समर्थ हैं। श्रीकृष्ण लीला में श्रीगिरिराज गोवर्धन विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं—श्री ब्रज मण्डल में तीन पर्वत प्रसिद्ध हैं— श्रीवर्षाण, श्रीनन्दीश्वर व श्रीगोबर्धन। इनको यथा क्रम से श्रीब्रह्मा, श्रीरुद्र व श्रीविष्णु के अभिन्न स्वरूप समझकर पूजा जाता है। इनमें श्रीगिरिराज गोवर्धन सर्व प्रकार से भक्तों के चित्त को आकर्षित करता है।

श्रीभगवत प्रेरणा से श्रीगिरिराज के भारत वर्ष के पश्चिम में शाल्मली द्वीपान्तर्गत द्रोणाचल पत्नी के गर्भ में जन्म ग्रहण करने पर देवता गणों ने परमानन्द में पुष्प वृष्टि की एवं उनकी प्रदक्षिणा करके स्तुति की थी। एक बार मुनि

श्रेष्ठ पुलस्त्य तीर्थ भ्रमण करते करते शाल्मली द्वीप में मनोहर माधुर्य मण्डित द्रोणाचल पुत्र श्रीगिरिराज जी का दर्शन करके लुब्धचित्त होकर श्रीगोवर्धन की कामना से द्रोणाचल के निकट जाने पर द्रोणाचल ने ऋषि के दर्शन करके उनकी ससन्मान पूजादि की। इसके उपरान्त पुलस्त्य ऋषि ने कहा हे दोण ! आप पर्वत गणों में सर्व श्रेष्ट हैं, सर्व देवों द्वारा पूजित हैं, एवं त्रिविध औषधाबली में पूर्ण होकर जीवों को जीवन प्रदान करते हैं हे द्रोण मैं काशी वासी महामुनि आपके निकट प्रार्थीरूप से समुपस्थित हुआ हूँ मुझे और किसी वस्तु की चाह नहीं पर तुम्हारे पुत्र श्रीगोवर्धन को मेरा दास कर दो। देवाधिदेव विश्वेश्वर का काशी नाम से एक महापुरी है, जहाँ किसी पापी के प्राणांत होने पर वह तत्क्षणात मोक्ष पद को प्राप्त होता है, वहाँ पतित पावनी गंगा व साक्षात श्री विश्वेश्बर विराजमान हैं, वहाँ कोई पर्वत नहीं है, आपके पुत्र श्रीगोवर्धन लेजाकर मैं वहाँ स्थापित करूँगा एवं वृक्ष लता समाकुल श्रीगोवर्धन की गुफा में बैठकर मैं तपस्या करूँगा, यही मेरी एकान्त हार्दिक इच्छा है। पुलस्त्य ऋषि की वाणी सुनकर पुत्र स्नेह में विह्वल द्रोणाचल द्रवित नेत्रों से बोला हे मुनि श्रेष्ठ ! में पुत्र स्नेह में अन्धा हूँ, विशेषतः यही पुत्र मेरा अति प्रिय है। ऋषिवर ! आपके श्राप से भय-भीत होकर पुत्र को मैं आपके अभिप्राय से अवगत कराता हूँ, यह कहकर द्रोणाचल ने गोवर्धन मे कहा हे पुत्र ! भारत-वर्ष पुन्यभूमि है एवं कर्म क्षेत्र है, वहाँ मानव गणों को सात्विकता व समुचित त्रिवर्ग प्राप्त होता है। अतएव इन मुनिवर के साथ तुम भारतवर्ष में जाओ, पिता का आदेश सुनकर श्रीगोवर्धन ऋषि को बोले—हे मुनिवर ! मेरा दैर्घ

आठ योजन, प्रस्त पाँच योजन एवं उच्चता दो योजन है, मेरा यह विशाल देह आप अन्यत्र कैसे लेकर जायेंगे। मुनि ने कहा हे पुत्र ! तुम मेरी हथेली पर बैठकर आनन्द व स्वच्छन्द रूप से जा सकोगे। तुम्हें हथेली पर बिठाकर मैं काशीपुर तक ले जाऊँगा। तब श्रीगोवर्धन ने कहा हे मुनि ! आप मुझे हथेली पर रखकर ले जाने से मार्ग में भारी महसूस करने पर जहाँ रख देंगे, मैं वहीं रह जाऊँगा और फिर कहीं नहीं जाऊँगा मेरी यह प्रतिज्ञा आप स्मरण रखियेगा। तब ऋषिवर गर्व सहित बोले कि शाल्मली द्वीप से कौशल देश तक श्रीगोवर्धन को कहीं । नहीं उतारेंगे, उनकी भी यह प्रतिज्ञा है। तब गोवर्धन अपने माता पिता के चरणों में प्रणाम करके रोते हुये मुनिवर की हथेली पर जा बैठे। पुलस्त्य ऋषि ने अपनी शक्ति द्वारा श्रीगोवर्धन को अपने दाँहिने हथेली पर धारण कर प्रस्थान किया। जब वे ब्रज मंडल के निकट पहुँचे तब श्री-गोवर्धन ने मन ही मन विचार किया—अनन्त ब्रह्माण्ड पति पूर्णतम साक्षात स्वयं भगवान श्रीकृष्ण इस ब्रज मण्डल में अवतरित होकर गोप बालाओं सहित बाल्य लीला, किशोर लीला, दान लीला इत्यादि अनेक लीलायें करेंगे। अतएव यमुना तट वर्तीय पावन इस ब्रज भूमि को मैं कभी भी त्याग नहीं करूँगा। श्रीकृष्ण श्रीराधा सहित गोलोक धाम से ब्रज भूमि में अवतरित होने पर उनके दर्शन करके मैं कृतार्थ हो-ऊँगा। श्रीगोवर्धन ने इस प्रकार चिन्तन करते हुये ऋषि की हथेली पर अपना भार थोड़ा बढ़ा दिया, ऋषि अधिक भार से थक कर व्याकुल हो उठे और अपनी प्रतिज्ञा को भूलकर वे गोवर्धन को ब्रज भूमि पर स्थापित करके अपने शौचादि को गये। शौचादि निवृत्त होकर स्नान ध्यान व जपादि

समापन करके वे श्रीगोवर्धन के निकट आकर बोले हे वत्स ! तुम पूर्ववत मेरी हथेली पर बैठो परन्तु गोवर्धन और नहीं उठे तब ऋषि ने अपनी दैवी शक्ति द्वारा दोनों हाथों से गोवर्धन को उठाने की चेष्टा की परन्तु गोवर्धन एक अंगुल भी अपने स्थान से नहीं हिले तब ऋषि बोले हे गोवर्धन ! वत्स ! उठो उठो और व्यर्थ में अपना भार मत बढ़ाओ मैं समझ गया तुम रुष्ट हो गये हो, अपना अभिप्राय मुझे स्पष्ट करो। गोवर्धन ने कहा मुनिवर ! मेरा कोई दोष नहीं, आप मुझे जहाँ रखेंगे मैं वहां से और नहीं हिलूंगा, यह प्रतिज्ञा तो मैंने पहले ही की थी। अपना उद्यम विफल होते देखकर मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्य क्रोधित होकर काँपते हुये अभिशाप देते बोले हे गोवर्धन ? अपनी धृष्टता प्रकाश करके तुमने मेरी मनोकामना में विघ्न प्रगट किया है, अतएव आज से तुम प्रतिदिन तिल तिल करके क्षय प्राप्त होगे। इस प्रकार श्राप देकर ऋषि पुलस्त्य ने काशीधाम की ओर प्रस्थान किया। उस दिन से श्रीगोवर्धन पर्वत प्रतिदिन एक तिल करके क्षय को प्राप्त हो रहे हैं।

प्रथमतः—श्रीकृष्ण इन्द्र का दर्प चूर्ण करने के निमित्त इन्द्र की पूजा भंग करके श्रीगिरिराज की पूजा को स्वयं श्रीगिराज के स्वरूप में प्रगट होकर ब्रजवासीगणों से ग्रहण किया था। श्रीगिर्राज ज़ी के दर्शन करके उन्हें श्रीकृष्ण का स्वरूप ही सबने समझा था एवं श्रीमद भागवत में भी श्रीगिरिराज को 'कृष्णो स्वन्यतम रूप बोला गया है।

द्वितीयतः—श्रीगोवर्धन के तट पर श्रीराधा माधव की दान, मान, जलक्रीड़ा, रास एवं निकुंज विलास जैसी लीलायें

तथा सखागणों सहित गोचारणादि लीला विशेष रूप से वर्णित हैं। परन्तु पुराणों में प्रसिद्ध श्रीगोवर्द्धन की बहु तीर्थ होने की सदृशता दुर्भाग्य वशतः जीवों के लिये विलुप्त हो गई है। कार्तिक मास की अमाबस्था दीपावली पर्व के उपलक्ष में एवं आषाढ़ पूर्णिमा को श्रीसनातन गोस्वामी की स्मृति रक्षा हेतु ब्रजवासी गण तथा बहुदेशीय भक्तगण श्रीगिरिराज परिक्रमा व दर्शन के निमित्त आते हैं। मुड़िया पर्व उपलक्ष में श्रीगौड़ीय सम्प्रदाय द्वारा संकीर्तन सहित श्रीमानसी गंगा की परिक्रमा होती है। श्रीगिरिराज परिक्रमा के बीच दर्शनीय स्थान श्रीहरिदेव जी गंगा के दक्षिण तट पर स्थित हैं। श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने श्रीगोवर्द्धन में आगमन करके श्रीहरिदेव जी के सम्मुख उर्दण्ड नृत्य कीर्तन करके रात्रि बिताई थी। इस मन्दिर के पूर्व उत्तरी कोने में श्रीब्रह्मकुण्ड स्थित है। इस कुण्ड में स्नान करके ब्रह्मा जी ने श्रीकृष्ण को संतुष्ट किया था। इस कुण्ड के तट पर श्रीमनसा देवी का मन्दिर स्थित है एवं मानसी गंगा के उत्तरी तट पर श्रीचक्रेश्वर यानी चकलेश्वर महादेव है, उनके सम्मुख है श्रीसनातन प्रभु की भजन कुटीर. उसके पास ही श्रीबल्लभाचार्य की बैठक एवं श्रीश्रीगौर नित्यानन्द मन्दिर सुशोभित है। प्रवाद है कि— इस स्थान पर पहले मच्छरों का बड़ा ही उपद्रब था, इसलिये श्रीसनातन प्रभु इस स्थान को त्याग करके अन्यत्र जाने का विचार कर रहे थे तब श्रीचक्रेश्वर महादेव ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे बहीं रहें, तब से वहाँ पर मच्छरों का उपद्रव नहीं रहा। एक वार इस स्थान पर छद्मवेशी श्रीमदन मोहन ने ब्रज बालक के रूप में श्रीसनातन प्रभु को श्रीगोवर्द्धन के ऊपरी भाग से चरण चिह्न युक्त एक शिला लाकर दी और

उसकी परिक्रमा करने को कहा। श्रीमानसी गंगा के पूर्वांश के बीच में श्रीगिरिराज जी का जो अंश दिखाई देता है वहाँ श्रीकृष्ण के मुकुट का चिन्ह बिराजित है।

श्रीइन्द्रध्वज वेदी—श्रीगोवर्धन गाँव के पूर्व की ओर यह मनोहर उच्चवेदी स्थित है। श्रीनन्द महाराज प्रति वर्ष भादों में इन्द्र द्वादशी के दिन ब्रज के सुख वृद्धि के निमित्त इन्द्र पूजा करते थे। बाद में श्रीकृष्ण के कहने पर वह श्रीगिरिराज पूजा में परिणत हुआ। श्रीनन्द महाराज ने प्रति वर्ष की तरह भादों में इन्द्र द्वादशी के दिन इन्द्र पूजा के निमित्त इस बार भी महा समारोह में सामग्रियों का आयोजन किया, सात वर्षीय शिशु कृष्ण ने यह देखकर पूछा, पिता! आप लोग इन द्रव्यों से क्या करेंगे? मुझे बताइये। श्रीकृष्ण के इस वाक्य पर श्रीनन्द हँसते हँसते बोले, सुनो पुत्र! हमारे गोप कुल में गौ पालन हमारा कर्म है, यदि तृणादि उत्पन्न न हो तो गौ का पालन नहीं होगा, इसलिये हम लोग देवराज इन्द्र की पूजा करते हैं। पिता के वाक्य को सुनकर श्रीकृष्ण हँसकर गोप गणों से बोले—आप लोग मेरी बात सुनिये, मनुष्य अपने कर्मानुसार फल भोग करता है, इन्द्र क्या आप लोगों की रक्षा कर सकेंगे? इन्द्र आदि देवता जिसके सेवक हैं वही नारायण ही परम कारण हैं। वे जिसे जो आदेश देते हैं इन्द्रादि देवता गण वही पालन करते हैं, अतएव इस इन्द्र यज्ञ का कोई प्रयोजन नहीं है। हम लोग वनवासी हैं, झोपड़ी कुटिया में निवास करते हैं, गौ, ब्राह्मण, श्रीगोवर्धन ही हमारे पूज्य हैं। अतएव अन्य देवताओं का आश्रय न लेकर ईश्वर स्वरूप परम कारण ब्रज वासियों के हित कर्त्ता इन श्रीगोवर्धन को ही आप

लोग पूजा करिये। श्रीकृष्ण के वाक्य पर श्रीनन्द महाराज ने आनन्द में दूध, दही व घी इत्यादि सहित गोप, गोपी, ब्राह्मण व ब्राह्मणियों को साथ लेकर पर्वत के ऊपर जाकर ब्राह्मण को भोजन पकाने का आदेश दिया। तत्पश्चात बिबिध प्रकार से आनन्दित होकर सबने श्रीगोवर्धन की पूजा करके मधुर स्वर में श्रीगिरिराज जी की मंगल स्तुति की। तब श्रीकृष्ण ने श्रीगोवर्धन का स्वरूप धारण करके सभी पूजा सामग्री का आनन्द से भोजन किया तथा एक और रूप में गोप गणों से कहा—ईश्वर श्रीगोवर्धन का स्वरूप धारण करके आपके भक्ति सहित अर्पित सभी द्रव्यों का भोजन कर रहे हैं, आप लोग दर्शन करिये। श्रीनन्दादि गोपगण मूर्तिमान साक्षात यज्ञ भोक्ता श्रीगिरिराज जी को भोजन करते देख आनन्दित हुये एवं गौ व ब्राह्मण आदि को आगे करके श्रीगिरिराज जी की परिक्रमा, प्रणामादि व प्रार्थना करते हुये अपने अपने घर को वापस गये।

इधर देवराज इन्द्र ने अपनी वार्षिक पूजा न पाकर अत्यन्त क्रोधित होकर मेघों को आह्वान करके कहा—ब्रज के गोप गण, नन्द गोप के पुत्र बाचाल कृष्ण के बातों में आकर मेरी पूजा न करके श्रीगोवर्धन की पूजा कर रहे हैं, मैं आज ही ब्रज भूमि का विनाश कर दूंगा। देखता हूँ कैसे श्रीकृष्ण उनकी रक्षा करते हैं। यह कहकर उनन्चास पवनों के सहित इन्द्र ने मेघों को साथ लेकर ब्रज में आगमान किया, मेघों ने भी प्रबलता के साथ निरन्तर जल की वर्षा की, इससे दसों दिशाओं में अन्धकार छा गया एवं इन्द्र भी क्रोधित होकर पुनः पुनः बज्राघात करने लगा। तब ब्रज गोप गोपियों को

भयभीत व खिन्न देखकर श्रीकृष्ण कृपा पूर्ण दृष्टि से ब्रज वासियों को बोले –आप लोग चिन्ता मत करिये, श्रीगोवर्धन सबकी रक्षा करेंगे। यह कहकर श्रीकृष्णाने मत्त सिंहकी भाँति अपनी लीला दिखाते हुये जीव जन्तुपूर्ण श्रीगोवर्धनको बाँयेहाथ से उठाकर धारणकर लिया। श्रीकृष्ण के श्रीगोवर्धनको धारण करने पर वात्सल्य प्रेम से विभोर होकर माता यशोदा श्रीकृष्ण के निकट आईं उन्हें देख श्रीकृष्ण बोले—माता ! तुम्हारे पुत्र के रहते क्यों इतनी दुःखी होती हो, कोई चिन्ता मत करो। इसी बीच सभी गोप गोपी वहाँ आकर इकट्ठे हो गये तब श्रीकृष्ण ने उन्हें कहा तुम लोग गलत मत समझो अब तो तुम्हारा भ्रम मिट गया, अब कोई डर नहीं। यह देखो श्रीगोवर्धन के नीचे अति मनोहर व सुन्दर सुन्दर रहने की जगह है. इसके अन्दर आनन्द सहित प्रवेश करो। यह कहकर गोप गोपियों को बुलाने लगे। श्रीकृष्ण के आव्हान पर सभी अपने गाय बछड़े सहित वर्षा के स्पर्श से शून्य परम मनोहर गिरिराज जी के नीचे के स्थल में प्रवेश कर आनन्दित होकर श्रीकृष्ण का गुण गान करने लगे। ब्रज गोपियाँ भी श्रीकृष्ण का अपूर्व दर्शन कर आनन्द के समुद्र में डूब गये। श्रीराधिका श्रीकृष्ण के दर्शन करके दुखी होकर विशाखा से बोलीं—देखो, तुम्हारे सखा ने अपने कोमल हाथों से भारी श्रीगिरिराज को धारण किया है इससे मेरे चित्त में अत्यन्त कष्ट हो रहा है। बोलो सखी हम क्या उपाय करें। श्रीराधिका सखियों से प्रेम में व्याकुल होकर पुनः कटाक्ष करके बोलीं कि ब्रज में क्या कोई बलशाली गोप नहीं है। फिर वह स्वाभाविक प्रेम में विभोर होकर श्रीगोवर्धन की स्तुति करतीं बोली— हे तात ! आप लघु हो जाइये जिससे श्रीकृष्ण आपको आसानी

से हथेली पर धारण कर सकें, हे मंगल आत्मा आपको मेरा नमस्कार। फिर श्रीराधा विशाखा से बोलीं—विशाखे अशेष चित्त को लुभाने वाली अपूर्व दो नयनों युत कपोल एवं कुंडलों से शोभित श्रीकृष्ण के मुख मण्डल की शोभा के दर्शन करो। श्रीराधिका के वाक्यामृत को पान करके श्रीकृष्ण मधुपान मत्त भ्रमर की भांति अत्यन्त परितृप्त हुये।

इधर वात्सल्य प्रेम की मूर्ति श्री यशोदा ने व्याकुल होकर श्रीव्रजाराज से बोलीं मेरो गोपाल बहुत छोटा शिशु है, कुछ खाया भी नहीं है कैसे गिरि को धारण करेगा? हे व्रजराज! शीघ्र ही शिशु के मुँह में मीठा दूध दीजिये और बलराम को कहिये कि तुम्हारा छोटा भाई अत्यन्त पीड़ाग्रस्त है तुम अति साहसी हो उसका हाथ बटाओं तब सभी गोप गणों ने अनुभव किया कि एक सात वर्षीय शिशु में इतना बल कहाँ से आ गया कि वह एक कैलाश पर्वत जैसे गिरि को धारण किये हुये है। इस प्रकार सोचते हुये सभी ने श्रीकृष्ण की ओर अपनी दृष्टि उठाई। इस बीच श्रीराधा की ओर श्रीकृष्ण की दृष्टि जाने पर उनके अंग में एक कम्पन हुआ, फलस्वरूप श्रीगोवर्धन भी कम्पित हुये। तब सभी गोपगण 'संभालो, संभालो' कहकर चिल्ला उठे। सखाओं ने तब अपनी लाठी का सहारा लगाया और कहा कोई चिन्ता नहीं, कोई चिन्ता नहीं। सबके कोलाहल से श्रीकृष्ण हँसते रहे, उनकी हँसी युक्त मुख का दर्शन करके सब लोग निश्चिन्त हुये।

इधर देवराज इन्द्र ने सात दिन तक नाना प्रकार से उत्पीड़न किया। परन्तु व्रज का कुछ नष्ट नहीं हुआ देखकर

वह बहुत चकित हुआ एवं उसका सारा अभिमान चूर्ण हो गया। तब इन्द्र ने कहा स्वयं भगवान ब्रज में प्रकट हुये हैं यह न जानते हुये मैंने उनका कितना अपमान किया। मेरे इस अपराध की कोई क्षमा नहीं. इस प्रकार सोचते हुये इन्द्र ने सभी अपने उपद्रव बन्द कर दिये। तब श्रीकृष्ण सभी ब्रज-वासियों को बोले अब आप लोग अपने अपने स्थान को जाइये, उनके घरों को जाने पर श्रीकृष्ण सखाओं के साथ गौ चराने चल दिये उसी समय देवराज इन्द्र श्रीकृष्ण के चरणों में आ पड़े और बोले—मेरे समान मूर्ख त्रिभुवन में और कोई नहीं, प्रभु मेरी रक्षा कीजिये, आप स्वयं भगवान हैं, आपके तत्व को न जानते हुये गर्व में मत्त होकर मैंने यह अपराध किया हैं मैं आपके शरणापन्न हूँ. मुझे क्षमा कीजिये। इन्द्र की स्तुति से श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर उनका आलिगन किया। इन्द्र के उत्पात काल में श्रीकृष्ण सात दिन तक सबको दर्शन दिया तथा इन्द्र को आलिगन करके धन्य किया और उन्हें बहुत आश्वासन देते हुये विदा किया।

श्रीपापनाशन कुण्ड—यह इन्द्रध्वज वेदी के दक्षिण पश्चिमी कोने में स्थित है। इस कुंड को कोई कोई दान निवर्त्तन कुण्ड कहकर उल्लेख करते हैं। इस कुंड का वर्तमान नाम निदारी कुंड है। यह कुंड पराशौली गाँव जाने के रास्ते से संलग्न है। इस कुंड के साथ धर्म रोचन व गोरोचन नामक और दो कुंडों के नाम जुड़े हुये हैं।

श्रीदानघाटी—यह दान निबर्तन कुंड के पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर श्रीगोवधन के ऊपर स्थित है। यहाँ

पर श्रीकृष्ण ने श्रीराधिका के साथ दानलीला अर्थात् शुल्क वसूली की प्रेममय लीला सम्पन्न की थी। दानघाटी में श्रीकृष्ण के बैठने के स्थान से उत्तर में श्रीमन्दिर सुशोभित है। दानघाटी के दक्षिण में श्रीगिर्राजजी के ऊपरी भाग में श्रीदानी राय का मंदिर स्थित है। वहाँ ललित त्रिभंग वेश में श्रीकृष्ण की विग्रह मूर्ति दानी राय के नाम से विराजित हैं। दान निवर्त्तन कुण्ड के स्पर्श में नहीं आने तक दोनों पक्षों में काफी विरोध हो रहा था। श्रीरूप गोस्वामी ने इस दान लीला का अवलम्बन करके ही श्रीदानकेली कौमुदी नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। यमुना भी यमुनान्त ग्राम का नामान्तर है जो कि श्रीगोवर्धन गाँव से दो मील पूर्व की ओर मथुरा के रास्ते में स्थित है। यह श्रीरामकृष्ण का विलास स्थल है। यहाँ श्रीयमुना घाट दर्शनीय है।

श्रीपराशौली—इसका वर्तमान नाम मोहम्मदपुर है। यह यमुनान्त ग्राम से एक मील दूर दक्षिण पश्चिमी दिशा पर एवं गोवर्धन ग्राम से १-१/४ मील दूर दक्षिणी पूर्वी दिशा पर स्थित है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण की बसंत कालीय रासोत्सव लीला घटित हुई थी। गाँव के दक्षिण-पश्चिमी दिशा पर पापमोचन कुण्ड के समीप स्वच्छ अगाध जल में विकसित कमल कुमुदादि जलज पुष्प सुशोभित हैं और चन्द्र सरोवर नाम से एक रमणीय सरोवर शोभा बर्धन कर रहा है। श्रीकृष्ण के श्रीरासलीला काल में चन्द्रमा ने इस स्थान पर अमृत वर्षण किया था। सरोवर के तट पर श्रीदाऊजी व श्रीचन्द्रविहारी दर्शनीय हैं। यहाँ श्रीचन्द्रावली की बैठक है, श्रीबल्लभाचार्य की बैठक है, श्रीविट्ठल नाथजी की बैठक

एवं श्रीगोकुल नाथ जी की बैठक है तथा वैष्णव कवि श्रीसूरदासजी की भजन कुटीर है।

बाजनी शिला—अर्थात् बजाने पर सुमधुर शब्द-ध्वनि होती है, एक बाजनी शिला है। इस श्रीचन्द्र सरोवर में श्रीकृष्ण रास के उन्मत्तता में बैठे थे एवं अपने हाथों से उन्होंने श्रीराधिका का शृंगार किया था। सरोवर के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर शृंगार मंदिर एवं दक्षिण-पूर्वी कोने पर श्रीरास मंडल विराजमान हैं तथा बलभद्र द्वारा प्रकटित श्रीसंकर्षण नामक एक कुण्ड विराजित है। इस कुण्ड में स्नान करने से पूर्व कृत गो हत्यादि जनित महापाप दूर हो जाते हैं। चन्द्र सरोवर के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर जीवों को मुक्ति प्रदान कारी गन्धर्व कुण्ड नामक एक कुण्ड शोभा बढ़ा रहा है। यहाँ इन्द्र ने श्रीकृष्ण के अभिषेक काल में गन्धर्वगणों सहित स्तुति की थी।

पेटो—यह परासौली गाँव से २ मील दूर दक्षिण की ओर स्थित है। रास में अन्तर्ध्यान होने पर श्रीकृष्ण ने यहाँ चतुर्भुज रूप धारण कर गोपियों की परीक्षा ली थी। परन्तु मादनाख्य महाभाववती श्रीराधिका के उपस्थित होते ही सर्व समर्थ श्रीगोविन्द नाना प्रकार से यत्न करके भी अपने दो हाथ नहीं रख पाये। कहा जाता है—श्रीकृष्ण ने इन्द्र के उपद्रव से ब्रजवासियों की रक्षा करने के लिये यहाँ सखाओं के साथ परामर्श किया था। परन्तु श्रीकृष्ण ने सखाओं द्वारा गोवर्धन धारण करना असम्भव समझने पर एवं उनके द्वारा यह कार्य न करने के सुझाव को नहीं माना। तब सामने एक कदम्ब वृक्ष देखकर सखागण बोले—यदि तुम इस वृक्ष

को पकड़ कर मरोड़ दो तो हमें विश्वास होगा और तब हम तुम्हें गोवर्धन धारण करने की अनुमति दे देंगे। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने परमानन्द में उस वृक्ष को पकड़ कर मरोड़ दिया। तब सखाओं ने सन्तुष्ट होकर श्रीकृष्ण को सम्मति दी और उनके कमर में पेरी बाँध दी। जिस वृक्ष को श्रीकृष्ण ने मरोड़ कर टेढ़ा कर दिया था वह प्राचीन वृक्ष ही 'एँठा कदम्ब' नाम से जन साधारण में परिचित है एवं तब से इस स्थान का नाम "पेटो" पड़ गया है। गाँव के उत्तरी पूर्वी कोने पर श्रीनारायण सरोवर है। इसके तट पर श्रीनारायण ब एँठा कदम्ब दर्शनीय है।

श्रीवत्सवन नामान्तर वच गांव—यह पेटो से तीन मील दक्षिण में स्थित है। यह श्रीकृष्ण की विहार स्थली है। श्रीबल्लभाचार्य सम्प्रदायीगण यहाँ तक श्रीब्रजमंडल में सम्मिलित किया है।

श्रीगौरी तीर्थ नामान्तर गौरी कुण्ड—यह आनौर या अन्नकूट गाँव के पूर्व भाग में थोड़ी दूरी पर है तथा संकर्षण कुण्ड के दक्षिणी-पूर्वी कोने पर स्थित है। यहाँ श्रीचन्द्रावली श्रीकृष्ण दर्शन के निमित्त उत्कण्ठिता होकर गौरी पूजन के छल से आकर प्राणबल्लभ से मिलती थी। इस कुण्ड के पांश्चम में नीप कुण्ड नामक एक कुण्ड है। इस कुण्ड में स्नान करने से स्वर्ग व मोक्ष लाभ होता है। इस कुण्ड के तट पर दौने के तरह पत्तो बाला कदम्ब वृक्ष है, इस वृक्ष से दौना लेकर पास के स्थानों पर श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ दही खाया था। इसीलिये इस पवित्र क्षेत्र का नाम गर्ग संहिता में द्रोणक्षेत्र के नाम से वर्णित किया गया है। इस स्थान पर

दही दान व दौने में दही पान हुआ था इसलिये इस क्षेत्र को नमस्कार करने से मानव गण निःसन्देह गोलोक जाते हैं।

श्री आनौर या अन्नकूट गाँव——यह गोवर्धन गांव से दो मील दक्षिण में श्रीगिर्राज जी से संलग्न है। यह दान निवर्तन कुण्ड के पश्चिम में स्थित है। इस स्थान पर श्री-नन्दादि ब्रजवासी गणों की भक्ति से निवेदित नाना प्रकार के व्यजनों का अन्नकूट भोग ग्रहण करने के निमित्त श्रीगिर्राज जी ने कृपा करके उच्च स्वर में बारम्बार बोला था "लाओ लाओ"। तब से इस गाँव को आनोर के नाम से प्रसिद्ध है। इस गाँव में श्रीसद्दू पंडा के गृह में श्रीपाद बल्लभाचार्य की बैठक विराजित है। इसके सामने कटोरा व अंजनी शिला, बाजनी शिला दर्शनीय हैं। यहाँ श्रीगोवर्धन पर्वत के ऊपर श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी का गोपाल मन्दिर विराजमान है। साधारणतः लोग इस मन्दिर को श्रीनाथ जी का मन्दिर कहकर उल्लेख करते हैं, वैसे श्रीगोपाल देव श्रीनाथ जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में उदयपुर के अन्तर्गत श्रीनाथ-द्वारा नामक गाँव में श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी के प्राणबल्लभ श्रीगोपाल जी विराजमान हैं। वे एक प्रकार से श्रीवृन्दावन में नित्य विहार संपादन के निमित्त श्रीगोविन्द कुण्ड के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर स्थित गौघाट के ऊपर प्राचीन मन्दिर में विराज रहे हैं। इस गांव के दक्षिण में श्रीश्रीगिर्राज जी के तट पर श्रीनाथ जी का प्राकट्य स्थान है। उसके पास ही श्रीअन्नकूट स्थान है एवं जिस शिला के निकट अनेक व्यंजनों के भोग के निमित्त श्रीव्रजराज कुँवर श्रीगिर्राज रूप में प्रकट हुये थे उस शिला के ऊपर ही एक छतरी विराजमान है। यह स्थान अवश्य ही दर्शनीय है।

श्रीगोविन्द कुण्ड—यह आनोर के दक्षिण में श्रीगिरिराज जी के सन्निकट स्थित है। ब्रजवासी गण श्रीकृष्ण के कहने पर इन्द्र की पूजा न करके गिरिराज श्रीगोवर्धन की पूजा का अनुष्ठान किया है सुनकर देवराज ने अपने को अत्यन्त अपमानित समझा और समस्त ब्रजवासियों को बिध्वंस करने के अभिप्राय से सात दिन तक लगातार मूसलाधार प्रलयकारी शिला वृष्टि व नाना विध शक्ति का प्रयोग किया और जब वे असफल हुये तब इन्द्र को दिव्य ज्ञान की स्फूर्ति हुई। तब उन्होंने श्रीकृष्ण को अपना प्रभु व भगवान समझा। अतएब किस प्रकार श्रीकृष्ण को वे प्रसन्न करके अपने अपराध से विमुक्त होंगे यह विचार करने लगे। अन्त में सुरभी के उपदेशानुसार श्रीकृष्ण के चरणों में शरणागत हुये एवं उस स्थान पर श्रीकृष्ण का नाना तीर्थों के जल से अभिषेक करके उन्हें उन्होंने श्रीगोविन्द का नाम प्रदान किया। कुण्ड के पूर्वीय तट पर श्रीगोविन्द मन्दिर, दक्षिणी तट पर श्रीनाथ जी का मन्दिर, व श्रीपाद माधवेन्द्र गोस्वामी की बैठक है। यहाँ श्री गोपाल ने दूध दान करने के छल से एक ब्रजवासी बालक का रूप धारण करके श्रीपुरी गोस्वामी को दर्शन दिया था। बाद में स्वप्न में अपना परिचय देकर उन्हें कुंज से निकाल कर उठाने व प्रकट करने का आदेश दिया था। वर्तमान में यह श्रीगोपाल जी नाथ द्वारा में शोभित हैं। पुरी गोस्वामी जी की बैठक के निकट ही श्रीबल्लभाचार्य की बैठक है। इस कुण्ड के तट पर अनेक भजनशील साधु आनन्द से भजन करते हैं। कुण्ड के पश्चिम में श्रीगोवर्धन शिला के ऊपर श्रीकृष्ण के हस्ताक्षर ब छड़ी के चिन्ह सुशोभित है। इसके निकट श्री-गोविन्द का शृंगार स्थल है। इन्द्र ने इस स्थान पर श्रीकृष्ण

को श्रीगोविन्द पद से अभिषिक्त करने के लिये नाना प्रकार के अलंकारों से विभूषित किया था। कुण्ड के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर आकाश गंगा नामक एक परिखा है व उसके दक्षिण की ओर स्वर्ग दला शोभायमान है।

शक्र कुण्ड--यह श्रीगोविन्द कुण्ड के दक्षिण में उपस्थित है। यहाँ पर इन्द्र ने अपने अपराध क्षमापन के निमित्त श्रीकृष्ण की अनेक स्तुति की थी। एक किवदन्ती है--कि इन्द्र के अनुताप जनित अश्रु धारा प्रवाह के द्वारा यह कुण्ड जल से परिपूर्ण हो गया। बर्तमान में यह कुण्ड लुप्त प्राय अवस्था मैं दृष्टि गोचर होता है। इस कुण्ड में स्नान व तर्पण करने से शत यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। इस कुण्ड के पूर्वीय भाग में नीप कुण्ड विराजित है।

पूछरी--यह श्रीगोविन्द कुण्ड से डेढ़ मील दक्षिण पश्चिम में श्रीगिरिराज के दक्षिणी भाग में स्थित है। इस गाँव के उत्तर में मोर की आकृति का श्रीगिरिराज जी की पूँछ नामक एक कुण्ड़ शोभित है। इस कुण्ड में स्नान करने से मनुष्य को विशेष मुक्ति की प्राप्ति होती है। इस स्थान पर अप्सरा नामक एक और कुण्ड विराजित है। कुण्ड के उत्तर-पश्चिम कोने के टीले के ऊपर श्रीनृसिंह भगवान का प्राचीन मन्दिर है। कुण्ड के उत्तर में श्रीगिरिराज के प्रांगण में श्री राघव पण्डित की गुफा है। गुफा के सामने श्रीगिरिराज के ऊपर श्रीकृष्ण का मुकुट चिन्ह विराजमान है। कुण्ड के पीछे श्रीगंगा जी व नवल बिहारी का मन्दिर दर्शनीय है।

श्रीपूछरी लोटा--यह नवल कुण्ड के पश्चिम में

परिक्रमा मार्ग पर स्थित है। जो श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल होकर अन्न जल परित्याग करके बैठ गये थे, श्रीकृष्ण के वह थे एक सखा जिनका नाम लोठा के नाम से विख्यात है। जब श्रीकृष्ण द्वारिका गये थे, तब उन्होंने लोठा को भी अपने साथ ले जाने का अनुरोध किया था। तब लोठा ने कहा—भाई मैं तो ब्रज के बाहर नहीं जाऊँगा, और जब तक तुम द्वारिका से लौटकर नहीं आओगे मैं तब तक अन्न जल कुछ भो ग्रहण नहीं करूँगा, तब से लोठा जी इसी पूछरी में अन्नादि परित्याग करके श्रीगोविन्द के आगमन की प्रतीक्षा में भजन कर रहे हैं।

श्रीश्याम ढाक—यह लोठा जी के पश्चिम में एक मील दूर स्थित है। श्रीकृष्ण के भक्त गण इस शान्तिप्रद वन भूमि में निवास करते हैं। श्रीकृष्ण सखा गणों के साथ इस वनस्थित वृक्षों के पत्तों को चुन चुन कर दौने बनाकर उसमें वन भोजनादि करते थे। विशेषतः पलाश अर्थात ढाक व विविध वृक्षों के द्वारा यह वन भूमि श्याम वर्ण से भूषित है, इसीलिये यह श्याम ढाक नाम प्रसिद्ध है। इस स्थल पर श्री-विट्ठलनाथ जी की बैठक है एवं गोप सागर, जल धरा, श्री मन्दिर एवं गोप तलाइया नामक एक कुण्ड है। श्रीबल्लभाचार्य के मतानुसार श्रीराधा कृष्ण का प्रथम झूलन स्थल यहीं है। इसके निकट सुगन्धि शिला सुशोभित है।

राघव गुफा—नवल कुण्ड के उत्तर की ओर एवं परिक्रमा मार्ग के दक्षिण में श्रीगिर्राजजीके पास अनेक वृक्षों के समूह से बने कुंजों में श्रीपाद राघव पण्डित की भजन कुटिया एक मनोहर गुफा में सुशोभित है। इस गुफा के अन्दर श्रीराम

कृष्ण युगल निरन्तर विहार करते हैं। श्रीश्रीगौरांग महाप्रभु के सेवक वृन्द इस गुफा के सन्निकट सर्वदा भजनानन्द में निमग्न रहते हैं।

श्रीदाऊजी मन्दिर—पूछड़ी से एक मील उत्तर की ओर श्रीगिरिराज जी के ऊपर यह स्थित है। मन्दिर जाते शृंगार शिला दर्शनीय है। यहाँ पर श्रीकृष्ण के सात वर्ष की आयु के समय के चरण चिन्ह विद्यमान हैं। उसके निकट सुरभि, ऐरावत व घोड़ा के पद चिन्ह भी दिखाई देते है। मन्दिर के अन्दर अन्जन शिला विराजमान है। कहा जाता है कि इस मन्दिर के निम्न में खड़े होकर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन धारण किया था। मन्दिर के मध्य भाग में एक गहरा गहवर है जिसमें प्रवेश करने का किसी का साहस नहीं होता है। इस मन्दिर के पास आकर अपने अपराध क्षमा हेतु इन्द्र ने श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम किया था।

श्रीसुरभि कुण्ड—यह दाऊजी मन्दिर के उत्तरी-पूर्व भाग में स्थित है। इन्द्र द्वारा श्रीकृष्ण को श्रीगोविन्द पद पर अभिषिक्त करने पर इस स्थान पर सुरभि ने अपने दुग्ध द्वारा श्रीकृष्ण का अभिषेक किया था।

श्रीऐरावत कुण्ड—यह सुरभि कुण्ड के उत्तर की ओर स्थित है। ऐरावत श्रीकृष्ण का अभिषेक करने के लिये इस स्थान पर खड़े होकर सूंड द्वारा आकाश गंगा को जल लाया था। कुण्ड के तट पर कदम खन्डी पर श्रीराधा कृष्ण का विलास स्थल है। इस कदम खंडी को कोई कोई गोविन्द स्वामी का कदम खन्डो कहकर उल्लेख करते हैं।

श्रीरुद्र कुण्ड—नामान्तर हरजि कुण्ड। यह कुण्ड ऐरावत कुण्ड के उत्तर पूर्व में स्थित है। यहाँ पर श्रीमहादेव श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न हुये थे।

श्री जतीपुरा—नामान्तर गोपाल पुरा। हरजि कुण्ड के उत्तर में स्थित है। श्रीगिरिराज के समीप जो स्थान श्रीपाद माधवेन्द्रपुरी ने श्रीनाथ जी की तृप्ति विधान के निमित्त सब रस युक्त नानाविध उपकरणों द्वारा अन्नकूट उत्सव सम्पन्न किया था, वह स्थान श्रीमाधवेन्द्र यति के नाम पर जतिपुरा नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज भी कार्तिक शुक्ला प्रतिपद के दिन यहाँ महा समारोह के साथ श्रीअन्नकूट महोत्सब सम्पादित किया जाता है। इसके सन्निकट श्रीपाद बल्लभाचार्य की बैठक है। गाँव में श्रीमदन मोहन, श्रीनवनीत प्रिया जी व श्रीमथुरेश जी का मन्दिर विराजमान है।

गौशाला—गाँव के उत्तरी भाग में यह स्थित है। यह श्रीनाथ जी की गौशाला के नाम से सर्व साधारण में जाना जाता है। श्रीमाधवेन्द्रपुरी गोस्वामी पर कृपा करके श्रीगोपाल जी प्रकट हुये थे यह जानकर ब्रजवासी गणों ने जिन गायों को श्रीगोपाल जी को अर्पण किया था उन गायों को इस गौशाला में रखा गया। वर्तमान समय में उस गौशाला की कुछ खंडहरें ही विद्यमान हैं।

श्रीबिलछू कुण्ड—यह जतीपुरा से डेढ़ मील उत्तर में परिक्रमा के बांई ओर है। यहाँ श्रीकृष्ण के दर्शन से श्रीराधिका का बदन कमल आनन्द में प्रफुल्लित हुआ था। उस

स्थान पर बृक्षों से सुसज्जित बिलास बदन नामक एक सेबा स्थल सुशोभित है, इस स्थान पर विलछू कुण्ड नामक एक प्रसिद्ध कुण्ड है। चारों ओर मणियुक्त इस कुंड में स्नान मात्र से ही मानव गण भक्ति प्राप्त करते हैं। इस कुण्ड में से श्री हरिदेव जी प्रकट हुये थे।

जान अजान वृक्ष द्वय——यह बृक्ष द्वय श्रीगिरिराजजी के सन्निधान में स्थित है, साथ ही श्रीहनुमान जी विराजमान हैं, सर्व साधारण में यह दन्डबती हनुमान नाम से प्रसिद्धहैं।

श्रीलक्ष्मी नारायण वेदी——श्रीहनुमान जी के बाद ही गोवर्धन गाँव के सन्निकट श्रीलक्ष्मी नारायण चबूतरा विराजमान है। जो लोग श्रीगिर्राज महाराज की दण्डबती करते हैं, वे इस स्थान से परिक्रमा का शुभारम्भ करते हैं।

श्री सखी थरा——नामान्तर सखी स्थली। यह गाँव श्रीमानसी गंगा के उत्तर में थोड़ी दूरी पर स्थित है। यह श्रीराधा की चचेरी बहिन श्रीचन्दावली का गाँव है। कहा जाता है कि—जब श्रीपाद दास गोस्वामी विरह में अन्नादि का परित्याग करके थोड़ा सा मठा पीकर दिन रात भजन करते थे तब ब्रज नामक श्रीकुण्डवासी ब्राह्मण उन्हें मठा लाकर देते थे। एक दिन वह गौ चराते चराते श्रीगोवर्धन निकट स्थित सखी स्थली पर जाकर वहाँ पलाश के पत्ते देखकर अपने मन में श्रीदास गोस्वामी के बारे में सोचने लगे, उस दिन वह पलाश के पत्तों का दोना बनाकर उसमें मठा लेकर गोसाँई जी के पास गये तो गोसाँई जी ने कहा—यह बड़ा पत्ता आज तुम कहाँ से लाये ? ब्राह्मण ने कहा कि वह उसे सखी स्थली

से लाया था। गोस्वामी जी ने अपने सिद्ध स्वरूप के आवेश में आकर उस दोनों को दूर फेंक दिया और कहा—चन्द्रावली के उस गाँव में फिर कभी मत जाना। इस गाँव के डेढ़ मील उत्तर पश्चिम कोने में शक्रोया गाँव स्थित है। इस स्थान पर सखी गणों ने श्रीकृष्ण को शपथ दिलवाया था। शपथ में श्रीकृष्ण ने सखियों से कहा था "मैं श्रीराधिका बिना कभी कुछ और नहीं जानता"।

श्रीनीम गाँव—सखी स्थली से डेढ़ मील दूर यह स्थित है। श्रीगोवर्धन के पश्चात गोप, गोपी गणों ने यहाँ श्रीकृष्ण की नीम से सफाई की थी। इस गाँव में अनेक नीम के वृक्ष हैं।

पाड़ल—वर्तमान नाम इसका पाड़ल है। यह नीम गाँव से दो मील उत्तार की ओर है। यहाँ पर श्रीराधिका ने सखीगणों के साथ पाटल पुष्प का चयन किया था।

कुन्जेरा—पाड़ल के डेढ़ मील पूर्व की ओर एवं श्रीराधाकुण्ड से डेढ़ मील उत्तर पश्चिम दिशा में यह स्थित है। इस स्थान तक श्रीराधा कुण्ड के कुन्जों की सीमा वर्णित है। कोई कोई कहते हैं यहाँ श्रीराधिका ने अष्ट सखियों के साथ सलाह करके श्रीकृष्णके साथ कौतुक करने के निमित्त कुन्जरों की लीला अभिनित की था। उनके कौशल से श्रीकृष्णने परम सन्तुष्ट होकर कुन्जर राज कहकर संबोधन किया था। तब से इस स्थान का नाम कुन्जराज या कुन्जेरा प्रसिद्ध हुआ।

पाली—यह कुन्जेरा से डेढ़ मील दूर उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। पालिका नामक जूथेश्वरी का यहाँ निवास स्थान है इसीलिये यह स्थान पाली नाम से परिचित है।

डेरावली—यह गाँव पाली से डेढ़ मील उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। ब्रजराज श्रीनन्द महाराज ने छटीकरा से नन्दीश्वर जाते इस स्थान पर डेरा डालकर रात्रि वास किया था, तब से इस गाँव को डेरावली नाम से पुकारा जाता है। यहाँ से डेढ़ मील उत्तर-पश्चिम की ओर हैं बड़भन्ना।

साहार—यह बड़भन्ना से दो मील उत्तर में है। यहाँ श्रीनन्द महाराज के अग्रज श्रीउपानन्द निवास करते थे।

श्रीसूर्य कुण्ड—नामान्तर छोटाभन्ना श्रीमती वृषभानु नन्दिनी प्राणवल्लभ के दर्शन उत्कंठा में मध्यान्ह लीला में सूर्य पूजा के छल से सखियों के साथ यहाँ आईं। गोधन व सम्पदा वृद्धि के निमित्त पूर्णमासी देबी के आदेशानुसार जटिला ने श्रीराधिका को सूर्य पूजा के निमित्त कुन्दलता को सौंपा, कुन्दलता श्रीराधिका सहित विविध रस प्रसंग में सूर्य पूजा के छल से चलीं, साथ में सखियाँ भी सूर्य पूजा की सामिग्री लेकर उनके पीछे पीछे सूर्य कुण्ड को चलीं, उसी समय श्रीकृष्ण गोचारण के रंग में सखाओं के साथ गोवर्धन आकर जम गये, कुन्दलता ने यह जानकर श्रीकृष्ण के निमित्त तुलसी मंजरी द्वारा श्रीराधिका का सन्देश मालादि सहित भेजा। तुलसी मालादि लेकर श्रीकृष्ण के पास गईं इधर श्रीराधा श्रीकृष्ण के साथ मिलने के निमित्त सूर्य को प्रणाम करके सूर्य पूजा के छल से सखी के साथ थोड़ा सा बाहर

आकर श्रीकुण्ड के निकट कन्दर्प कुहली नामक वाटिका में पुष्प चयन के बहाने गईं। श्रीकृष्ण ने भी तुलसी के मुख से श्रीराधा का सन्देश सुनकर आनन्द सहित मधुमंगल को लेकर उस पुष्प वाटिका में प्रवेश करके श्रीराधा का दर्शन किया। दोनों ने एक दूसरे के दर्शन किये और उनमें प्रेम सिन्धु उच्छलित हुआ जिससे उनके श्रीअंगों में विविध भावों का प्रकाश हुआ। मध्यान्ह काल के मिलन के प्रथम चरण में कन्दर्प यज्ञ आरम्भ हुआ, फिर कुन्दलता की यज्ञ के आचार्य द्वारा सूर्य पूजा सम्पन्न हुई। इस गाँव से एक मील पूर्व में पेकूं है, इसके उत्तर में हैं सीमान्त गाँव।

भादार—यह पेकूं गाँव से दो मील दक्षिण-पूर्वमें स्थित है। यह जूथेश्वरी श्रीभद्रा सखी का गाँव है।

कोनाई—यह भादार से डेढ़ मील पश्चिम में स्थित है। एकदा श्रीकृष्ण श्रीराधिका के विरह में एक दूती से पूछा था "वह क्यों न आई"। तब से इस स्थान का नाम कोनाई है।

बसती—कोनाई के डेढ़ मील पूर्व-दक्षिण में यह स्थित है। इसके दो मील पश्चिम में है श्रीराधा कुण्ड। परिक्रमार्थी लोग श्रीराधा कुण्ड आकर श्रीगोवर्धन होकर यावक कुण्ड जाते हैं।

यावक कुण्ड—नामान्तर मेहेन्दार कुण्ड। यह कुण्ड गोवर्धन से एक मील पश्चिम में रास्ते के निकट स्थित है।

गाँठूली—यह गोवर्धन गाँव से दो मील पश्चिम में स्थित है। यहाँ पर श्रीललिता सखी ने युगल किशोर के वस्त्रों में

गाँठ बांधकर आनन्द प्राप्त किया था। इसलिये यह गाँव गाँठूली नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक दिन श्रीकृष्ण गोचारण में कुंज की शोभादर्शन करते करते प्रफुल्लित कुसुम रात्रि के सौरभ में उनका मन विह्वल हो उठा। वे तब मुरली में राधा राधा फुंकार ने लगे, इससे उनका सर्वांग पुलकित हो उठा एवं नयनों से अश्रुधारा बहने लगी, वृक्षों को देखकर वह बोले बोलो मेरी प्राण प्रिया श्रीराधिका कहाँ है ? मैं उन्हें ही ढूंढ रहा हूँ, उनका कोई समाचार देकर मुझे शान्ति प्रदान करो।' परन्तु वृक्षों के निकट प्रिया का कोई समाचार न पाकर प्रिया के आगमन पथ पर नयन बिछाकर वे प्रतीक्षा करने लगे, इसी बीच श्रीराधा सखियों के साथ कुंजमें उपस्थित हुईं तो शारीने उनके सम्मुख श्रीकृष्ण के विलाप की स्थिति का विवरण दिया जिसे सुनकर श्रीराधिका अश्रु धारा में वक्ष प्लावित करते करते अपने प्राण बल्लभ के निकट पहुँची। दोनों प्रिया प्रियतम ने एक दूसरे को गाढ़ आलिंगन में बद्ध कर लिया और एक दूसरे के अधरों को मिला दिया, इस प्रकार वे दोनों अपनी बाहरी सुध बुध खो बैठे और उन्हें अपने वस्त्रों का भी ध्यान नहीं रहा यह देखकर श्रीललिता ने धीरे धीरे उन दिव्य युगल के निकट आकर दोनों के अँचलों में गाँठ बाँध दी और सखियों के बीच वापस आकर युगल माधुरी का दर्शन करने लगी व आनन्द में निमग्न हो उठी। तदुपरान्त युगल किशोर के रत्नासन पर विराजने पर सखी गण चारों ओर से आईं तब श्रीकृष्ण आनन्द के सहित उनके साथ हास्य परिहास करने लगे। तब ही श्रीकृष्ण ने वस्त्रों में गाँठ देखकर आनन्द सहित कहा—हमारे इन वस्त्रों में किसने गाँव बाँधी है ? हम दोनों

के हृदयों की ग्रन्थी आज बाहर प्रकाशित करके यह आश्चर्य-जनक कार्य किसने किया है? तब ललिता बोली—सुनो कृष्ण! यह प्रेम का ही विलक्षण स्वभाव है, जिनके हृदय में प्रेम उदय होता है, उसकी बाह्य वृत्तियाँ विलीन हो जाती हैं एवं तत्काल प्रेमानन्द में मग्न होने के कारण हृदय की गुप्त बातें सहज ही में प्रकाशित हो जाती हैं, तब वह स्वयं को भूलकर दूसरे को भी भुला देता है, इसीलिये तुम्हारे वस्त्रों में यह गाँठ बाँधी हुई है। ललिता के वाक्यामृत से युगल किशोर हँसने लगे। बाद में श्रीराधिका के इंगित करने पर श्रीकृष्ण सब सखियों के सहित चुम्बन आलिंगन व विविध रस क्रीड़ा करने लगे। गोवर्धन से दो मील पश्चिम में इस गाँठूली में बसन्त काल में होली के अवसर पर सखियोंने श्रीराधा कृष्णके वस्त्रों में गाँठ बाँधकर आनन्द प्राप्त किया था, इसीलिये यह गाँव गाँठूली के नाम से प्रसिद्ध हैं।

श्रीगोलाल कुण्ड—गाँठूली के दक्षिण-पर्व कोने में होली लीला के अवसर पर श्रीयुगल किशोर ने जिस कुण्ड में स्नान करके अपने तन के रंग गुलाबादि धोये थे वही कुण्ड गोलाल कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है इस कुंड के ऊपर श्री-बल्लभाचार्य जी की बैठक है।

बेहेज—यह गांठूली से चार मील दूर पश्चिम में स्थित है। यहाँ से इन्द्र ने सुरभी को अपना सहयोगी बनाकर अपने अपराध क्षमा भिक्षाके हेतु अति दीनता सहित श्रीकृष्णके निकट प्रस्थान किया था। गाँव के पश्चिम में श्रीबलभद्र कुंड व दाऊजी मन्दिर दर्शनीय हैं। बेहेज के पश्चिम में दो रास्ते हैं उत्तरी-पूर्व रास्ते में जाने से देवर्शीष व मुनिर्शीष कुंड होकर

परमादरा में जाया जाता है, पश्चिमी रास्ते से जाने पर लाठा-वन अर्थात डीग होकर परमादरा में जाया जाता है। बेहेज से डीग दो लील पश्चिम में है। यह गाँव ब्रज सीमा से बाहर स्थित है। परन्तु कामवन जाने के लिये सुविधा जनक होने से यात्रीगण देवर्शीष व मुनिर्शीष न जाकर डीग होकर जाना उचित समझते हैं। डीग से तीन मील दूर उत्तरी पूर्व कोने पर परमादरा स्थित।

देवर्शीष कुण्ड—बेहेज से लगभग चार मील दूर उत्तर पूर्व दिशा में यह स्थित है। यहाँ सखाओं के साथ श्रीकृष्ण को गोचारण व नाना बिध विचित्र खेल करते देखकर देवताओं ने विविध स्तुतियाँ की थी।

श्रीमुनिर्शीष कुण्ड—यह देवर्शीष से थोड़ी ही दूर पर स्थित है। यहाँ पर मुनियों ने श्रीकृष्ण के दर्शन पाने के लिये तपस्या की थी।

श्रीप्रमोदना—वर्तमान नाम पर परमादरा। यह देवर्शीष से तीन मील उत्तर पूर्व में स्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने विविध अपूर्व विलास द्वारा श्रीब्रजसुन्दरीगणों को प्रमोदित किया था। गाँव के पूर्व में चरण कुण्ड एवं उत्तर की ओर श्रीकृष्ण कुण्ड स्थित हैं। श्रीकृष्ण कुण्ड के उत्तरी तट पर श्रीसुदामा सखा की मूर्ति विराजमान है।

श्रीबदरी नारायण—परमादरा से डेढ़ मील पश्चिम में यह स्थित है। मन्दिर के पूर्व की ओर अलकानन्द कुंड है और उसके पूरब में कदमखंडी है। श्रीबदरी नारायण के दर्शन

करके कोई कोई कामवन की ओर गमन करते हैं। उसी बीच रास्ते में सिकन्दरा नामान्तर सेउघटी व इन्द्राली गाँव पड़ता है।

सिकन्दरा—नामान्तर सेउ श्रीबदरी नारायण से डेढ़ मील उत्तर की ओर स्थित है। उससे एक मील उत्तर-पूर्व में है घाट। यह दो गाँव पर्वतों के बीच में विराजमान है। यह श्रीवल्लभाचार्य वंश के सन्तानों की जगह है। इसके आगे चार मील दूरी पर उत्तर-पूर्व में इन्द्राणी गाँव स्थित है। यह इन्द्र का श्रीकृष्ण के लिये आराधना स्थल है। उसके दो मील दूर उत्तर-पूर्व में कामवन है। जो लोग श्रीबदरी नारायण दर्शन करके श्रीकामवन जाना चाहते हैं उनके लिये गोहना होकर जाना सुगम है।

गोहना—यह श्री बदरी नारायण से एक मील दूरी पर दक्षिण में स्थित है। यह श्रीसुदामा जी का जन्म स्थान है। इसके दो मील पश्चिम दिशा में खो गाँव है। उससे दो मील और पश्चिम में कर्मख गाँव है। इस गाँव के दक्षिण-पूर्व कोने में धवल उद्यान पर्वत है। गाँव के दक्षिण दिशा में घाटि पाहाड़ पार करने पर आलिपुर गाँव पड़ता है।

श्री आदि बद्रीनाथ—आलिपुर से डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिम दिशा में श्री आदि बद्रीनाथ का प्राकृतिक दृश्य अति रमणीय है। इसके चारों ओर ऊँचे ऊँचे पर्वत है। ऊँचे पर्वतों के कारण आदि बद्रीनाथ क्षेत्र में प्रवेश करना इतना सहज नहीं है। श्री आदि बद्रीनाथ के प्रवेश द्वार पर ही आलिपुर

गाँव स्थित है। श्री आदि बद्रीनाथ श्री नारायण की तपस्या स्थली है। इस स्थान पर ही श्रीनारायण की तपस्या भंग करने के लिये व उसमें बाधा विघ्न हेतु इन्द्र ने इर्षा वश अनेक अप्पसराओं को प्रवेश कराया था। इसी प्रसंग में श्री-नारायण ने अपने बाँयें अंग से उर्वशी की रचना की ओर इस प्रकार इन्द्र का दर्प चूर्ण किया। तपोवन के दक्षिण में गन्ध मादन पर्वत है, पश्चिम में केशर पर्वत है, उत्तर में निषद पर्वत है एवं पूर्व में शंखकूट पर्वत विराजमान है। प्राचीर के पूर्व की ओर प्रवेश द्वार है। वहाँ से प्रवेश करके रास्ते के बाँयी ओर श्रीमाला देवी का अति प्राचीन खंडहर मन्दिर है एवं प्रवेशकारी के दक्षिण की ओर श्री अलकानन्दा सुशोभित हैं। इसके पश्चात कुछ आगे श्री आदि बद्रीनाथ मन्दिर एवं मन्दिर के सम्मुख ही तप्त कुंड हैं। मन्दिर के अन्दर क्रम से सप्त विग्रह विराजमान हैं। पहले श्री बद्री नारायण, इस विग्रह के एक ओर कुबेर भंडारी, दूसरी ओर श्रीअन्न पूर्णा देवी चतुर्भुज रूप में विराजमान हैं। श्रीबद्रीनाथ के दक्षिण में ध्यान मग्न श्रीउद्धव जी, उनके दक्षिण में योगासन में उपविष्ट श्रीबद्रीनाथ जी, उनके पास ही श्रीचतुर्भुज नारायण फिर श्री गणेश जी, श्रीपार्वती जी और बैल सहित श्रीकेदारनाथ महादेव जी विराजित हैं। इस आदि बद्रीनाथ के बन में १३ दिन तक श्रीराधा गोविन्द का झूलन लीला का अनुष्ठान किया जाता है। आनन्दमय विद्युत की झलक व बीच बीच में वर्षा होती है, उमड़ते मेघों को देखकर मोर मोरनी अपनी पूंछ फैलाकर नृत्य करते हैं, कोयल की कुहु कुहु पुकार व भंवरों की गुंजन सुनाई देता है, वृक्षादि फल फूलों से लद जाते हैं और मन्द मन्द पवन संचारित करते हैं। ऐसे समय वन में मणिमय रत्न

हिंडोले पर सूर्य चन्द्र युत सिंहासन में बैठकर नव यौवना सुकुमारी श्रीराधिका को कोई सखी मृदु मन्द गति से झूला रही है, कोई सखी सुमधुर स्वर से गा रही है, परन्तु अपने प्रणाधिक प्रियतम श्री गोविन्द के आने में देरी होते देखकर अकेली श्रीराधा के मन में कोई आनन्द का आभास नहीं है, वे अपने प्राण प्रियतम के आगमन पथ पर नयन बिछाये प्रतीक्षा कर रही हैं। इसी बीच अखिल रसामृत मूर्ति गोप किशोर श्रीश्याम सुन्दर झूलने के लिये सुसज्जित होकर वन भूमि को उज्ज्वलित करते हुये आकर सामने बैठ गये। सखियों के साथ श्रीराधा उनके दर्शन करके परम आनन्दित हुईं।

तदुपरान्त श्रीराधा के श्रीश्याम सुन्दर झूले पर बैठने पर सखियाँ नृत्य व गीत के साथ परम आनन्द से उन्हें झुलाने लगीं। सब विभिन्न रंगों के वस्त्र व अलंकारादि द्वारा भूषित थे एवं झूले के हर झोंके में उनके कण्ठ मणिहार भी हिलोरें लेने लगे। चारों दिशा कस्तुरी व अगुरु की सुगन्ध से आमोदित हुये, युगल किशोर के अधरों में पान की लाली छाई हुई थी। झूले के हर झोंके में श्रीराधा कभी कभी चमकित होकर अपने प्राण बन्धु को अपने सीने से लगा लेती हैं। रस रंगीले श्रीश्याम सखियों को और जोर से झुलाने का संकेत करने पर सखियाँ उनका अभिप्राय समझकर और जोर से झुलाने लगीं। श्रीकृष्ण श्रीराधिका को अति चकित होते देख कर अपनी भुजा रूपी लताओं में समेट कर वक्ष से लगा लिया। श्रीयुगल की झूलन लीला का दर्शन करके सखी गण आनन्द सागर में निर्माज्जत हुये। वन के पशु पक्षी गण भी

स्थगित गति में पलकें झपकायें बिना नयनों से युगल किशोर की शोभा के दर्शन करके आनन्द में निमग्न हो गये। श्रीबद्रीनाथ मन्दिर के पश्चिम में आधा मील आगे जाने पर सुगन्धित शिला (वर्तमान नाम हरि की पैड़ या हरिद्वार) है। श्रीबद्रीनाथ होते हुये आलिपुर आने पर दो मील उत्तर में पशप गाँव स्थित है।

पशप—इस गाँव में दो रास्ते हैं। कोई कोई यहाँ से पाँच मील उत्तर में कामवन को जाते हैं और कोई कोई पशप से पाँच मील पश्चिम में श्रीकेदारनाथ दर्शन करके कामवन जाते हैं।

श्रीकेदारनाथ जी—पशप होकर केदारनाथ जाते "बाली" गाँव पड़ता है। श्रीकेदारनाथ जी अति ऊँचे पर्वत के ऊपर स्थित हैं, पर्वत की एक कन्दरा में श्रीपार्वती देवी सहित श्रीकेदारनाथ विराजमान हैं। श्रीकेदारनाथ के दो मील उत्तर-पश्चिम दिशा में बिलोन्द गाँव है, इससे दो मील उत्तर-पश्चिम में श्रीचरण पहाड़ी है, उससे दो मील और आगे उत्तर-पश्चिम में कामवन है अर्थात श्रीकेदारनाथ से ६ मील उत्तर-पश्चिम में कामवन है।

श्री कामवन

चतुर्थं काम्यक वनं वनानां वन मुत्तमम् ।
तत्र गत्वा नरो देवी ! मम लोके महीयते ।।

वन समूहों में कामवन ही अत्युत्तम चतुर्थ बन हैं। इस वन में गमन करने से मनुष्य ईश्वर के लोक में पूजित होता है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण के सहित सखियों का श्रीरघुनाथ श्रीराम की ऐश्वर्यमयी लीलाओं की पहेली में वाद विवाद हुआ था। एक बार सखियों के साथ श्रीराधा कृष्ण नाना कौतुक सहित विहार में मत्त थे, उसी समय वृक्षों की कतारों में बैठे पक्षियों के गुंजन से युक्त एक सरोवर के तट पर बैठ गये और सब सखियाँ युगल के चारों ओर क्रमानुसार खड़े होकर उनकी सेवा करने लगीं। इधर वृक्षों की शाखाओं पर बन्दर लोग भी आनन्द करने लगे। कोई कूदकर वृक्ष के ऊपर उठता था, और कोई सरोवर को लाँघ कर श्रीकृष्ण को प्रणाम करता था। कोई नाना प्रकार का शब्द करता था। यह देखकर ललिता विशाखा से बोली—पहले श्रीरघुनाथ सीता जी को खोकर बन्दरों को साथ लिये वन वन में सीता जी को ढूंढ़ रहे थे, बाद में पक्षियों के मुख से सीता जी का समाचार पाकर श्रीराम बंदरों सहित युद्ध के लिये तत्पर हुये। परन्तु रावण की लंकापुरी में, जाने के लिये समुद्र का पार करना अति कठिन था। श्रीरघुनाथ के साथ एक महा बलवान हनुमान थे। उन्होंने ही समुद्र लंघन किया था, यही बुजुर्गों से सुना है। ललिता की बात सुनकर श्रीकृष्ण बोले—ललिते ! मैं ही वह श्रीरघुनाथ हूँ—देखो ना बन्दर लोग

लोग मुझे देखकर सरोवर लाँघकर मेरे श्रीचरण स्पर्श करके प्रणाम कर रहे हैं। मैं ही वह श्रीराम हूँ, उनसे मेरी कोई भिन्नता नहीं है। श्रीकृष्ण के वाक्य पर सखियाँ श्रीराधिका का मुँह देखकर हँसते हँसते बोलीं—नन्द नन्दन! असम्भव बात क्यों बोलते हो? महा पराक्रमशाली धनुर्धारी महाराज दशरथ पुत्र श्रीरामचन्द्र जिनके बाणों से त्रिभुबन काँप उठता था, जो सीता बिना और कुछ नहीं जानते थे, तुम अपने को श्रीरघुनाथ कहते हो, यह अति असंभव बात है। तब श्रीकृष्ण बोले, सुनो ललिते श्रीरघुनाथ से केवल मेरा नाम भिन्न है, परन्तु सब कारण एक ही है,मैं तब था श्रीदशरथ नन्दन,सीता बिना और कुछ नहीं जानता था। अब मैं हूँ श्री ब्रजराजनन्दन श्रीराधा के साथ सदा बिहार करता हूँ। पहले मेरे अस्त्रों के आधार से त्रिभुवन कम्पित होता था और अब मेरी बंसी की तानसे समस्त विश्व ब्रह्माण्ड कम्पित है,अतः कारण एक ही है, केवल काया भिन्न है। तब ललिता बोलीं—श्रीरघुनाथ पत्थर इत्यादि से समुद्र बाँध कर लंका गये थे, तुम पत्थरों से सरोवर बाँध के तो दिखाओ। तुम्हारा यह काम देखकर ही तुम्हें हम मानेंगी अन्यथा तुम्हारी बातों पर हम विश्बास नहीं करतीं। ललिता के वाक्य पर श्रीकृष्ण बोले—तुम लोग पत्थर लाओ मैं अवश्य ही सरोवर को बाँध दूंगा। तब सखियाँ बोली, तुम यदि रघुनाथ थे तब बन्दरों को पत्थर लाने को आदेश दो वे ही पत्थर लायेंगे और तुम समुद्र बाँधो। सखियों के कथन पर श्रीकृष्ण ने बन्दरों को पत्थर लाने का आदेश दिया तो बन्दरों ने सरोवर के तट पर पत्थरों का ढेर कर दिया। श्रीकृष्ण श्रीराधिका की ओर देखकर मधुर स्वर से बोले—राधे! तुम यदि मेरी प्राण प्रिया हो तो बोले मैं अवश्य

ही सरोवर बन्धन करूँगा।

यह कहकर श्रीकृष्ण ने पत्थर लेकर पानी के ऊपर रक्खा, श्रीकृष्ण के हस्त स्पर्श से पत्थर जल के ऊपर तैरने लगा। क्रमानुसार सेतु बन्धन करके आनन्दित होकर श्रीकृष्ण श्रीराधिका के साथ मिले तब श्री विशाखा बोलीं अब हम समझी तुम्हारी चतुराई। इसके उत्तर में श्रीकृष्ण बोले—पत्थर द्वारा सरोवर का मैंने बन्धन किया इसमें मेरी चतुराई क्या है ? मैं ईश्वर हूँ मेरे लिये सब सम्भव है। तुम लोग गोप कन्या हो मेरी महिमा तुम क्या जानों ? तब हँसते हँसते ललिता बोलीं—हे नन्द नन्दन ! तो सुनो—जो लोग शक्ति उपासक बाजीगर होते हैं, वे अपनी शक्ति के बल पर नाना कार्य कर सकते हैं। कभी सिर पर घड़ा लेकर रस्सी के ऊपर चलते है फिर बाँस के ऊपर चढ़कर धरती पर भी कूद पड़ते हैं, बाजीगर के उन क्रिया कलापों को सत्य मानने पर भी यह सब मिथ्या है। तुमने भी उसी रूप शक्ति की आराधना करके उस शक्ति सिद्ध विद्या के बल पर सेतु बन्धन किया है। यह तुम्हारी चतुराई भिन्न और कुछ नहीं है। ललिताकी बात पर सब सखियों ने हँसते हुये कहा—यही सत्य है, यही सत्य है। यहाँ पर उस रस लीला का साक्षी भूत समुद्र बन्धनादि ऐश्वर्य मयी लीला माधुरी की अनुभूति है। सेतु बन्धन लीला के साथ ही श्रीराधा गोविन्द की एक और मनोरम लीला भी यहाँ घटित हुई जो कि 'छिपा छिपी लीला' के नाम से जानी जाती है। एक दिन श्रीकृष्ण ने ललिता से कहा—ललिते ! तुम प्रधान बनकर जो आदेश करोगी उसी नियम से आज का खेल खेला जायेगा। श्रीकृष्ण के वाक्य पर ललिता बोलीं—

कृष्ण ! तो सुनो तुम सखियों को संग लेकर कुन्ज में जाओ फिर मैं जब तुम लोगों को बुलाऊंगी उस समय जो सबसे पहले आकर मुझे छूयेगा वही जीतेगा, और जो सबसे पीछे रहेगा वह हारेगा। यह सुनकर श्रीकृष्ण श्रीराधा व सखियों को संग लेकर कुन्ज में गये, कुछ देर बाद ललिता ने सबको उच्च स्वर में बुलाया तो बलिष्ठ श्रीकृष्ण ने पहले आकर ललिता को स्पर्श किया और मन्थर गामिनी श्रीराधा सबसे पीछे आकर ललिता के सामने आकर बैठ गईं। एक दिन खेल के नियमानुसार ललिता ने श्रीराधा के नेत्र बन्द किये परन्तु ललिता की उँगलियों के बीच की दरारों से श्रीराधा सबकी गति विधि देख रही थीं। इधर सखियों के साथ श्रीकृष्ण कुन्ज के भीतर छुप जाने के पश्चात ललिता ने श्रीराधिका के नेत्रों पर से अपना हाथ हटा लिया और कहा—देखो वृषभानु सुने ! तुम पहले जाकर जिसे स्पर्श करोगी वही खेल में हारेगा। नियमानुसार श्रीराधा ने वास्तव में श्रीकृष्ण के कुन्ज में प्रवेश किया। परन्तु श्रीकृष्ण तमाल वृक्ष के भीतर इस प्रकार छुपे हुये थे कि श्रीराधिका अनेक ढूँढ़ने पर भी श्रीकृष्ण को पहचान नहीं पाईं, यह देखकर श्रीकृष्ण मन्द मन्द मुस्कराते तमाल वृक्ष के पीछे से श्रीराधा को देखने लगे। इधर श्रीराधा आश्चर्य से सोचने लगीं कि तमाल वृक्ष में अरुण वर्ण कहाँ से आ गया, इस प्रकार श्रीराधा के तमाल वृक्ष के तले चलने पर अनायास उनका हाथ श्रीकृष्ण के बदन से टकरा गया तो श्रीकृष्ण ने आनन्द से श्रीराधा को हृदय से लगा लिया और चुम्बन दिया एवं हृदय से हृदय, नयन से नयन मिले और एक दूसरे के आलिंगन में बद्ध हो गये इस प्रकार उनकी मनोकामना पूर्ण हुई। इसके पश्चात श्रीराधा

श्रीकृष्ण का हाथ पकड़े तेजी से ललिता के निकट उपस्थित हुईं। बाद में सखियाँ भी क्रम से ललिता के निकट आकर उपस्थित हुईं अब ललिताने अपने दोनों हाथोंसे श्रीकृष्णके नेत्रों को बन्द किया एवं सखियों के साथ श्रीराधा के कुन्ज में शीघ्र ही छुप जाने के पश्चात ललिताने श्रीकृष्ण के नेत्रोंपर से अपने हाथ हटा लिये। तब श्रीकृष्ण ने शीघ्र ही श्रीराधा के कुन्ज में प्रवेश किया और कुन्ज के मनोरम पुष्प उद्यान के सुन्दर सौरभ व भ्रमरों को देखकर आनन्दित हुये। परन्तु श्रीकृष्ण श्रीराधा के अंग का स्पर्श पाने की लालसा में उत्कंठित थे परन्तु ढूंढ़कर भी उन्हें नहीं पा रहे थे, तब वह व्याकुल होकर कहने लगे—अरे प्रेममयी श्रीराधे किस कुन्ज में हो, एक बार कोयल की कक स्वर में बोलो, तुम्हारे बिना दर्शन के मेरे प्राण विकल हैं, अरे श्रीराधे। एक बार अपनी दया प्रगट करो। अपने प्रियतम को व्याकुल देखकर सरल हृदया श्रीराधा ने सखियों के साथ कोयल की कूक ध्वनि निकाली जिसे सुन कर श्रीकृष्ण आनन्द में उस कुन्ज में प्रवेश कर गये। परन्तु ऐसा ही विचित्र दृश्य कि श्रीराधा व गोपियाँ उस कुंज के वृक्षों, लताओं, पत्तों पुष्पों में अपने स्वर्ण वर्ण एवं तदानुरूप वस्त्र भूषणों में इस प्रकार छुये हुये थे कि उस हेममय कुन्ज में कौन कहाँ छुपा हुआ है श्रीकृष्ण को पता ही नहीं चल पा रहा था। इस प्रकार बार बार यत्न करने पर एवं एकाग्र दृष्टि से चारों ओर निरीक्षण करने पर भी श्रीकृष्ण पहचान नहीं पाये, तब सखियाँ कुन्ज के भीतर से देखकर मन्द मन्द हँसने लगीं। उनके हँसने की ध्वनि सुनकर श्रीकृष्ण पुनः एक दृष्टि होकर उधर ही देखने लगे परन्तु किसी भी प्रकार से श्रीराधा को नहीं पहचान पाये और अन्त में श्वेत, लाल, नीले, व पीले

आश्चर्यजनक पुष्प देखकर श्रीकृष्ण ने उस कुंज में प्रवेश किया। श्रीकृष्ण को उस कुञ्ज में प्रवेश करते देख गोपियों ने वह कुञ्ज त्याग दिया और दूसरे कुञ्ज में चली गईं। यह देखकर श्रीकृष्ण ने सोचा यह तो बड़ा ही आश्चर्य प्रद है। वृक्ष गण क्या पायल की ध्वनि करते हुये चल सकते हैं? अब समझा इसी कुंज में सखियों के साथ राइधनी छुपी हुई थी मुझे देखकर दूसरे कुन्ज में चली गई हैं। सखियाँ तेजी से कुन्ज के भीतर छुप गईं परन्तु मन्थर गमिनी राधिका धीरे धीरे चल रही थीं, इसी समय श्रीकृष्ण ने शीघ्रता से जाकर श्री-राधा को हृदय से लगा लिया और गूढ़ आलिगन में बांध लिया और अपनी मनोकामना पूर्ण की। फिर सबको लेकर ललिता के निकट पहुंचे। इस प्रकार श्रीयुगल किशोर के रसा-स्वादन के हेतु अनेक कुंड व कुञ्जादि सुशोभित हैं इसीलिये यह स्थान कामवन नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ इस प्रकार सहस्त्र सहस्त्र तीर्थ विराजमान हैं। परन्तु किसी समय यहाँ राक्षसों का अनेक उत्पात होने से समस्त तीर्थ व कुण्डादि अधिकांशतः लुप्त हो गये थे। अतएव फिर से अनेक प्रसिद्ध तीर्थ लुप्त होने से केवल उनका नाम मात्र ही अवशेष के रूप दृष्टि गोचर होता है और उन्हें देखकर तीर्थानुरागी जनों के हृदय में वेदना या समुत्कंठा उत्पन्न होती है। तथापि अभी भी जो तीर्थादि विराजित हैं, उनका भी नामोल्लेख करना असम्भव है, इसीलिये केवल मात्र मुख्य मुख्य दर्शनीय मूर्तियों व कुण्डादि का नाम यहाँ वर्णित है। उनमें श्रीगोविन्द मन्दिर में दर्शनीय मूर्ति व तीर्थ आदि निम्नलिखित हैं :—

श्रीवृन्दा देवी—एक किवदन्ती है—काला पहाड़ के

उपद्रव काल में श्रीवृन्दावन के विशेष विशेष श्रीविग्रहों के स्थानान्तरण के समय श्रीबृन्दा देवी को भी वाहन में करके ले जाया जा रहा था, किन्तु गाड़ी जब कामवन पहुंची श्रीवृन्दा देवी ने आदेश दिया—मैं ब्रज के बाहर नहीं जाऊँगी, अतएव मुझे ब्रज के बाहर मत ले जाओ। तब से श्रीवृन्दा देवी कामवन में हीं विराजमान हैं।

श्रीविष्णु सिंहासन—वैशाखी शुक्ल पक्ष तृतीया शुक्रवार के दिन इस सिंहासन पर श्रीनारायण के साथ श्रीलक्ष्मी देवी का विवाह सम्पन्न हुआ था। श्रीचरण कुण्ड श्री बैद्यनाथ महादेव, श्रीगरुड़, चन्द्राभास, चन्द्रेश्वर महादेव, वराह कुण्ड, बराह कूप, यज्ञ कुण्ड, धर्म कुण्ड, नव नारायण कुण्ड, नील वराह, पन्च पांडव, श्रीहनुमान जी, पंच पांडव कुण्ड, (पंचतीर्थ) श्रीमणि कर्णिका, श्रीविश्वेश्वर महादेव एवं श्रीगनेश जी यहाँ प्रमुख रूप से दर्शनीय हैं।

श्रीविमला कुण्ड के चतुर्दिक स्थित मन्दिर व

तीर्थादि—श्रीसत्य नारायण, श्रीनृसिंह देव, श्रीबलदेव, श्रीचतुर्भुज भगवान, सिद्ध बाबा की भजन कुटिया, श्रीदाऊ जी, श्रीसूर्य देव, नील कंठेश्वर श्री महादेव, श्रीगोवर्द्धन नाथ श्रीमदन गोपाल, श्रीकामवन बिहारी, श्रीश्री गौरांग महाप्रभु व श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीविमला देवी, श्री मुरली मनोहर, श्री गंगा जी, श्री गोपाल जी, बिहारी जी आदि दर्शनीय हैं।

श्रीविमला कुण्ड के निकटस्थ तीर्थादि– मनोकामना कुण्ड, काम सरोवर—ये दो कुण्ड विमला कुण्ड व यशोदा कुण्ड के बीच में एक साथ स्थित हैं एवं इनके बीच में देवकी कुण्ड व नारद कुण्ड विराजमान है। आगे लंका कुण्ड नामान्तर सेतुबन्ध कुण्ड है, इसके तट पर श्रीरामेश्वर महादेव, फिर श्रीप्रयाग कुण्ड व पुष्कर कुण्ड एक साथ स्थित हैं। और अगस्त्य कुण्ड व गया कुण्ड एक साथ स्थित हैं। गया कुण्ड के दक्षिण भाग का नाम अगस्त्य घाट के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीकामवन गाँव के बाह्यस्थित तीर्थादि– काशी कुण्ड व मणि कुण्ड ये दो कुण्ड कामवन के बाहर स्थित हैं। श्रीचन्द्रशेखर महादेव अक्षिनिमीलन कुण्ड या लुक लुकानि कुण्ड जिसमें कमला कर सरोवर व जलक्रीड़न कुण्ड एक स्थान पर स्थित हैं, आगे अनन्तर ध्यान कुण्ड व तप कुण्ड दर्शनीय हैं। चरण पहाड़ी के मध्य में चरण पहाड़ी विल्वल-कुण्ड व पंचसखा कुण्ड एक ही स्थान पर स्थित है। पंचसखा अर्थात रंगिला, छबिला, जकिला, मतिला व दतिला ये कुण्ड अंगराबली गाँव के सन्निकट हैं। इन कुण्डों के मध्य में श्रीश्याम कुण्ड व मोहिनी कुण्ड एक साथ स्थित हैं। इसके आगे श्रीकृष्ण के माता मही श्री पाटला देवी का घोष रानी कुण्ड है, इस कुंड के तट पर श्रीयशोदा माता का पीहर है, फिर है द्वारका कुंड, सोमती कुंड, मानकुंड, बलभद्र कुण्ड, चारों कुंड साथ साथ स्थित है और आगे हैं चतुर्भुज कुंड ललिता कुंड व विशाखा कुंड संलग्न। कुंड के तट पर मानसी देवी विराजित हैं।

श्रीकामवन गाँव के बीच दर्शनीय विग्रह व तीर्थ—

श्रीराधा मोहन, श्रीकोटेश्वर महादेव, कल्याण राय, चौरासी खम्बा-नामान्तर कामसेन राजा की कछारी, श्री गोपीनाथ जी दर्शनीय हैं। श्रीमुरली विलास ग्रन्थ में वर्णित है—

श्रीनित्यानन्देश्वरी श्रीमती जान्हवी ठाकुरानी श्रीरामाई प्रभु व उद्धारण ठाकुर को साथ लेकर जब श्रीवृन्दावन आईं तब श्रीरूप, श्रीसनातन, श्रीगोपाल भट्ट व श्रीजीव प्रमुख गोस्वामी वृन्द उनको साथ लेकर श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ, श्रीमदन मोहन आदि विग्रहों के दर्शन कराये थे एवं श्रीमती जान्हवी माता ने अपने मुख से श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ, श्रीमदन मोहन आदि मूर्तियों की महिमा का वर्णन किया था और सभी गोस्वामी गणों के साथ उनके दर्शन व परिक्रमा करके आनन्दित हुयीं। परन्तु श्रीपाट खड़दह जाने में विलम्ब होते देखकर श्रीरामाई प्रभु ने अनुनय किया—माता! श्री-कामवन दर्शन कितने दिन में सम्पन्न होगा? श्रीरामाई प्रभु का आग्रह देखकर श्रीजान्हवी माता श्रीरूप, श्रीसनातन व श्रीजीव गोस्वामी गणों को लेकर श्रीराधा कुंड में श्रीदास गोस्वामी को दर्शन देते हुये कामवन पहुँची। कामवन में श्रीगोविन्दादि दर्शन करके वे श्रीगोपीनाथ मन्दिर गईं और वहाँ प्राण बल्लभ श्रीगोपीनाथ के दर्शन करके आनन्द सहित श्रीगोपीनाथ के निमित्त अपने हाथों से रसोई पकाकर भोग समर्पण किया। तदुपरान्त संध्या के समय श्रीरूप, श्रीसनातन प्रमुख गोस्वामी गण आकुल होकर श्रीगोपीनाथ के सम्मुख संकीर्तन करने लगे तभी श्रीमती जान्हवी माता श्रीगोपीनाथ

की आरती करने लगीं। आरती की समाप्ति पर श्रीमाता ठाकुरानी ने श्रीगोपीनाथ को प्रणाम किया। व परिक्रमा करने के लिये बाहर आने लगीं इसी समय श्रीगोपीनाथ ने माता जान्हवी का आँचल पकड़ लिया। तब माता ने श्रीगोपीनाथ के नयनों से अपने नयन मिलायें तो श्रीगोपीनाथ ने उन्हें आत्ममात करके अपने बाँयी ओर बिठा लिया और माँ जान्हवी श्रीगोपीनाथ में लीन हो गईं। तब से ब्रज में सर्वत्र श्रीगोपीनाथ जी के बांई ओर श्रीमती जान्हवी माता की श्रीमूर्ति विराजमान है। श्रीगोपीश्वर महादेव श्रीगोपीकुंड, साथ ही गन्धर्व कुण्ड, गोदावरी कुण्ड, अयोध्या कुण्ड, सुरभि कुण्ड, चक्रतीर्थ, दामोदर कुंड, मधुसूदन कुंड, पृथुदक कुंड, अर्घकुंड, अप्सरा कुंड, नामान्तर रमणामिद कुंड यह आठ कुंड सुरभि कुण्ड के अन्तर्भूत हैं, वेद कुंड, रोहिनी कुंड व चन्द्रकुण्ड सब एक ही स्थान पर सुशोभित हैं। यहाँ घिसलिनि स्थान या पिछलनी शिला विद्यमान है। श्रीनन्दनन्दन सखाओं के साथ इस पर्वत पर परमानन्द से बिहार करते हैं। यह खंड गिरि चन्द्रसेन पर्वत नाम से प्रसिद्ध है।

सखाओं के साथ श्रीकृष्ण पर्वत के ऊपरी भाग पर चढ़ते हुये अपने दोनों पैर एक साथ मिलाकर सीधे पर्वत के ऊपर बैठते थे, फिर फिसलकर नीचे आ जाते। इस प्रकार यह उनका एक खेल होता था, इसीलिये इस स्थान का नाम पिछलिनी की प्रसिद्ध हुआ। कामवन आज भी उस अतीत स्मृति को संजोये हुये है और दर्शकों के चित्त में आनन्द उन्मादना जगाता है। आगे हैं श्रीचरण चिन्ह मेधावी मुनी की कन्दरा नामान्तर **व्योमासुर की गुफा**—एक दिन श्रीकृष्ण

सखाओं के साथ गोचारण रंग में कामवन आये, वहाँ अनेक सुन्दर तृणादि देखकर उन्होंने गायों को वहाँ चरने छोड़ दिया, गायें वहाँ स्वच्छन्दा से चरने लगीं। इधर श्रीकृष्ण सखाओं के साथ आनन्द में खेलने लगे। इस दिन सबने चोर चोर खेल शुरू किया। सखाओं में से कोई कम्बल ओढ़कर मेष बने, कोई कोई मेष रक्षक बने और कोई चोर बने। कभी चोर लोग मेष चोरी करके दूसरी जहग ले जाते तब मेष रक्षक गण मेषों को न पाकर उन्हें ढूढ़ते और चोरों को मेष ले जाते देखकर रक्षक लोग चोरों को जा पकड़ते और श्रीकृष्ण के पास ले आते। श्रीकृष्ण रक्षकों को देख कर पूछते—तुम लोग इतने थके हुये क्यों लगते हो ? उत्तर में मेष रक्षक गण बोलते—सुनो श्रीकृष्ण ! हम लोग तुम्हारे राज्य में निर्भय होकर मेष चराते हैं, आश्चर्य है ये चोर लोग हमारे मेष चूरा ले गये, अब हम इन्हें पकड़ लाये, तुम राजा के पुत्र हो इनका न्याय करो। उनकी बातें सुनकर श्रीकृष्ण ने चोरों को बुलाया और पूछा—तुमने मेष क्यों चुराया था ? चोरों ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज ! मेष गण प्रति दिन हमारे खेतों को चर जाते हैं, हमने दो चार दिन रक्षकों को दिखाया उन्होंने भी हमें विश्वास दिलाया कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा। उनकी बात पर विश्वास करके हम घर चले गये परन्तु दूसरे दिन फिर हमारे खेतों का नुकसान हुआ जिसे हम नहीं सहन कर पाये और आज इन मेषों का हमने अपहरण किया। उनकी सब बातें सुनकर श्रीकृष्ण मधुमंगल से बोले—इन दोनों के द्वारा ही अपराध हुआ है, दोनों को ही दण्ड देना होगा, मेरे विचार से ये लोग मुझे भर पेट मीठाई खिलाकर घर जाँय। श्रीकृष्ण सखाओं के साथ इस प्रकार खेल के रंग में विभोर थे

इसी बीच मयपुत्र व्योमासुर दूर से यह देख रहा था और अपनी माया शक्ति द्वारा बालक वेश धारण कर मेष रूपी बालक गणों को चुराकर पर्बत की गुफा में ले गया, खेल के रंग में मत्त किसी का इसका पता नहीं लग पाया, चार पाँच बालकों को छोड़ बाकी सबको असुर ने गुफा में बन्द कर दिया और पुनः बालकों के साथ आकर असुर मिल गया। उसी समय श्रीकृष्ण बोले—अरे पशु पालगण ! अब अपने अपने काम में ध्यान दो। श्रीकृष्ण के कथन पर बालक गणों ने अपने अपने स्थान पर जाकर मेषों को न पाया तो बोले मेष कहाँ गये ? यह सुनकर श्रीगोविन्द सबकी ओर देखने लगे एवं असुर बालक सामने मन्द मन्द हँसी के साथ खड़ा था, सिंह की तरह श्रीगोविन्द ने झपट कर उसकी गरदन धर पकड़ ली। तब व्योमासुर ने पर्वत के समान अपना रूप धारण किया और बड़े यत्न करने पर भी श्रीकृष्ण के हाथों से नहीं छूट पाया तब श्रीकृष्ण ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर धरती पर पछाड़ कर दे मारा और असुर मृत्यु को प्राप्त हुआ। तदुपरान्त श्रीकृष्ण ने पर्वत की गुफा से अपने प्राण सम गोप बालकों को बाहर निकाला. सखा गण श्रीकृष्ण के दर्शन करके परम आनन्दित हुये एवं श्रीकृष्ण के गुण गाते हुये ब्रज में घर को रवाना हुये। इसके आगे है **भोजन थाली**—श्रीकृष्ण बलराम सखाओं के साथ इस पर आनन्द से भोजन करते थे। यहाँ पर एक बजने वाली शिला है—श्रीरामकृष्ण सखाओं के सहित नाना प्रकार से इस शिला को बजाते थे। सामने है क्षीर सागर। इस कुंडके नाना युगमें चार नाम रहे-पुन्डरीक अप्सरा, देवह्रदि व क्षीर सागर, इसके आगे है श्रीचैतन्य कुण्ड। इस कुंड में और भी कई एक कुन्ड शोभायमान हैं।

जैसे—श्रीगुप्त गंगा, नैमीष तीर्थ हरिद्वार कुण्ड, अबन्ति कुण्ड व मत्स्य कुण्ड, गोविन्द कुण्ड नृसिंह कुण्ड, व प्रह्लाद कुंड (दोनों एक ही जगह स्थित हैं)। आगे हैं गोपाल कुंड व ब्रह्म कुंड।

श्रीकामवन गांव परिक्रमा में पड़ने वाले दर्शनीय तीर्थादि—

सर्व प्रथम श्रीवृन्दा देवी दर्शन करके धाम कुंड, गोप कुंड, परशुराम कुंड, दाबरी कुंड माधुरी कुंड, केवल कुंड, सूर्य कुंड देखते हुए कुंड महिमा श्रवण करते हुये दर्शनीय मन्दिर पड़ते हैं—श्रीसत्य नारायण कामकिशोरी, सूर्य नारायण, गोपाल जी, श्रीलक्ष्मी नारायण, श्रीबिहारी जी, श्रीसीताराम जो, बिहारी जी, श्री वैद्यनाथ महादेव, छोटे राम जी, छोटे दाऊजी, धर्मराज, बड़े दाऊजी, कामेश्वर महादेव, श्रीराधा बल्लभ श्रीमदन मोहन जी, श्री गोकुल चन्द्रमा जी, नवग्रह, श्रीलक्ष्मी नारायण, चित्रगुप्त, हनुमान जी, गंगा बिहारी, श्री राम लाला, श्रीगोपाल जी श्रीश्री मन्महाप्रभु, श्रीगोवर्द्धननाथ, श्वेत बराह देव आदि दर्शनीय।

इस वन में उपरोक्त कुंडों के अलावा और तीन सौ पचास कुंड हैं। परन्तु कामवनस्थ समस्त कुंडों के बोच में जो चौरासी कुंड प्रधान हैं उनका नाम ही यहाँ वर्णित है—

श्रीचरण कुंड, गरुड़ कुंड, चन्द्र भागा, वराह यज्ञ, नरनारायण, पांडव, मणि कर्णका, विमला, मनोकामना, काम सरोवर, यशोदा, देवकी, नारद, लंका, प्रयाग, पुष्कर, गया,

अगस्त्य, काशी, मनी, योग, लुकलुकानि, कमलाकरसरोवर, जल क्रीड़न, ध्यान, तप, विह्वल, श्याम, बलभद्र, चतुर्भुज, खलिता, विशाला, गोपी, गन्धर्व, गोदावरी, अयोध्या, सावित्री, गायत्री, सुरभि, श्रीचक्र तीर्थ, दामोदर, मधुसूदन, पृथुदक, अर्घ्य, अप्सरा, वेद, रोहिनी, चन्द्र, क्षीर सागर, चैतन्य, शान्तनु, गुप्त गंगा, नैमीष तीर्थ, हरिद्वार, अवन्तिका, मत्स्य, गोविन्द, नृसिंह, प्रह्लाद, गोपाल, ब्रह्मा, धाम, भोग, परशुराम, दाब्री, प्रेम, रत्न, माधुरा, केवल, सूर्य कुंड, पंच सखा— रंगिला, छबीला, जकिला, मतिला व दतिला ये चौरासी कुंड दर्शनीय हैं।

इस वन में चौरासी सिंहासन नाम से एक सौ पन्द्रह सिंहासन बिराजमान हैं, उनके नाम हैं यथा--

श्रीविष्णु सिंहासन, श्रीवैद्यनाथ सिंहासन, श्रीवीरभद्र, निकम्भ, कीर्तिपाल, मित्रावरूण, वैनतेय, कश्यप, विनता, कामदेव, वायुदेव, पितृ, धर्मराज, ऋषि, भृगु, याज्ञ-वल्क्य, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, उपासना, बुध, दक्ष, शंख बृहस्पति, नारद, व्यास, अंगिरा, अगस्त्य, हरित, पर्वत, पराशर, गर्ग, गौतम, लिखित, सातातप, गोभिल, बाल्मिकी, सनक, सनन्द, कवि, हवि, अन्तरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर होत्र, द्रुमील, चमस, करभाजन, आपस्तम्भ, युरुहुत, विशोका, वराह, नारायण, कामधेनु, लांगुल, कामेश्वर, सोमनाथ, इन्द्र, शची, जयन्त, अश्विनीकुमार, पंच पांडव, विश्वनाथ, गणेश, चतुर्दश, अम्बरीष, ध्रूव, धन्दुया, गाँधि, सगर, ककुत्स, दिलीप, हरिश्चन्द्र, जनक, ऋतु पर्ण, जयन्त, भगीरथ, बहुलाश्व, बालखिल्य, चतुःसेन, सुभद्र, गोपदर्श

सहस्त्र, सुतपा, पृश्नि, भीष्म, कृष्ण, गोपिका, लंका, पद्मनाभ, रेवत, अग्नि, श्वाहा, उन्मुख, भद्र काली, गया, गदाधर, काशीश्वर, चौंसठ योगिनी, राम, लक्ष्मण, पञ्च, बलभद्र, पृथु, नृसिंह, प्रह्लाद, परशुराम, सूर्य, बलि, भृगु, विन्ध्यावली, विष्णुदास षोल, जय विजय, इत्यादि द्वादश समुद्र, गंगा इत्यादि एक सौ पन्द्रह सिंहासन हैं।

दूसरी ओर श्रीदर्शनीय कामवन के पूरब में एकान्त वन और इकहत्तर गाँव विराजमान हैं। इस गाँव के निकट ही प्रेम कुंड स्थित है और फिर है कदम खंडी (नामान्तर सनेरा), यह है श्रीराधा कृष्ण की लीला स्थली है। इस स्थान पर रत्न कुंड स्थित है। आगे इन्द्र स्थल व चन्द्र स्थल है जो कि इन्द्राली नाम से प्रसिद्ध है। नर नारायण स्थल है जहाँ पर मानसो देवो बिराजमान हैं। आदि बद्री में श्री नर नारायण की तपस्या स्थली है। तपोवन के दक्षिण में गन्ध मादन पर्वत है, पश्चिम में केशर पर्वत है, उत्तर में निषद पर्वत है एवं पूरब में शंखकूट पर्वत अवस्थित है। कामवन के सात दरवाजे हैं—दिग दरवाजा, लंका, आमीर, देवी, दिल्ली, श्रीराम जो, मथुरा। श्रीनन्द गाँव जाने के लिये श्रीराम जी दरवाजा होकर जाना पड़ेगा कामवन के आगे है बजेरा।

बजेरा—यह गाँव कातवन से दो मील दूरी पर स्थित है। यहाँ पर श्रीराधिका की सखी श्रीरंग देवी, श्रीसुदेवी जुड़वाँ बहिनों का जन्म हुआ था। प्रसंगानुसार श्रीराधिका व आठो प्रमुख सखियों का जन्म स्थानों का परिचय इस प्रकार है—श्रीराधिका का जन्म स्थान गोकुल के उत्तर में

श्री यमुना के पूर्वीय तटवर्तीय राभेल गाँव में हुआ था, बाद में वे बरसाने बसीं।

श्रीललिता का जन्म स्थाम बरसाने के पूर्व की ओर करेला में है। कोई कोई पेशाई के पश्चिम में लुधौली नामक गाँव को उनका जन्म स्थान बताते हैं। श्रीइन्दु रेखा का जन्म स्थान आँजनक है, कोई कोई पेशाई गाँव भी बताते हैं। श्री विशाखा का जन्म स्थान करेला के दक्षिण में कामाइ गाँव में है। श्रीचित्रा का जन्म बरसाने के दक्षिण में चिकशाली में है। श्री चम्पक लता का जन्म स्थान बरसाने के पश्चिम में सनेरा गाँव में है। श्रीरंग देवी व श्रीसुदेवी का जन्म स्थान इसी बजेरा गाँव में है। श्रीतुंगविद्या का जन्म स्थान बरसाने के दक्षिण में स्थित डामेरा गाँव में है। चन्द्रावली का जन्म स्थान रिठौर गाँव में है। मतान्तर में सखी गणों के गाँव।

ललिता का गाँव करेला, विशाखा का गाँव ऊँचा गाँव, चित्रा का गाँव आँजनक, चम्पकलता का चिकशाली, रंगदेवी का कामाई, सुदेवी का राकौली गाँव, तुंग विद्या का डाभौरा एव इन्दुरेखा का लुधौली गाँव। बजेरा के आगे है सनेरा।

सनेरा—यह गाँव बजेरा से दो मील आगे पूर्व में स्थित है। यह श्री चम्पकलता का जन्म स्थान है। श्रीराधिका ने श्रीमहादेव को स्वर्णहार पहनाया था। तब से यह गाँव सनेरा नाम से प्रसिद्ध है। गाँव के दक्षिण-पश्चिम में अति मनोरम कदमखंडी है। यहाँ श्री रासमंडल व रत्नकुंड भी स्थित हैं। इस कदमखंडी में भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को महा समारोह सहित श्री रासलीला का अभिनय होता है।

श्री ऊँचा गाँव—यह सनेरा से तीन मील आगे पूरब में स्थित है। इस गाँव के पूरब की ओर श्रीबलदेव जी का मन्दिर है। उसके दक्षिण पश्चिम में आलता पहाड़ी (नामांतर बिहावली) व चित्र विचित्र शिलाखण्डी, श्रीनारायण भट्ट की समाधि, त्रिवेणी कूप इत्यादि हैं। और आगे उत्तर में देहि कुंड व चरण चिन्ह विराजमान है। भाद्र शुक्ला द्वादशी के दिन इस गाँव में मेला लगता है।

श्री बर्षाण—यह ऊँचा गाँव के दक्षिण-पूर्व एक मील आगे स्थित है। यह गाँव श्री बृषभानपुर या बर्षाँण नाम से परिचित है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अति मनोरम है। पश्चिम दिशा में ऊँचे पर्वत के ऊपर श्रीराधिका का मन्दिर शोभा बढ़ाये हुये है। यह मन्दिर ब्रह्म गिरि के ऊपर स्थित है। मन्दिर के उत्तर-पश्चिम में चतुर्मुख ब्रह्मा जी विराजमान हैं। पर्वत के ऊपर चढ़ कर ब्रज की शोभा दर्शन से मन में अपार्थिव भाव स्वतः ही उदय होता है।

श्री भानुखोर—यह कुण्ड श्री वर्षाणा के पूरब में स्थित है। श्री वृषभानु महाराज के नाम अनुसार यह कुंड भानुखोर नाम से परिचित है। इसके उत्तरी-पूर्व कोने में श्री कीर्तिदा कुंड स्थित है। इसके दक्षिण-पश्चिमी कोने में विहार कुंड है—कोई कोई इसे तिलक कूप भी कहते हैं। विद्या कुंड के दक्षिण-पश्चिम कोने में एवं चिकशाली गाँव के दक्षिण में दोहनी कुंड स्थित है। चिकशाली गाँव सुचित्रा सखी का जन्म स्थान है। यह श्रीराधिका के वेश रचना का स्थल भी कहा जाता है। उसके उत्तर में साकरी खोर अर्थात दो पर्वतों के

मध्यवर्ती संकीर्ण विशेष रास्ता। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने बड़े कौशल के साथ गोपियों का दही लूटा था। भाद्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन यहाँ दही लूटने की लीला व बूड़ी लीला बड़े समारोह सहित अभीनीत की जाती है। विलासगढ़, साकरी खोर पूर्व पूर्वत के ऊपरी भाग में स्थित है। यह श्रीराधा गोविन्द की विलास स्थली है। यहाँ एक मनोरम रास मंडल विराजित है।

इसके निकट ही वह क्रीड़ा स्थल है जहाँ श्रीराधिका धूल में खेलती थीं। एक दिन श्रीराधिका सखियों के साथ यहाँ धूल मिट्टी में खेल रही थीं इसी समय श्रीकृष्ण ने बड़ें कौशल के सहित आकर श्रीराधिका के साथ विहार किया था। यहाँ का विलास मन्दिर दर्शनीय है। दानगढ़, साकड़ि खोर के पश्चिम दिशा में पर्वत के ऊपर स्थित है। श्रीकृष्ण ने श्रीराधिका से जबरदस्तीदान लिया था।

श्री दानगढ़

एक दिन श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ गायों चराते चराते देखा कि वन के बीच में एक सरोवर में एक अतिशय मनोहर स्वर्ण पद्म खिला हुआ है एवं भौरे उस कमल के फूल का रस पान कर रहे हैं। इस स्वर्ण पद्म को देखकर श्री-गोबिन्द के मन में प्रिया जी के मुख पद्म की छटा उदित हुई। तब श्रीकृष्ण ने सखाओं से कहा तुम लोग इस सरोवर के तट पर कुछ देर तक खेलो, मैं सुबल सखा के साथ कुछ देर के लिये दूसरी जगह जा रहा हूँ यह कह कर श्रीकृष्ण दान गढ़

में बैठकर सुबल को बोले—सखा ! प्रिया जी राधिका से मैं किस प्रकार मिलूँ ? सुबल ने कहा सखा ! मैंने श्रीवृन्दावन में सुना है कि आज प्रातः काल श्रीराधिका अपने पिता के घर आई हैं और वह सूर्य पूजा के बहाने यहाँ अवश्य ही आयेंगी। सखा ! तुम यहाँ थोड़ी देर प्रतीक्षा करो तो यहाँ पर उनसे मिलन हो जायेगा। इसी बीच श्रीराधा ने सखियों के साथ सूर्य पूजा के छल से धीमी गति से चलते २ आकर कदम्ब वृक्ष तले सुबल के साथ श्रीकृष्ण के दर्शन किये। श्रीराधा ने दूर से प्रियतम के दर्शन करके कहा—सखी इस मार्ग से हम कैसे जायेंगी, श्रीकृष्ण मार्ग रोक कर जो खड़े हैं, चलो सखी हम दूसरे रास्ते से जायँ तब श्रीललिता ने चपलता से कहा—तुम सब मेरे साथ आओ देखे कृष्ण क्या कर सकता है ? यह कह कर सब लोग श्रीराधा को बीच में लेकर चलने लगे, यह देख कर श्रीकृष्ण ने विनोद सहित कहा—तुम लोग कौन हो और क्या माल लेकर जा रहे हो ? मैं यहाँ का राज्य अधिकारी हूँ तुम्हें कर देना होगा। तुम्हें इतना गर्व किस बात पर है ? तुम्हें प्रेम से बोल रहा हूँ कि कर दान करते हुये जाओ। श्रीकृष्ण की बात पर सब हँसते हँसते आगे चलने लगीं। तब श्रीकृष्ण जल्दी से जाकर रास्ता रोक कर खड़े हो गये। तब आगे ललिता ने तीखे स्वर से कहा—तुम कौन होते हो ? काहे का दान और कैसे रास्ता रोककर खड़े हो ? तुम यह चतुराई छोड़ो और ज्यादा कुछ कहोगे तब हम तुम्हारे गुणों की चर्चा छेड़ देंगे। श्री ललिता के कटु बचनों को सुन कर श्रीकृष्ण मधुर स्वर में बोले—सुनो ललिता तुम मुझे नहीं जानती, कन्दर्प राजा की आज्ञा से मैं दान बसूली के लिये राजा के अधिकार से नियुक्त हुआ हूँ, मेरी आज्ञा का उल्लंघन

से सजा होगी अतः इस प्रकार व्यवहार ना करके तुम लोग उचित रूप से व्यवहार करो। तुम लोगों से मुझे वार्तालाप करने का कोई प्रयोजन नहीं। राज्य कर देकर तुम लोग यहाँ से स्वच्छन्दता से जाओ। तब श्री ललिता बोलीं देखो कन्हाई तुम बहुत तरह की बातें जानते हो, हम लोग अबला हैं तुम्हें और क्या कहें परन्तु यदि समझते हो कि हमने राजा की आज्ञा का उल्लंघन किया है तो जो अच्छा समझो करो। श्री ललिता की बातें सुनकर श्रीविशाखा गर्व के साथ बोलीं सुनो सखी यहाँ इनका क्या अधिकार है? जहाँ कन्दर्प राजा हैं वहीं उनका अधिकार है। यह वन श्रीराधिका का और हम उनकी सहचरी हैं। तब श्रीकृष्ण बोले देखो विशाखा! इतना गर्व किस बात का? सबके ऊपर कन्दर्प राजा का अधिकार है। इस जगत में जितने युवक युवतियाँ हैं सभी के ऊपर अधिकार है। तुम लोग कर न देकर स्वच्छन्द रूप से वन में घूमती हो इसीलिये कामदेव ने क्रोधवश मुझे भेजा है और इसीलिये तुम्हारा रास्ता रोका गया है। यदि वास्तव में तुमने दान नहीं दिया तो मुझे तुम्हें राजा के निकट ले जाना पड़ेगा। श्री विशाखा बोलीं—तुम्हारा राजा हमारा क्या बिगाड़ सकता है? देखो हमारे साथ श्रीवृन्दावनेश्वरी श्रीराधा विद्यमान हैं। तुम्हारे कन्दर्प राजा का पराक्रम हम भलीं भाँति जानती हैं। श्रीराधा के नेत्र बाणों से उसका गर्व चूर्ण हो गया और यही नहीं श्रीराधा नाम सुनने से ही वह भाग जाता है, अधिक क्या, तुम तो उसके अनुचर ही हो, यह कहकर विशाखा श्रीराधा को लेकर चलने लगीं तब श्रीकृष्ण ने सन्मुख आकर कहा, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम लोग मुझे राजा के द्वारा दण्ड दिलाओगी, तो सुनो सखियों मैं सत्य

कहता हूँ, कि तुम छल और बल से किसी भी प्रकार मुझ से बचकर नहीं जा सकती। ललिता तब गर्व से बोलीं अरे मुरारी किस चीज का दान माँगते हो ? श्रीकृष्ण ने कहा—सुनो ललिते ! तुम लोग अपना यौवन रूप आँचल में छुपा कर ले जा रही हो, तुम्हें प्रत्येक को यही कर स्वरूप दान करना होगा। श्रीकृष्ण की बात सुनकर सखियाँ हँसते हँसते बोली दानी होकर इस प्रकार रूप यौवन का दान माँगना तो बड़े आश्चर्य की बात है, ऐसा तो हमने कहीं नहीं सुना है, अब हम जान गईं कि तुम दानी होकर वन वन क्यों घूमते फिरते हो ? चलो सखी सूर्य पूजा के लिये चलें इससे हमें वार्तालाप करने का कोई प्रयोजन नही। यह कहकर सखियों को आगे जाते देख श्रीकृष्ण बोले—सुनो सखिया ! तुम्हारी सखी श्रीराधा ने मेरा मन रत्न चोरी किया है रत्नके अभाव से मेरा देह और मन अस्थिर है. तुम लोग मुझे वह रत्न लोटाने को कहो। इसके उत्तर में श्रीललिता बोलीं—हेकृष्ण ! तुम झूँठ क्यों बोलते हो ? मेरी सखी बड़ी सुशील है, उन्होंने कब तुम्हारा मन रत्न चुराया है ? कृष्ण इस गोकुल में जितनी बालायें हैं तुमने सबका चित्त चुराया है चित्त के अभाव में आज वे पागलों की तरह वन वन तुम्हें ढूढ़ती फिरती हैं। क्या कहें तुम तो राजनन्दन हो अन्यथा हम तुम्हें अच्छी तरह समझा सकती थीं। तुम स्वयं को न देखकर अन्य को चोर कहते हो। श्रीकृष्ण बोले सुनो ललिते मैं झूँठ नहीं बोलता तुम राधा से पूछो यदि राधा कुछ ना बोले तब मैं बोलता हूं, सुनो जिस दिन विशाखा से मेरा कलह हुआ उस दिन तुम्हारी सखी ने मेरा मनोरत्न चुराकर यत्न सहित कुच कुम्भ में रख दिया है, तुम लोग यदि मेरी बात पर विश्वास न करो तो

तुम्हें दिखाता हूँ, यह कहकर श्रीकृष्ण ने श्रीराधा के कुच कुम्भ में हाथ दिया तब सखियों ने कुञ्जों की ओर प्रस्थान किया। बाद में आकर सखियाँ श्री युगल किशोर के साथ सम्मिलित हुईं। श्री गहवर वन साकरि खोर के दक्षिण पश्चिम में चिकशोली गाँव के पश्चिम में संलग्न अति मनोरम स्थल है। वन के पश्चिमी भाग में गहवर कुण्ड है। गहवर वन के उत्तर-पूर्वीय पर्वत के ऊपर श्री मयुर कुटी स्थित है। एक दिन इस स्थान पर श्रीराधा गोविन्द को बैठाकर मोरों ने पंख फैला कर नृत्य किया था। इसलिये यह स्थान मयुर कुटी नाम से परिचित है। भाद्र शुक्ल नवमी के दिन यहाँ लड्डू फेंकने का कोतुक पूर्ण खेल खेला जाता है।

श्री मानगढ़

श्री मानगढ़ गहवर वन के दक्षिण-पश्चिम कोने में पर्वत के ऊपरी भाग में स्थित है। यहाँ पर श्रीराधिका ने श्रीकृष्ण पर मान किया था। इसीलिये इसका नाम मानगढ़ है।

एक बार श्रीकृष्ण श्री मती भानु नन्दिनी को संकेत करके सुबल के साथ आनन्द मग्न अभिसार कर रहे थे, सहसा पथ में चन्द्रावली की प्रिय सखीं पद्मा के साथ भेंट हो गई। पद्मा श्रीकृष्ण को देखकर उत्फुल्लता पूर्वक सामने आकर कृष्ण के रास्ते को रोक कर बोली—अरे तुम इतने निष्ठुर हो। हम लोग तुम्हें ढूढ़ ढूढ़ कर थक गई हैं तथापि कहीं तुम्हारी कोई खबर नहीं है। अपनी प्रिय सखी चन्द्रावली की अवस्था और तुम्हें क्या कहूँ? उनके दुःख को देखकर पत्थर

भी पिघल जाय। हे विदग्ध नागर ! तुम एक बार आकर चन्द्रावली को दर्शन दो और उनके प्राणों की रक्षा करो। यदि कहते हो कि अभी समय नहीं है तो और किसी समय जाना नहीं तो मैं तुम्हें एक पग भी आगे जाने नहीं दूंगी। चतुर, शिरोमणी श्री गोविन्द पद्मा की बात सुनकर मन ही मन चिन्ता करने लगे कि यदि बोलूँ कि अभी मेरे पास समय नहीं है तो पद्मा मुझे सरलता से नहीं छोड़ेगी अतः बाहरी हंसी दिखाते हुये बोले—सुनो पद्मा ! देवी चन्द्रावली के रूप लावण्य से मैं सदा ही मुग्ध हूँ, त्रिभुवन में मुझे चन्द्रावली की तरह और कोई प्रिय नहीं है, उनके नाम सुनते ही मेरा हृदय काँप उठता है, मैं कब चन्द्रावली के दर्शन कर पाऊँगा। सुनो पद्मे ! मैं अभी तुम्हारे साथ चलता, परन्तु वृषभानपुर में आज निमन्त्रण स्वीकार करने के कारण मैं भीषण संकट में पड़ गया हूँ, और यही नहीं आज सुबह से लगातार उनके भृत्य आ जा रहे हैं, अतएव अभी मैं सुबल के साथ राज निमन्त्रण पर जा रहा हूँ, बाद में सायंकाल मैं अवश्य ही तुम्हारी प्रिय सखी के साथ मिलूँगा। चन्द्रावली को मेरी ओर से प्रेम व आस्वासन प्रदान करना, पद्म को इस प्रकार अनुनय बिनय करके चुम्बन आलिंगन द्वारा श्रीकृष्ण ने प्रसन्न किया। इसी समय सखियों के साथ चन्द्रावली वहाँ आ पहुँची। चन्द्रावली को लेकर परम आनन्द के साथ श्रीकृष्ण ने कुञ्ज में प्रवेश किया तथा विविध रस लीला में निमग्न हुये। बाद में चन्द्रावली श्रीकृष्ण के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर बोलीं —हे व्रजराज नन्दन ! एक मात्र तुम्हारे दर्शन की लालसा में सारे काम छोड़कर मैं वन वन में घूमती फिरती हूँ, परन्तु किसी दिन तुम्हारे दर्शन होते हैं और किसी दिन नहीं।

जिस दिन तुम्हारे दर्शन होते हैं उस दिन चारों प्रहर एक क्षण में ही समाप्त हो जाते हैं, केवल तुम्हारे प्रेम के वश में ही मैं जीवित हूँ। चतुर शिरोमणि गोविन्द चन्द्रावली के प्रेम युत बात सुनकर बोले—प्राण प्रिये ! तुम्हें कहने के लिये मेरे पास कोई भाषा नहीं है, तुम एक बार पद्मा से पूछो मैं तुम्हारे लिये वन वन घूमता फिरता हूँ, वन में केवल तुम्हारी ही खोज करता हूँ, अचानक यदि कोई चन्द्रा शब्द का उच्चारण करता है, मैं तभी अपना धैर्य खो बैठता हूँ, आकाश में चन्द्रमा को देखकर भी मुझे तुम्हारी याद आती है। तुम्हारे अंगों के स्पर्श के लिये मेरी सारी इन्द्रियाँ लालायित हैं, प्रिये ! वास्तव में मैंने अपने मन की बात तुम्हें खोल कर कही है। श्रीकृष्ण व चन्द्रावली की यह प्रेम वार्ता वृक्ष पर बैठी श्रीराधिका की एक सारिका पक्षी सुन रही थी, उसने शीघ्र ही जाकर वे बातें गोपियो के समूह में कह दीं। वह सुनकर ललिता ने क्रोध सहित सखियों से कहा—तुम लोग शीघ्र ही गोवर्द्धन मल्ल के घर जाकर चन्द्रावली की सारी बातें बताओ एवं उसको घर में बन्द कर रखें। साखियों ने जाकर चन्द्रावली की सास करला के निकट सारा बृत्तान्त निवेदन किया, इस पर वृद्धा क्रोध में गर्जना करती हुई वहाँ जा पहुँची, सखी पद्मा ने उन्हें दूर से आती देख भयभीत होकर चन्द्रावली को बताया, चन्द्रावली डर से मूछित हो गई, श्रीकृष्ण ने सस्नेह कहा—प्रिये कोई डर नहीं, इस प्रकार अभय देकर उन्होंने कात्यायिनी का स्बरूप धारण किया। सखियों ने वह रूप दर्शन करके आनन्द प्राप्त किया, इसी बीच कोधा विष्टा करला वहाँ उपस्थित हुई और बोलीं—इतने दिनों में मैंने तुम्हारा मनोभाव समझा है, तुम लोग दूसरे पुरुष के संग

की अभिलाषा में मेरी बहू को लेकर नित्य वन-वन में घूमते हो। आज इसका उपयुक्त दंड दूंगी। वृद्धा की बात सुनकर पद्मा तीखे स्वर में बोली—तुम ऐसा निष्ठुर वाक्य क्यों बोलती हो? देवी पूजा हेतु हम लोग तुम्हारी बहू को यहाँ ले आई हैं, वो देखो, तुम्हारी बधु तुम्हारे पुत्र की मंगल कामना हेतु देवी की पूजा कर रही है। तुम्हें देखकर देवी ने अन्तर्हिता होकर मूर्ति का स्वरूप धारण कर लिया है। करला यह प्रत्यक्ष देखकर परम सन्तुष्ट हुई और आशीर्वाद दिया। चन्द्रावली ने भी अपनी सास करला को देख प्रणाम किया और उनके साथ अपने गृह को गई। तब सुबल सखा ने कहा —हे जादूगर शिरोमणि! तुम्हारी जादू विद्या आज सफल हुई। श्रीकृष्ण हँसते हँसते श्रीराधिका के कुञ्ज में प्रविष्ट हुये। दूर से श्रीराधा ने श्रीकृष्ण आते देखकर मुँह फेर लिया। तब ललिता ने कृष्ण से कहा—शठ, निष्ठुर, कुञ्ज कुञ्ज में परनारियों को लेकर विलास में मत्त रहते हो, तुम और एक कदम भी आगे मत बढ़ो, इतनी देर तक जिसके साथ विलास में प्रमत्त थे. अपना भला चाहते हो तो यहाँ की आशा छोड़कर कहीं चले जाओ। ललिता के भर्त्सना वाक्य सुनकर श्रीकृष्ण गदगद स्वर में बोले—ललिते! बिना किसी दोष के तुम मुझ पर क्यों क्रोधित होती हो, मैं राधा बिना एक मुहुर्त भी नहीं जी सकूंगा। वह तो मेरे प्राणों की ईश्वरी है, श्रीराधा का नाम, रूप, गुण मेरे जीवन के द्योतक हैं, तुम तो मेरी अनुराधा हो, मुझे इस विपदा से रक्षा करो। श्रीकृष्ण इस प्रकार विनय करते हुये श्रीराधा के सम्मुख जाकर हाथ जोड़कर रूँधें हुये गले से श्रीराधा के चरणों के समीप जा बैठे और नयनों के जल से श्रीराधा के चरणों को सिक्त करते

हुये राधे देखो राधे देखो कहकर बिनती करने लगे, तथापि रूठी राधा ने एक बार भी उनकी तरफ पलट कर नहीं देखा, श्रीकृष्ण शोक में डूबे रोते रोते अन्त में श्रीराधा के कुञ्ज से बाहर चले गये। श्रीकृष्ण की यह अवस्था देखकर श्रीविशाखा और स्थिर न रह पाई और बोलीं—राधे ! श्रीकृष्ण के प्रति तुम्हारा इतना क्रोध करना उचित नहीं है, तुम अच्छी तरह जानती हो कि श्रीकृष्ण स्वभावतः दुष्ट हैं, ना समझ होकर जब प्रेम किया है, अब तो कोई उपाय नहीं है। परन्तु जानती हो राधे ! तुम्हारे प्रति वह पूरी तरह अनुरक्त हैं, तुम्हारे बिना वह एक क्षण भी नहीं रह सकते, और तुम भी उनके बिना नहीं रह सकती। अतएव मेरा एक अनुरोध रखो, अब क्रोध को उतारो और अपने साजन को सुखी करो। विशाखा की बात सुनकर श्रीराधा सक्रोध बोलीं—विशाखे ! तुम तो मेरी प्रधान व प्रिय सखी हो, तुम मुझे बारम्बार उस दुष्ट की बात बोलकर क्यों अनुरोध करती हो ? विशाखा ने दुर्जय-मानिनी श्रीराधिका को समस्त बातें श्रीकृष्ण को बताईं तो श्रीकृष्ण बोले—श्रीराधिका यदि मेरे प्रति प्रसन्न नहीं होती हैं तो सच्चे सच्चे मैं अपने प्राण त्याग कर दूँगा। विशाखा ने श्रीकृष्ण के मनोवेदना को अनुभव करके कहा—सुनो नन्द नन्दन ! श्रीराधा से मिलना ही उनको प्रसन्नता का उपाय है। विशाखा की बात सुनकर उत्कण्ठित चित्त में श्रीकृष्ण बोले—बोलो बोलो सखी किस प्रकार मैं श्रीराधिका से मिलूँ ? इसके उत्तर में विशाखा बोली—नन्दनन्दन ! तुम यदि श्यामा सखी रूप में वीणा हाथ में लेकर उस सभा में जाओ तो हम लोग तुम्हारे गुणों की प्रशंसा करके वीणा बजाने को कहेंगी तुम वीणा बजाना, वह सुनकर श्रीराधा अवश्य ही प्रसन्न

होंगी। विशाखाके बोलनेके साथ ही श्रीकृष्णवाद्य बजाने वाली का स्वरूप धारण कर वीणा वाद्य हाथ में लेकर सखी सभा में गये एवं सखियों ने सादर उनको बिठाया, बाद में श्रा राधिका ने पूछा वह कौन हैं ? विशाखा ने कहा—यह श्यामा सखी है। वीणा बजाना ही इनका काम है, तुम्हारे गुणों की प्रशंसा सुनकर यह यहाँ आई हैं। तब श्रीराधा ने श्यामा सखी को वीणा बजाने का आदेश दिया तब अखिल कला गुरु श्रीकृष्ण ने मधु झंकार के सहित वीणा बजाना आरम्भ किया। श्रीमती वृषभानु नन्दिनी ने अपूर्व वीणा वादन सुनकर आनन्दित होकर श्यामा सखी को आलिंगन किया। तब वीणा वादनकारी श्यामा सखी ने भी श्रीराधिका का मुँह चुम्बन करते हुये उन्हें अपने आलिंगन में बद्ध कर लिया। उस दृश्य के दर्शन से सखी गण महानन्द में चारों ओर से जय जयकार करने लगीं। यहाँ पर श्री मान मन्दिर दर्शनीय है, इस स्थान के नामानुसार दक्षिण दिशा में स्थित गाँव का नाम मानपुरा प्रसिद्ध है। मानगढ़ के उत्तर में जयपुर के राजा ने अनेक अर्थ व्यय करके श्रीराधिका के निमित्त एक नया मन्दिर बनबाया है, उसके उत्तर में श्रीजी अर्थात श्रीराधिका का मन्दिर परम शोभा वर्द्धन करता है। श्रीजी मन्दिर से नीचे जाते हुये श्री-राधिका के पितामह श्री महा भान महाराज का मन्दिर दर्शनीय है। उसके आगे श्री वर्षाण गाँव है। गाँव के उत्तरी भाग में श्री कीर्तिदा माता एवं श्री ब्रषभान महाराज सह श्रीदाम व अष्ट सखियों का मन्दिर विराजमान है। गाँव के पश्चिम में मुक्ता कुंड, नामान्तर रतन कुंड है। श्रीराधिका ने श्रीकृष्ण के साथ विरोध करके इस स्थान पर मुक्ता क्षेत्र बनाया था। गाँव के उत्तर में है प्रिया कुंड।

पियल कुंड—नामान्तर पिरि तालाब। यह वर्षाणे के उत्तरी भाग में स्थित है। श्रीराधा कृष्ण का पीलू चयन के छल से यहाँ मिलन हुआ था।

डाभोरा—यह गाँव वर्षाणे से दो मील आगे दक्षिण में अव स्थित है। तुंग विद्या सखी का जन्म स्थान है यह गाँव। किसी एक दिन सुबल सखा के मुख से श्रीराधिका का अपूर्व अतुलनीय रूप व गुणों की कथा सुनकर इस स्थान पर श्री-कृष्ण के दोनों नयनों में अश्रु धारा बह निकली थी।

राकौली—यह डाभोरा गाँव से डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। कोई कोई इसे सुदेवी का गाँव कहते हैं।

श्री प्रेम सरोवर—श्री बर्षाणे होते हुये नन्दीश्वर जाते रास्ते में बांई ओर वर्षाणे से डेढ़ मील उत्तर में यह स्थित है। यह सखियों सहित श्रीराधा कृष्ण का प्रेम वैचित्र स्थल है। कथित है—एक बार सखियों के साथ युगल किशोर चारों ओर पुष्प उद्यानों से शोभित परम निर्जन इस सरोवर के तट पर आकर स्वच्छन्द रूप से आनन्द सहित विहार कर रहे थे। युगल किशोर के रत्न वेदी पर बैठने पर सखी गण क्रमानुसार चारों ओर खड़ी होकर तृषित नयनों से युगल रूप माधुरी का दर्शन कर रही थीं इसी बीच एक भ्रमर आकर श्रीराधिका के कर्णोत्पल पर बैठने की चेष्टा करने लगा, इससे श्रीराधा भयभीत हुई। श्रीकृष्ण राधिका की यह अवस्था देखकर बोले—मधुकर को तुम्हारा मधु पान करने दो, इसके लिये इतना भयभीत क्यों हो? श्रीकृष्ण के पहेलिका में मधु मंगल के होने की शंका में भ्रमर को दूर भगा दिया और

कहा—मधु सूदन अब यहाँसे चल गया। श्रीराधाके चित्त मधु-मंगल का नाम सुनते ही दुःख सागर में डूब गया, तदनुसार प्रेम वैचित्र दशा का उदगम हुआ और तब विरह से व्याकुल श्रीराधा की बाह्य स्मृति लुप्त हो गई और श्रीकृष्ण के निकट होते हुये भी वह श्रीकृष्ण को नहीं देख पा रही थीं। तब वह रागोत्कन्ठित चित्त में श्रीकृष्ण को लक्ष करके बोलने लगीं — हे कमल नयन! विदग्ध शेखर! श्यामल सुन्दर! तुम मुझे यहाँ छोड़कर कहाँ कहाँ घूमते हो? हे रसिक बर! तुम मेरे जीवन बल्लभ हो। मैं अबला जाति हूँ, उस पर कुल बाला हूँ, तुम बिना मेरा जीवन क्षण भर को भी नहीं रहेगा। इस तरह बहुत विलाप करके उच्च स्वर से रोने लगी। श्रीराधा की यह दशा देखकर श्रीकृष्ण अत्यन्त विस्मित हुये एवं उनका भी प्रेम पारावार उछलने लगा। तब दोनों एक दूसरे को नहीं देख पाकर श्रीकृष्ण श्रीराधा, श्रीराधा श्रीकृष्ण बोलकर उच्चस्वरमें पुकारने लगे। दोनों के नयनों से निरन्तर प्रेम-नीर एवं दोनों के अंगों से अविराम-पसीना भूमि पर गिरने लगा। वह प्रेम नीर व पसीने से वह सरोवर पूर्ण हो गया। सखियाँ प्रेम मूछित युगल के अंगों में कोई गति न देखकर अपनी सुध बुध खो बैठीं। तब वृक्षों पर बैठी शुक सारी सखियों सहित युगल की अचेतन अवस्था को देखकर वृक्ष पर बैठकर ध्वनि करने लगीं। शारी उच्च स्वर में बार बार श्रीराधानाम एवं शुक श्रीकृष्ण नाम लेने लगे, श्रीराधानाम व श्रीकृष्ण नाम दोनों के कानों में प्रवेश करते ही आनन्द सहित उनमें चेतना लौटी। चेतना आते ही एक दूसरे को देखकर आनन्द से चुम्बन-आलिंगन में आबद्ध हो गये। सखी गण भी राधा कृष्ण के नाम कानों में जाने पर चेतना में आईं और श्री युगल दर्शन से

उनका दुःख दूर हुआ। तब आनन्द में सभी कुञ्ज के तट पर विहार करने लगे। जो लोग इस प्रेम के कुंड में केवल एक बार स्नान करेंगे, वे युगल किशोर के प्रेम की परि पूर्णता प्राप्त करेंगे।

श्रीश्रीसंकेत

नन्दीश्वरः श्री वृषभानुशैल मध्येतु मध्येयतम स्वरूपम्।
संकेत नामास्पद मेव शंके प्रेमैव तद्द्वन्द्व वरस्य मूर्त्तम्॥

श्रीसंकेत यह श्रीनन्दीश्वर व श्री वृषभानु या वर्षाण पर्वत के मध्य स्थल में एवं प्रेम सरोवर से डेढ़ मील उत्तर में स्थित है। मेरा ध्येयतम स्वरूप है संकेत नामक स्थान, मैं इस स्थान को श्रीराधा-कृष्ण के मूर्तिमान प्रेम की तरह मानता हूँ। ललिता आदि सखी गणों ने संकेत क्रम में आनयन पूर्वक अति यत्न से श्रीराधा-कृष्ण का प्रथम मिलन कराया था। एक दिन श्रीकृष्ण कालीय दमन स्थान पर सखियों के सौजन्य से श्रीराधिका का दर्शन करके परमानन्द को प्राप्त होना चाहते थे और मिलन के लिये अति उत्कंठित व चिन्ता मग्न हुये। प्रिय सखा सुबल उनकी यह दशा देखकर बोले—सखे! तुम्हारी चिन्ता का कारण मुझे सच सच बताओ। मैं अविलम्ब उसका उपाय करूँगा। श्री कृष्ण ने कहा—सखे! अपने मन की बात कहता हूँ सूनो, मैंने जिस दिन कालीय दमन किया था उस दिन वहाँ अनेक सुन्दरियाँ भी थीं, किन्तु रूप गुण में अनुपमा एक परमा सुन्दरी ने अपने स्मित हास्य व बांके नेत्र बाणों से मेरे चित्त को हरके सोये काम को जगा दिया है। उसे प्राप्त किये बिना मन को स्थिर नहीं कर

पा रहा हूँ। सुबल ने कहा—सखे ! जिस सुन्दरी ने तुम्हारा चित्त हरण किया है उससे मैं तुम्हें अवश्य ही मिलाऊँगा तुम निश्चिन्त रहो।

उधर श्रीराधिका भी देवीपूर्णमासी के मुँह से "कृष्ण" यह दो वर्ण मात्र को सुनकर उत्कुन्ठित हो उठीं एवं श्रीकृष्ण की मुरली की तान सुनकर अत्यन्त व्याकुल हो उठी, तदु-परान्त स्वप्न में यमुना के कदम्ब के वन में श्रीश्यामसुन्दर का रूप दर्शन करके अपना रूप खो बैठी। पहले कृष्ण यह दो अक्षर, फिर मुरली की ध्वनि, फिर स्वप्न में श्रीश्याम स्वरूप का दर्शन इन तीनों के प्रभाव से श्री राधिका की दशा ऐसी उद्वेग पूर्ण हो गई कि उन्हें तनिक भी धैर्य नहीं, लेशमात्र निद्रा नहीं, उनका सर्वांग पुलकित हो उठा तथा अपने प्रियतम के अदर्शन में सब सखियों की कोई खबर नहीं। अपना दुःसह विरह कोटी समुद्र की गम्भीरता की तरह प्रगट नहीं कर पाने के कारण केवल उच्च स्वर में रोने लगीं और बीच बीच में लम्बी लम्बी आहें भरने लगीं। कभी कभी भूमि पर मूर्छित हो जाती थीं और कभी कभी उन्माद होकर नाना प्रकार से विलाप करती थी। श्रीराधिका की यह दशा देखकर सखियों ने प्रेम से उन्हें पूछा—राधे ! तुम्हारी यह दशा क्यों हुई ? तुम्हारे शरीर की यह दशा देखकर हमारे हृदय विदीर्ण हो गये हैं। श्रीराधा बोलीं—सखी मेरे मन की बात सुनो, मैं कुलवती अवला हूं,मेरा मन तीन पुरुषों में आसक्त है। एक मन तीन दिशाओं में दौड़ता है, बोलो अब क्या करूँ ? मेरे जीवन में और क्या काम है ? अब मरने में ही श्रेय है। श्रीराधिका के इस कथन पर ललिता बोलीं—कौन से तीन विषय ? और

कैसे उन्होंने तुम्हारा चित्त हर लिया है ? श्रीराधा ने कहा—सुनो सखी ! कृष्ण नाम का कोई एक पुरुष है जिसका नाम सुनने मात्र से हो वह मेरे हृदय में प्रवेश कर गया है, किसी भी प्रकार से वह हृदय से बाहर नहीं निकल रहा है। किसी एक और पुरुष की बंशी ध्वनि सुनने मात्र से ही मेरा मन उन्मत्त होकर उस बंशी ध्वनि में अत्यासक्त हो गया है। और भी कहूँ सुनो ! नवमेघ जो श्याम कान्ति पीताम्बर धारी हैं, अरुणाधर जिसके मधुर हँसी से सुशोभित हैं, उस पुरुष को यमुना पट पर स्वप्न में दर्शन करने पर उसने अपनी लम्बी बाहों को फैलाकर मुझे आलिंगन किया, मेरे बार बार मना करने पर भी उसने जबरदस्ती मेरे अधरों को चुम्बन दिया। उसकी उस अधर पान ने मेरा चित्त हर लिया है।

श्रीराधिका की सारी बातें सुनकर सुचतुरा ललिता बोली—सुनो सखी ! वह तीन नहीं एक ही पुरुष है। पहले तुमने जितना नाम सुना है, उसकी मोहनी ब्रजमय बंशी की धुन है तथा वही कृष्ण वर्ण मुरली बदन पीताम्बर धारी नवीन मदन को तुमने स्वप्न में देखा है। अतएव सखो और वृथा चिन्ता मत करो थोड़ा धैर्य धरो। उसके उत्तर में श्रीराधा उत्कन्ठा भरके बोलीं—सखी ! उस नागर रत्न के दर्शन बिना मेरा जीवन विफल है। अब बोलो कैसे उनसे मेरा मिलन हो ? इसी बीच प्रसन्न मुद्रा में सुबल सखा ने वहाँ आगमन किया, ललिता ने उनको श्रीराधिका की अवस्था का पूरा वर्णन किया। ललिता के वाक्य पर सुबल भीतर ही भीतर बहुत प्रसन्न हुये, किन्तु बाहर से चतुराई से ललिता से बोले—ललिते ! तुमने जो कुछ कहा है यह तो प्रमाद का लक्षण है,

पर इन दोनों का मिलन तो अति कठिन है। क्योंकि यह राजनन्दिनी हैं, और वह राजनन्दन हैं, राजनन्दिनी कभी अन्तपुर छोड़ कर बाहर नहीं जायेंगी एवं राजनन्दन भी कभी यहाँ नहीं आ पायेंगे। एक बात और भी है कि कृष्ण का स्वभाव है, सखागण भिन्न वह एक कदम भी नहीं चलते। और सखा गणों के बीच श्रीराधिका के ज्येष्ठ भाई श्रीदाम सर्वदा कृष्ण के साथ चलते हैं। वह यदि कभी कृष्ण में चंचलता देखते हैं तब अपना भाई समझकर मना करते हैं। कृष्ण सर्वदा सखागणों के आधीन हैं। उनकी कोई स्वतन्त्रता नहीं है। अतएव यह मिलन सर्वथा असंभव है। तदुत्तर में ललिता सुबल को बोली—सुनो सुबल ! तुम यदि मेरी बात मानो तो यह मिलन अवश्य ही संघटित होगा। देखो वर्षाना के उत्तर में एवं नन्दीश्वर के दक्षिण में परम निर्जन संकेत नामक योग्य स्थान है तुम यदि श्रीराधिका की रागोत्कण्ठा बताकर नन्द-नन्दन को छल से किसी प्रकार वहाँ ला सको, तो मैं श्रीराधा को साथ लेकर वहाँ मिला सकती हूँ। सुबल ललिता की बात पर आनन्द सहित बोले—देवि ! तुम्हारे वाक्यों को अपने सिर पर धारणकर मैं अभी कृष्ण के निकट जाकर राधिका के रागोत्कण्ठा निवेदन करूँगा। पर देवि ! आप जानिये मैं उन का प्रिय नर्म सखा हूँ, वह मेरी बात कभी नहीं टालते। मैं अवश्य ही उन्हें वहाँ ले आऊँगा। यह कह कर सुबल तुरन्त नन्दीश्वर जाके कृष्ण से बोले—सखे ! जिसने तुम्हारा चित्त हरण किया है, उसका अनुसन्धान मैं ले आया हूँ, वह वृषभानु राजा की कुमारी श्रीराधिका हैं। उनकी सखियों में जो अति विचक्षणा हैं उन ललिता के साथ अनेक प्रकार की उक्ति प्रत्युक्ति के बाद अन्त में वह बोलीं—वर्षाणे के उत्तर में परम

सुन्दर एक निर्जन वन है, प्रदोष काल में नन्दनन्दन को सब सखाओं के साथ तुम अवश्य लेकर वहाँ पहुँचना। सुबल के वाक्य पर श्रीकृष्ण बड़े आनन्द के साथ वहाँ पहुँच कर वन शोभा का दर्शन करने लगे और परम आनन्दित हुये।

इधर ललिता भी श्रीराधिका को बोली—देखो राधे! जिसके लिये तुम्हारे प्राण व्याकुल हैं, तुम्हारे वह नागर इस कुञ्ज के निकट हैं तुम उनके साथ मिलो। ललिता के वाक्य पर मुग्ध होकर श्रीराधा मन में शंका युक्त होकर मधुर स्वर से बोलीं—ललिते! मैं कदाचित वहाँ नहीं जा पाऊँगी, श्री राधिका के मुँह की ओर देखते हुये ललिता बोलीं— राधे तुम स्वच्छन्द में उनसे मिलो, हम सब तुम्हारे निकट ही रहेंगी। कोई शंका मत करो। ललिता के वाक्य पर श्रीराधा बोली— सखि! तुम्हारी बातों का और कितना उल्लंघन करूँ। अब जो कहोगी उसके बगैर कुछ न करूँगी। तब चतुरा ललिता सखियों के साथ श्रीराधिका को लेकर तीव्र गति से कुञ्ज में आकर उपस्थित हुईं। श्रीराधिका के आगमन से श्रीकृष्ण चंचल चित्त में आनन्द सहित बिना पलकों को झपकाये श्री-राधा रूप का दर्शन करते रहे, ललिता अति स्नेह के साथ अपने चातुर्यकला द्वारा श्रीराधिका को श्रीकृष्ण के समीप ले गईं और अकेली कुञ्ज से बाहर चली आईं। एकान्त कुञ्ज में प्रियतम को देखकर राधा ने अपने बदन को ठीक से ढांपा, रसिक शेखर ने बड़े प्रेम से धीरे धीरे श्रीराधिकाको आलिंगन किया। श्रीराधिका ने भी अपनी बाहों को फैलाकर बाँके नयनों से श्रीकृष्ण को बद्ध करके खड़ी रही। तब श्री कृष्ण ने अपनी बाहें पसार कर श्रीराधा को अपने वक्ष में समेट

लिया और अपनी जाँघों पर बिठा लिया, श्रीकृष्ण के स्पर्श से श्रीराधा के चित्त में विविध भावों के तरंग उठने लगे। रसिक शेखर नायक चूड़ामणि ने आलिंगन व चुम्बनादि के निमित्त अनेक यत्न किये परन्तु श्रीराधिका ने अपने मस्तक को झुका कर मुख कमल को ढ़के रखा। रसि केन्द्र चूड़ामणि की रस-कलाओं का विविध प्रदर्शन करने पर भी श्रीराधिका लज्जा-वश हठ किये रहीं। दिव्यातिदिव्य नायिका व नायक की यह हठता ही प्रथम मिलन का चिन्ह है।

बादमें रसिकके मिथुन रति,रसमें निमग्न होने पर सखियाँ उत्सुकता से संकेत कुञ्ज को रहस्य लीला का आनन्द के साथ दर्शन करते हुये प्रेम समुद्र में डूब गईं। इसीलिये श्रीबल्लभ कुल के लोग भाद्र शुक्ल दशमी को संकेत में श्रीकृष्ण के साथ श्रीराधा का प्रथम मिलन उपलक्ष में महा समारोह सहित उत्सव मनाते हैं। गाँव के उत्तर में श्री श्री गौरांग महाप्रभु के बैठने का स्थान है एवं श्रीपाद गोपाल भट्ट गोस्वामीकी भजन कुटीर है। पास ही श्री संकेत देवी विराजमान हैं। इस गाँव के दक्षिण पूर्व कोने में विट्वल कुंड है। यहाँ से तीन मील उत्तर में नन्दीश्वर है। कोई कोई लीला स्थल दर्शन के निमित्त पश्चिम की ओर जाकर निम्नलिखित स्थानों का दर्शन करते हैं।

श्री विट्वल कुण्ड—यह संकेत के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसके चारों ओर विविध वृक्षों की शोभा है। मोर-मोरनी शुक-शारी की गुंजन से यह निर्जन स्थान सर्वदा उल्लसित है। एक बार श्रीकृष्ण अपने प्रिय नर्म सखा सुबल के साथ इस स्थान पर आकर वन की शोभा देख कर आनन्द के साथ

उल्लसित होकर यहाँ बैठे। इसी बीच एक शारिका पक्षी वृक्ष की शाखा पर बैठ आनन्दित होकर श्रीराधा का गुणगान करने लगी। श्रीराधा नाम सुनकर राधानाथ के हृदय में आनन्द का सागर उमड़ने लगा एवं अश्रु, कम्पन व पुलकता से उनका अंग परिव्याप्त हो उठा। अनुराग से विभोर होकर उसके नेत्र युगल जिधर देखते उधर ही श्रीराधा मूर्ति दर्शन करते और कहते हे राधे! प्राण प्रिये आओ आओ। मुझे छोड़कर तुम इतनी दूर क्यों हो? सुबल श्रीकृष्ण की यह प्रेमदशा देख कर श्रीराधा सहित मिलन के निमित्त व्याकुल हो उठे परन्तु इस समय श्रीराधा के साथ मिलन की कोई सम्भावना न देख कर शारिकाकी प्रति आक्षेप करके बोलने लगे-हे शारिके!तुम असमय राधा नाम उच्चारण करके बड़ा अनर्थ कर रही हो, अब जैसे भी हो राधा के साथ इनका मिलन हो उसका उपाय करो। शारिका बोली—तुम पहले श्रीकृष्ण को संभालो, सखियों के साथ श्रीराधा अभी यहाँ आ रही हैं थोड़ा देर में श्रीराधिका सखियों के साथ कुण्ड तट पर आकर उपस्थित हुई। श्रीराधिका के पायेजेबों की ध्वनि सुनकर सुबल श्रीकृष्ण से बोले—प्राण सखा! संभलो, तुम्हारी राधा आ गई हैं, दर्शन करो। श्रीराधा नाम सुनते ही श्रीकृष्ण आनन्द से बोले —कहाँ राधा, मेरी राधा कहाँ है? इसी बीच श्रीराधिका आकर श्रीकृष्ण से मिलीं। दोनों एक दूसरे को देखकर आनन्द में निमग्न हुये। श्रीराधा के अंग के स्पर्श से श्रीकृष्णा ने विह्वल होकर श्रीराधा को आलिंगन में पाशबद्धकर चुम्बन दिया। श्रीकृष्ण इस स्थान पर श्रीराधा नाम सुनकर विह्वल हो उठे थे इसीलिये इस कुंड व स्थान का नाम विह्वल कुंड है।

श्री रिठोर—यह गाँव संकेत से डेढ़ मील पश्चिम में स्थित है। यह श्री बृषभानु महाराज के ज्येष्ठ भ्राता श्री-चन्द्रभानु का गाँव है। यह गाँव श्रीचन्द्रावली का जन्म स्थान है। गाँव के दक्षिण पूर्व में श्रीचन्द्रावली का कुंड विराजमान है। उसके उत्तर में श्रीबल्लभाचार्य की बैठक है।

श्रीभड़खोड़क—रिठोर से चार मील उत्तरी-पूर्व एवं श्रीनन्द गाँव से चार मील पश्चिम में स्थित है। श्री ब्रजराज नन्द महाराज की यह पश्चिमी गौशाला है। गाँव के दक्षिण-पूर्वीय कोने में भ्रमर कुंड व पश्चिम में क्षीर कुंड है।

श्री मेहेरान—यह भड़खोड़ के दो मील दूर पश्चिम में स्थित है। श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ तात श्री अभिनन्द की यहाँ गौशाला है। कोई कोई इस गाँव को श्री यशोदा का पित्रालय कह कर भी उल्लेख करते हैं। गाँव के पूरब में क्षीर सरोवर विराजमान है।

श्री साँतोया—नामान्तर शत्वास, मेहेरान से दो मील पश्चिम में स्थित है। यह श्रीकृष्ण की पटरानी श्रीसत्यभामा के पिता शत्राजित महाराज के श्रीसूर्य आराधना का स्थल है। गाँव के उत्तरी-पश्चिम कोने पर सूर्य कुंड विराजमान हैं। कुंड के उत्तर में ही श्री सूर्यदेव का मन्दिर अवस्थित है। शत्वास से चार मील दूर दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित है श्री भोजन थालो भोजन थालो के ऊपर स्थित शिला का नाम है बाद्यगीना। भोजन थाली के दो मील उत्तर में है नन्देरा गाँव। उसके दो मील उत्तर-पश्चिम में ही है शत्वास। श्री-

कामवन से श्री वर्षाण जाते ब्रज की परिक्रमा का मार्ग छूट जाता है, इसीलिये शत्वास होकर कामवन, भोजन थाली आने पर फिर परिक्रमा मार्ग मिलता है। अत: परिक्रमार्थी को फिर दोबारा भोजन थाली में आना आवश्यक है।

पाइ गाँव—शत्वास से पाँच मील उत्तर पूर्व में यह गांव स्थित है। एकदिनश्रीकृष्ण कौतुक सहित छुपा-छुपी खेल खेलने लगे, सखियों के साथ बहुत ढूढ़ने पर श्रीराधा ने श्रीकृष्ण को यहाँ पाया था। पाइ गाँव जाते भटकी, उचेरा व परेइ तीन गाँव पड़ते हैं। यहाँ पाइ गाँव में मेव जाति के लोग रहते हैं अत: यहाँ दर्शन करके नुनेरा गाँव आकर रहना पड़ता है। पाइ गाँव ब्रज का सीमान्त गाँव है। यहाँ से नुनेरा गाँव चार मील उत्तर-पश्चिम दिशा पर है। अतएव शत्वास से दस मील चलने का संकल्प लेकर यात्रा करनी होती है। पाइ गाँव से नुनेरा जाते खेड़ी व गाडरी नामक दो मुसलमानों की बस्तियाँ पड़ती हैं।

तिलोयार—नुनेरा से छह मील उत्तर-पूर्व में यह स्थित है। यहाँ श्रीराधा कृष्ण ने इस प्रकार निपुणता से क्रीड़ा आरम्भ की थी कि उन्हें तिल मात्र भी फुरसत नहीं मिली थी। इसलिये इस स्थान का नाम तिलोयार है। यहाँ भी मेव जाति के लोग रहते हैं इसलिये श्रृंगार वट व बिछोर होकर अन्धोप गाँव में निवास करना पड़ता है नुनेरा होकर तिलोयार जाते समय चार मील उत्तर-पश्चिम में नरी नामक एक मुसलमान की बस्ती पड़ती हैं। नरी होकर तिलोयार दो मील पश्चिम में स्थित है। तिलोयार ब्रज का सीमान्त ग्राम है।

श्रृंगार वट—यह तिलोयार से दो मील उत्तर में स्थित है। यहाँ पर सखाओं ने श्रीकृष्ण का सोलह श्रृंगार किया था एवं श्रीकृष्ण ने अपने हाथों से श्री राधिका का श्रृंगार किया था। यह गाँव ब्रज का सीमान्त गाँव है एवं सर्वसाधारण में यह गाँव श्रृंगार नाम से उल्लेखित है। यह गाँव भी मुसलमानों की विशेष बस्ती है।

बिछोर—यह श्रृंगार वट से डेढ़ मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है। सखियों के साथ यहाँ श्रीराधा ने श्रीकृष्ण के साथ विलास किया था। बाद में घर जाते समय विच्छेद वशतः कातर हो गई थीं। यह भी मुसलतानों का गाँव है।

अन्धोप—बिछोर से दो मील उत्तर-पूर्व में एवं श्रृंगार वट से तीन मील उत्तर में यह गाँव स्थित है। यह ब्रज सीमांत विशेष गाँव है।

सोंद—यह गाँव श्रीकृष्ण के ताऊ श्री सनन्द का गाँव है। यह गाँव ब्रज का सीमान्त गाँव है।

बनछारो—सोंद से दो मील की दूरी पर उत्तर पूर्व में ब्रज की सीमा पर यह गाँव स्थित है। बनछारी में दाऊजी का मन्दिर दर्शनीय है। (यहां तक ब्रज की सीमा पर आकर लीला स्थलियाँ दर्शन करने के लिये ब्रज के मध्य में प्रवेश किया जाता है। पुनः इस स्थान पर आकर परिक्रमा आरम्भ करना होगा)।

होड़ल—बनछारी से चार मील दक्षिण-पूर्व में यह स्थित

है। गाँव के दक्षिण-पूर्व में पांडव वन है, पांडव लोगों ने यहाँ पर वास किया था। यहाँ पर पांड़व कुण्ड विराजमान है। होडल के दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक मील दूरी पर श्री कुञ्जर वन है।

दही गाँव—यह गाँव होडेल से तीन मील दक्षिण में स्थित है। श्रीकृष्ण ने कौतुक करने के निमित्त गोपी गणों के निकट जाकर दही लूटा था। दधि कुंड, मधु सूदन कुंड, शृंगार मन्दिर, शीतल कुंड व सप्त वृक्ष मण्डली यहाँ दर्शनीय है। शीतल कुंड के तट पर कदम्ब तले श्री बल्लभाचार्य की बैठक है।

लालपुर— दही गाँव से डेढ़ मील पश्चिम में यह स्थित है। इस गाँव से दो मील दक्षिण-पश्चिम दिशा में कामेर स्थित है। गांव के उत्तर में दुर्वासा मुनि का आश्रम है। यहाँ दुर्बासा कुंड दर्शनीय हैं। इस स्थान पर गोपियों ने श्रीकृष्ण के वस्त्र ग्रहण किये थे।

हारोयान गाँव—वर्तमान नाम—पिपरवर है। यह कामेर से दो मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यहाँ पर श्री कृष्णने श्रीराधिका के साथ चौपड़ खेल खेला था और श्रीराधा ने उनको हराया था। एक दिन श्रीराधा कृष्ण नानाविध रस कौतुक करते हुये यहां आकर बैठे तो श्रीकृष्ण ने आनन्द के साथ श्रीराधा से कहा—'सुनो प्राण प्रिये! तुम्हारे साथ अनेक दिन मैं चौपड़ नहीं खेला, आज मेरी चौपड़ खेलने की इच्छा है। तब ललिता मन्द मन्द हँसती हुई बोलीं—सुनो कृष्णचन्द्र! तुम राधिका के साथ चौपड़ खेलना चाहते हो, उनके साथ

तुम क्या खेलोगे ? तुम तो इस खेल में गोटियाँ फेंकना नहीं जानते, कितने बार तुम इनसे हार गये हो, तथापि तुम राधिका के साथ खेलना चाहते हो ? तुम खेल में हारने पर कलह करोगे, इस बार इस प्रकार खेल नहीं होगा, द्रव्य रख कर प्रण करके तुम लोगों का खेल होगा।' हार जीत का फैसला हम लोग करेंगी, ललिता के वचन सुनकर रसिक व रसवती हँसते हँसते बोले—बोलो तो ललिते ! तुम्हारे पास हम खेलने के लिये क्या द्रव्य रक्खें ? ललिता बोली—सुनो कृष्ण ! बाँस से बनी एक बंशी ही तुम्हारे पास एक मात्र धन है, उसको शुद्ध मन से मेरे पास तुम रखोगे, और सुनो भानु-नन्दिनी तुम्हारे गले का कण्ठ मणिहार मेरे पास रखना होगा, तभी हमें विश्वास होगा। तब श्रीकृष्ण हँसते हँसते बोले—यह लो बन्सी, आज तो राधा चौपड़ में अवश्य ही हारेगी, मैं अवश्य ही जीतूँगा, अतः मेरी बन्सी तो मुझे मिलेगी ही। ललिता ने श्रीकृष्ण की बन्सी हाथ में लेली और जब श्री-राधिका से कण्ठ हार माँगा तो श्रीराधा बोली—मणिहार मैं क्यों दूँ ? ये साजन, क्या मुझसे जीत पायेंगे ? दो एक चाल में ही यह हार जायगे। ललिता बोली—राधे ! तुम जो कहती हो वह तो सत्य ही है एवं हम लोग भी अच्छी तरह जानती हुँ तथापि प्रण की बात ही युक्ति युक्त है। ललिता के वचन सुनकर श्रीराधा ने अपना मणिहार उसे दे दिया और खेल प्रारम्भ हुआ। श्रीकृष्ण ने "दूआ चार" कहकर पासे फेंके, परन्तु पासे उसी प्रकार नहीं गिरे, तब श्रीराधा ने "विदु वामञ्च' कह कर पासे फेंके और जीत गईं तब गोपियाँ बोलीं—देखो साजन ! तुम जो पासे हारोगे यह हम अच्छी तरह जानती हैं, यह तो हमने तुम्हें पहले ही कहा है। श्रीराधा

विदग्ध शिरोमणि परमा सुन्दरी हैं, सर्व विद्या में विशारद रसवती रमणी हैं, वह रसिक का चित्त हरती हैं, इसीलिये तुमको पराजित किया है। श्रीकृष्ण ने कहा—सखी ! तुमने जो कुछ कहा है वह सब ही सत्य है, कारण है गोप जाति गोप क्रीड़ा में खूब ही तत्पर है, और मेरा अन्तर सरल है, मैं इस खेल का कुछ नहीं जानता, इसीलिये नाना विध तरीकों से श्रीराधा ने मुझे पराजित किया है, राधा ने तो मुझे केवल कटाक्षों के द्वारा ही पराजित किया है, जो भी है जहाँ इस प्रकार का अन्याय हो,वहाँ पर रहना युक्तिसंगत नहीं समझता, ललिते ! तुम अब मेरी बन्सी लाकर मुझे दो, मैं गायों के पास अब जाऊँगा। इसके उत्तर में ललिता बोलीं—वह नहीं होगा चतुर, तुम मुझे पहले कहो क्या भेंट दोगे,तभी मैं बन्शी दूंगी। कृष्ण बोले—सुनो ललिते ! वस्तु व मन यह दो वस्तु भिन्न हैं, मेरा और कोई धन नहीं है, इन दो में से राधा ने पहले ही नेत्रों के द्वारा मेरा मन हर लिया है, दूसरा धन है बन्सी वह तुमने हर लिया है, अब भेंट माँगती हो, तुम्हारी रीति मैं अब समझा। सुनो ललिते!यदि भेंट बिना मुझे बन्शी नहीं मिलती है है तो राधा के पास मेरा मन है, यदि दया करके वह उसे लौटा दे तो वह मैं तुम लोगों को अर्पण कर दूँगा, इसके अलावा और मेरे पास कोई भेंट द्रव्य नहीं है। पुनः ललिता बोलीं—सुनो कृष्णचन्द्र ! तुम नाना प्रकार के वचन कहना जानते हो, हम लोग उनकी दासी हैं, हम कुछ भी नहीं जानती हैं कि राधा ने तुम्हारा मन चुराया है। श्रीकृष्ण ने कहा—सुनो ललिते ! मेरी बात झूँठ नहीं है राधा ने मेरा मन रत्न चोरी करके निर्जन कठिन कुच गिरी में रख दिया है, वहाँ से वह किसी प्रकार बाहर नहीं आ पा रहा है। तुम लोग यदि

मेरी बात पर विश्वास नहीं करती हो तो तुम सब लोगों को दिखाता हूँ, यह कहकर श्रीकृष्ण आनन्द सहित श्रीराधा के निकट गये और सखियाँ कुञ्ज में छुप गईं। बाद में श्रीराधा सखियों के साथ मिलकर अपने घर को गई एवं श्रीकृष्ण बन्शी लेकर गोचारण को चल पड़े। यह गाँव बैठान से दो मील दूर पर है।

साँचलो—हारोयान से चार मील दूर दक्षिण-पश्चिम कोने में यह स्थित है। जाते समय कदना नामक गाँव पड़ता है। यहाँ पर चैत्र शुक्ला पञ्चमी से तीन दिन तक यहाँ बड़ समारोह के साथ मेला लगता है। गाँव के बीच में श्री चन्दावली देवी का मनोरम मन्दिर शोभायमान है। गांव में सूर्य-कुंड एवं दक्षिण-पूर्वीय कोने में चन्द्र कुंड विराजमान हैं। यह गांव श्री नन्दीश्वर से छह मील उत्तर-पूर्व में स्थित है।

श्री गेंड़ो—यह सांचली से तीन मील पूर्व में स्थित है। यहाँ पर बदनगढ़ होकर जाना पड़ता है। यह श्रीकृष्ण बलराम के गेंद खेलने की जगह है। गाँव के चारों ओर सात कुंड विराजमान हैं और उत्तर में गेन्द खोर है। यह स्थान श्री बलराम के खड़े होने की जगह है। यहां पर श्रीराम कृष्ण के मुकुट चिन्ह विराजमान हैं, गांव के उत्तर-पश्चिम कोने में द्वितीय गेन्दखोर है। यह श्रीकृष्ण के खड़े होने की जगह है। यह दो कुंड परस्पर आधे मील की दूरी पर स्थित हैं। गांव के पूर्व में गैधरवन कुञ्ज है, दक्षिण में बेलवन कुञ्ज विराजमान है एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा में गोपी कुंड, पश्चिम में जलभर कुंड एवं उत्तर-पश्चिम में बेहार कुंड विराजमान है। इसके दक्षिण-पूर्व कोने पर श्री नन्दीश्वर हैं।

श्रीश्रीनन्दीश्वर

तत्तच्छिरोभूतमपारशोभंनन्दीश्वरंसाधुगणावदन्ति ।
नन्दीश्वरं तञ्च यदीयरूपं श्रीनन्दराजालयराजमानम् ।।

अपार शोभायुत श्रीनन्दीश्वर गांव ही समस्त ग्राम समूह का मस्तक स्वरूप है। साधुगण प्रसिद्ध श्रीनन्दीश्वर नामक शिव को ही इस शैल राज का स्वरूप बतलाते हैं। इस नन्दीश्वर गांव में ही श्रीनन्द महाराज का निवास स्थान स्थित है। गड़ो से दो मोल दक्षिण-पूर्व दिशा में यह श्रीनन्दीश्वर श्रीकृष्ण बलराम का विहार स्थल है। श्रीनन्दीश्वर का प्राकृतिक दृश्य अति मनोरम है। पर्वत के ऊपरी भाग में श्रीनन्दीश्वर ग्राम मण्डली स्वरूप में स्थित है। उसके मध्य स्थित श्रीमन्दिरमें विराजित हैं श्रीब्रजेश्वर व श्रीब्रजेश्वरी, उनके बीच मैं सुललित त्रिभंग वेशमें खड़े श्रीकृष्ण व श्रीबलराम भ्रातयुगल भक्त जनों का मनोकामना पूर्ण कर रहे हैं। श्री मन्दिर के उत्तर दिशा में श्रीनन्दीश्वर शिव विराजमान हैं। श्रीमन्दिर के ऊपर से खड़े होकर ब्रज की अतुलनीय शोभा दर्शन व स्फुरन से श्रीकृष्ण के अपूर्व लीलवली भावुक के हृदय में ऐसी स्फूर्ति पैदा करती है कि एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव होता है जिसका वर्णन कठिन है। श्रीनन्दीश्वर गांव के चारों ओर छप्पन कुंड विराजमान हैं। पहले श्रीनन्दभवन के उत्तरी दरवाजे के साथ सिंह पहरी दर्शन करके श्रीनन्दीश्वर परिक्रमा से बाहर निकलना पड़ता है। श्री नन्दीश्वर के उत्तार पश्चिम कोने में सांच कुंड (नामान्तर धोयनी कुंड) है तथा कुंड के पश्चिमी तट पर श्री मानसी देवी विराजमान हैं। इस कुण्ड

के उत्तरी-पूर्व कोने में व श्रीनन्दीश्वर के उत्तर में श्रीविशाखा के पिता पावन गोप कृत श्रीपावन सरोवर हैं। सरोवर के दक्षिण तट पर श्री सनातन गोस्वामी की भजन कुटीर स्थित है। कथित है कि एक दिन श्रीपाद सनातन गोस्वामी श्रीकृष्ण के विरह में अत्यन्त कातर होकर निकटवर्ती जंगल में तीन दिन अनशन करके पड़े थे। तब श्रीकृष्ण एक गोप बालक के रूप में दूध लेकर उनके निकट उपस्थित होकर बोले—"तुम यहाँ तीन दिन से उपवासी हो, यह कोई नहीं जानता है मैं गोचारण करते तुम्हें देखकर दूध लेकर आया हूँ। तुम यह पीओ मैं बाद में आकर बर्तन ले जाऊँगा। तुम अपनी कुटिया में न रह कर इस प्रकार जगल में रहोगे तो ब्रजवासी गण दुःख पायेंगे" यह कहकर वह बालक चला गया, तब श्रीपाद सनातन दूध पीने लगे और प्रेम में अधीर होते गये। उनके नयनोंमें नीरभर आया और हृदय प्रेमसे प्लावित हो उठा। उसी स्थान पर श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को प्रेरित कर एक कुटिया का निर्माण करवा दिया। पावन सरोवर के उत्तरःपश्चिम कोने पर श्रीनन्दीश्वर तड़ाग, नामान्तर क्षुण्णाहार कुण्ड है यहाँ पर श्रीनन्द महाराज के पिता श्रीपर्ज्जन्य गोप की तपस्या स्थली है। इसके उत्तर में थोड़े पश्चिम दिशा में मति कुण्ड है जहाँ श्रीकृष्ण ने मुक्ताक्षेत्र बनाया था। उसके उत्तर में फुल-यारी कुंड है, उसके पूरब में विलास वट है, उसके पूरब में साहली कुंड है। श्रीकृष्ण बलराम परस्पर प्रायः एक साथ ही रहते थे, इसलिये एक दिन श्रीयशोदा माता ने उन्हें कहा था सारस की जोड़ी, तब से इस कुंड का नाम सारसी कुंड है। उसके दक्षिण-पूर्व में श्याम पिपड़ी कुंड है, उसके दक्षिण-पूर्व में बट-कदम्ब कुंड है, उसके और दक्षिण पूर्व में केवयारी वट

कुंड है, उसके और दक्षिण पूर्व में सप्त वृक्ष-मंडली व टेरि कदम्व कुंड हैं, यह श्रोनन्दीश्वर व जावट के बीचमें स्थित है। इस कुंड के दक्षिण तट पर श्रीपाद रूप गोस्वामी की भजन कुटिया है। कथित है—एक दिन श्रीरूप गोस्वामी मन ही मन सोच रहे थे—"यदि दूध मिलता तो खीर बनाकर श्रीपाद सनातन प्रभु को भोजन कराता" इसी समय श्रीबृष भानुनन्दिनी श्री राधिका ब्रज बालिका के रूप में थोड़ा दूध चावल व चीनी लेकर श्रीरूप गोस्वामी के निकट उपस्थित हुई एवं गोस्वामी को शीघ्र खीर तैयार करके श्रीकृष्ण को भोग देकर प्रसाद पाने को कहकर छद्म वेश में वह बालिका चली गई। इधर श्रीपाद रूप गोस्वामी खीर तैयार करके श्रीकृष्ण को समर्पित करके श्री सनातन प्रभु को दे रहे थे कि श्रीपाद थोड़ी खीर खाकर प्रेम में विह्वल हो उठे। पूछने पर यह श्रीराधिका का काम समझ उन्होंने श्रीरूप को रसोइ बनाने को मना किया। इस कुंड के पूरब में श्री रास मंडली वेदी एवं कुंड के दक्षिण मैं आशेश्वर श्रो महादेव व कुंड हैं। उसके पश्चिम में जल विहार कुंड है, उसके पश्चिम में चन्द्र कुंड है, उसके उत्तर-पूर्व मे कुयाकि कुंड है, उसके दक्षिण में कुकेश्वर कुंड है उसके दक्षिण में श्रीकृष्ण कुंड है जो कि श्रीनन्द गाँव के पूर्व भाग में स्थित है। उसके पूरब में सेहेन कुंड है, उसके दक्षिण में बेहेक कुंड है, उसके पूरब में जोगीया कुंड है, उसके पूरब में झगड़ा कि कुंड है, उसके दक्षिण-पूर्व में भांडीर वट है, उसके पूरब में लेओ वट है, यह श्रीकृष्ण का सखाओं के साथ मठा पीने का स्थान है। उसके दक्षिण मेंअक्रूर कुंड है—श्रीकृष्ण बलराम को मथुरा ले जाने के लिये आते समय अक्रूर ने यहां पर श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह दर्शन किये थे और

उनकी विशेष रूप से स्तुति की थी। यहाँ पर आज भी शिला खण्ड पर श्रीकृष्णका चरण चिन्ह विराजमान है। अक्रूर कुण्ड के दक्षिण-पश्चिम कोने पर वस्त्रवन कुंड,उसके दक्षिणमें दुमन वन व कुंड है। यह वन नन्दगाँव के दक्षिण-पूर्व कोने पर स्थित है। उसके पश्चिम में झिमकी व रिमकि दो कुंड हैं। उसके उत्तर-पूर्व में श्री पूर्णमासी देवी की गुफा व कुंड हैं। उसके उत्तर में पारल खण्डी है यहाँ पर एक महात्मा ने श्री कृष्ण के विरह में आत्मदाह किया था, आज भी वह चिता मौजूद है। उसके पश्चिम में मोह कुंड है, कोई कोई इस कुंड को विशाखा कुंड कहकर भी उल्लेख करते हैं, उसके उत्तर-पूर्व में स्थित हैं श्री ललिता कुंड। इस कुंड के उत्तरी हिस्से में हिन्दोल बेदी विराजमान हैं। श्रीललिता कुंड के पश्चिम में नारद कुंड है, उसके पश्चिम में श्रीसूर्य कुंड है, उसके दक्षिण-पूर्व में श्री उद्धव केवारी है। श्रीकृष्ण के आदेशानुसार ब्रजवासी गणों को सांत्वना देने के लिये श्री उद्धव ब्रज में आगमन पूर्वक यहाँ दस मास अवधि तक रहे थे। यहाँ पर श्री उद्धव की बैठक विराजमान है। उसके पश्चिम में श्रीनन्द की बैठक है। जहाँ पर श्री ब्रजराज गायों के दुहने के समय बैठा करते थे। उसके पश्चिम में श्री यशोदा कुंड है, कुंड के उत्तरी तट पर हाऊ मूर्ति विराजमान है, श्रीकृष्ण बलराम को साथ लेकर श्री ब्रजेश्वरी इस घाट पर स्नान करते समय उन्हें चंचलता से रोकने के लिये 'हाउआ-हाऊ आयेगा' कहकर डराती थी। यह कुंड श्री नन्दीश्वर के दक्षिण में स्थित है। उसके उत्तर में श्री मधुसूदन कुंड है, इसके उत्तर पश्चिम कोने में श्री नृसिंह देव का मन्दिर है। कुंड के उत्तर में श्री यशोदा माता का दधि मन्थन का बहुत बड़ा मैदान है अर्थात

वहाँ मिट्टी के घड़ों के रखने का विशेष स्थान है। उसके दक्षिण-पश्चिम में दही कुंड है। उसके और दक्षिण-पश्चिम में करेला है, उसके दक्षिण-पूर्व में एवं दही कुंड के दक्षिण में रावली कुंड है, उसके दक्षिण में थोड़ा पूर्व की ओर केम है, उसके दक्षिण-पश्चिम में रेम है। उसके उत्तर-पूर्व में मान्धीर कुंड है, उसके पश्चिम में पुकरिया है, उसके उत्तर-पूर्व में बेल कुंड है, उसके दक्षिण-पश्चिम में केरारी कुंड है, उसके उत्तर पूर्व में पाणिहारिक कुंड है। माता यशोदा श्रीकृष्ण के पीने का पानी इसी कुंड से लेती थीं। उसके उत्तर-पूर्व मैं चड़ खोर है, उसके और उत्तर-पूर्व में श्रीवृन्दा-देवी का स्थान व कुंड है। इस कुंड के उत्तर-पूर्व में श्रीवृन्दा-देवी की दर्शनीय मूर्ति विराजमान है, यह स्थान श्री नन्दीश्वर के पश्चिम में स्थित है। इसके उत्तर में पातराकी कुंड है, इसके उत्तर पश्चिम में पियरार कुंड है, यह कुंड पावन सरोवर के उत्तर-पूर्व में स्थित है। इन सब छप्पन कुंडों का दर्शन करने में चार दिन का समय आवश्यक है। पावन सरोवर के उत्तर-पूर्व में छप्पन कुंडों के अलावा राम पुकुरिया नामक एक और कुंड विराजमान है।

श्रीनन्द भवन के उत्तर में श्रीयशोदा नन्दन का मन्दिर एवं दक्षिण-पश्चिम कोने में श्रीराधा माधव का मन्दिर एवं नन्दीश्वर गाँव के दक्षिण में श्रीनृसिंह देव का मन्दिर है। श्रीनन्दीश्वर पर्वत के दक्षिण-पश्चिम कोने पर श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह विराजमान हैं। चरण चिन्ह, के ऊपर वर्धमान के राजा की एक छतरी बनी हुई है। इस चरण चिन्ह के होने से इस स्थान को चरण पहाड़ी कह कर उल्लेख किया जाता है। श्री चरण चिन्ह के पूर्वी भाग के शिला खंड के ऊपर गायों के

चरण चिन्ह विराजमान हैं। उसके उत्तर-पश्चिम में पर्वत के ऊपरी भाग पर मयूर कुटी है, उसके पूर्व में श्रीकृष्ण के खेलने के तरह तरह के चिन्ह विराजमान हैं उसके पूर्व में युगल के बैठने का रमणीय स्थल है। उसके पूर्व में पर्वत के निम्न भाग में एवं श्रीनन्दीश्वर के दक्षिण-पश्चिम में खिड़कीश्वर महादेव है। श्रीकृष्ण के जन्म लीला पर्व के उपलक्ष में भादों के महिने की कृष्णानवमी तक एवं फागुन के होली लीला के उपलक्ष में शुक्ला दशमी तिथि तक श्रीनन्द गाँव में विशेष कौतुहल व मेला लगता है। वर्षाणे में फागुन शुक्लाष्टमी व नवमी को श्रीरधिका के जन्म तिथि से पूर्णिमा तक नाना कौतुहल पूर्ण उत्सव होते हैं। आगे है श्री जावट।

श्रीश्रीयावट

संकेत्य यत्र प्रियया विलस्य
प्रोल्लस्य रस्यस्य वटस्य मूले।
यवैस्तदङ्घ्री रचयाश्चकार
नाम्नापि तं यावबटं चकार॥

विदग्धवर श्रीकृष्ण जिस रमणीय वट तरु के मूल में प्रियतम श्रीराधा के साथ संकेत पूर्वक अभिसार करके उनके साथ लीला विलास करते हैं एवं परमोल्लास सहित उनके चरण-कमल जावक रस से सुरंजित करते थे, उस वट तरु के नामानुसार यह स्थान जावट नाम से प्रसिद्ध है। इसी गाँव में श्रीराधिका की ससुराल है। यह श्री नन्दीश्वर से दो मील उत्तर पश्चिम में स्थित है। गाँव के पूर्व में श्रीराधा कान्त का

मन्दिर है, गाँव के पूर्व में ही श्रीकिशोरी जी का मन्दिर है व श्रीकिशोरी कुंड है। यह कुंड गाँव के उत्तर-पश्चिम में स्थित है उसके दक्षिण में एवं गाँव के दक्षिण-पूर्व में सिद्ध कुंड है उसके दक्षिण-पश्चिम में एवं गाँव के दक्षिण में कुंडल क़ंड (नामान्तर गहेना) है, उसके दक्षिण-पश्चिम में वत्स खोर है-- यहाँ श्री राधिका सुबल सखा के वेश में श्रीकृष्ण से मिली थीं, उसके उत्तर में डहर वन है उसके उत्तर में युगल कुंड है, उसके उत्तर में विह्वल कुंड है, उसके पश्चिम में बेड़िया अर्थात बेर के पेड़ हैं। श्रीकृष्ण इन बेर के वृक्षों के तले विश्राम करते हुये कोयल की ध्वनि निकालते थे। उसके उत्तर में है कानिहारी कुंड और कोकिला वन। कानिहारी कुंड के दक्षिण-पूर्व में एवं विह्वल कुंड के उत्तर-पश्चिम में लाड़ली कुंड है, उसके उत्तर-पश्चिम में नारद कुंड है- उसके पूर्व में धर्म क़ुंड है, उसके दक्षिण दिशा में पारल गंगा (नामान्तर पियल कुंड) है। यह कुंड श्रीजावट गांव के उत्तर-पूर्व में स्थित है। इस कुंड के पश्चिमी तट पर एक प्राचीन फूल का वृक्ष है। कथित है—श्रीराधिका ने अपने हाथों से इस वृक्ष को रोपण किया था एवं इस वृक्ष के फूलों से बड़े यत्न से श्रीकृष्ण के लिये माला बनाई थी। इस वृक्ष का नाम पारि जात वृक्ष है। बैसाख के महिने में इस वृक्ष में अति सुगन्धित पुष्प खिलते है। ये वर्णित पन्द्रह कुंड जावट गाँव को चारों ओर से सुशोभित किये हुये हैं। जावट से पसले धन शिगा है।

धन शिगा—यह यावट से दो मील दूर पूरब में स्थित है। यह गाँव श्री धनिष्टा सखी का जन्म स्थान है।

कोशी—नामान्तर कुश स्थली। यह धन शिंगा से चार मील दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। गाँव के पश्चिम में गोमती कुंड है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने श्रीनन्द महाराज को द्वारका धाम का दर्शन कराया था। इस गाँव के पूरब में स्थिर है पय गाँव।

पयगाँव- यह कोशी से छह मील दूर पूर्व में स्थित है। गाँव के उत्तरमें पय सरोवर तथा कदम्ब व तमाल वृक्ष शोभित मनोरम कदम खंडी अवस्थित हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने पयः पान किया था।

श्रीछत्रवन—नामान्तर छाताई—यह पै गाँव से चार मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। गाँव के उत्तर-पश्चिम में सूर्य कुण्ड एवं दक्षिण-पश्चिम में चन्द्र कुंड है। इस कुंड के तट पर श्री दाऊजी का मन्दिर विराजमान है। गाँव के उत्तरी भाग में श्रीनारायण देव का मन्दिर है। यहाँ पर श्रीदाम की चेष्टा से श्रीकृष्ण ने रत्न सिंहासन पर बैठकर राज्य परिपालन लीला अभिनय कौतुक किया था। तब श्री-बलराम श्रीकृष्ण के बाँये बैठकर मंत्री का कार्य करने लगे। श्रीदाम ने श्रीकृष्ण के शिरोपरि विचित्र छत्र धारण किया। अर्जुन चामर हिलाने लगे, मधुमंगल सामने खड़े होकर विदुषक का अभिनय करने लगे। सुबल पास में बैठकर पान प्रस्तुत करने लगे। उस विचित्र लीला के पश्चात इस गाँव का नाम छत्र वन रखा गया।

श्रीश्यामरी (सेमरी)—यह छत्रवन से चार मील दक्षिण-पूर्व में अवस्थित है। एक समय श्रीराधिका ने श्रीकृष्ण

पर दुर्जयमान किया था, बाद में नाना चेष्टा करके भी श्रीकृष्ण मान भंग कराने में सक्षम नहीं हुये तब किसी सखी की सलाह पर यहाँ पर श्रीकृष्ण ने श्रीश्यामला सखी का वेश धारण कर बड़े कौशल से श्रीराधा का मान भंग किया था। यह गाँव जूथेश्वरी श्रीश्यामला का निवास स्थान है। यहाँ पर चैत्र शुक्लाष्टमी के दिन विशेष मेला लगता है।

नरी—श्री श्यामरी (सेमरी) के एक मील दूरी पर पश्चिम-दक्षिण में यह श्रीबलदेव का स्थल है। यहाँ पर श्री बलराम व संकर्षण कुंड विराजमान है।

शाँखि—नरी से एक मील पश्चिम एवं साहार से दो मील उत्तर में यह स्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने शंखचूड का वध किया था। श्रीराधा कुंड के लग मोहने कुंड दर्शन उपलक्ष में इस संबन्ध में विस्तार से वर्णन किया गया है।

आरबाड़ी—नामान्तर आलयाई—यह शाँखि से डेड़ मील उत्तर में स्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण के साथ रंगयुद्ध अर्थात होली खेलने के निमित्त श्रीराधिका सखियों के साथ आई थीं।

श्रीरनबाड़ी—आरबाड़ी से एक मील उत्तर में एवं छत्र वन के तीन मील दक्षिण-पश्चिम भाग में यह स्थित है। यहाँ पर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण ने अपनी सहचरी व सहचर गणों के साथ परस्पर होली खेली थी। यहाँ पर पौष अमावस्या तिथि पर विशेष वैष्णव उत्सव होता है। इस स्थान पर सिद्ध श्री कृष्णदास बाबा जी महाराज ने श्रीकृष्ण के विरह में आश्चर्य-जनक लीला का स्फुरन किया था।

भादावली—रनबाड़ी से दो मील उत्तर-पूर्व में यह स्थित है। यह श्रीनन्द महाराज के भण्डार गृह के रूप में प्रसिद्ध है। यह श्रीकृष्ण का गोचारण स्थान है। यह गाँव भंडागोर के नाम से भी परिचित है।

खाँपुर—यह गाँव भादावली से एक मील दूरी पर दक्षिण में स्थित है। श्रीराधा गोविन्द ने रनबाड़ी में फाग (होली) खेलने के बाद यहाँ आकर भोजन किया था। यह रणबाड़ी से डेढ़ मील उत्तर-पूर्व में स्थित है।

श्री उमराउ—यह खाँपुर से दो मील दक्षिण में स्थित है। छत्रवन में श्रीकृष्ण श्रीदामा की चेष्टा से राजा बने थे तब सखियों की चेष्टा से श्रीपूर्णमासी देवी ने श्रीराधिका को यहाँ श्रीवृन्दावनेश्वरी के पद से अभिषिक्त किया था।

श्रीदामादि सखागण द्वारा छत्रवन में श्रीकृष्ण के ऊपर छत्र धारण कर राज सिंहासन पर अभिषिक्त करने की कथा सुनकर श्रीवृन्दा व नान्दीमुखी को श्रीराधा बोलीं—यह सोलह क्रोस श्रीवृन्दावन मेरे अधिकृत है एवं पशु पक्षीगण सभी मेरी प्रजा है, यह श्रुति स्मृति शास्त्र में विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यह सुनकर वो बोलीं—श्रीराधे! तुम्हारे राज्य में तुम्हारे अतिरिक्त और कौन राजा हो सकता है? श्रीवृन्दा व नान्दीमुखी के यह वाक्य सुनकर श्रीराधा अपनी सखियों को लेकर श्रीकृष्ण को जीतने की अभिलाषा से उमरा के वेश में अर्थात साक्षात् वृन्दावनेश्वरी इस वेश में वन में पधारीं। श्रीपूर्णमासी देवी ने यह संवाद पाकर वहाँ आईं और श्रीराधा को उस वेशभूषा में पाकर अति आनन्दित हुईं। श्रीराधा ने

श्रीपूर्णमासी देवी को देखकर प्रणाम किया, उन्होंने आशीर्वाद दिया व आलिंगन करते हुये सखियों से इसका कारण पूछा। तब श्रीवृन्दा व नान्दी मुखी ने उन्हें कारण निवेदन किया तो भगवती श्रीराधा से बोलीं—श्रीराधे! यह श्रीवृन्दावन तुम्हारा ही राज्य है, यहाँ तुम्हारे अलावा और कौन राजा हो सकता है? सुनो श्रीराधे! जिस प्रकार बैकुण्ठ में कमला राजा है, द्वारिका में रुक्मिणी हैं, दंडकारण्य में श्रीजानकी हैं, उसी प्रकार इस श्रीवृन्दावन के राजा श्रीराधा हैं। अतएव आज मैं तुम्हें इस श्रीवृन्दावन में श्रीवृन्दावनेश्वरी नाम से अभिषिक्त करती हूँ, यह कह कर साथ ही साथ श्रीवृन्दा देवी को उन्होंने अभिषेक सामग्री के आयोजन के लिये आदेश दिया। श्रीवृन्दा-देवी 'जो आज्ञा कहकर चली गईं एवं सखियां भगवती की आज्ञा पाकर आनन्द सहित नृत्य गीत करने लगीं व नान्दी मुखी अभिषेक के निमित्त सौ घड़े सुशीतल सुवासित जल ले आईं। इसी बीच श्रीवृन्दा देवी गण सह अभिषक की सामग्री ले आईं। श्री पूर्णमासी भगवती ने श्रीराधिका को दिव्य आसन पर बिठाया और अभिषेक करने लगी और श्रीवृन्दा देवी व नान्दी मुखी उनके काम में हाथ बटाने लगीं। सब सखियाँ श्रीवृन्दावनेश्वरी की जय जयकार करने लगीं और इस प्रकार उन्होंने एक महोत्सव मनाया। बाद में श्रीराधा ने भगवती के चरणों में प्रणाम किया, भगवती ने उन्हें आशीर्वाद दिया और इस प्रकार सब अपने अपने घरों को चली गईं। यह सब बात ब्रज में शीघ्र ही प्रचारित हो जाती हैं, तब से श्रीराधा श्रीवृन्दावनेश्वरी के नाम से विख्यात हो गईं। श्री-राधा उमरा के वेश में यहाँ सजी थीं इसीलिये इस स्थान का नाम उमरा प्रसिद्ध हुआ। गाँव के उत्तर में श्रीकिशोर कुंड

के तट पर श्रीपाद लोकनाथ गोस्वामी की भजन कुठी है। श्रीपाद लोकनाथ प्रभु के प्रेम में वशीभूत होकर श्रीराधा विनोद इस श्रीकिशोरी कुंड से प्रगट हुये थे। श्रीलोकनाथ प्रभु के हृदय सर्वस्व ही श्रीराधा विनोद वर्तमान में जयपुर राजधानी की शोभा वर्धन कर रहे हैं।

कामाई—उमराउसे साढ़े चार मील दक्षिण-पश्चिम कोने पर यह गाँव स्थित है। जाते समय उमराव से दो मील दूर दक्षिण-पश्चिम में रहेरा गाँव होकर यहाँ जाना पड़ता है। इस गाँव में श्रीराधिका की सखी श्रीविशाखा का जन्म हुआ था। कामाई के दक्षिण में सिही परशु यह दो गाँव स्थित हैं।

करेला—यह गाँव कामाई से एक मील उत्तर में स्थित है। यह श्रीचन्द्रावली की माता करला का गाँव है। उनके नामानुसार यह गाँव करेला नाम से परिचित है। इस गाँव में श्रीराधिका की प्रधान सखी श्रीललिता का जन्म हुआ था। गाँव के पूरब में मनोरम कदमखण्डी है। भाद्र पूर्णिमा को यहाँ पर महा समारोह के साथ रासलोला होती है।

पेशाई—यह करैला से डेढ मील दूर उत्तर में स्थित है। श्रीकृष्ण प्यास से कातर होने पर श्री बलराम ने यहाँ पर उनकी प्यास बुझाई थी। गाँव के उत्तर-पूर्व में अति मनोरम कदम खण्डी विराजमान है। कोई कोई कहते हैं इस गाँव में श्री इन्दुलेखा का जन्म हुआ था।

लुधौली—यह गाँव पेशाई गाँव से आधा मील दूर

पश्चिम में स्थित है। कोई कोई इस गांव को श्रीललिता का जन्म स्थान कहकर उल्लेख करते हैं।

आँजनक—लुधौलीसे एक मील दूर पश्चिममें यह स्थित है। गाँव के दक्षिण में श्रीकिशोरी कुंड है। इस कुंड के पश्चिम तट पर अंजन शिला विराजमान है। श्रीकृष्ण ने अपने हाथों से यहाँ श्रीराधिका के नेत्रों में काजल लगाया था। एक दिन सखीगण आनन्द के साथ श्रीराधिका की वेशभूषा की रचना में प्रवृत्त थीं सोने की कंघी से उनके केश सँवार रही थीं, जहाँ जिस प्रकार का आभूषण सुन्दर लगे पहना रही थीं, ललाट पर स्मर यन्त्र का तिलक लगाया एवं हृदय के ऊपर हरि मनोहर हार पहनाया, कानों में रोचन नामक रत्न विभूषण पहनाया, नासिका में मुक्ता प्रभाकरी पहनाया, श्रीकृष्ण की अंग छटा आच्छादक पदक एवं सिर पर मदन मोहन विमोहित श्यमन्तकमणि धारण कराया। चन्द्र सूर्य तिरस्कारी सौभाग्य मणि, कर युगल में शब्दायमान कंकण, मणिमय केयुर एवं विपक्ष गवीनाशिनी नाम मुद्रा अंकन, विचित्र काञ्चन काञ्ची, श्रीचरण युगलमें नुपूर श्रीकृष्ण सुख के निमित्त नील वस्त्र के भीतर रक्त वस्त्र धारण कराके सखी गणों ने मणि बन्ध नामक मणि से विभूषित चन्द्र दर्पहारी दर्पण सामने रखा एवं उनके दोनों नेत्रों में काजल पहनाने जा ही रही थीं कि अचानक श्रीकृष्ण ने कुञ्ज में से श्रीराधा श्रीराधा बोल बंशी की ध्वनि की। श्रीराधा उस बंशी ध्वनि को सुनकर प्रेमाविष्ट हो गईं और शीघ्र ही अपने प्रियतम के साथ कुञ्ज में जा मिलीं। श्रीकृष्ण श्रीराधा को देखकर अति आनन्दित हुये। श्रीकृष्ण ने श्रीराधा का हाथ पकड़कर

अपने बाँये बिठाकर अपने पीताम्बर से श्रीराधा का मुखकमल पोंछा। श्रीकृष्ण ने श्रीराधा के सारे अंगों का निरीक्षण करके नयनों में अंजन न देखकर कहा—हाय! हाय! यह क्या बेश है? अंजन विहीन नयन? यह कह कर श्रीकृष्ण ने सखी से अंजन लिया और सोने की शलाका से अतिशय कौतुक के साथ श्रीराधिका के दोनों नयनों में काजल लगा दिया। तत्काल ही श्रीराधिका के दोनों नेत्र प्रेम से बन्द हो गये, श्रीकृष्ण अनंग रस में चंचल हो उठे और एक दृष्टि से उनके बदन कमल माधुरी का दर्शन करने लगे। श्रीराधा भी तृष्णा व्याकुला भ्रमरो की तरह अपने नेत्रों द्वारा श्रीकृष्ण के माधुर्य का पान करने लगीं। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के माधुरी दर्शन करके आनन्द के साथ क्रीड़ा रत हुये। यह गांव इन्दु-रेखा का जन्म स्थान है, कोई कोई पेशाई ग्राम को ही उनका जन्म स्थान कहते हैं। इस गाँव से दो मील दूर उत्तर में खदीर बन हैं।

श्रीखदीरवन

सप्तमन्तु वनं भूमौ खादिरं लोकविश्रुतम्।
तत्र गत्वा नरो भद्रे! मम लोकं स गच्छति॥

जगत प्रसिद्ध खदीर वन ही इस पृथ्वी पर सप्तम वन है। इस वन में गमन करने से लोग विष्णु लोक को जाते हैं। इस गाँव को खायरो भी कहते हैं यह आँजनक से दो मील दूर उत्तर में स्थित है। थोड़े पूर्व की ओर श्रीकृष्ण का गोचारण स्थल है। यह गाँव जावट से दो मील दक्षिण में है। इन दो गाँवों के बीच में वक्थरा (नामान्तर चिलली) नामक स्थान

है। श्रीकृष्ण ने इस स्थान पर वकासुर का वध किया था। वकासुर से चार गुना रूप धारण करके श्रीकृष्ण ने उसे चीर कर दो भागों में फेंक दिया था इसीलिये इस स्थान का नाम चिल्ली भी है एवं इधर श्रीकृष्ण को निगल जाने के लिये जब वकासुर ने चेष्टा की थी वह देखकर सब आर्तनाद करके चिल्ला उठे 'खायो रे, खायो रे'। इस प्रकार खदीर वन का नाम खायोरे' भी प्रसिद्ध है। चिल्ली के पश्चिम भाग में एक कदम्ब वृक्ष है। कथित है—वकासुर को वध करके इस स्थान पर श्रीकृष्ण ने भोजन किया था। गाँव के उत्तर में संगम कुंड है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ विविध विहार किया था। कुंड के उत्तरी तट पर श्रीरास-मण्डल व कदम खण्डी स्थित है। कदमखण्डी में वर्तमान में केवल ६७ कदम्ब वृक्ष विराजमान है कुंड के उत्तर में श्रीलोकनाथ श्री भूगर्भ गोस्वामी की भजन कुटी स्थित हैं। खदीर वन के चारों ओर बारह कुंड अवस्थित हैं।

बिजुयारी—खदीर वन से एक मील दूर पश्चिम में थोड़ा दक्षिण की ओर एवं श्रीनन्द गाँव से डेढ़ मील पूर्व-में यह स्थित है। श्रीकृष्ण बलराम मथुरा जाते समय इस स्थान से अक्रूर के रथ पर बैठे थे। अक्रूर ने मथुरा जाते समय बिजुयारी, पेशाई, साहार व जैत होते हुये अक्रूर घाट पर जाकर श्री यमुना में स्नान किया था। बाद में वे मथुरा गये। श्रीनन्दगाँव व बिजुयारी के बीच में अक्रुर नामक स्थान पर श्रीकृष्ण के चरणचिन्ह शिलाखण्ड पर विराजमान है।

कोकिला वन—श्रीनन्द गाँव से तीन मील उत्तर में

एवं जावट गाँव से दो मील उत्तर में यह स्थित है। इस निर्जन वन में श्रीकृष्ण ने कोयल की तरह सुललित वंशी ध्वनि करके श्रीराधा के साथ मिलन किया था। एक दिन श्रीराधिका से मिलने के निमित्त श्रीकृष्ण ने जावट के वेर वृक्ष के तले रात्रि व्यतीत की, तथापि मिलन न होने पर दूसरे दिन प्रातः श्रीललिता के साथ मिलने पर श्रीकृष्ण अत्यन्त आनन्दित हुये और श्रीराधा से मिलने की अपनी उत्कण्ठा व्यक्त की तो श्रीललिता बोली—सुनो नन्दनन्दन! जावट के पश्चिम में मनोरम में एक निर्जन स्नान है, वह मनमुग्ध कारी कोयलों के स्वर से सतत मुखरित है। तुम दोपहरमें वहाँ जाकर मिलन के निमित्त वंशी बजाओ हम सब श्रीराधिका को लेकर वहाँ मिलूंगी। श्रीललिताके वाक्य पर आनन्दित होकर श्रीकृष्ण दोपहर में उस स्थान पर जाकर मिलन के निमित्त बंशी बजाने लगे। बंशी की ध्वनि सुनकर श्रीललिता बोलीं—श्रीराधे! श्रीनन्द नन्दन तुम्हारे निमित्त वन में वंशी ध्वनिकर रहे हैं वह सुनो तुम्हारे प्रीतमकी वंशी ध्वनि वंशीध्वनि सुनकर श्रीराधिका बोलीं—श्रीललिते! रसिक शेखर मेरे लिये आर्त-स्वर में बार बार बंशी की ध्वनि कर रहे हैं. बोलो मैं अब उनसे कैसे मिलूँ। एक तो मैं अबला हूँ, उस पर मेरी सास व ननद मेरे कंटक हैं, इन सब से बचते हुये कैसे श्रीकृष्ण सहित अभिसार संभव है। श्रीललिता बोलीं—सखी! अब तुम अपना चित्त संभालो, तुम्हारे श्रीकृष्ण के मनोरथ में अनुराग नामक एक सारथी हैं, रथी के आदेश पर सारथी रथ को अवश्य ही कुञ्ज में ले जायेगा। ललिता के वाक्य पर श्रीराधिका अतिशत आनन्दित हुईं और उत्कंठा सहित संकेत निकुञ्ज में श्रीकृष्ण से मिलित हुईं मिलन के पश्चात सब

अपने अपने घर को गईं। भाद्र शुक्ला दशमी के दिन यहाँ श्री रासलीला होती है। यहाँ का श्रीकृष्ण कुंड व श्रीबलराम कुंड दर्शनीय है।

बड़ा बैठान—यह कोकिला वन से ढाई मील दूर उत्तर में अवस्थित है। यह गाँव श्रीकृष्ण व श्रीबलराम की बैठक के रूप में विख्यात है। ब्रजवासियों के आग्रह पर श्रीपाद सनातन गोस्वामी ने इस स्थान पर कुछ दिन भजन का आनन्द लिया था। यहाँ पर कुन्तल कुंड विराजमान है। श्रीकृष्ण ने सखागणों के साथ यहाँ कुन्तल विन्यास किया था।

श्री चरण पहाड़ी—यह छोटे बैठान से एक मील दूर उत्तर में स्थित है। यहां पर गोप गणों के अनेक पद चिन्ह हैं एवं सुरभी, घोड़ा व हाथी के पद चिन्ह भी हैं। एक बार श्रीकृष्ण कोई अपूर्व लीला का अनुष्ठान करने के निमित्त बड़े भाई श्री बलराम से सलाह किया। तदानुसार समस्त वयोवृद्ध गोप गणों ने यान-वाहन अश्व, हाथी इत्यादि को पहाड़ी के ऊपर उपस्थित किया इसी बीच एक हिरन कहीं से आकर पहाड़ पर जा पहुँचा। ठीक उसी समय श्रीकृष्ण ने सुललित बंशी ध्वनि की साथ हो साथ पहाड़ को शिलाओं पर सबके चरण चिन्ह पड़ गये। पाषाण भी किस तरह कर्दम सदृश नरम हो गया, उसके गुरुत्व प्रमाणित करने के लिये उस गतिशील हिरण के पद खुर पाषाण के भीतर धँसे थे। उस समय से इस स्थान का नाम चरण पहाड़ी है। निकट ही श्रीकृष्ण ने चरण धोये थे। कोई कोई चरण पहाड़ी के चिन्हों को श्रीकृष्ण श्री बलराम एवं सखा गणों के चरण चिन्ह कहकर उल्लेख करते हैं, वस्तुतः वह नहीं है क्योंकि कामबन के श्री चरण

पहाड़ी पर श्रीकृष्ण के जो चरण चिन्ह हैं एवं भोजन थाली के निकट बोमासुर की गुफा में जाते समय श्रीबलराम के चरण चिन्ह के जो लक्षण दिखाई देते हैं एवं श्री नन्दगाँव के पूरब दिशा में अक्रूर में स्थित श्रीकृष्ण के चरण चिन्हों के जो लक्षण दृष्टिगत हैं उनके साथ चरण पहाड़ी के चरण चिन्हों का कोई सामंजस्य नहीं है। अतएव ये बड़े बड़े चरण चिन्ह श्रीकृष्ण व श्रीबलराम या उनके समवयस्क सखाओं के चरण चिन्ह न होकर वृद्ध वृद्ध गोप गणों के पद चिन्ह ही प्रतीत होते हैं। इसके बाद है रासौली।

श्रीरासौली—यह श्रीचरण पहाड़ी व कोटवन के मध्य स्थल में अवस्थित है। यह श्रीकृष्ण के शारदीय श्रीरास लीला की स्थली है।

श्रीकोटवन—चरण पहाड़ी से चार मील दूर उत्तर में थोड़ा पूरब की ओर यह स्थित है। यह श्रीकृष्ण का सखाओं के साथ विलास करने का स्थल है। यहाँ पर शीतल कुंड व सूर्य कुंड दर्शनीय हैं। इसके पश्चात है होडल।

होडल—यह कोट बन से चार मील दूर उत्तर पूर्व में हैं। उसके चार मील आगे उत्तर-पूर्व में बनछारी गाँव में होकर परिक्रमा मार्ग से खामी गाँव जाना पड़ता है।

खामी—यह गाँव होडल से चार मील दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह गाँव श्री बलदेव जी का विलास स्थल है। इस गाँव में श्रीबलदेवजीके हस्त प्रेरित खम्बाके चिन्ह आज भी विराजमान हैं। इसी लिये इस गाँव का नाम खामी

है, यह ब्रज का विशेष सीमान्त गाँव है। इस स्थान पर श्री-लक्ष्मी नारायण व श्रीमहादेव जी दर्शनीय हैं। इसके आगे पेंगर्थु है।

पेंगर्थु—यह गाँव खामी से चार मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह ब्रज का विशेष सीमान्त गाँव है। आगे है बासौली।

श्रीबासौली—नामान्तर बासो। यह पेंगर्थु से चार मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। श्रीकृष्ण के अंग के सौरभ से यहाँ झुंड के झुंड भौंरे उड़े थे। यह श्रीराधा गोविन्द के बसन्त में होली खेलने का स्थान है। बसन्त के समागम में ब्रज के प्रत्येक वृक्ष लता आनन्द में मत्त हो उठे थे, वे सब नये नये कलियों से परिपूरित होकर अद्भुत शोभा धारण किये हुये थे। बन में विकसित पुष्पों की ओर आकर्षित होकर मधुकर गण इधर उधर गुंजन करते, मोर पंख उठा कर नृत्य करते कोयल पंचम स्वर में गाते, आज वृन्दावन जैसे नये नये साजों से सज्जित होकर शुक्ला पंचमीतिथि का सादर आह्वान करता हो श्रीकृष्ण श्रीबलराम सखाओं के साथ गोचारण के रंग में इस प्रकार वन की शोभा देखते हुये दोपहर को जल्दी जल्दी गायों को लेकर अपने अपने गृह जाकर स्नान व भोजनादि समाप्त करके होली की सज्जा में सुसज्जित होकर खेलने को प्रवृत्त हुये। इस प्रकार कुछ दिन तक उनका खेल चला, जब देखा कि होली पूर्णिमा को एक महिना बाकी है तब श्रीराम-कृष्ण ने पिता श्रीनन्द महाराज से आज्ञा लेकर एक मास तक गोचारण लीला बन्द करके सखाओं के साथ होली

खेलना शुरु किया। इसी बीच एक दिन दोपहर मे पहिले स्नान, भाजनादि सम्पन्न करके श्रीकृष्ण सखाओं का नाम ले ले कर बुलाने लगे, वह सुनने के साथ ही सखागण, होली की सज्जा में सजकर श्रीकृष्ण के निकट आये, श्रीकृष्ण सखाओं के साथ मिलकर बाहर निकले। श्रीबलराम भी अपने सखाओं के साथ होली खेलने में प्रवृत्त हुये। लीला विलासी आज होली लीला में मत्त होकर इधर उधर दौड़ने लगे एवं बीच बीच में अपनी मोहक मुरली बजाने लगे। ब्रजबालाय उस मुरली की ध्वनि सुनकर उन्मत्त होकर गुलाल, कुमकुम व पिचकारी लेकर मुरलीधारी के निकट दौड़ आये। इधर श्रीराधा के साथ अनेक सखी वृन्द एवं उधर श्रीकृष्ण व उनके सखा गण—दोनों ओर बड़े जोर से रंगो का युद्ध आरम्भ हुआ, श्रीराधा के इशारे मे श्री सुबल ने श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ लिया, उसी अवसर में सखो गणों ने चारों तरफ से रंग डालकर श्रीकृष्ण के अरूण वर्ण वदन कमल को श्रीकृष्ण बर्ण कर दिया और वह देखकर सब लोग हँसने लगे। गोपियों से परास्त व अपमानित होकर श्रीकृष्ण हाथी की तरह अपना विक्रम दिखाते हुये श्रीराधा के ऊपर ढेरों गुलाल ब कुमकुम डालने लगे। इधर श्रीराधा व उनकी सखियाँ चुप न बैठकर अपनी पिचकारियों से रंग बरसाने लगीं। दोनों तरफ से बड़े जोरों से रंग व गुलाल का युद्ध होने लगा और उससे वायु मण्डल व आकाश मण्डल आच्छादित हो उठा, असमय रक्त संध्या प्रगट हो उठी। सबके वस्त्र विचित्र रंगों से रंजित हो उठे सारा ब्रज आज लाल कर्दम से परिपूर्ण हो उठा। इस भयंकर युद्ध के बीच में सुचतुरा श्रीललिता ने सहसा छल से श्रीकृष्ण को पकड़ लिया, तब सब सखियों ने श्रीकृष्ण के मुख

चंद्र को लाल रंग में रंजित कर दिया एवं कोई सखा जब श्रीकृष्ण की सहायता के लिये आया तब वह भी नहीं बचा। श्रीकृष्ण निरुपाय होकर भाग कर सखाओं के बीच आ मिले। सखियों ने श्रीराधिका को विजय घोषणा की। तब श्रीसुबल भी ताली बजा बजाकर कहने लगे कि मेरे सखा ने श्रीराधा को हरा दिया। तब श्री ललिता बोलीं हमारी श्रीराधा श्रीकृष्ण को जीती हैं, दोनों तरफ से इस प्रकार वाद विवाद के साथ फिर गुलाल, कुमकुम का युद्ध आरम्भ हुआ। रसिक शेखर की रस लीला के दर्शन से मुनिगण स्तुति करने लगे एवं गन्धर्व व किन्नर गण नृत्य, गान व संगीत करने लगे एवं देवता गण अन्तरिक्ष से पुष्प वृष्टि करने लगे।

शेषशायी—यह बासौली गाँव से डेढ़ मील दूर थोड़े पूर्व दिशा में क्षीर सागर गाँव के पूरब में स्थित है। इस कुंड के पश्चिम तट पर श्रीलक्ष्मी नारायण देव अनन्त शय्या पर लेटे हुये हैं एवं श्रीलक्ष्मी देवी चरण सेवा कर रही हैं। एक बार श्रीकृष्ण कौतुक करने के लिये यहाँ जल के ऊपर शयन किये हुये थे एवं श्रीराधिका चरणों में बैठकर कोमल हाथों से पाद सेवा कर रहीं थीं। कथित है एक दिन ससखी श्रीराधा गोबिन्द कौतुक रसमें मत्त होकर नाना प्रकारके पुष्पोंसे सुशोभित वन उपवन में घूमते हुये परम मनोहर इस क्षीर सरोवर के तट पर आकर बैठे, सरोवर के सुन्दर जल को देखकर श्रीकृष्ण मन्द मन्द हँसी से श्रीराधा को बोले—सुनो प्राण प्रिये! यह सरोवर प्रायः क्षीर समुद्र के तुल्त अति मनोहर है। श्रीनारायण उस क्षीरसागर में परमानन्द में अनन्त शय्या पर शयन किये हुये हैं और श्रीलक्ष्मी देवी उनका चरण

सेवा कर रही हैं। इस सरोवर को देख कर श्रीनारायण के लिये मेरे मन में एक विचार उदय हुआ। श्रीकृष्ण के यह वाक्य सुनकर श्रीराधा आनन्द सहित बोलीं--श्रीनारायण क्षीर सागर में अनन्त शय्या पर कैसे लेटे हैं और श्रीलक्ष्मी देवी कैसे उनकी पाद सेवा कर रही हैं ? यह सुनने की मेरी बड़ी इच्छा है। तब श्रीकृष्ण बोले—प्रिये ! यह सब घटना वार्ता तुम सुनना चाहती हो या देखना चाहती हो ? श्रीराधा बोलीं--नाथ जो कुछ दिखाई दे सकता है फिर उसको सुनने में कोई उत्सुकता नहीं रहती है। इसके उत्तर में श्रीकृष्ण बोले—प्रिये ! मैं इस सरोवर में शयन करता हूँ, और तुम मेरी पाद सेवा करो। तब श्रीराधा बोलीं यह सरोवर जल से परिपूर्ण है, फिर उसमें अनेक तरंगें हैं, अतएव इसमें आपका शयन एव मेरे द्वारा पाद सेवा कैसे सम्भव है ? आपके अभिप्राय को मैं बिल्कुल नहीं समझ पा रही हूँ। श्रीराधा के वचन सुनकर श्रीकृष्ण बोले—सुनो प्रिये ! इस सरोवर में मैं तुम्हें शयन करके यह अलौकिक आश्चर्य अवश्य दिखाऊँगा, यह कहकर श्रीकृष्ण के अनन्त को स्मरण मात्र से वे मनोहरफणा मण्डल सहित झिलमिलाती मणियों युत भूषित होकर सरोवर के मध्य में आविर्भूत हुये। श्रीकृष्ण ने अनन्त देव को देखकर आनन्द सहित श्रीनारायण के वेश में मुख्य फन के मध्य में शयन किया और श्रीराधा के प्रति मधुर स्वर में बोले—प्रिये ! आओ चरण-सेवा करो, श्रीराधा ने तब हँसते हुये सखी गणों की ओर देखा तो उन्होंने कटाक्ष करते हुये कहा—सखी जाओ तुम्हारे प्राण कान्त की सेवा करो। तदुत्तर में श्रीराधिका बोलीं—सखी ! कहाँ है मेरे प्राणकान्त, ये तो शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी चतुर्भुज श्रीनारायण हैं। मैं कैसे इस प्रकार इनकी

चरण सेवा करूँ ? तुम लोगों का अभिप्राय मैं कुछ भी नहीं समझ पा रही हूं। तदुत्तर में सखीगण बोलीं—कहाँ श्री नारायण यह तो मुरली बदन श्रीनन्दनन्दन हैं, अब ये दिव्य शय्या पर शयन किये हैं। ये सिद्धि विद्या के द्वारा सबको यह श्रीनारायण स्वरूप दिखाये हुये हैं, परन्तु जो श्रीनारायण हैं वे तो क्षीर सागर में श्री लक्ष्मी सहित शयन में हैं, वे सरोवर के बीच कैसे आयेंगे ? तब श्रीकृष्ण ने सखियों की बात पर लज्जित होकर श्रीनारायण वेश छोड़कर अपना सहज श्रीकृष्ण वेश को प्रकट किया तो श्रीराधा उसके दर्शन मात्र से आनन्दित हो उठीं एवं श्रीकृष्ण अपनी इच्छा से बहते हुये सरोवर के तट पर आ लगे, तब श्री ललिता श्रीराधा को साथ लेकर वहाँ आईं एवं श्रीराधा लज्जित व हर्ष युत होकर अपने प्राणकान्त के चरणों के पास बैठकर अपने सुकोमल हाथों से श्रीकृष्ण के पाद-पद्मों को धीरे धीरे दबाने लगीं, कभी वह श्रीकृष्ण के सुकोमल चरणों को अपने वक्ष स्थल पर धारण करतीं हैं व कभी डर कर दोनों चरणों को पकड़ लेती हैं और कभी प्राणकान्त के मुख पद्म की छटा को देखकर अति मधुर रस में निमग्न हो जाती हैं। सखीगण सरोवर के तट पर बैठ कर उस शोभा का दर्शन करके अपने नयन व मन को धन्य करती हैं। युगल किशोर सरोवर के मध्य में इस प्रकार विलास के आनन्द में प्रमत्त हुये एवं कुछ देर बाद तट पर आकर सखियों के साथ मिले तो श्रीललिता बोलीं—सुनो नागर ! तुम्हारी यह लीला अत्यन्त आश्चर्य जनक तो है, परन्तु यह आश्चर्य विद्या तुमने सीखी कहाँ से है ? श्रीललिता के इस प्रश्न पर श्रीकृष्ण बोले—सुनो ललिते ! मैं सर्वाराध्य, सर्व श्रेष्ठतत्व हूँ, इस ब्रह्माण्ड में कोई भी मुझसे स्वतन्त्र नहीं

सभी मेरे वशीभूत दास हैं, मेरी इच्छा मात्र से ही ईश्वर सृष्टि आदि करते हैं, धरणीधर मस्तक पर धरणी धारण करते हैं, श्रीमहादेव मेरे गुणगान में सदा विह्वल हैं. किन्तु तुम लोग गोप जाति होने के कारण मेरा वैभव कुछ नहीं जानती हो, इसी लिये मेरी इस असमोर्द्ध वैभव को भी आश्चर्य विद्या कहते हो। तदुत्तर ललिता बोली—सुनो चतुर शिरोमणि ! गोप जाति में तुम्हारा जन्म है, तुम्हारी दिन चर्या है सखा सखियों के साथ बन बन में रस रंग करना, और तुम गोप राज के नन्दन हो यह बात ब्रज में कौन नहीं जानता है ? अब तुम बोलो ईश्वर कौन है ? पर जो लोग गोपनन्दन तुम्हारे स्वरूप को नहीं जानते हैं वे तुम्हें ईश्वर व नारायण कह सकते हैं. किन्तु हम्हें तुम उस सिद्धि विद्या से नहीं भुला सकते हो। सखीगण श्रीकृष्ण व श्रीललिता के वाक्य सुनकर हँसने लगीं। यहाँ पर एक परम रसमयी लीला का आविर्भाव होने के कारण यह स्थान शेषशायी के नाम से प्रसिद्ध है। तब से यह स्थान शेषशायी कहकर प्रचलित है। शेषशायी होकर उजानी जाने के दो मार्ग है, कोई कोई पूर्व की ओर से बार्का, रूप नगर, मझई फिर दक्षिण से रामपुर गाँव होकर उजानी जाते हैं और कोई कोई रासस्थली दर्शन करके उजानी जाते हैं। जो मार्ग जिसको पसन्द हो।

खेरट—नामान्तर खेरय—यह शेषशायी से चार मील की दूरी पर दक्षिण में थोड़े पूर्व की ओर स्थित है। यह स्थान श्रीकृष्णके गोचारणका स्थल है। इसके पूरबमें है बाछौली गाँव ।

बाछौली—खेरट से ढाई मील पूरब में एवं से पलगाँ व

चार मील उत्तर-पूर्व में यह स्थित है। यह गाँव श्रीकृष्ण की रास स्थली है। यहाँ से पूरब की ओर उजानी जाना होगा।

उजानी—यह बाछौली से छह मील पूरब में एवं पयगाँम से चार मील उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण की बंशी ध्वनि सुनकर श्रीयमुना जी प्रगट हुई थी। यहाँ पर श्रीयमुना जी के स्रोत की एक अपूर्व परिपाटी दृष्टिगोचर होती है। कोई कोई यहाँ से श्री यमुना के किनारे किनारे अथवा दौलतपुर, चीन पहाड़ी, धेदना, व पिठौरा, सुरीर, वैकुण्ठपुर व श्यामली गाँम दर्शन करके भद्र वन जाते है, कोई कोई श्रीयमुना के पश्चिमी तट से लीला स्थली दर्शन करने के लिये खेलन वन जाते हैं।

खेलन वन—नामान्तर शेरगढ़—यह गाँव उजानी से दो मील दूर दक्षिण-पूरब में यमुना के तट पर स्थित है। श्रीकृष्ण बलराम के सखाओं के साथ खेलने की यह स्थली है। श्रीबलराम कुण्ड यहाँ दर्शनीय है।

श्रीराम घाट—यह शेरगढ़ से दो मील दूर पूरब में श्री यमुना के तट पर स्थित है, यहाँ पर श्रीबलराम ने अपने प्रिय सखियों के साथ दो महीने तक विविध रास लीलायें की थी। एक दिन श्रीबलराम ने मद में मत्त होकर जल क्रीड़ा के निमित्त यमुना को आह्वान किया पर यमुना नहीं आईं, तब अतिशय क्रोध सहित उन्होंने हल के द्वारा श्री यमुना को आकर्षित किया था। श्री यमुना अपने अपराध की क्षमा माँगने के लिये श्रीबलराम के शरणापन्न हुई तब श्रीबलराम

उनसे प्रसन्न हुये। तब से श्रीयमुना अब तक श्रीरामघाट में टेढ़ी होकर विराजमान हैं। श्रीरामघाट में श्रीबलराम का मन्दिर अति जीर्ण अवस्था में सुशोभित है। मन्दिर के बगल में एक प्राचीन पीपल का वृक्ष है। यह वृक्ष श्रीबलराम के सखा के रूप में प्रसिद्ध है, यहाँ पर श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु ने कुछ समय निवास किया किया था। श्रीराम घाट से डेढ़ मील पूरब में बहिदपुर है। इस गाँव के उत्तर-पूरवमें भूषण वन है। यहाँपर सखाओंने श्रीकृष्णको पुष्पभूषण द्वारा भूषित किया था। बहिदपुर के दक्षिण-पूरब में मिवार वन है। श्रीरामघाट से डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिम में बिहार बन अवस्थित है। यहाँ पर सखाओं के साथ श्रीकृष्ण ने विविध विहार किये थे।

श्रीअक्षय वट—पहला नाम भांडीर वट—इस स्थान पर श्रीकृष्ण व श्रीबलराम एक दिन गोचारण करने गये तो कंस का एक अनुचर प्रलम्बासुर उनकी क्षति पहुँचाने सखा के वेश में उपस्थित हुआ। चतुर शिरोमणि श्रीकृष्ण ने बड़े भाई से सलाह लेकर एक अपूर्व खेल का आयोजन किया। उसमें यह प्रण लिया गया कि इस खेल में जो परास्त होगा उसे जीतने वाले को कन्धे पर धारण कर भांडीर के पास ले जाना होगा। इस प्रकार खेलते हुये श्रीकृष्ण श्रीदाम से व प्रलम्बासुर श्रीबलराम से पराजित हुये, श्रीदाम को श्रीकृष्ण एवं श्रीबलराम को प्रलम्बासुर कन्धे पर धारण करके भांडीर वन ले जाने लगे किन्तु दुष्ट असुर श्रीबलरामको इसी बीच इधर उधर घुमाते हुये भागने लगा। शुरू शुरू में श्रीबलराम बालक रूप में असुर के छल को नहीं समझ पाये, परन्तु बाद में असुर की चतुराई को समझने पर तक्षणात् उन्होंने सुर के मस्तक पर

अपने बाँये हाथ का घूंसा जड़ दिया जिससे प्रलम्बासुर ने अपनी आसुरी मूर्ति प्रगट की और भूमि पर धराशायी हो गया एवं उसके मुँह से खून बहने लगा। इस कश्रथ खेल के पश्चात से अक्षय वट के पश्चिमी गाँव का नाम काश्रट नाम से विख्यात हो गया। काश्रट से दो मील दूरी पर दक्षिण-पश्चिम में आगियारो गाँव, मुंजाटवी नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने दावानल पान करके गौ एवं गोपी की रक्षा की थी। विभिन्न मतानुसार श्रीयमुना के तटवर्ती भांडीर वट है एवं इस पूरब स्थान से छह मील दक्षिण-पूरब में आरा गाँव ही मुंजावटी नाम से कथित है। यहाँ से पूरब की ओर गोपी घाट है।

श्रीगोपी घाट—यह अक्षय वट के पूरबी भाग में स्थित है। यहाँ पर गोपियों ने श्री कात्यायनी ब्रत किया था। तब से इस घाट का नाम तपोवन रखा हुआ है।

श्रीचीर घाट—यह गोपी घाट से दो मील दक्षिण में एवं अक्षय वट के दक्षिण-पूरब में स्थित है। घाट के ऊपर अति प्राचीन कदम्ब वृक्ष विराजमान है। कात्यायनी ब्रत के उद्यापन दिवस पर गोपियों ने यहाँ श्रीयमुना तट पर वस्त्र उतार कर स्नान कर रही थीं कि तभी श्रीकृष्ण उनके वस्त्र हरण कर कदम्ब के वृक्ष पर जा बैठे थे। बाद में गोपियों को उन्होंने वांछित वर प्रदान कर कृतार्थ किया था। निकट ही श्रीकात्यायनी देवी का मन्दिर विराजमान है। इस गाँव का नाम शियारो है चीर नाम का अपभ्रंश होने से यह नाम रखा गया है।

श्रीनन्द घाट—चीर घाट से दो मील दूर दक्षिण में किंचित पूर्व दिशा में यह स्थित है, यहाँ जाते समय गांग्रली गाँव होकर जाना पड़ता है।

भयगाँव—यह श्रीनन्द घाट से संलग्न गाँव है। एकदा श्री ब्रजराज नन्द एकादशी के दिन व्रत धारण कर रात को जागरण करने के पश्चात निशान्त में श्रीयमुना स्नान करके अपने इष्ट देव के ध्यान में निमग्न थे। इसी बीच श्रीवरुण देव के अनुचर उनको हरण करके वरुण पुरी ले गये। इधर श्री ब्रजराज के साथ के लोग उनको न देख पाकर अत्यन्त भय-भीत होकर श्रीकृष्ण बलराम के पास दौड़े गये और उनको सारा वृत्तांत सुनाया। सुनने के साथ ही दोनों भाई समस्त ब्रजवासियों के साथ नन्द घाट पर उपस्थित हुये। इसी समय माता ब्रजेश्वरी व उपानन्द सभी विषाद के सागर में डूब गये जिसका वर्णन कठिन है। इधर श्रीकृष्ण ने जिन पर ब्रज-वासियों की रक्षा का भार था, अपने पिता के उद्धार की कामना से श्रीयमुना में प्रवेश किया। श्रीबलराम के आश्वा-सन पर ब्रजवासीगण श्रीकृष्ण के आगमन पथ पर दृष्टि जमाये बैठे रहे। वरुणालय में श्रीकृष्ण के उपस्थित होने पर वरुणदेव ने नाना प्रकार से अपने प्रभु की स्तुति की व श्रीब्रजराज को महा सम्मान पूर्बक श्रीकृष्ण के निकट उपस्थित किया एवं नाना विध मणि व रत्नों के दान से सन्तुष्ट किया। तत-पश्चात् श्रीकृष्ण पिता को साथ लेकर तट पर पधारे। उनके दर्शनसे समस्त ब्रजवासी अपना सब दुख भूलकर आनन्द सागर में निमग्न हुये। श्रीब्रजराज व उनके साथ के लोग इस स्थान

भयभीत होने के कारण इस गाँव का नाम भय गाँव तब से विख्यात हो गया ।

जैतपुर—यह गाँव श्रीनन्द घाट से दो मील दूर दक्षिण में स्थित है। श्रीकृष्ण के वरुण आलय से ब्रजराज को लेकर उपस्थित होने पर देवता गणों ने पुष्पवृष्टि सहित जयध्वनि की थी, इसीलिये इसका जैतपुर नाम है।

हाजरा—जैतपुर से डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिम में यह स्थित है। यहाँ पर श्रीब्रह्मा ने गोप-बालकों व बछड़ों को श्रीकृष्ण के सामने उपस्थित किया था। इसी लिये यह गाँव हाजरा नाम से प्रसिद्ध है।

बरारा—नामान्तर बलिहारा—यहाँ पर श्रीकृष्ण सखाओं के साथ बाराह लीला खेल खेलते थे एवं इस स्थान से ब्रह्मा ने गौ वत्स हरण किया था। यह गाँव हाजरा से एक मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

बाजना—बलिहारा से एक मील दूर दक्षिण-पश्चिम में यह स्थित है। इसके डेढ़ मील मश्चिम में पासौली गाँव में अघासुर के वध होने पर देवताओं ने इस स्थान पर परम आनन्द के साथ बाजना अर्थात वाद्य ध्वनि की थी।

जेउलाई—नामान्तर जनाई—अघासुर वध करके श्रीकृष्ण ने यहाँ पर सखाओं के साथ भोजन किया था इस दिन श्रीबलराम के जन्म तिथि उपलक्ष में वह घर पर ही थे। यह गाँव बाजना से डेढ़ मील दक्षिण में स्थित है।

शकरोया—यह जेउलाई गाँव से ढाई मील दूर पूरब में स्थित है। यह इन्द्र के स्थान के रूप में प्रसिद्ध है।

आठास—शकरोया से डेढ़ मील दक्षिण में यह स्थित है। यह स्थान अष्टावक्र मुनि की तपस्या स्थली के रूप में सर्व साधारण में परिचित है।

सुनराक—यह आठास से सवा मील दक्षिण में स्थित है। यहाँ सौभरी मुनि का आश्रम है। इसके सवा मील पूर्व में श्रीवृन्दावन एवं एक मील पश्चिम में देवी आटस विराजमान हैं।

श्रीदेवी आटस—यह श्रीकृष्ण की बहिन श्रीएकानंशा देवी का ग्राम है, देवी यहाँ पर अष्टभुज रूप में विराजमान हैं। एकानंशा देवी का दूसरा नाम श्रीविन्ध्यवासिनी भी है—श्रीविन्ध्याचल पर्वतोपरि यह अष्ट भुजा रूप में विराजमान हैं। यह गाँव आटस गाँव से एक मील दूर पश्चिम में स्थित है।

परखम—देवी आटास से दो मील उत्तर-पूरव में एवं जनाई गाँव से एक मील दूर पश्चिम-उत्तर में यह स्थित है। जेउलाई अर्थात जनाई—इस स्थान पर श्रीकृष्ण को सखाओं के झूंठे फल खाते देख कर ब्रह्मा को श्रीकृष्ण के भगवत् तत्व सम्बन्ध में संदेह हुआ था। इसीलिये उन्होंने खड़े होकर श्रीकृष्ण की परीक्षा लेने हेतु संकल्प लिया था। इसके पश्चिम में चौमुहा गाँव है।

चौमुहा—परखम से सवा मील पश्चिम में थोड़ा दक्षिण की ओर यह स्थित है। ब्रह्मा ने यहाँ पर श्रीकृष्ण की अशेष रूप से स्तुति की थी एवं चरणों में प्रणाम किया था। इसदिन श्रीबलराम के जन्म तिथि के उपलक्ष्य में वह घर ही थे। इस गाँव से जैत चार मील दक्षिण में स्थित है।

आझई—यह चौमुहा से एक मील दूर दक्षिण-पश्चित में स्थित है। ब्रह्म मोहन के पश्चात समस्त गोप बालक गणों ने यहाँ आकर ब्रजवासियों को बोला था कि आज श्रीकृष्ण ने अघासुर का वध किया है। तब से इस स्थान का नाम आझई प्रसिद्ध है।

सिहाना—यह आझई गाँवसे दो मील दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह गाँव चौमुहा के पश्चिम की ओर है। इस स्थान पर ब्रजवासी गणों ने अघासुर के वध पर अत्यन्त संतुष्ट होकर श्रीकृष्ण को 'सिहाना" अर्थात चतुर कहकर प्रशंसा की थी। यहाँ पर श्रीसनक, सनन्द, सनातन व सनत्कुमार चतुःसनों की विग्रह मूर्ति एवं क्षीर सागर तट पर पुड़ानाथ जी नामक श्रीनारायण देव दर्शनीय हैं। इस गाँव के उत्तर-पश्चिम में पसौली है।

पसौली—यह सिहाना से चार मील दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इस गाँव को जाते समय अकबरपुर होकर जाना पड़ता है। यह गाँव परखम से दो मील उत्तर-पूर्व में स्थित है। श्रीकृष्ण ने यहाँ पर अघासुर का वध किया था। इसी लिये कोई कोई इस गाँव को सर्प स्थली

या सापौली कह कर भी उल्लेख करते हैं। अघासुर के मुख में प्रवेश करने के फलस्वरूप इस स्थान का नाम पसौली है। इस दिन भी श्रीबलदेव जी जन्म तिथि के उपलक्ष में में ही थे इस गाँव के उत्तर-पूरव में वरली है।

वरली—पसौली से दो मील उत्तर-पूर्व में यह गाँव स्थित है। यहाँ जाते समय पिठरा गाँव होकर जाना पड़ता है। यह गाँव सेमरी से एक मील दूर पूर्व-उत्तर में स्थित है।

तरली—यह गाँव वरली से एक मील दूर पूरब में स्थित है।

एइ—यह तरली से डेढ़ मील दूर पूरब में स्थित है।

सेइ—यह एइ गाँव से डेढ़ मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इस स्थान पर ब्रह्मा श्रीकृष्ण की माया से मोहित हुये थे। ब्रह्मा ने अपहृत शिशु वत्सों को श्रीकृष्ण के निकट देखकर उन्हें यथा स्थान रख दिया था तथा उस स्थान पर जाकर देखा कि शिशु वत्स निद्रित अवस्था में समय काट रहे थे। तब ब्रह्मा एक बार श्रीकृष्ण के समीप तथा एक बार शिशु वत्सों के निकट आकर बोले 'यह वही है वह यही है" और अविलम्ब श्रीकृष्ण के चरणों में पड़कर शरणागत हुये। दोनों गाँवों के बीच में वत्स वन अवस्थित है। कोई कोई कहते हैं कि यहाँ से ब्रह्मा ने गो वत्स हरण किया था। यह स्थान वत्सासुर वध का भी स्थल है।

माइ व बसाइ—वह सेइ गाँव से डेढ़ मील दूर उत्तर पश्चिम में स्थित है। इस माइ गाँव के उत्तर-पश्चिम में बसाइ गाँव है। इस स्थान पर खड़े होकर ब्रह्मा ने पहले श्रीकृष्ण को अपहृत शिशु वत्सों के साथ खेलते देखकर आश्चर्य प्रगट किया था। बसाइ गाँव से दो मील उत्तर-पश्चिम में श्रीनन्द घाट विराजमान है। श्रीपाद जीव गोस्वामी ने एक बार शास्त्रार्थ में किसी दिग्विजयी को परास्त किया था तब श्रीरूप गोस्वामी उनसे बोले थे—अभी भी तुम में प्रतिष्ठा का लोभ है—अतएव मेरे निकट मत रहो। यह सुनकर श्रीजीव श्रीनन्द घाट के निकटस्थ जंगल में महा दुःख के साथ दिन काटने लगे एवं थोड़ा सा सत्तू पानी में घोलकर खाकर अपना जीवन निर्वाह करने लगे। श्रीसनातन गोस्वामी ने ब्रज परिक्रमा के बहाने श्रीनन्द घाट जाकर ब्रजवासियों के मुँह से सारा वृत्तान्त सुना और फिर श्रीजीव गोस्वामी के निकट गये तथा उनके कथन को सुनकर उन्हें आश्वासन दिया और तदुपरान्त वृन्दावन गये। उसी समय श्रीरूप गोस्वामी जीवों पर दया सम्बन्ध में आलोचना कर रहे थे। श्रीसनातन गोस्वामी श्रीरूप के मुँह से वह सुनकर बोले 'तुम दसरों को शिक्षा देते हो, किन्तु स्वयं उसका पालन नहीं करते हो'। श्रीसनातन की पहेली का मर्म समझकर श्रीरूप गोस्वामी ने श्रीजीव गोस्वामी को शीघ्र श्रीनन्द घाट से बुलाकर उन पर विशेष कृपा की। इसी नन्द घाट पर बैकठर श्रीजीव गोस्वामी ने षड़ सन्दर्भ ग्रन्थ का प्रणयन किया था। श्रीनन्द घाट से यमुना पार पूर्वीय तट पर भद्र वन है।

श्रीभद्रवन

तस्मिन् भद्रवनं नाम षष्ठञ्च वनमुत्तमम् ।
तत्र गत्वा तु वसुधे ! मद्भक्तो मत्परायणः ।।
तद्वनस्य प्रभावेण नागलोकं स गच्छति ।।

यह श्रीनन्दघाट से दो मील दूर दक्षिण-पूर्व में श्रीयमुना तट पर स्थित है । यह वन द्वादश वन में अन्यतम छटवां वन है । इस उत्तम वन में गमन करने से श्रीकृष्ण के भक्त व शरणागत जन इस वन के प्रभाव से स्वर्ग के नागलोक में गमन करते हैं । यह वन श्रीकृष्ण बलराम के विविध क्रीड़ाओं व गोचारण का स्थल है । इसके दो मील दूर दक्षिण में भांडीर वन स्थित है ।

श्रीभांडीर वन

एकादशन्तु भांडीरं योगिनां प्रिय मुत्तमम् ।
तस्य दर्शन मात्रेण नरो गर्भं न गच्छति ।।

भद्रवन के निकटस्थ भांडीर नामक वन द्वादश वनों में योगियों को अत्यन्त प्रिय है । यह वन दर्शन करने से और गर्भ वास नहीं करना पड़ता । संयत चित्त व्यक्ति इस स्थान पर स्नान करने से सर्व पापों से मुक्त होकर इन्द्रलोक को जाता है । यहाँ का भांडीर कुण्ड (नामान्तर अभिराम कुण्ड) व तटवर्ती मन्दिर श्रीदामचन्द्र दर्शनीय हैं । इस वन में वेणु कूप विराजमान है । कथित है—श्रीरासोत्सव के उन्मुख में श्रीरास रसिक श्रीकृष्ण प्रियतम श्रीराधा के साथ निभृत लीला विलास करने के निमित्त समस्त व्रज सुन्दरी गणों को परित्याग करके

श्रीराधा को लेकर अन्तर्ध्यान हो गये थे। निभृत लीला विलास में दोनों परिश्रांत हो गये तब श्रीराधा की प्यास बुझाने के लिये श्रीकृष्ण ने वेणु वादन किया था। उससे प्रेम-मय जल युत होकर वेणु कूप प्रगट हुआ था। इस वन में श्रीराधिका ने श्रीसुबल सखा के वेष में श्रीकृष्ण के साथ मल्ल युद्ध किया था। एक दिन श्रीकृष्ण ने भांडीर वट में आगमन करके बंशी की ध्वनि की जिसके श्रवण से श्रीमती राधिका अधीर हो उठी और सखियों के साथ वहाँ जा पहुँची। श्री-राधिका ने अपने प्राण कोटि प्रियतम के साथ मिलकर आनन्द सहित श्रीकृष्ण से पूछा—सखाओं के साथ यहाँ पर कौन सी लीला होती है ? श्रीराधिका के प्रश्न पर श्रीकृष्ण गर्व सहित बोले, 'मैं मल्ल वेश धारण करके सखाओं के साथ मल्लयुद्ध करता हूँ और कोई भी मुझ से युद्ध नहीं कर पाता, मैं सबको परास्त कर देता हूँ।" श्रीकृष्ण को गर्वपूर्ण बातें सुनकर श्री ललिता हँसते हँसते बोलीं—'हम भी तुमसे मल्लवेश में युद्ध करेंगी, देखें कौन हमें हराता है।' श्रीललित के वचन सुनकर श्रीकृष्ण गर्व सहित श्रीराधिका के साथ मल्ल युद्ध में प्रवृत्त हुये। भीषण मल्ल युद्ध आरम्भ हुआ। परन्तु कोई किसी को पराजित नहीं कर पाया। इस प्रकार सखियों सहित श्रीराधा ने आनन्द के साथ मदन मोहन से मल्ल युद्ध करके यहाँ पर मदनमोहनका आनन्दवर्धन किया था। इस वनसे छह मील दूर दक्षिण-पूर्व में आरा गाँव है। वहाँ दावानल प्रज्वलित होकर जब गोप शिशु व गोप गणों को संतप्त करने लगी तब श्रीकृष्ण ने सखाओं को आँख बन्द करने को कहा और तभी वहाँ आग बुझ गई। इधर सखाओं ने आँख खुलने पर देखा कि गायों सहित वे श्री भांडीर वट के निकट आ गये। इससे सखाओं ने

श्रीकृष्ण के प्रभाव की भूरि भूरि प्रशंसा की और आनन्दित होकर एक दूसरे को आलिंगन करने लगे। यह वन श्रीकृष्ण एवं श्रीकृष्ण सखाओं को अत्यन्त प्रिय है।

छाहेयी—नामान्तर बिजौली—यह भांडीर वन के पूर्व की ओर संलग्न गाँव है। भांडीर वन में खेलने के उपरान्त श्रीकृष्ण व श्रीबलराम सखाओं के साथ यहाँ छाया में बैठकर भोजन करते थे। कोई कोई इस स्थान को प्रलम्बासुर के बध का स्थान भी कहते हैं।

माटवन—यह भांडीर वन से दो मील दूर दक्षिण में है। यह श्रीकृष्ण के खेलने व गोचारण का स्थान है। यहाँ पर बड़े बड़े खेलने व चरने के मैदान हैं इसलिये इस गाँव का नाम माँट रखा गया है। माँट बन से दो मील दक्षिण में एवं श्रीवृन्दावन से सवा मील उत्तर में श्रीयमुना के उस पार बेलवन स्थित है।

श्रीवेलवन

वनं विल्व वनं नाम दशमं देवपूजितम्।
तत्र गत्वा तु मनुजो ब्रह्म लोके महीयते॥

श्रीवृन्दाबन के उत्तर स्थित बिल्ववन नामक दसवाँ वन देवताओं का पूज्य है। मनुष्य इस स्थान पर जाने से ब्रह्मलोक में पूजित होता है। इस स्थान पर श्रीलक्ष्मी देवी श्रीनन्दनन्दन के विलास की लालसा में तपस्या करती हैं। किसी समय वैकुण्ठेश्वरी श्रीलक्ष्मी देवी श्रीकृष्ण के सौन्दर्य माधुर्य का दर्शन करके उससे लालसान्वित होकर श्रीनारायण के वक्ष विला-

सिनी प्रेयसी होने पर भी वैकुण्ठगत दिव्य भोग अभिलाषा परित्याग करके व व्रत धारण करके तपस्या में प्रवृत्त हुईं। श्रीकृष्ण ने श्रीलक्ष्मी देवी को तपस्यारत देखकर उनसे पूछा कि उनके तपस्या का कारण क्या है? श्रीलक्ष्मी देवी बोलीं "मैं गोपी रूप धारण कर तुम्हारे साथ श्रीवृन्दावन में विहार करूँगी, यही मेरी एक मात्र अभिलाषा है।" तब श्रीकृष्ण बोले—यह अति दुर्लभ है। श्रीकृष्ण के वचन सुनकर श्रीलक्ष्मी देवी पुनः बोलीं, 'हे नाथ! मैं स्वर्ण रेखा की तरह तुम्हारे वक्ष स्थल में निवास करने की इच्छा करती हूँ, मेरी यह अभिलाषा पूर्ण करिये।" तब श्रीकृष्ण बोले, "अच्छा यही होगा।" तब से श्रीलक्ष्मी देवी श्रीकृष्ण के वक्ष स्थल पर स्वर्ण रेखा के रूप में विराजती हैं। यहां पर श्रीलक्ष्मी देवी दर्शनीय हैं। पूस के महिने प्रत्येक बृहस्पतिवार के दिन श्री वृन्दावन के देवालयों के सेवाइत वृन्द व नागरिक महा समारोह के साथ वन-भोजन का आयोजन करते हैं। इस वन व माट वन के मध्यवर्तीगांव को डांगोली ग्राम कहते हैं।

श्रीमान सरोवर

यह बेलवन से सवा तीन मील पूर्व में डांगोली गांव के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। किवदन्ती है—किसी विशेष कारण से श्रीमती राधारानी मान करके इस स्थान पर बैठी थीं और उनके आंसुओं से यह सरोवर प्रगट हुआ था। इस सरोवर के तट पर श्रीरास वेदी व श्रीराधारानी का मन्दिर दर्शनीय है। सामने के श्री मन्दिर के तले स्तुति करते हुये श्री कृष्ण विराजित हैं। सरोवर के पूर्व दिशा में पिप्रौली गांव स्थित है। इस गांव के ढाई मील दूर उत्तर-पश्चिम में आरा ग्राम (मुञ्जाटवी) प्रसिद्ध है।

पानीगाँव—मान सरोवर से दो मील दूर दक्षिण में यह स्थित है। यह गाँव श्रीवृन्दावन से सवा मील दक्षिण-पूर्व में यमुना किनारे तट पर शोभित है। एकदा श्रीदुर्वासा मुनि एकादशी के पारण के उपलक्ष्य में श्रीवृन्दावन में श्रीकृष्ण के निकट अन्न भोजन का अभिप्राय प्रकाशित करके श्रीयमुना के उस पार जाकर श्रीभगवत भजन में प्रवृत्त हुये। श्रीकृष्ण ने गोपी गणों के लिये कोई चमत्कारित्व उत्पादक लीला प्रदर्शित करके उनको श्रीयमुना पार कराके मुनि को भोजन कराया था। गोपियों ने जिस घाट को पार करके मुनि को भोजन कराया था उस घाट का नाम पानीघाट एवं जिस स्थान पर बैठकर मुनि ने भोजन किया था उस स्थान का नाम पानीगाँव नाम से प्रसिद्ध हुआ। गाँव के मध्य भाग में वत्सकुण्ड विराजमान है इस स्थान पर श्रीदुर्वासा मुनि गोपियों द्वारा लायी हुई द्रव्यों का भोजन किया था। इस गाँव से पाँच मील दक्षिण में लौहवन है।

श्रीलौहवन

लोहजंघवनं नाम लोह जंघेन रक्षितम्।
नवनं तु वनं देवि! सर्वपातक नाशनम्॥

पानीगाँव के दक्षिण में स्थित यह वन लौहजंघासुर वध का स्थान है। लौह जंघ नामक यह नवम वन अति मनोहर व सर्व पातक नाशन है। यहाँ पर जंघासुर वध हुआ था। श्रीकृष्ण व श्रीबलराम सखाओं सहित इस वन में गोचारण करते थे। लौहजंघासुर इस स्थान पर वध होने के कारण इस रमणीय स्थान का नाम श्रीलौहवन नाम से प्रसिद्ध है। पुष्प

सुगन्ध युत परम मनोहर यह श्रीलौहवन में सर्वत्र श्रीकृष्ण ने सर्वदा विविध विहार किया था। इसके सन्निकटस्थ श्रीयमुना तट पर श्रीराधा गोविन्द की अपूर्व नौका विहार लीला सम्पन्न हुई थी। एक दिन श्रीमती वृषभानु नन्दिनी ने अपनी सखियों के साथ दूध दही की मटकी सजाकर श्रीयमुना को पार करने के निमित्त इस स्थान पर आगमन किया था, श्रीराधा व ब्रज बालाओं का अपूर्व रूप लावण्य की शोभा को देखने के लिये श्रीकृष्ण आज मुग्ध होकर नाविक वेश में एक जीर्ण नौका के ऊपर कपट निद्रा में पड़े हुये थे, निद्रा में लीन उस नाविक को देखकर सखियों के साथ श्रीराधा बारम्बार आह्वान करके बोलने लगीं—हे नाविक ! हम लोगों को पार करा दो, हम लोग शीघ्र ही पार जायेंगी। उनका आह्वान सुनकर श्रीकृष्ण ने कुछ क्षण पश्चात उनको आनन्द सहित नाव पर उठा लिया और श्रीयमुना के मध्य में जाकर बोले—नौका पार करने का मूल्य तो चुकाओ। किन्तु श्रीराधा के पास पार-मूल्य न होने के कारण दुःख से उनका मुखकमल मलीन हो उठा। उनका मुख मलीन देखकर श्रीकृष्ण बोले—प्रिये ! तुम्हारे दूध दही के कारण मेरे नाव की तरी निश्चल हो गई है। श्रीकृष्ण के वचन सुनकर श्रीराधा ने दूध दही का भार नदीं में फेंक दिया, पर फिर भी नाव आगे नहीं बढ़ी। श्रीकृष्ण पुनः बोले—तुम्हारा कन्ठहार व पयोधर युगल का वस्त्र परित्याग न करने पर मेरी यह जीर्ण नाँव किसी भी प्रकार से नही चलेगी। श्रीकृष्ण के वाक्य सुनकर श्रीराधा ने वैसा ही किया उस पर भी नाव तट पर जाते न देखकर श्रीराधा अत्यन्त भयभीत होकर बोलीं —हे नाविक ! तुम्हारे कहने पर मैंने गायों के दूध दही का भार व कन्ठहार पानी में फेंक दिया है और तो और वस्त्रों

को भी दूर फेंक दिया हैं तथापि नाव श्रीयमुना तट तक नहीं पहुँची। अरे नाविक! एक तो तुम्हारी जीर्ण नाव जल से परिपूर्ण है, उस पर पानी में भ्रमरों में पड़कर गहरे पानी में प्रवेश करने को है, हाय, हाय! आज मेरा यह क्या हुआ? मेरा बड़ा ही दुर्भाग्य है कि मैंने तुम्हारी नाव में पैर रखा। श्रीराधाकी यह दुरावस्था देखकर श्रीकृष्ण बार बार आनन्दित होकर ताली बजाने लगे, इस बार श्रीराधिका अत्यन्त भय-भीत होकर बोलीं—हे कृष्ण! मेरे दोनों हाथ और पानी नहीं निकाल सके तथापि तुम्हारे परिहास के वाक्यों पर कोई, बिराम नहीं, सुनो कृष्ण! यदि मैं बच गई तो तुम्हारे नाव पर कभी नहीं पैर रक्खूंगी। हे सखियो! तुम्हारे इष्ट देव को प्रणाम करो कि श्रीयमुना का जल जाँघ तक हो एवं नाविक भी कोई और हो। यह नाँव एक तरफ ढाल है और नदी भी गहरी है, श्रीनन्द नन्दन नाविक भी अत्यन्त चंचल है, उस पर मैं एक अबला हूँ, भानु भी अस्ताचल उन्मुख है, नगर भी अभी बहुत दूर है, बोलो सखियों अब मैं क्या करूँ? और भी कहूँ श्रीनन्दनन्दन स्तुति का आदर नहीं करते मिन्नतें भी नहीं सुनते तथा श्रीचरणों में उनके बारम्बार प्रणाम करने पर भी नहीं मानते, बोलो सखी! अब मैं क्या उपाय करूँ। देखो सखी! यम भगिनी श्रीयमुना तरंगों के द्वारा अपने तटों को लांघ रही हैं, नौका भी जल मे परिपूर्ण हो गई है, श्रीनन्द नन्दन को कलंक का भी भय नहीं है। श्रीराधिका के विलाप पूर्ण बचन सुनकर श्रीकृष्ण बोले—हे सुन्दरी! हे श्रीराधे! आज तुम मेरे प्रति इतनी कठोर मत बनो, तुम्हारे अनुग्रह पर मैं जीवित हूँ हे प्रिये! पर्वतकी गुफामें आनन्द उत्सव स्वरूप पार-मूल्य निश्चत करनेपर नौका शीघ्रही तटपर लग जायेगी। इस

स्थान पर श्रीराधा गोविन्द की इस प्रकार नित्य ही नई नई आनन्द लीलायें सम्पन्न होती हैं। परिक्रमा के समय आगे जाते हुये पानीगाँव से दो मील दक्षिण-पूर्व में स्थित कल्याणपुर हो के जाना पड़ता है। लौहवन के दो मील आगे उत्तर-पश्चिम में "राया" नामक स्थान ब्रज की एक सीमा है।

श्रीराभेल—यह लौहवन से दो मील दूर दक्षिण में स्थित श्रीयमुना तटवर्ती गाँव है। यह गाँव श्रीकृष्ण बल्लभा श्रीमती वृषभानु नन्दिनी श्रीराधिका का जन्म स्थान है। भाद्र शुक्लाष्टमी के दिन दोपहर में श्रीराधिका ने श्रीकीर्तिदा माँ के गर्भ से जन्म ग्रहण किया था। तब से इस दिन रामेल में महा समारोह के साथ मेला जुड़ता है।

गड़ुई— नामान्तर खेड़िया राभेल से चार मील पूर्व-दक्षिण दिशा में स्थित है। कुरुक्षेत्र में मिलन के पश्चात ब्रज-राज श्रीनन्द ने श्रीनन्दीश्वर न जाकर यहाँ पर श्रीकृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा की थी। इधर श्रीकृष्ण के दहिता नामक स्थान पर दन्तवक्र असुर का बध करके इस स्थान पर आकर अपने पिता के चरणों में प्रणाम किया था।

आयोरे—नामान्तर आलीपुर—यह गड़ुई गाँव से आधा मील दूर उत्तर में स्थित है। श्रीकृष्ण दन्तवक्र का बध करके आने पर समस्त ब्रजवासीगण प्रेमसे "आयो रे आयो रे" कह कर उनसे मिले थे।

श्रीकृष्णपुर—नामान्तर श्री गोपालपुर यह आयोरे गाँव से सवा मील पूर्व में स्थित है। लम्बे विरह के पश्चात

ब्रजवासी गणों ने श्रीकृष्ण व श्रीबलराम को पाकर अतुल आनन्द उत्सव द्वारा ब्रज को परिपूर्ण किया था।

बान्दी—यह श्रीकृष्णपुर से दो मील दूर दक्षिण-पूरब में स्थित है। बान्दी कुण्ड व उसके पूर्वीय तट पर आनन्दी बान्दी दोनों दर्शनीय हैं।

श्रीबलदेव—नामान्तर दाऊजी—यह बान्दी से तीन मील दक्षिण-पूरब में स्थित है। यह गाँव श्रीबलदेव का स्थान है। मन्दिर में श्रीरेवती व श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं। मन्दिर के पश्चिमी भाग में श्रीसंकर्षण कुण्ड—नामान्तर क्षीर सागर विराजमान हैं। गाँव के दक्षिण में श्रीमती कुण्ड, उत्तर में रेणुक कुण्ड व रीढ़ा गाँव स्थित है। इस गाँव को विद्रुम वन कहकर उल्लेख किया गया है।

हातौरा—यह विद्रम वन से एक मील दूर पश्चिम में स्थित है। यह श्रीनन्द महाराज का स्थान स्वरूप प्रसिद्ध हैं।

श्रीब्रह्माण्ड घाट—यह हातौरा से तीन मील दूर पश्चिम में एवं श्रीमहावन से एक मील दक्षिण-पूर्व में श्री यमुना के उत्तरी तट पर स्थित है। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने मिट्टी खाने के छल से अपनी माता श्रीब्रजेश्वरी को अपने मुँह के भीतर ब्रह्मांड का दर्शन कराया था।

श्रीचिन्ताहरण घाट—यह ब्रह्मांड घाट से पूरब की ओर थोड़ी दूर पर स्थित है। घाट के ऊपरी भाग में श्री चिन्तेश्वर महादेव दर्शनीय हैं। इस घाट के उत्तर-पूरब में श्री महावन है।

श्री गोकुल महावन

महावनञ्चाष्टमन्तु सदैव हि मम प्रियम्।
तस्मिन् गत्वा तु मनुज इन्द्रलोके महीयते॥

सहस्त्र दल विशिष्ट कमलाकृति चिन्तामणिमय श्रीगोकुल नामक महावन श्रीभगवान का नित्य धाम है। यह श्रीनन्द यशोदादि नित्य परिकर वृन्दों सहित निवास योग्य महान्तपुर है। इसके कण कण में श्रीभगवान स्थित है। यह धाम श्री-बलदेव के अंश से सदा आविर्भूत है एवं उनका निवास स्थल है। यह अष्टम वन श्रीकृष्ण का अति प्रिय है। इस वन में मानव के आगमन करने से वह इन्द्रलोक में पूजित होता है। बर्तमान में यह प्राचीन गोकुल कहकर प्रसिद्ध है। यह स्थान श्रीकृष्ण बलराम की बाल्य लोलाओं की स्मृति कराता है। यहाँ के विशेष विशेष दर्शनीय स्थान हैं—

श्रीनन्द महाराज का दन्त धावन टीला, इसके नीचे है गोपियों की हवेली, पूतना मोक्षण स्थान। पूतना ने इस स्थान पर आकर श्रीकृष्ण को कालकूट मिश्रित स्तन का पान कराने की चेष्टा की थी। बाद में श्रीकृष्ण जब पूतना के संहार के लिये दूध पीते पीते पूतना के पंच प्राण चूसने लगे तब यंत्रणा से पीड़ित होकर पूतना ने 'छोड़ छोड़' कहते हुये चित्कार किया और अपना छद्म वेश परित्याग किया और अपना राक्षसी रूप प्रकट करते हुये आकाश में उड़ान ली, फिर महावन के पश्चिम दिशा में रमनरेती नामक स्थान पर पछाड़ खाकर प्राण त्याग किये। यह पूतना बध लीला श्रीकृष्ण के जन्म होने के सातवें दिन घटी थी।

शकट भञ्जन स्थान—यह लीला श्रीकृष्ण के तीन मास की आयु में हुयी थी। तृणावर्त्त वध का स्थल—यह शकट भञ्जन के बाद की लीला है। इसके थोड़ी दूरी पर श्रीनन्द महाराज की सिंह पौरी, श्रीनन्द भवन, दधि मन्थन स्थल है। फिर है श्रीकृष्ण की षष्टी पूजा स्थल, आशी खाम्बा, श्यामला मन्दिर—यह श्रीकृष्ण की नाड़ी छेदन का स्थान है। आगे है श्रीनन्द कूप, इसके साथ ही हैं श्रीयमलार्जुन भञ्जन स्थल व उदूखल—यहाँ की लीला श्रीकृष्ण ने दो साल तीन मास की आयु में की थी। इस घटना के बाद ही श्रीनन्द महाराज ने गोकुल महावन का परित्याग करके कुछ काल के लिये छटीकरा अवस्थान किया था। इस स्थान पर वत्स चारण लीला आरम्भ करके क्रम से वत्सासुर, वकासुर व अघासुर का वध हुआ था। अघासुर वध के दिन ब्रह्मा ने गोप शिशुओं व गोवत्सों का हरण किया था। तदन्तर बाद में ब्रह्म सम्मोहन के फलस्वरूप श्रीकृष्ण बलराम ने गोचारण लीला आरम्भ की। इसी समय श्रीबलराम ने तालवन में धेनुकासुर का वध किया था।

अवशेष में एक दिन पूस पूर्णिमा के दिन श्रीबलराम की जन्म तिथि के उपलक्ष में श्रीबलराम गृह में थे, उसी दिन श्रीकृष्ण ने श्रीवृन्दावन के कालीदह में कालीय दमन लीला की थी। तदन्तर कार्तिक शुक्ला प्रतिपद के दिन देवराज इन्द्र की पूजा के स्थान पर श्रीकृष्ण ने ब्रज में श्रीगिरिराज श्रीगोवर्धन पूजा का नियम प्रवर्तन किया था। तदन्तर कार्तिक्र शुक्ला तृतीया से नवमी तक क्रम से एक सप्ताह तक श्रीकृष्ण ने श्री गिरिराज गोवर्धन धारण करके ब्रजवासी गणों को इन्द्र के

प्रकोप से रक्षा की थी। यह घटना श्रीकृष्ण की सात वर्ष की आयु में घटी थी। उसके पश्चात एकादशी के दिन श्रीब्रजराज को श्रीनन्दघाट से वरुण के चर अपहरण करने पर द्वादशी के दिन प्रभात के समय श्रीवरुणालत से श्रीकृष्ण ने पिता का उद्धार किया। त्रयोदशी के दिन श्रीगोविन्द पदासीन हुये। उसके पश्चात कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रीकृष्ण ने अक्रूर घाट पर ब्रजवासी गणों को स्नान कराके वैकुन्ठ धाम का दर्शन कराया था। इसके कुछ काल पश्चात श्रीनन्द महाराज श्री नन्दीश्वर में एवं श्रीवृषभानु महाराज वर्षाणे में आये। इसी समय श्रीबलराम ने प्रलम्बासुर का भांडीर वट के निकट बध किया था। इसी दिन श्रीकृष्ण ने मुञ्जावटी में दावानल भक्षण लीला अभिनय किया था। उसके पश्चात श्रीकृष्ण ने कामवन में व्योमासुर का वध किया था।

इधर किशोर अवस्था में पदार्पण करने पर क्रम से नाना प्रकार विचित्र लीला विनोद में ब्रजवासीगण विमुग्ध होने लगे। उस बंसी वादन विद्या में निपुणता प्राप्त करके उसके द्वारा ब्रज मण्डल के जड़-चेतन प्राणियों के भावों की स्वाभाविक धर्मों का परिवर्तन करने लगे। अवशेष में विश्व ब्रह्मांड के चमत्कारी श्रीरासलीला के शुभानुष्ठान द्वारा श्री गोपिकागणों के सहित अद्भुत कला विलास प्रकाशित करके विश्व को मोहित किया था। अनन्तर अरिष्ठासुर बध, केशि-दैत्य वध, मथुरा में क्रंस वध व अन्य आवश्यकीय कार्य सम्पादन के निमित्त श्रीकृष्ण कुछ समय के लिये ब्रज के बाहर गये थे। तदनन्तर दन्तवक्र का वध करके पुनराय ब्रज में आगमन करके श्रीकृष्ण ने ब्रजवासी गणों को अतुलित आनन्द सागर में निमग्न किया। यमलार्जुन भञ्जन स्थान के पश्चात

श्रीब्रजराज की गौशाला है। यहाँ पर श्रीगर्गाचार्य ने आकर श्रीरामकृष्ण का नामकरण किया था। उसके बाद में है रमण-रेती। श्रीवसुदेव ने श्रीकृष्ण को गोद में लेकर यमुना पार करके यहाँ पर कुछ समय विश्राम किया था एवं इस स्थान पर मृत पूतना के वक्ष पर श्रीभगवान आनन्द से विराजते हैं। इसके बाद में कयलो घाट विराजमान है। इस स्थान पर श्रीब्रजराज के निर्देशानुसार फिर मृत देह का क्रिया कर्म किया गया था। इस घाट से होकर श्रीवसुदेब जब पुत्र को गोद में लेकर यमुना पार हुये थे तब श्रीयमुना ने श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श करने के लिये बाढ़ का रूप धारण किया था। श्रीवसुदेव ने पुत्र की रक्षा के लिये भयभीत होकर 'कोइ ले व कोइ ले ओ" कहकर चित्कार किया था। इसीलिये इस घाट का नाम कयलो घाट एवं दक्षिण तटवर्ती गाँव का नाम कयलो कहकर विख्यात हुआ। कयलो घाट के दोनों तटों पर उयलेश्वर महादेव व पाड़ेश्वर महादेव विराजमान हैं।

श्रीगोकुल—यह महावन से डेढ़ मील उत्तर-पश्चिम भाग में अवस्थित है। श्रीबल्लभाचार्य सन्तान गण इसी गाँव में निवास करते हैं यहाँ पर श्रीगोपाल घाट, श्रीबल्लभ घाट श्रीगोकुलनाथ जी की बगीची, बाजन टीला, सिंहपौरी, श्री यशोदाघाट, श्रीबिठ्ठलनाथ जी का मन्दिर, ब्रह्मछोकरा वृक्ष श्रीगोविन्द घाट, श्रीठाकुरानी घाट, श्रीगोकुलचन्द्रमा का मन्दिर, श्री मथुरानाथ जी का मन्दिर, श्रीनन्द महारज की गाड़ी रखने का स्थान आदि दर्शनीय है। इस कयलो घाट के श्री यमुना पर बाढ़ाइ गाँव है।

बादाइ—नामान्तर बाद गाँव। यह कयलो घाट से प्रायः दो मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह गाँव श्रीपाद हरिवंश का जन्म स्थान है। आगे कयलो घाट से डेढ़ मील उत्तर-पूर्व में नौरंगाबाद गाँव है और इसके पाँच मील उत्तर में श्री मथुरा स्थित है।

श्रीमथुरा

अहो मधुपुरी धन्या वैकुण्ठाच्च गरीयसी।
दिनमेकं निवासेन हरौ भक्तिः प्रजायते॥

मधु नामक दैत्य ने कठोर तपस्या करके श्रीमहादेव के निकट से अद्भुत शक्तियुक्त एक शूल प्राप्त किया था। उस शूल का प्रभाव यह था कि जितने दिन शूल अपने पुत्र के पास रहता तब तक कोई उसे वध नहीं कर पाता। महादेव के वचन अन्यथा नहीं हो सकते, यथा समय उनकी स्त्री कुम्भ नसी ने एक पुत्र को जन्म दिया, पुत्र का नाम हुआ लवण। किन्तु दैव का ऐसा ही परिहास कि पुत्र जितना बड़ा होने लगा वह वैसे दुष्ट व आज्ञाकारी हीन होने लगा। अबशेष में श्रीमधुदैत्य पुत्र के अत्याचार से तंग आकर उसको शूल अर्पण करके वरुणालय चले गये। दुरात्मा लवण दैत्य ने शूल पाकर तपोवन वासी ऋषि गणों के ऊपर अत्याचार आरम्भ किया। उन्होंने और कोई उपाय न देखकर भगवान श्रीरामचन्द्र के निकट जाकर अपने दुःख को निवेदन किया। श्रीरामचन्द्र ने लवण दैत्य का वध करने शत्रुघ्न को भेजा। शत्रुघ्न व लवण दैत्य में भीषण युद्ध हुआ, अन्त में शत्रुघ्न ने लवण दैत्य का वध कर दिया। बाद में शत्रुघ्न ने सेनादि बुलाकर पौर जन-

की स्थापना की। शत्रुघ्न का वंश लोप होने पर मथुरा में शूर सेन आदि का शासन रहा। श्रीमथुरा को कंस ने राजधानी बनाकर राज्य का विस्तार किया। श्रीयदुकुल तिलक श्रीकृष्ण चन्द्र ने कंस का विनाश किया। बाद में युधिष्ठर महाराज ने श्रीकृष्ण के प्रपौत्र श्रीबज्रनाभ को श्रीमथुरा का राजा मनोनीत किया। श्रीबज्रनाभ ने मथुरा मंडल में श्रीकृष्ण से संबंधित अनेक लीला स्थली व श्रीभगवन्मूर्त्तियों को प्रकट किया था।

आश्चर्य का विषय है कि यह श्रीमधुपुरी श्रीवैकुण्ठ की अपेक्षा भी धन्य है। जैसे इस मधुपुरी में एक दिन वास करने से ही श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति उदय होती है। विधाता को सकल प्रकार की सृष्टि से श्री मथुरा की सृष्टि थोड़ी विचित्र है क्योंकि श्री मथुरा के गुण बखान करने में श्रीभगवान भी समर्थ नहीं है। यह पुरी श्रीविष्णु के चक्र के ऊपरी भाग में स्थित है एवं पद्माकृति त्रिशिष्ट भी त्रिकाल सत्य है। यह विंशति योजन विस्तीर्ण है। इसके किसी भी स्थान पर स्नान करने मानवगण सकल पाप से मुक्त हो जाते हैं। पद्माकृति मथुरा के कान पर श्रीकेशवदेव जो, पश्चिम पत्र में श्रीहरिदेव जी, उत्तर पत्र में श्रीगोविन्द देव जी, पूर्व पत्र में श्रीविश्रान्ति देव जी, एवं दक्षिण पत्र में श्रीवराह देव जी विराजित हैं। सूर्य के उदय काल में श्रीभगवत ज्योति, श्रीविश्रान्ति तीर्थ में मध्यान्ह काल में श्री दीर्घ विष्णु में एवं दिबस के चतुर्थ भाग में श्रीकेशव देव में अपस्थित हैं। श्रीमथुरा में कोई एक वार मात्र श्रीदीर्घ विष्णु, श्रीपद्मनाभ एवं श्रीस्वयम्भू देव के दर्शन करे उसकी समस्त मनोकामनायें सिद्ध हो जाती हैं तथा श्री

एकानंशा देवी, श्रीयशोदा देवी, श्रीदेवकी देवी, श्रीमहाविद्येश्वरी के दर्शन करने से ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त हो जाता है एवं क्षेत्रपाल श्री भूतेश्वर महादेव के दर्शन से मथुरा क्षेत्र दर्शन का फल प्राप्त करता है। इस श्रीमथुरा पुरी के दर्शनीय श्री विग्रह हजारों की संख्या में हैं, तथापि श्रीमधुपुरी मध्यस्थ श्रीकेशव देव, श्रीपद्मनाभ, श्रीदीर्घ विष्णु, श्रीगतश्रमदेव, श्रीस्वयंभू महादेव व श्रीवराह देव, यही श्रीमथुरा के प्रसिद्ध देवता हैं। श्रीवराह देव के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त इतिहास है—कपिल देव नामक किसी ब्राह्मण से इन्द्र श्रीवराह देव को मर्त्यलोक से देवलोक ले गये। रावण इन्द्र को पराजित करके श्रीवराह देव को लंका में ले गया। बाद में श्रीरामचन्द्र जी रावण पर विजय प्राप्त करके उन्हें अयोध्या पुरी ले गये। श्रीरामचन्द्र के आदेश पर श्रीशत्रुघ्न ने लवणासुर का वध करके मथुरा पुरी को उसके प्रकोप से मुक्त किया और वहाँ ब्राह्मणों व मुनियों के स्वच्छन्द रूप से वास करने की व्यवस्था की। श्रीरामचन्द्र ने श्रीशत्रुघ्न से प्रसन्न होकर उन्हें श्रीवराह देव को अर्पण किया जिन्हें श्रीशत्रुघ्न ने मथुरा में स्थापित किया। तब से श्रीवराह देव मथुरा में ही विराजित हैं। यहाँ के तीर्थादि भी गणनातीत हैं। शास्त्रोंमें वर्णित है कि पृथवी के धूल के कणों की गणना हो सकती है, किन्तु मथुरा के सभी तीर्थों की गणना सम्भव नहीं है। तथापि उनमें निम्नलिखित २४ तीर्थ विशेष प्रसिद्ध हैं, ये महातीर्थ के रूप में बिख्यात हैं—

श्रीअविमुक्त तीर्थ—इस तीर्थ में स्नान करने से मुक्ति प्राप्त होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस स्थान पर

प्राण त्याग करने से विष्णु लोक में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

विश्रान्ति तीर्थ–इस स्थान में स्नान करने से श्री विष्णु लोक में पूजित होता है।

गुह्य तीर्थ–इस तीर्थ में स्नान करने से संसार का मोह नाश होता है व विष्णु लोक में पूजित होता है।

प्रयाग तीर्थ–यह तीर्थ देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। इसमें स्नान करने से अग्नि यज्ञ का फल प्राप्त होता है एवं यहाँ पर श्रीकृष्ण की सेवा करने से पुनः जन्म की संभावना नहीं है।

कंबल तीर्थ–इस तीर्थ में स्नान करके मानव गण स्वर्ग में जाकर आनन्दित होते हैं।

तिन्दुक तीर्थ–नामान्तर बंगाली घाट—इस परम गोपनीय तीर्थ में स्नान करने से श्रीविष्णु लोक में पूजित होता है।

सूर्य तीर्थ–नामान्तर वड़ बाला—विरोचन के पुत्र बलि महाराज ने यहाँ पर श्रीसूर्य देव की आराधना की थी। इसमें स्नान करने से मानव के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। रविवार संक्राति व ग्रहण के दिन स्नान का विशेष माहात्म्य है।

वटस्वामी तीर्थ–जो व्यक्ति रविवार के दिन भक्ति

पूर्वक इस तीर्थ की सेवा करता है वह आरोग्य, ऐश्वर्य व अन्त में उत्तम गति को प्राप्त होता है।

ध्रुव तीर्थ—इस तीर्थ में स्नान करने से ध्रुव लोक में पूजित होता है एवं पिण्ड दान करने से गया का शतगुण फल प्राप्त होता है एवं क्वार के महीने में श्रीकृष्ण पक्ष में स्नान व तर्पण करने का शास्त्रों में विशेष रूप से प्रावधान है। कथित है कि महाराज उत्तान पाद के ज्येष्ठ पुत्र ध्रुव पाँच वर्ष की आयु में विमाता के वाक्य बाणों से घायल होकर अपनी जननी सुनीति देवी के पास श्रीभगवत्प्राप्ति का उपाय जानकर पिता से भी अधिक श्रेष्ठ राज्य प्राप्ति की अभिलाषा में तपस्या में लीन हो गये। श्रीध्रुव पद्मपलाश लोचन श्री-हरि को पुकारते पुकारते इतने तन्मय हो गये कि श्रीहरि की प्रेरणा से श्रीनारद जी पहले उत्तान पाद की राजधानी में फिर जंगली जानवरों से युक्त घने जंगल में श्रीध्रुव से मिले। श्रीनारद ने ध्रुव की अनेक प्रकार से परीक्षा ली और बाद में सन्तुष्ट होकर उन्हें द्वादश अक्षर मंत्र प्रदान किया। श्रीध्रुव ने श्रीनारद के उपदेशानुसार मधुवन में कठोर तपस्या की और श्रीनारायण के दर्शन पाकर कृतार्थ हुये। श्रीध्रुव श्री यमुना के जिस घाट पर स्नान करते थे वह २४ प्रसिद्ध घाटों में अन्यतम है और इसकी महिमा पुराणों में वर्णित है। टीले के ऊपर श्रीध्रुव जी एवं उस मन्दिर के बगल में स्थित हैं श्री अटल गोपाल ऋषि तीर्थ टीले के ऊपर सप्तर्षि, वली टीले पर श्रीबलि महाराज व श्रीवामनदेव विराजिते हैं। कलियुग टीले पर महावीर, रंग भूमि पर चानूर मुष्टिक व कुबलय पीड़ बध के प्रति भूति रंगेश्वर महादेव, उनके उत्तर में कंस

टीला, कंस अखाड़ा व कंस वध स्थल, उग्रसेन महाराज, शिवताल, कंकाली देवी, श्रीजगन्नाथ देव, श्रीउद्धव जी व गोपिका स्थल वलभद्र कुण्ड व श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं। श्री नृसिंह देव, श्रीबदरीनाथ, श्रीभूतेश्वर महादेव, व पाताल देवी पुतरा कुण्ड, श्रीकेशवदेव जी, जन्म भूमि, सामने मालपुरा अर्थात कारागार में श्रीवसुदेव व देवकी देवी की रक्षा हेतु मल्लगणों के बैठने की जगह हैं। महाविद्या देवी, महाविद्या कुंड, सरस्वती कुंड, ये अम्बिका वन में स्थित हैं। एकदा श्रीनन्द महाराज ने श्री गो कर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके रात्रि में कुंड के तट पर शयन किया तो सुदर्शन नामक एक विद्याधर पाप भ्रष्ट होकर सर्प देह को प्राप्त हुआ, उस सर्प ने श्रीब्रजराज के चरणों में काटना शुरू किया, श्रीकृष्ण ने आकर उस सर्प के ऊपर अपने चरण रखे तो वह सर्प योनि से मुक्त हो गया। इसीलिये इस कुंड को सुदर्शन मोक्षण कुंड भी कहा जाता है। अनन्तर सरस्वती देवी, चामुण्डा देवी, रजकवध टीला, गोकर्ण तीर्थ, गोकर्ण महादेव, अम्बरीष टीला, चक्रतीर्थ, कृष्ण गंगा, सोमतीर्थ, घन्टाभरण, तीर्थ धारा, पत्तन तीर्थ, बैकुण्ठ तीर्थ, वसुदेव घाट, वराह क्षेत्र, कर्कटिका नाथ, महावीर. गणेश, श्रीनृसिंह मणिकर्णिका, अविमुक्त तीर्थ, एवं विश्राम घाट या विश्राम तीर्थ। श्रीमथुरा दर्शन के बाद श्री वृन्दावन जाने के रास्ते में अक्रूर तीर्थ पड़ता है।

ऋषि तीर्थ—यह ध्रुवतीर्थ के दक्षिण में स्थित है इसमें स्नान करने से श्रीविष्णु लोक में पूजित होता है, एवं श्रीहरि के प्रति परम भक्ति उदय होती है।

मोक्ष तीर्थ—यह ऋषि तीर्थ के दक्षिण में स्थित है। इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य मोक्ष लोभ करता है।

कोटि तीर्थ—देव दुर्लभ इस तीर्थ में स्नान व दान करने से कोटि गो दान का फल प्राप्त होता है व मानव ईश्वर के लोक में पूजित होता है। इस घाट पर बैठ कर रावण ने तपस्या की थी। जेठ एकादशी का स्नान विशेष फल प्रद है। यहाँ पर रावण कुटी प्रसिद्ध है। इसके आस पास और भी कई महा तीर्थ विराजित हैं, यथा—असि कुण्ड तीर्थ, वैकुण्ठ तीर्थ आदि।

बोध तीर्थ—इस तीर्थ में पिण्ड दान करने से पितृ लोक का गमन होता है। यह बारह तीर्थ देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। इनमें स्मरण मात्र से ही मानव सब पापों से मुक्त हो जाता है। ये द्वादश तीर्थ या घाट विश्राम घाट के उत्तर की ओर स्थित है।

नर तीर्थ—इस तीर्थ से उत्कृष्ट तीर्थ कोई नहीं बना और न बनेना।

संयमन तीर्थ—नामान्तर स्वामी घाट या श्रीवसुदेव घाट—कंस के कारागार से मुक्ति पाकर श्री वसुदेव महाशय ने इस घाट पर स्नान किया था, इस तीर्थ के स्नान से मानव विष्णु लोक जाता है।

धारापतन तीर्थ—इसमें स्नान करने से मानव स्वर्ग लोक को जाता है।

नाग तीर्थ—इस तीर्थ के स्नान से मानव स्वर्ग जाता है। एवं देह त्याग करने पर विष्णु लोक जाता है।

घन्टाभरणक तीर्थ—सर्व पातक नाशक इस तीर्थ में स्नान से मानव सूर्य लोक में पूजित होता है।

ब्रह्म लोक तीर्थ—संयत चित्त मिताहारी व्यक्ति इस तीर्थ में स्नान करने एवं जलपान करने से श्री ब्रह्मा की आज्ञा लेकर श्री विष्णु लोक जाता है।

सोम तीर्थ—नामान्तर गोघाट—इस घाट पर श्री सोमेश्वर महादेव दर्शनीय हैं। अपने अपने कर्तव्यों से प्रतिष्ठित होकर मानव इसके जल से अभिषेक करने से सोमलोक में आनन्दित होता है।

सरस्वती पतन तीर्थ—सर्व पातक नाशक इस तीर्थ स्नान से शूद्रादि सन्यासी की तरह पूजनीय होते हैं।

चक्र तीर्थ—जो व्यक्ति तीन रात उपवास करके इसमें स्नान करता है वह स्नान मात्र से ही ब्रह्म हत्या जैसे पापों से मुक्त हो जाता है।

दशाश्वमेध तीर्थ—इसमें स्नान करने से संयत व्यक्ति स्वर्ग लाभ करता है।

विघ्नराज तीर्थ—इस तीर्थ में स्नान करने से विघ्न राज कभी पीड़ा नहीं देते। इस घाट पर श्रीगणेश जी दर्शनीय हैं।

कृष्ण गंगा तीर्थ—इन सबमें श्रीकृष्ण गंगा की महिमा विशेष रूप से वर्णित है। मानव पञ्च तीर्थ में स्नान करके जो फल लाभ करता है कृष्ण गंगा तीर्थ उसकी अपेक्षा दस गुना फल प्रदान करता है। स्नान के पश्चात घाट के ऊपर श्री कालिन्दीश्वर दर्शनीय हैं।

श्रीवृन्दावन में जैसे पंच कोसी परिक्रमा प्रसिद्ध है उसी प्रकार मथुरा की परिक्रमा भी प्रसिद्ध है। परिक्रमा के अन्तर्गत उपरोक्त तीर्थ समूह दर्शनीय है। परिक्रमा का क्रम है— श्री विश्राम तीर्थ घाट से श्रीमथुरा परिक्रमा का प्रारम्भ होता है— श्रीविश्राम घाट, पपुलेश्वर महादेव, वटुक भैरव, श्रीवेणी माधव, श्री रामेश्वर महादेव, श्री बलभद्र व श्रीमदन मोहन जी, गली के अन्दर श्रीराम जी, श्री गोपाल जी, तिन्दुक तीर्थ, सूर्य तीर्थ आदि यहाँ दर्शनीय हैं।

श्रीअक्रूर तीथ

यह मथुरा से चार मील उत्तर में स्थित है। गाँव के पूरब दिशा में स्थित घाट का नाम अक्रूर घाट है। कथित है— श्री अक्रूर जी कंस के आदेशानुसार श्री नन्दालय जाकर श्रीकृष्ण बलराम को देखकर प्रेम से पुलकित हो उठे और आनन्दाश्रु विसर्जन करने लगे। श्रीकृष्ण बलराम ने उनको आदर सहित आव भगत की, बाद में अक्रूर के मुँह से कंस की कुमन्त्रणा जानने पर उससे श्री नन्द महाराज को अवगत कराया। श्रीनन्द महाराज ने विविध गोप वृन्दों सहित मथुरा में कंस के यज्ञ में जाने की अनुमति दी दूसरे दिन अक्रूर श्री कृष्ण बलराम को रथ में बिठाकर ब्रजवासी गणों को शोक

सागर में डुबोकर रथ चलाकर यहाँ आकर रथ को रोका था और तदनन्तर अक्रूर ने संध्या बन्धनादि करने के निमित्त श्रीकृष्ण बलराम की अनुमति लेकर श्रीयमुना के जल में निमग्न होकर जप करते करते देखा कि श्रीकृष्ण बलराम जल के अन्दर बैठे हैं। तब अक्रूर ने सोचा—यह क्या श्रीकृष्ण बलराम तो रथ में बैठे थे, वे लोग यहाँ जल में कैसे आये। तब शीघ्र ही रथ के पास जाकर उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण बलराम रथ में ही बैठे थे। तब आश्चर्य चकित होकर फिर जल में मग्न होकर देखा कि अनन्त देव के ऊपर श्रीनारायण चतुर्भुज रूप में विराजित थे और उनके अनुचर वृन्द आनन्द सहित उनकी स्तुति कर रहे थे। भक्त प्रवर अक्रूर जी इस प्रकार दर्शन पाकर प्रेम विभोर होकर स्तुति करने लगे। श्रीकृष्ण ने ब्रजवासी गणों को इस घाट पर स्नान करा कर गोलोक धाम के दर्शन कराये थे। इस घाट का एक ओर नाम है ब्रह्म हृद। वरुणालय से श्रीब्रजराज को लाने के पश्चात श्रीकृष्ण ने इस लीला का अनुष्ठान किया था। श्रीमन्महाप्रभु गौरांगदेवने वृन्दावन आकर यहाँ कई दिन विश्राम किया था। वे प्रतिदिन दोपहरको इसी अक्रूर गाँव में आकर भिक्षा ग्रहण करते थे। इससे थोड़ी दूर भतरोल स्थित है।

श्री भोजन स्थली

नामान्तर भातरोल—यह अक्रूर घाट से थोड़ी दूर दक्षिण में वर्तमान में बिरला मन्दिर के निकट स्थित है। श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ गोचारण करते हुये यहाँ आकर अन्न भिक्षा के छल से याज्ञिक पत्नी गणों पर कृपा की थी। एक दिन कार्तिक पूर्णिमा को श्रीकृष्ण व श्रीबलराम सखाओं

के साथ गोचारण करते करते यहाँ आकर बैठे तब सखागण बोले—सखे ! भूख से कष्ट हो रहा है। श्रीकृष्ण बोले—मुनि गण मथुरा में यज्ञ कर रहे हैं, तुम लोग वहाँ जाकर हमारा नाम लेकर उनसे अन्न माँगो। श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार गोप गणों ने यज्ञ के स्थान पर उपस्थित होकर अन्न माँगा तो मुनियों ने हाँ नाँ कोई उत्तर नहीं दिया। तब उन्होंने वापस आकर श्रीकृष्ण बलराम को सब बात बताई तो श्रीकृष्ण ने उन्हें फिर मुतियों की पत्नियों के पास अन्न माँगने भेजा। मुनियों की पत्नियाँ इस दिन के लिये कब से प्रतीक्षा कर रही थीं, उन्होंने प्रफुल्लित होकर चव्य चोष्य, लेह्य व पेय विभिन्न प्रकार के द्रव्य को पात्रों में सजाकर द्रुत गति के साथ श्रीकृष्ण बलराम के समीप उपस्थित हुईं एवं सारा भोजन द्रव्य उन्हें अर्पण किया। श्रीकृष्ण बलराम ने परमानन्द सहित सखाओं के साथ भोजन किया। इसलिये इस स्थान का नाम भोजन स्थली या भतरोल प्रसिद्ध है। इसके थोड़ी दूर पाँच कोस व्यापी द्वादश वन श्रीवृन्दावन अवस्थित है।

श्रीवृन्दावन

वृन्दावन द्वादशमं वृन्दया परिरक्षितम्।
मम चैव प्रियं भूमे ! सर्व पातक नाशनम् ॥

हे वसुधे ! श्रीवृन्दावन द्वादशवन है। यह श्रीवृन्दादेवी द्वारा निर्मित व सुरक्षित वन मुझ ईश्वर को अति प्रिय एवं सर्व पाप नाशक है। श्रीकृष्ण इस स्थान पर नित्य गोपी व गोप गणों के साथ क्रीड़ा करते हैं। यह अक्रूर तीर्थ से डेढ़ मील उत्तर में स्थित है। श्रीवृन्दावन के पाँच कोस के अन्तर्गत

द्वादश वन विराजमान हैं, क्रमानुसार उन वन समूह की वर्णना की गई है—

श्री अटलवन

यह श्री वृन्दावन के दक्षिण में अवस्थित है। इस वन में श्री अटल तीर्थ व अटल बिहारी विराजमान हैं। श्रीकृष्ण भतरोल से भोजन करके यहाँ आगमन करने पर सखा गणों ने उन्हें भोजन सम्बन्ध में जिज्ञासा की तो श्रीकृष्ण ने धृष्टता से कहा 'अटल हो गया है'। तब से इस वन का नाम अटल वन विख्यात है। इस वन के पूरब में श्री बलदेव जी की दर्शनीय मूर्ति विराजित हैं।

श्री केवारि वन

यह अटल वन के उत्तर-पूर्व में स्थित है। यहाँ पर दावानल कुण्ड है। श्रीकृष्ण ने जिस दिन कालीया दमन किया था, उस दिन रात के समय समस्त ब्रजवासी कालीदह के आधे मील दूर तक फैलकर इस स्थान पर सोये थे। मध्य रात्रि में दुष्ट कंस के अनुचर गणों ने अवसर पाकर एक साथ चारों ओर से अग्नि बरसाई थी। उस अग्नि के प्रदीप्त होने से रक्षा का और कोई रास्ता न पाकर ब्रजवासी गण श्रीकृष्ण व श्री बलराम के मुँह की ओर निहारने लगे श्रीकृष्ण ने ब्रजवासी गणों की दावानल से रक्षा करने के लिये आश्वासन प्रदान किया और उन्हें अपनी आँखों को बन्द करने को कहा। अपनी अचिंत्य शक्ति के प्रभाव से श्रीकृष्ण ने तत्क्षणात अग्नि को बुझा दिया। आँख खोलने पर अग्नि न देखने पर अत्यन्त

आश्चर्य चकित होकर वे परस्पर कहने लगे— "कौन ने निबारा ?" उस समय से इस वन का नाम केवारी वन एवं अग्नि निर्वापण स्थान का नाम दावानल कुण्ड हुआ। इस कुंड के उत्तर-पूर्व दिशा में श्रीमोती झील है।

श्रीविहार वन—केवारिवन के दक्षिण पश्चिम दिशा में यह वन स्थित है। यहाँ पर श्री राधा कूप विराजमान हैं। परिक्रमार्थी इस कूप के निकट जाकर उच्च ध्वनि से श्री राधे श्री राधे, या श्री राधा श्याम उच्चारण करते हैं।

श्री गोचारण वन—विहार वन के पश्चिम भाग में यह प्राचीन वन श्री यमुना तट पर स्थित है। यहाँ पर श्री वराहदेव विराजमान हैं। इस स्थान पर श्री गौतम मुनि का आश्रम है। इस स्थान को श्री वराह घाट कहा जाता है।

श्रीकालीयदमन वन—यह गोचारण वन के उत्तर में स्थित है। यहाँ का प्राचीन कदम्ब वृक्ष श्री यमुना तट पर विराजमान है। श्रीकृष्ण कालीय दमन के अभिप्राय से इसी वृक्ष की शाखा से श्रीयमुना में कूदे थे। तब से यह वृक्ष "कालि कदम्ब" नाम से प्रसिद्ध है। इस वृक्ष से थोड़ी दूर पूर्व में श्री कालीय मर्दन का मन्दिर विराजमान है। इसके पास ही श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वती की समाधि विराजमान है।

श्री गोपाल वन—यह कालीय दमन वन के उत्तर में स्थित है। यहाँ पर श्रीनन्द यशोदा की मूर्ति विराजमान है। कालीय दमन के पश्चात श्री ब्रजराज ने श्रीकृष्ण की मंगल

कामना में ब्राह्मण गणों को अनेक गायें दान में दी थीं। इस स्थान को श्री गोपाल घाट भी कहा जाता है।

श्रीनिकुंजवन—नामान्तर सेवाकुञ्ज—यह गोपाल वन के उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। इस कुञ्ज में श्रीराधा गोविन्द नित्य विहार करते हैं। इस वन में श्रीललिता कुण्ड सुशोभित है। एकदा श्रीराधा व श्रीकृष्ण सखियों के संग क्रीड़ा कर रहे थे उसी समय प्रधाना सखी श्री ललिता जल तृष्णा में बोलीं— हे श्याम सुन्दर! मैं प्यास से कातर हूँ, मुझे जल पिलाओ उसके उत्तर में श्रीकृष्ण बोले— श्री ललिले! श्री यमुना कुछ दूर ही हैं, उसका स्वच्छ शीतल जल पान करके अपनी तृष्णा मिटाओ। तब श्री ललिता बोलीं मैं श्री यमुना नहीं जा पाऊँगी, तुम यहीं मुझे जल पिलाओ। यह सुनकर लीलामय श्री भगवान ने बंशी द्वारा भूमि को खोदा तो उसमें से गंगा की धारा फूट निकली, तब श्री ललिता व अन्य सखीगण ने विविध कौतुक के सहित जल पीकर अपनी तृष्णा मिटाई। एक और भी किवदन्ती प्रचलित है—कि इस वन में कोई रात्रि नहीं बिता सकता उसकी मृत्यु हो जायी है। इसीलिये सर्व प्रकार के दर्शनार्थी संध्या होते ही दर्शन करके वन के बाहर चले जाते हैं। इस वन से साथ ही श्री अन्नपूर्णा देवी एवं पूरव में श्री पूर्णमासी देवी का मन्दिर स्थित है। इस बन के पश्चिम में श्रीश्रीसीतानाथ प्रभु का मन्दिर विराजमान है। श्री अद्वैत सन्तानों द्वारा श्रीसीतानाथ प्रभु व श्री मदन गोपाल देव की सेवा होती है।

श्री निधुवन—निकुञ्ज वन के उत्तर में यह वन विराजमान हैं। श्रीराधारमण मन्दिर व शाह जी मन्दिर

इसके सन्निकट हैं। इस वन में श्रीविशाखा कुण्ड विद्यमान हैं। श्रीबांके बिहारी जो इसी वन से प्रकट हुये थे। यह स्थान गोलाई में है। इस स्थान में प्रवेश करते ही सामने श्रीहरिदास स्वामी की भजन कुटी व समाधि दर्शित होते हैं। श्रील श्यामानन्द प्रभु को इस वन में श्रीमती वृषभानु नन्दिनी के श्रीचरणों का पायेजेब प्राप्त हुआ था। श्रीश्यामानन्द प्रभु रोज़ सुबह सफाई सेवा करते थे, एक दिन झाड़ू लगाते समय उन्हें श्रीभानु नन्दिनो के चरणों की पायल मिली जिसे उन्होंने तुरन्त अपने मस्तक में धारण किया, उससे उनके ललाट पर पायल का चिन्ह हो गया, तब से श्री श्यामानन्द प्रभु के शिष्य परम्परागत अपने तिलक में श्रीराधिका के नूपुर (पायल) का चिन्ह बनाते हैं।

श्रीराधा बाग—यह श्रीवृन्दावन के उत्तर-पश्चिम में श्रीयमुना तट पर अवस्थित है। उस बाग को श्रीराधा बाग घाट भी कहा जाता है। इसके पूरब में श्रीयमुना के दो धाराओं के बीच में मनोरम बालु पूर्ण स्थान श्रीयमुना पुलिन स्थित है। धीर समीर व श्रीराधा बाग के मध्य में श्री रास पुलिन स्थित है। यहाँ पर गोप कुँआ विराजमान है। इससे थोड़ी दूरी पर श्रीकात्यायिनी मन्दिर दर्शनीय है।

श्रीझूलनवन—श्रीराधा बाग के दक्षिण भाग में यह वन अवस्थित है। यहाँ पर श्रीराधा कृष्ण की झूलन लीला होती है।

श्रीगहवर वन—यह झूलन वन के दक्षिण में स्थित है। पानी घाट इसके बहुत ही निकट है।

श्रीपपड़ वन—यह गहबर वन के दक्षिण में स्थित है। इसी स्थान पर श्रीकृष्ण ने गोपियों को आदिबद्रीनाथ के दर्शन कारये थे। आगे श्रीवृन्दावन के पूर्वीय भाग में श्री गोविन्द कुण्ड अवस्थित है, यह श्रीराधा गोविन्द का विहार स्थल है।

श्रीवृन्दावन के पाँच कोस के अन्दर जो अठारह घाट हैं, परिक्रमा के क्रमानुसार उनका वर्णन इस प्रकार है—

श्रीवराह घाट—यह घाट श्रीवृन्दावन के दक्षिण-पश्चिम कोने में प्राचीन श्री यमुनातीर में स्थित है। सन्निकट श्रीवराह देव दर्शनीय है।

श्रीकालियदमन घाट या कालीदह—यह श्रीवराह घाट से प्राय आधा मील उत्तर में प्राचीन श्रीयमुना तीर पर अवस्थित है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण का आश्चर्य विलास वर्णित है। श्रीकृष्ण कालिन्दी तट पर केलिकदम्ब पर आरोहण करके जल में कूदे और श्रीकाली नाग का दमन किया। एक समय गरुड़ के भय से शतफना विशिष्ट अति बलवान श्रीकालीनाग अपने परिजन व परिवार के साथ बहुत समय से यहाँ वास कर रहा था, उसका निःश्वास प्रश्वास अग्नि तुल्य था, फलस्वरूप उसके वायु स्पर्श से वृक्षादि जल जाते एवं उसके ऊपर से कोई पक्षी उड़ कर जाने से वह भी जल जाता था। एक दिन श्रीकृष्ण सखागणों को साथ लेकर नन्दीश्वर से गोचारण के रंग में श्रीवृन्दावन आये। संयोग से उस दिन श्रीबलदेव साथ नहीं आये। गोचारण करते

करते सखागणों को प्यास लगी तो वे इस घाट पर आकर जल पीने को हुये। जल स्पर्श करते ही धेनुसह सबने प्राण त्याग दिये। निखिल ब्रह्माण्ड नायक श्रीकृष्ण ने यह सुनते ही सबको अपने नेत्रामृत से जीवित किया। यह श्रीगोविन्द की ही करुणा का प्रभाव था। स्वयं भगवान ने देखा कि अति बलवान कालियनाग गरूड़ के भय से रमणक द्वीप त्याग करके इस यमुना क्षेत्रमें आश्रय लिये हुये हैं अतएव उस नागको दण्ड देना आवश्यक था और कालिन्दी के जल को उसके प्रकोप से शोधन करना था। तब श्रीकृष्ण ने तीरस्थ केलिकदम्ब पर चढ़कर जल में लक्ष करके कूदे, तो कालिन्दी का जल काफी ऊँचाई तक उछला था। उस शब्द से अपने गृह पर विपत्ति देखकर कालीयनाग अत्यन्त क्रोध से अति सुकोमल श्रीकृष्ण के चरणों में फन पटकने लगा एवं अपने शत फनों के द्वारा श्रीकृष्ण को ढक लिया। श्रीकृष्ण के दर्शन बिना अति व्याकुल सखागण उच्च स्वर में रोने लगे एवं धेनु, वत्स, वृष आदि उच्च स्वरों में 'हम्बा हम्बा रब करने लगे।

इधर ब्रज में भी भूमिकम्प, नेत्र स्पन्दन आदि उत्पात आरम्भ हुये। माता ब्रजेश्वरी उद्विग्न व अतिकातर होकर श्रीबलराम को बोली—बेटा बलराम आज मेरा बाँया अंग क्यों फड़क रहा है एवं प्राण विचलित हैं। मुझे लगता है वन में गोपाल पर कोई विपत्ति आ पड़ी है। विशुद्ध माधुर्य भावासक्त ब्रजवासी गणों ने निश्चय किया कि साथ में श्रीबलराम न होने के फलस्वरूप श्रीकृष्ण का कोई अमंगल हुआ। सभी ब्रज के लोगों को दुःखी होते देखकर श्रीबलराम ने हंसकर सबको साथ लिया और श्रीकृष्ण के पद-चिन्हों-ध्वज व

वज्राङ्कुश चिन्हों को देखते हुये उसी पथ से श्रीयमुना के तट आ उपस्थित हुये। श्रीयमुना तट पर भी गो-वत्स व शिशु गणों को रोदन करते देखकर माँ यशोदा अति आर्त होकर शिशु गणों से बोली—बालको! मेरा प्राण गोपाल कहाँ है? माँ के वाक्यों को सुनकर शिशुगण रोते रोते बोले—मैया, तुम्हारे गोपाल ने कालीदह में छलाँग लगा दी है, यह सुनने मात्र से ही समस्त ब्रजवासी गण अति आर्तनाद के साथ तरह तरह से विलाप करने लगे एवं सबके साथ श्रीब्रजराज कालीदह में कूदने को उद्यत हुये, तब श्रीबलराम ने उन्हें निषेध करते हुये कहा—आप लोग चिन्ता न करिये। आप लोगों को छोड़कर श्रीकृष्ण कहीं नहीं जायेंगे थोड़ा धैर्य रखिये, यहीं पर श्रीकृष्ण को देख पायंगे। श्रीबलराम के सुमधुर वचन सुनकर सब लोगों को सांत्वना मिली। तब ब्रज जीवन श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को बेबस व शोकातुर देखकर स्वेच्छा नुसार अपने देह को बढ़ा लिया जिससे कालीय नाग अति पीड़ित हो उठा और फिर श्रीकृष्ण को उसने छोड़ दिया अवसर पाकर श्रीकृष्ण उसके चारों ओर अति तीव्र गति से चक्कर लगाने लगे। कुछ अवधि पश्चात कालीय क्षीण हो चला, अकस्मात श्रीकृष्ण काली नाग के मस्तक पर चढ़ गये और अखिल कलागुरु तांडव नृत्य करने लगे। श्रीकृष्णा के नर्तन से नाग के सहस्त्र फन विदीर्ण उठे एवं उसे खून की उल्टियाँ होने लगी और वह जीर्ण शीर्ण हो गया, तब उसमें दिव्य ज्ञान का उदय हुआ। तब कालीय नाग अपने अनुचरों सहित श्रीकृष्ण को दिव्य पुरुष जानकर श्रीकृष्ण के शरणापन्न हुआ एवं नाग पत्नितों ने भी अपने पति को मरणासन्न देखकर श्रीकृष्ण के चरणों में स्तुति की और अपने पति के अपराधों

की क्षमा याचना की। उनकी स्तुति के फलस्वरूप श्रीकृष्ण ने कालीय का त्याग किया और उसे आदेश दिया—सुनो सर्प! गौ व मनुष्य सभी इस कालिन्दी के जल का पान करते हैं, अतएव तुम यहाँ से शीघ्र ही अपने परिजनों को लेकर अपने रमणक द्वीप को चले जाओ जिस गरूड़ के डर से तुम इस कालिन्दी दह में छुपे हो वह तुम्हारे मस्तक पर मेरे पद चिन्ह देखकर तुम्हें नहीं खायेगा। काली नाग और नाग पत्नियों ने श्रीकृष्ण की पूजा की। अनन्तर काली नाग ने श्रीकृष्ण के आज्ञानुसार सबके साथ उनकी प्रदक्षिणा की और रमणक द्वीप की ओर प्रस्थान किया। श्रीकृष्ण भी उस हद से यमुना के तट पर आ गये और निकटस्थ टीले पर चढ़ गये तब समस्तने ब्रजवासियों उन्हें देखकर हर्ष ध्वनि का श्रीबलराम ने श्रीकृष्ण को देखकर आनन्द के साथ आलिंगन किया, सखाओं ने 'भइया भइया' कहकर उन्हें स्पर्श किया, ब्रजराज ने उन्हें गोद में उठाकर नृत्य किया, माँ यशोदा गोपाल को गोद में लेकर मुँह चूमने लगीं, गायों ने श्रीकृष्ण के निकट आकर 'हाम्बा हाम्बा रब किया, ब्रज पूज्य विप्रगणों ने अपनी स्त्रियों सहित श्रीकृष्ण को आशीर्वाद दिया, ब्रजराज ने आनन्द सहित ब्राह्मणों को गौ व हिरण्य दान किये। इसी प्रकार यहाँ तीसरा पहर व्यतीत होने से थके हुये सब लोगों ने रात्रि वहीं पर विश्राम किया।

श्रीगोपाल घाट—यह कालीदह के उत्तर में अवस्थित है। श्रीब्रजराज व माँ यशोदा इस घाट पर बैठे थे। श्रीकृष्ण काली नाग दमन के पश्चात यमुना तट पर उठने पर श्रीब्रजराज व ब्रजेश्वरी के नयन जल से भरकर आर्द्र चित्त से

श्रीकृष्ण को जकड़ लिया था एवं इसी घाट पर बैठकर श्रीनन्द ने श्रीकृष्ण के कल्याण के निमित्त ब्राह्मणों को अनेक गौदान किया था।

श्रीसूर्यघाट या द्वादशादित्य घाट— यह श्री गोपाल घाट के उत्तर के अवस्थित है। घाट के ऊपर टीला को द्वादशादित्य टीला कहते हैं। श्रीकृष्ण कालिय दमन करके श्रीयमुना तीर आकर इसी टीले पर बैठे थे तब श्रीकृष्ण के रूप दर्शन से देवतागण आनन्दित हुये। सूर्यदेव ने श्रीकृष्ण को शीतार्त जानकर अपनी सेवा के निमित्त भक्ति सहित उष्ण ताप दान द्वारा सेवा की। उदार चित्त श्रीकृष्ण ने श्रीमदन मोहन रूप प्रकाश करके निश्चय भाव से सेवा ग्रहण की। तब द्वादशौ दित्य के उग्ररश्मि विकीर्ण होने पर श्रीकृष्ण के श्री अंगों से स्वेतबिन्दु निकल कर धारा रू। में श्रीयमुना में मिश्रित हुआ और द्वादश आदित्य का घाट तीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट में स्नान करने से व्यक्ति समस्य पापों से मुक्त हो जाता है एवं इस स्थान पर प्राण त्याग करने से वह व्यक्ति श्रीविष्णुलोक को जाता है।

श्रीयुगल घाट—यह द्वादशादित्य घाट के उत्तर में अवस्थित है। यहाँ पर श्रीयुगल बिहारी का प्राचीन मन्दिर चूड़ा हीन अवस्था में विराजमान है। यह मन्दिर राजा प्रतापादित्य के चाचा श्री बसन्त राय ने बनवाया था।

श्रीविहार घाट— ह घाट श्रीयुगल घाट के उत्तर में अवस्थित है।

श्रीआन्धेर घाट—यह भी युगल घाट के उत्तर में स्थित है। इस घाट के निकट श्रीकृष्ण ने गोपियों की आँखें बन्द करके 'छुपा छुपि' खेल खेला था।

इमली तला घाट—यह आन्धेर घाट के उत्तर में अवस्थित है। घाट का इमली का वृक्ष अति प्राचीन है। यह श्रीकृष्ण लीला के सम सामयिक कहकर प्रसिद्ध है। श्री-राधिका के विरह में श्रीकृष्ण ने बेचैन होकर इसी इमली के वृक्ष के नीचे के कुञ्ज में बैठकर बिह्वल मन से श्रीराधा नाम जपा था। एकदा रसिक शेखर श्रीकृष्ण श्रीयमुना तट पर ब्रज रमणियों के साथ रास क्रीड़ा के विभिन्न रसों में प्रमत्त थे, किन्तु सब गोपियों के प्रति एक सा प्रेम का व्यवहार देखकर माद नाख्य महा भाववती श्रीराधिका के मन में मान उदय हुआ और वे अपनी सखियों को साथ लेकर रासस्थली त्याग करके किसी स्थान में छुप गईं। लीला मग्न श्रीकृष्ण कुछ देर बाद श्रीराधा को न पाकर अत्यन्त व्याकुल हो उठे। बाद में श्रीराधा के विरह में मदन पीड़ित श्रीमदन मोहन विह्वल अन्तर सहित श्री रास स्थली को त्याग करके श्री रास लीला का श्रृंखला श्रीराधिका के अन्वेषण में श्रीराधा नाथ बाहर निकले। श्रीराधा के विरह में मदन पीड़ित श्री मदन मोहन अति विह्वल मन से कुञ्ज कुञ्ज में 'हे श्रीराधे दर्शन दो प्रेममयि दर्शन दो. तुम्हारे दर्शनों के बिना 'मेरे प्राण निकले जा रहे हैं, एक बार दर्शन दो, इस प्रकार से आर्तनाद करने पर भी श्री मदन मोहन कहीं भी श्रीराधिका का अनुसन्धान नहीं कर पाये। अन्त में श्रीयमुना के तट पर श्रीकृष्ण इसी इमली के वृक्ष के नीचे कुञ्ज में बैठकर विह्वल

अन्तर के साथ श्रीराधा मन्त्र जपने लगे। अतिशय प्रेम में विह्वल श्रीकृष्ण जिधर भी देखते उधर ही राधामय दर्शन करते। इस प्रकार दर्शन करते करते तन्मय होकर श्रीकृष्ण राधा भावमय सुवलित श्री गौरांग रूप धारण करके विप्रलम्भ रस आस्वादन पूर्वक महानन्द में समाधिस्थ हुये। इसी अवसर में श्रीराधिका सखियों के साथ वहाँ उपस्थित हुईं और अति मनोरम श्रीगौरांग रूप दर्शन करके आश्चर्य चकित हुई। अनन्तर सखियों के अनुरोध पर श्रीकृष्ण के अंग के स्पर्श मात्र से श्रीकृष्ण चकित होकर प्राकृतिक स्थिति में आये एवं सखियों सहित श्रीराधा के दर्शन किये। सखियाँ भी युगल स्वरूप दर्शन से परमानंदिन्ता हुईं। इसी इमली तला में श्री गौर लीला का प्राथमिक संकेत मिला। यहीं कलिपुग में श्रीराधा भावके आस्वादनके लिये शची माताके गर्भमें श्रीकृष्ण चैतन्य रूप में अवतीर्ण होकर श्रीवृन्दावन आये और इस परम चिक्कन पत्थरों से बँधे चबूतरे पर प्राचीन इमली के वृक्ष के तले बैठे और श्रीहरिनाम का जप व कालिन्दी की शोभा के दर्शन किये। इस इमली के वृक्ष के नीचे श्रीमन्महाप्रभु के पाद पीठ ब मूर्ति शोभा वर्द्धन कर रहे हैं व सम्मुखस्थ श्री मन्दिर के प्रथम प्रकोष्ठ में श्रीराधा गोपीनाथ जी, द्वितीय प्रकोष्ठ में श्रीनिताई गौर व तृतीय प्रकोष्ठ में गौड़ीय मठ प्रतिष्ठाता श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर दर्शनीय है। यही श्रीकृष्ण कलियुग में श्रीराधा भाव का आस्वादन करने श्रीकृष्ण चैतन्य रूप में अवतीर्ण हुये और जब वह श्रीवृन्दावन आये तो इसी इमली वृक्ष के तले बैठे थे। तब से इस घाट का नाम इमली घाट व श्रीगौरांग घाट कहकर प्रसिद्ध है।

श्रीशृंगार घाट—नामान्तर शृंगार वट— यह इमली घाट के उत्तर में अवस्थित है। परम रमणीय इस वृक्ष मूल पत्थर की वेदी से निबद्ध है। चारों ओर यह विविध काननों से परिपूर्ण है। श्रीमन्नत्यानन्द प्रभु ने श्रीवृन्दावन आकर इसी स्थान पर बैठकर अमृत वाहिनी श्रीयमुना की परम शोभा के दर्शन किये थे। प्रभु निताई चाँद बाल्यलीला के आवेश में इस स्थान पर धूल मिट्टी में खेलते थे। श्रीकृष्ण रास रजनी में इस घाट पर बैठकर श्रीराधिका को सजाते व संवारते थे। इसी स्थान पर श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के वंशधरों द्वारा श्रीश्रीनिताई गौर की सेवा परम आनन्द से सम्पन्न होती रही है। इस स्थान पर निवास करने से श्रीनिताई चाँद की कृपा प्राप्त होती है।

श्रीगोविन्द घाट—यह शृंगार वट के उत्तर में अवस्थित है। श्री गोविन्द रास मंडल में जब अन्तर्ध्यान हो गये तब इसी स्थान पर गोपी गणों के सम्मुख प्रगट हुये थे।

श्रीचीर घाट—यह गोविन्द घाट के उत्तर में अवस्थित है। श्रीकृष्ण ने जब क्रीड़ा करते समय कौतुक करते हुये गोपियों के वस्त्र अपहरण करके इस स्थान के कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ के बैठे थे। इसीलिये इस घाट के ऊपर स्थित कदम्ब के वृक्ष को चीर कदम्ब कहकर उल्लेख किया जाता है। श्रीवृन्दावन में साधारणतः तीन प्रकार के कदम्ब के वृक्ष प्रसिद्ध हैं—काली कदम्ब, चीर कदम्ब व दोला कदम्ब। श्रीकृष्ण ने केशी दैत्य को वध करके इस घाट के ऊपर बैठकर

विश्राम किया था इसीलिये इस घाट का एक और नाम चेहन घाट है।

श्रीभ्रमर घाट—यह चीरघाट के उत्तर में स्थित है। इस घाट के तीरस्थ उद्यान अति रमणीय कदम्ब व विभिन्न पुष्पों से सुशोभित है। इस स्थान के विकसित पुष्प समूह के सौरभ में मधु लोभी मधुकर आकृष्ट होकर आते हैं, भ्रमरों के गुञ्जन से मुखरित फल फूलों से युत यह कानन चारों दिशाओं को सुगन्ध से आमोदित करता है, नन्दन कानन तिरस्कृत अतुलनीय शोभा से सुशोभित हैं, इस कानन में श्रीराधा गोविन्द के वन विहार में आगमन करने पर श्रीराधिका के स्वाभाविक अंग-सौरभ में भ्रमर गण उन्मत्त होकर श्रीराधा के अंग के निकट आते हैं, श्रीराधा तब अपने हस्त कमलों के द्वारा उन्हें प्रताड़ित करती हैं, उनकी यह चेष्टा व्यर्थ होती है क्योंकि पद्म गन्धि श्रीराधा भ्रमर को जितना हटाने की कोशिश करतीं,वह भ्रमर श्रीराधा अंगकी सुगन्धसे मत्त होकर बारम्बार उनकी ओर आकर्षित होता, अन्त में श्रीराधा हार कर श्रीकृष्ण के उत्तरीय में छुप जातीं। तब रसिक वर आनन्द सहित श्री राधा को चुम्बनालिंगन में आबद्ध करके विविध रस लीला में विहार करते। यहाँ पर श्रीराधा गोविन्द के अंग सौरम में भ्रमर गण अति मत्त हो उठे थे, इसीलिये यह घाट भ्रमर घाट के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीकेशी घाट—यह भ्रमर घाट के उत्तर में एवं श्री वृन्दावन के उत्तर-पश्चिम कोने में स्थित है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण ने केशी दैत्य का वध किया था। ब्रज में श्रीकृष्ण ने

जब अरिष्टासुर का वध किया था तो इसका समाचार कंस को श्रीनारद ने दिया। कंस ने तब क्रोध वश मयदानव के पुत्र केशी नामक असुर को श्रीकृष्ण बलराम दोनों भाइयों को मारने के लिये भेजा। केशी दैत्य एक विशाल घोड़े का रूप धारण करके ब्रज में उपस्थित हुआ तो समस्त ब्रजबासी गण भय से व्याकुल हो उठे। बाल्य लीला में गोचारणरत श्रीकृष्ण पर कंस के अनुचर केशी ने आक्रमण किया तब श्रीकृष्ण ने उसे प्रचण्ड वेग के साथ घुमा के दे मारा और वह भूमि पर अचेतन होकर धराशायी हो गया। बाद में चेतना लौटने पर अश्व पुनः आक्रमण करने को उद्यत हुआ तब श्रीकृष्ण ने उसके मुँह में हाथ डाला तो अश्व ने अपने दाँतों से उनके हाथ को चबानेकी कोशिशकी जिससे उसके सारे दाँत उखड़ गये। अन्तमें श्रीकृष्ण के हाथ से उसकी साँस बन्द हो गई केशी दैत्य ने प्राण त्याग किये। असुर की मृत्यु से सखा गण आनन्दित हुये और उनकी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे। केशी दैत्य के रुधिर लिप्त श्रीकृष्ण ने दोनों हाथ इसी घाट पर धोये थे, इसी लिये यह केशीघाट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस स्थान पर स्नान करने से गंगा स्नान से भी सौ गुना फल प्राप्त होता है। यहाँ पर पिण्ड दान करने से गया में पिण्ड देने का फल प्राप्त होता है। इस घाट के सन्निकट श्री प्राण गौर नित्यानन्द मन्दिर एवं श्री गौर-गदाधर का प्राचीन मन्दिर स्थित हैं। इस मन्दिर में श्रीगदाधर गोस्वामी की दन्त समाधि एवं श्री गौर शिरोमणि महाशय की समाधि हैं।

श्रीधीर समीर—यह केशीघाट के पूरब व वृन्दादन के

उत्तर दिशा में अवस्थित है। यह श्रीयमुना का समीपस्थ परम शोभनीय श्रीराधा गोविन्द के सुख विहार का एकान्त स्थान है। युलग किशोर की सेवा के निमित्त मलय समीर इस स्थान में धीरे धीरे प्रवाहित हुई थी। एक दिन श्रीकृष्ण इस स्थान पर आकर नाना वर्णों में विकसित पुष्पों की सुगन्ध व यमुना के कपूर मिश्रित सुकोमल बालू राशि के दर्शन करके अपनी प्रिया को याद करने लगे और उससे सहसा विचलित होकर कहने लगे— हे वृन्दे ! तुम मुझे बोलो मैं किस प्रकार प्रिया जी से मिल सकता हूँ ? इस स्थान पर मैं अकेला भ्रमण करता हूँ, इसमें मदन (कामदेव) मुझे दुर्बल समझ कर अति पीड़ा दे रहा है। मदन के बाणों ने मुझे जर्जरित कर दिया है मैं और सहन नहीं कर पा रहा हूं। और देखो सखी। मन्द मन्द वायु के स्पर्श से कानन के प्रफुल्लित पुष्प सुगन्ध फैला रहे हैं, मधकर पुष्पों के मधुपान में मत्त हैं, कोयल कूक रही हैं, विहंग के झंकार गूँज रहे हैं, ज्योत्स्ना के प्रभाव से यमुना में तरंग अपने आप ही उद्वेलित हो रहे हैं, यह सब देखकर मैं अत्यन्त चञ्चल हो उठा हुँ। वृन्दे ! प्रिया विहीन मैं और क्षण काल भी नहीं बच पाऊँगा। हे वृन्दे ! तुम किसी प्रकार प्रिया को मुझ से मिला दो और मेरे प्राणों की रक्षा करो। मदन मोहन आज मदन के बाणों से घायल होकर यमुना के वन वन में प्रियतमाको ढूढ़ते फिर रहे हैं, कभी वह उच्च स्वर में राधा राधा कहकर पुकार रहे हैं, फिर कभी राधा बोलकर बिलाप करते करते धूल में लोटते हैं और कभी अति व्यग्र होकर कुञ्जों में जाते हैं किन्तु वहाँ किसी को न पाकर फिर विफल मनोरथ होकर लौट आते हैं। अन्त में वह एक कुंज में गये और एक उपयुक्त क्रीड़ा का स्थान देखकर परम आनन्दित हुये

और विविध कला कौशल सहित विलासोचित शय्या सजाने लगे। श्रीमदन मोहन आज स्वयं वृक्षों से पुष्प चयन कर शय्या सजा रहे हैं। उन्होंने कुञ्ज के चारों ओर विविध पुष्पों की बन्धन माला बाँधी। पान की व्यवस्था की। इस प्रकार श्रीमदन मोहन बड़े मनोयोग से शय्या सुसज्जित करते करते कोई शब्द सुनने पर अपनी प्रिततमा का आगमन समझकर दौड़कर बाहर आते, और कभी भाव वेश में राधे राधे बोल कर संबोधन करते। वृन्दादेवी, श्रीकृष्ण की यह व्याकुलता देखकर श्रीराधिका के निकट गईं। श्रीमतीवृषभानु नन्दिनी वृन्दादेवी को व्याकुल व चिन्तित देखकर बोलीं वृन्दे! बोलो तुम इतनी व्याकुल क्यों हुई हो? वृन्दा ने रोते रोते उन्हें श्रीकृष्ण की स्थिति के बारे में अवगत कराया। श्रीराधिका अपने प्राण कोटि प्रियतम की वह अवस्था सुनकर साथ हा साथ मूर्छित हो गईं एवं उनकी वाणी व स्मृति खो गई। श्रीरधिका की स्थिति देखकर सखियाँ नाना प्रकार से उनकी सेवा-सुश्रुषा करने लगीं किन्तु किसी प्रकार उनकी बाह्य स्मृति नहीं लौटी, वृन्दादेवी भी कोई उपाय न देखकर चिन्ता सागर में डूब गईं। सखियों की सारी चेष्टायें व्यर्थ हुईं क्योंकि श्रीभानु नन्दिनी सबको दृष्टि से दूर अपने प्रियतम के निकट मानसिक रूप से पहुँच कर अभिसार रत थी। अन्त में वृन्दा देवी कोई उपाय न देखकर श्रीराधा के कानों में श्रीकृष्ण नाम कहने लगीं वह सुनकर श्रीराधा धीरे धीरे बोलने लगीं—गाओ, गाओ मेरे प्रियतम के गुण गाओ। तब वृन्दा देवी बोलीं—हे राधे तुम इतनी देर क्यों करती हो? श्रीनन्द नन्दन तुम्हारे निमित्त कुञ्ज सजाकर अति आर्त भाव में तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं एवं लगातार तुम्हारे ध्यान व मन्त्र का

जाप कर रहे हैं, तुम्हारे अंग का स्पर्श देकर उन्हें जीवन दान दो। श्रीराधिका ने प्रियतम की अवस्था सुनकर लम्बी सांस ली। वृन्दादेवी फिर बोली—श्रीनन्द नन्दन रति सुख की अभिलाषा में अभिसार करके मृदु मन्द समीर से प्रवाहित श्रीयमुना तट पर निर्जन कुञ्ज में शय्या सुसज्जित करके तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अरे सुनो तुम्हारे प्रियतम तुम्हारा नाम लेकर वेणु बजाते हुये कह रहे हैं—हे प्रिये ! मैंने तुम्हारे किये कुञ्ज में शय्या सजाकर निर्जन धीर समीर में एक टक चित्त से पलकं बिछाये हूँ। मुझे अपने आलिंगन से सुखी करो, तुम्हारे अधर सुधा का पान कराके मेरे मदन पीड़ित देह को सरस करो। अतएव हे राधे ! तुम अति शीघ्र वहाँ पहुँचकर अभिसार करो एवं शुभ्र वस्त्र त्याग कर नीलाम्बर धारण करो, हे पंकज नयने ! आधी रात होने को है अति शीघ्र वेश भूषा पहन कर अभिसार करो अन्यथा यह रात्रि भी समाप्त हो जायेगी। वृन्दा देवी के वचन सुनकर श्रीराधिका अति उत्कण्ठित होकर बोलीं—हे ललिते ! मैं और एक क्षण भी स्थिर नहीं रह पा रही हूं, मैं अभी अभिसार करूँगी, तुम मुझे सजा दो। तब सखियों ने परम आनन्दित होकर श्रीराधिका को सजाया और फिर श्रीराधिका वृन्दा देवी के साथ अभिसार को चलीं। श्रीराधा धीरे धीरे धीरसमीर में पहुँचीं। कुञ्ज में से श्रीकृष्ण ने श्रीराधिका को देखा तो उनके आनन्द सागर में हिल्लोरें उठने लगीं। तुरन्त आगे बढ़कर श्रीराधा को उन्होंने अपनी बाहों में ले लिया। सात्विक भाव से युगल किशोर के नयनों से आनन्दाश्रु प्रवाहित होने लगे, अपरूप युगल स्वरूप दर्शनसे सखियाँ आनन्द सागर में डूब गईं। श्री श्रीनिवास आचार्य प्रभु के वंशधर

यहाँ वास करते हैं। आचार्य प्रभु का यह कुञ्ज में- श्रीश्री मन्महाप्रभु की अपूर्व श्रीमूर्ति विराजमान व दर्शनीय हैं. इस मन्दिर के सम्मुख श्रीश्रीनिवास आचार्य प्रभु व श्रीरामचन्द कविराज की सामधियाँ विराजमान हैं।

श्रीराधाबाग घाट—यह घाट धीर समीर के पूरब व वृन्दावन के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। श्रीयमुनातीरस्थ परम शोभनीय निर्जन इस स्थान के दर्शन से श्रीकृष्ण लीला की स्मृति जागृत होती है।

श्रीपाणिघाट—यह घाट राधाबाग के दक्षिण एवं श्रीवृन्दावन के पूरबी भाग में अवस्थित है। ब्रजसुन्दरी गण श्रीकृष्ण के निर्देशानुसार श्रीदुर्वासा मुनि को भोजन कराने के निमित्त इस घाट पर श्रीयमुना पार होकर उस पार गये थे।

श्रीआदि बद्री घाट—यह पाणिघाट के दक्षिण एवं श्रीवृन्दावन के दक्षिण-पूरब दिशा में प्राचीन यमुना तट पर अवस्थित है। घाट पर श्रीकृष्ण ने गोपियों को श्रीआदि बद्री-नाथ के दर्शन कराये थे।

श्रीराजघाट—यह आदिबद्री घाट के दक्षिण एवं श्री वृन्दावन के दक्षिण-पूरब दिशा में प्राचीन यमुना तट पर स्थित है। इस घाट पर श्रीकृष्ण ने नाविक बनकर श्रीमती राधिका को यमुना पार किया था। इस घाट के ऊपरी भाग में श्रीबलदेव जी दर्शनीय हैं।

वृन्दावनस्य माहात्म्यं सर्वतीर्थशिरोमणेः।
दीनेन हरिभक्तेन संकलितमिदं परम्॥

कीर्तन

हरिबलब आर मदन मोहन हेरव गो।
एइ रूपे ब्रजेर पथे चलव गो॥
याव गो ब्रजेन्द्रपुर ह'ब गोपिकार नूपुर
ताँदेर चरणे मधुर मधुर वाजब गो
विपिने विनोद खेला, सङ्गेते राखालेर मेला।
ताँदेर चरणेर धूला माखव गो॥
राधाकृष्णेर रूपमाधुरी, हेरव दु'नयन भरि,
निकुञ्जेर द्वारे द्वारी रहिव गो
तोमरा सब ब्रजवासी पुराओ मनेर अभिलाष'ई
कबे श्रीकृष्णेर वाँशी शुनव गो॥
एइ देह अन्तिम काले, राखव श्री यमुनार जले॥
जय राधा गोविन्द वले भासव गो।
कहे नरोत्तम दास, ना पूरिल अभिलाष,
आर कवे प्रजे वास करव गो॥